ज्योतिषसार



श्री वेङ्कटेश्वर प्रेस प्रकाशन

ज्योतिर्विद्वरशुकदेवविरचित

ज्योतिषसार

हिन्दीटीका सहित



टीकाकार-पण्डित केशवप्रसाद शर्मा द्विवेदी

संशोधक-पण्डित राधाकृष्णजी मिश्र

मुद्रक व प्रकाशक

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास

अध्यक्ष-" लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस

कल्याण-बम्बई.

संवत् २०२५.] [सन् १९६८.

प्रस्तावना



समस्त ज्योतिषी पंडितोंसे तथा ज्योतिषके विद्यार्थियोंसे सविनय निवेदन करता हूं कि, अहो समस्त विद्वज्जन ! तथा विद्यार्थिज्जन ! ! मनुष्यमात्रकी प्रवृत्ति केवल सुख-प्राप्तिके लिये ही होती है। सुखपदका अर्थ मनका सन्तोष कहलाता है,मनका सन्तोष शारीरिक क्रियाके आश्रयसे रहता है। प्रत्यक्ष जिसका फल दीखनेमें आता है ऐसा ज्योतिःशास्त्र सबसे अधिक शारीरिक सुखदायक होनेसे सर्वजनसंमान्य है । यह सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

ज्योतिःशास्त्र चार लक्ष ग्रंथ होनेसे सांप्रतकालके अल्पायुषी मंदबुद्धि मनुष्योंके पढ़नेमें अशक्य है । इससे कोई पढ़ता नहीं है । समग्र शास्त्र न पढ़नेसे उस शास्त्रमें कहा हुआ सर्व पदार्थका ज्ञान भी नहीं होता है । जिससे मनुष्योंको कौनसे कार्य करनेमें कौनसा योग्य उपयोगी होता है यह ज्ञान होना दुर्लभ है । इसलिये सर्वजनोपकारक पंडितवर्य श्रीशुकदेवजीने यह सर्व ज्योतिषशास्त्रका सार लेकर ज्योतिषसार ऐसा अन्वर्थनामक ग्रंथ निर्माण किया है। इस ग्रंथका आबालवृद्ध सर्वलोगोंके उपयोगी होनेके लिये आगरा कालेज संस्कृताध्यापक पंडितवय केशवप्रसादजीने इसके ऊपर सरल हिंदी भाषाटीका बनाकर छपवाई थी अब वही ग्रंथ उन्होंने मुझको सब रजिष्टरी हक्कके साथ अपनी सौजन्यतासे दिया है । वह मैंने अपने मित्र राधाकृष्णमिश्रजीसे अधिक कोष्ठक और शोध तथा अन्य–अन्य अनेक ग्रंथोंके वचन वगैरह भीतर मिलाकर बहुतही बढ़वाकर अपने लक्ष्मीवेंकटश्वर छापखानेमें छापकर प्रसिद्ध किया है । अब मैं सर्वज्योतिःशास्त्रानुरागियोंसे सविनय प्रार्थना करता हूं कि यह ज्योतिषसार पुस्तक पहलेकी अपेक्षा बहुतही बढ़ गया तो भी विद्वानोंकी सेवामें पूर्ववत् स्वल्पही मूल्यसे रवाना होता है, इसलिये ग्राहकजन इस अपूर्वग्रंथके संग्रहमें त्वरा करके सांसारिक सुखानुभव करेंगे ।

श्री

ज्योतिषसारस्थ–विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका

विषयानुक्रमणिका समाप्त

श्रीगणेशाय नमः

अथ हिन्दीटीकासहितम्

ज्योतिषसारम्

मङ्गलाचरणम्

गणाधीशं नमस्कृत्य शारदां चित्स्वरूपिणीम् ।।
अज्ञानगजगण्डघ्नीं गर्गलल्लादिकान् मुनीन् ।।१।।
नानाग्रन्थान् समालोक्य दैवज्ञानां च तुष्टये ।।
कुरुते बालबोधाय ज्योतिःसारमनूत्तमम् ।।२।।

टीका--ग्रन्थकी निर्विघ्न परिसमाप्तिके लिए प्रथमतः गणेशजीको नमस्कार करके और चैतन्यस्वरूपिणी, अज्ञानको नष्ट करनेवाली सरस्वतीजीको नमस्कार करके और गर्गाचार्य, लल्ल, वसिष्ठ, नारद इत्यादिक जो ज्योतिःशास्त्रके प्रवर्तक आचार्य हैं उनको नमस्कार करके, सूर्यसिद्धांतादि नाना प्रकारके ग्रन्थ अवलोकन करके ज्योतिर्विदोंके सन्तोषके लिये और बालकोंको थोड़ेमें मुहूर्तादिकका ज्ञान हो, इस हेतुसे अत्युत्तम ज्योतिषसार नामक ग्रन्थको बनाता हूं ।। १ ।। २ ।।

शकप्रकरणप्रारंभः

संवत्सरनामपरिज्ञानम्

शकेन्द्रकालेऽर्कयुते कृते शून्येरसैर्हृते ।।
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ।।३।।

टीका--शालिवाहनशकमें जिस संवत्सरका नाम जानना हो, उसकी यह रीति है कि शककी संख्या लिखकर उसमें १२ मिलाये और ६० का भाग दे, जो शेष बचे उसे संवत्सरका नाम जानना चाहिये ।। ३ ।।

संवत्परिज्ञान

स एव पञ्चाग्निकुभिर्युक्तः स्याद्विक्रमस्य हि ।।
रेवाया उत्तरे तीरे संवन्नाम्नातिविश्रुतः ।।४।।

टीका--यदि शालिवाहनके शकमें १३५ मिलाये तो वही विक्रम संवत् हो जाये, जो रेवानदीके उत्तरतटमें संवत् नामसे प्रसिद्ध है ।। ४ ।।

संवत्कालो ग्रहयुतः कृत्वा शून्यरसैर्हृतः ।।
शेषाः संवत्सरा ज्ञेयाः प्रभवाद्या बुधैः क्रमात् ।। ५ ।।

टीका--संवत्सरके अंकोंमें ९ युक्त करे और ६० के भाग देनेसे जो शेष रहे उसे प्रभवादि संवत्सर जानें, उदाहरण जैसे १९३५ में ९ मिलाये तो १९४४ हुए अब इसमें ६० का भाग दिया तो शेष २४ रहे इस कारण इस संवत्सरका नाम विकृति जानना चाहिये ।। ५ ।।

संवत्सरोंके नाम

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।।
अङ्गिराः श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ।।६।।
ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथा विक्रमो वृषः ।।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवो व्ययः ।।७।।
सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ।।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ।।८।।
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्लवः ।।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ।।९।।
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणः विरोधकृत् ।।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ।।१०।।
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ।।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षी क्रोधनः क्षयः ।।११।।

सं०	नाम	सं०	नाम	सं०	नाम	सं०	नाम	सं०	नाम
१	प्रभवः	१३	प्रमाथी	२५	खरः	३७	शोभनः	४९	राक्षसः
२	विभवः	१४	विक्रमः	२६	नंदनः	३८	क्रोधी	५०	नलः
३	शुक्लः	१५	वृषः	२७	विजयः	३९	विश्वावसुः	५१	पिंगलः
४	प्रमोदः	१६	चित्रभानुः	२८	जयः	४०	पराभवः	५२	कालयुक्तः
५	प्रजापतिः	१७	सुभानुः	२९	मन्मथः	४१	प्लवंगः	५३	सिद्धार्थी
६	अंगिराः	१८	तारणः	३०	दुर्मुखः	४२	कीलकः	५४	रौद्रः
७	श्रीमुखः	१९	पार्थिवः	३१	हमलंबी	४३	सौम्यः	५५	दुर्मतिः
८	भावः	२०	व्ययः	३२	निलंबी	४४	साधारणः	५६	दुंदुभिः
९	युवा	२१	सर्वजित्	३३	विकारी	४५	विरोधकृत	५७	रुधिरोद्गारी
१०	धाता	२२	सर्वधारी	३४	शार्वरी	४६	परिधावी	५८	रक्ताक्षी
११	ईश्वरः	२३	विरोधी	३५	प्लवः	४७	प्रमादी	५९	क्रोधनः
१२	बहुधान्यः	२४	विकृतिः	३६	शुभकृत्	४८	आनंदः	६०	क्षयः

संवत्सरोंका फल

प्रभवाद्द्विगुणं कृत्वा त्रिभिर्न्यूनं च कारयेत् ।।
सप्तभिस्तु हरेद्भागं शेषं ज्ञेयं शुभाऽशुभम् ।।
एकं चत्वारि दुर्भिक्षं पञ्चद्वाभ्यां सुभिक्षकम् ।।
त्रिषष्ठे तु समं ज्ञेयं शून्ये पीडा न संशयः ।।१२।।

टीका—प्रभवादि संवत्सरोंमेंसे चलते हुए संवत्सरको द्विगुणा करे उसमेंसे तीन घटाकर सातका भाग देनेसे जो शेष रहे उससे शुभाशुभ फल जानिये। १ अथवा ४ शेष रहे तो दुर्भिक्ष, ५ वा २ बचे तो सुभिक्ष, ३ अथवा ६ शेष रहे तो साधारण और जो शून्य आये तो पीड़ा जानिये ॥ १२ ॥

संवत्सरोंके स्वामी

युगं भवेद्वत्सरपञ्चकेन युगानि च द्वादश वर्षषष्टया ॥
भवन्ति तेषामधिदेवताश्च क्रमेण वक्ष्यामि मुनिप्रणीताः ॥
विष्णुर्जीवः शक्रो दहनस्त्वष्टा अहिर्बुध्न्यः पितरः ॥
विश्वेदेवाश्चन्द्रज्वलनौ नासत्यनामानौ च भगः ॥१३॥

टीका—पांच वर्षका एक युग होता है इसी प्रमाणसे६० वर्षके १२ युग और क्रमसे उनके १२ स्वामी हैं। विष्णु १ बृहस्पति २ इन्द्र ३ अत्रि ४ ब्रह्मा ५ शिव ६ पितर ७ विश्वेदेवा ८ चन्द्र ९ अग्नि १० अश्विनीकुमार ११ सूर्य १२ ॥ १३ ॥

भेद

संवत्सरः प्रथमकः परिवत्सरोऽन्यस्तस्मादिडाविदिति पूर्वपदाद्बुवेयुः ॥
एवं युगेषु सकलेषु तदीयनाथा वह्न्यर्कशीतगुविरञ्चिशिवाःक्रमेण ॥१४॥

टीका—इष्ट शकमें पांचका भाग देने पर जो शेष बचे उसके संवत्सरोंके नाम क्रमसे जानिये। पहिले संवत्का स्वामी अग्नि १ दूसरे परिवत्सरका स्वामी सूर्य २ तीसरे इडावत्सरका स्वामी चन्द्रमा चौथे अनुवत्सरका स्वामी ब्रह्मा ४ पांचवें इद्वत्सरके स्वामी शिव ५ ॥ १४ ॥

दूसरा मत

आनन्दादेर्भवेद्ब्रह्मा भावादेर्विष्णुरेव च ॥
जयादेः शंकरः प्रोक्तः सृष्टिपालननाशकाः ॥ १५ ॥

टीका—आनंदादि ६० संवत्सरोंके स्वामी ब्रह्मा जो सृष्टिकर्ता हैं और भावादिक २० संवत्सरोंके स्वामी विष्णु हैं जो सबका पालन करते हैं तीसरे जयादिक २० संवत्सरोंके स्वामी रुद्र जो संहारकर्ता हैं ॥ १५ ॥

ऋतुप्रकरणम्

अयन

शिशिरपूर्वमृतुत्रयमुत्तरं ह्ययनमाहुरहश्च तदाऽमरम् ॥
भवति दक्षिणमन्यऋतुत्रयं निगदिता रजनी मरुतां हि सा ॥१६॥

टीका—शिशिर वसंत ग्रीष्म इन तीन ऋतुओंमें सूर्यकी गति उत्तरदिशाको होती है उसको उत्तरायण कहते हैं, यही देवताओंका दिवस है और वर्षा शरद हेमंत इन तीनों ऋतुओंमें सूर्यकी गति दक्षिणको होती है। उसको दक्षिणायन कहते हैं यही देवताओंकी रात्रि है ॥ १६ ॥

अयनोंमें शुभाशुभ कर्म

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठा विवाहचौलव्रतबन्धदीक्षा ॥
सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥१७॥

टीका—गृहप्रवेश दवप्रतिष्ठा विवाह मुण्डन व्रत-धारण मन्त्रलेना ये सब शुभ कर्म उत्तरायणमें और सब नियकर्म दक्षिणायनमें करने योग्य हैं ।। १७ ।।

संक्रांति अनुसार ऋतु

मृगादिराशिद्वय भानु भोगात् षडर्तवः स्युः शिशिरो बसन्तः ।।
ग्रीष्मश्च वर्षाच शरच्च तद्वद्धेमन्तनामा कथितश्च षष्ठः ।।१८।।

टीका—मकर आदि लेकर दो राशि जब सूर्य भोगते हैं तब एक ऋतु होती है इस प्रकार सूर्य १२ राशि भोगते हैं और उससे ६ ऋतुएं होती हैं ।। १८ ।।

तथा मतांतर राशि

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यां वसन्तादृतवश्च षट् ।।
दाक्षिणात्याः प्रगृह्णन्ति दैवे पित्र्ये च कर्मणि ।।१९।।

टीका—चैत्रादिक दो मासमें १ ऋतु इस प्रकारसे १२ मासमें ६ ऋतुयें होती हैं सो दक्षिणदेशमें देव पितृकर्ममें प्रसिद्ध है ।। १९ ।।

१ मकर २ कुंभ	शिशिरऋतु १	७ कर्क ८ सिंह	वर्षाऋतु ४
३ मीन ४ मेष	वसंतऋतु २	९ कन्या १० तुला	शरद्ऋतु ५
५ वृष ६ मिथुन	ग्रीष्मऋतु ३	११ वृश्चिक १२ धन	हेमंतऋतु ६

मतांतरराशिअनुसार मेषादिक दो राशि सूर्य भोगते हैं इस प्रमाणसे वसंत आदिक ६ होती है.				मासअनुसार. चैत्रसे लेकर दो२ मास वसंत आदिक छः६ ऋतु होती हैं.			
१ मेष २ वृषभ	वसंत	७ तुला ८ वृश्चि.	शरद्	१ चैत्र २ वैशा.	वसंत	७ आश्वि ८ कार्ति.	शरद्
३ मिथुन ४ कर्क	ग्रीष्म	९ धन १० मक	हेमंत	३ ज्येष्ठ ४ आषा	ग्रीष्म	९ मार्ग. १० पौष	हेमंत
५ सिंह ६ कन्या	वर्षा	११ कुंभ १२ मीन	शिशिर	५ श्राव. ६ भाद्र.	वर्षा[1]	११ माघ १२ फा.	शिशिर

१ दक्षिण देशवासी इस महीनेमें पितृकर्म करते हैं ।।

मासप्रकरणं तत्र मासपरिज्ञानम्

पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरः याति भास्करः ॥
सा राशिः संक्रमाख्या स्यान्मासर्त्वयनहायने ॥२०॥

टीका—पूर्व राशिको छोड़कर जिस आगेकी राशिमें सूर्य जाता है उसी सूर्यकी राशिमें १२ संक्रांति मास ऋतु अयन इन सबोंकी गणना होती है ॥ २० ॥

दर्शावधिं माससुशन्ति चान्द्रं सौरं तथा भास्कर‌राशिभोगात् ॥
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्या नाक्षत्रमन्दोर्भगणाश्रयाच्च ॥२१॥

टीका—मास कई प्रकारके होते हैं एक चांद्रमास जो शुक्ल प्रतिपदासे अमावास्या-पर्यंत होता है, दूसरा सौरमास जो सूर्यके एक राशि भोगनेसे होता है, तीसरा सावनमास जो तीस दिनका होता है और चौथा नक्षत्रमास जो चन्द्रमासके गिरद नक्षत्रोंके फिरनेसे होता है ॥ २१ ॥

मासोंके नाम तथा सूर्य देवता और देवी

संख्या	नामानि	नामानि	सूर्य	देवी	देवता
१	चैत्रमास	मधुः	वेदांगः	रमा	विष्णुः
२	वैशाखमास	माधवः	भानुः	मोहिनी	मधुसूदनः
३	ज्येष्ठमास	शुक्रः	इन्द्रः	पद्माक्षी	त्रिविक्रमः
४	आषाढमास	शुचिः	रविः	कमला	वामनः
५	श्रावणमास	नभः	गभस्तिः	कांतिमती	श्रीधरः
६	भाद्रपदमास	नभस्यः	यमः	अपराजिता	हृषीकेशः
७	आश्विनमास	इषः	सुवर्णरेताः	पद्मावती	पद्मनाभः
८	कार्तिकमास	ऊर्जः	दिवाकरः	राधा	दामोदरः
९	मार्गशीर्षमा	सहाः	मित्रः	विशालाक्षी	केशवः
१०	पौषमास	सहस्यः	विष्णुः	लक्ष्मी	नारायणः
११	माघमास	तपाः	अरुणः	रुक्मिणी	माधवः
१२	फाल्गुनमास	तपस्यः	सूर्यः	धात्री	गोविंदः

मधुस्तथा माधवसंज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चाथ नभो नभस्यः ।। तथेष ऊर्जश्च सहाः सहस्यस्तपस्तपस्यश्च यथाक्रमेण ।।२२।। अरुणो माघमासे तु सूर्यो वै फाल्गुने तथा ।। चैत्रमासे तु वेदांगो भानुर्वैशाख एव च ।।२३।। ज्येष्ठ मासे तपेदिन्द्र आषाढे तपते रविः ।। गभस्तिः श्रावणे मासे यमो भाद्रपदे तथा ।।२४।। सुवर्णरेताश्वयुजि कार्त्तिके च दिवाकरः ।। मार्गशीर्षे तपेन्मित्रः पौषे विष्णुः सनातनः ।। इत्येते द्वादशादित्या मासनामान्यनुक्रमात् ।।२५।। केशवं मार्गशीर्षे तु पौषे नारायणं विदुः ।। माधवं माघमासे तु गोविन्दमथ फाल्गुने ।।२६।। चैत्रे विष्णुं तथा विद्याद्वैशाखे मधुसूदनम् ।। त्रिविक्रमं तथा ज्येष्ठे आषाढे वामनं विदुः ।।२७।। श्रावणे श्रीधरं विद्धि हृषीकेशं तु भाद्रके ।। आश्विने पद्मनाभं च ऊर्जे दामोदरं विदुः।।२८।। मार्गशीर्षे विशालाक्षी पौषे लक्ष्मीश्च देवता ।। माघे तु रुक्मिणी प्रोक्ता फाल्गुने धात्रिनामका ।।२९।। चैत्रेमासि रमादेवी वैशाखे मोहिनी तथा ।। पद्माक्षीज्येष्ठमासेतु आषाढे कमलेति च ।।३०।। कान्तीमती श्रावणे च भाद्रे तु अपराजिता ।। पद्मावती आश्विने तु राधादेवी तु कार्तिके ।।३१।।

वार अनुसार मासफल

पञ्चार्कवासरे रोगः पञ्चभौमे महद्भयम् ।।
पञ्चार्किवारा दुर्भिक्षं शेषा वाराः शुभप्रदाः ।। ३२ ।।

टीका—एक महीनेमें पांच रविवार पड़ें तो रोग उत्पन्न हों और ५ भौमवार पड़ने से अधिक भय उपजे और ५ शनिवारसे दुर्भिक्ष हो और शेष वार ५ पड़ें तो वे शुभदायक हों ।। ३२ ।।

पक्ष

पूर्वापरं मासदलं हि पक्षौ पूर्वापरौ तौ सितनीलसंज्ञौ ।।
पूर्वास्तु दैवश्च परश्च पित्र्यः केचित्तु कृष्णे सितपञ्चमीतः ।।
आदौ शुक्लः प्रवक्तव्यः केचित् कृष्णेऽपि मासके ।। ३३ ।।

टीका—शुक्ल प्रतिपदासे पूर्णमासीतक शुक्लपक्ष और वदी प्रतिपदासे अमावास्या तक कृष्णपक्ष होता है । शुक्लपक्ष देवताओंका और कृष्णपक्ष पितरोंका होता है ।। दूसरा भेद-शुदी पंचमीसे लेकर वदी ५ तक शुक्लपक्ष जानिये पहिले शुक्लपक्ष तदनंतर कृष्ण जो अमावास्याको मास पूरा होता हो तो प्रथम कृष्ण पक्ष उसके बाद शुक्ल और कदाचित् पूर्णिमाको मासांत हो तो ये दोनों पक्ष देश अनुसार प्रचलित हैं ।। ३३ ।।

अधिक मास

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।।
घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिकमासकः ।। ३४ ।।

टीका--३२ महीने १५ दिवस ४ घडी बीत जानेपर्यंत अधिकमासका संभव होता है ।। ३४ ।।

शाके बाणकरांककविरहिते नन्देन्दुभिर्भाजिते
शेषा वह्निमधौ च माधवशिवे ज्येष्ठे वरे चाष्टके ।
आषाढे नृपतौ नभश्च शरके भाद्रे च विश्वांशके
नेत्रे चाश्विनकेऽधिमाससमुदिते शेषेऽन्यके स्यान्न हि ।।३५।।

टीका---वर्तमान शाकके अंकमें ९२५ हीन करो और शेष अंकमें १९ का भाग दो जो शेष ३ रहें तो अधिक चैत्रमास जानिये और ११ शेष रहे तो वैशाख और जो ० ० । ० ८ बचें तो ज्येष्ठमास अधिक होगा और जो १६ शेष रहे तो आषाढ़ अधिक होगा और जो ५ बचें तो श्रावण अधिक जानना और १३ शेष रहें तो दो भाद्रपद होंगे और जो २ शेष रहें तो आश्विनमासकी वृद्धि होगी और अंश शेष रहनेसे कोई मास अधिक नहीं होगा ।। ३५ ।। (यह विवेचन स्थूल है)

क्षयमास

असंक्रांतिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद्द्विसंक्रांतिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च।।३६।।

टीका---दो अमावास्याके बीचमें संक्रांति न हो तो वह अधिकमास होता है दो अमावास्याके बीचमें कदाचित् दो संक्रांति हों तो क्षयमास जानना और जो कार्तिक आदि ३ मास क्षय होते हें और जिस संवत्में क्षयमास होता है उसी संवत्में अधिकमास २ होंगे इन सब श्लोकोंका आशय ग्रहण करके सूर्य चंद्रमाका स्पर्श मोक्षसहित अगले पृष्ठपर बने चक्रोंमें देखलेना चाहिये ।। ३६ ।।

सिद्धांतशिरोमणौ

क्षयमासविचार

गतोऽब्ध्यद्रिनंदैर्मिते शाककाले तिथीशैर्भविष्यत्यथांगाक्षसूर्यैः ।।
गजाद्यग्नि भूमिस्तथा प्रायशोयं कुवेदेंदुवर्षैः क्वचिद्गोकुभिश्च ।।३७।।

टीका---पहिले जिस संवत्में क्षयमास पड़े तो उसके १४१ वर्षबाद फिर होता है इससे आगे १९ वर्षमें या इससे बाहर इसके मध्यम जो ९४७ के संवत् क्षयमास हो तो फिर आगे १११५। १२५६ । १३७८ में पड़ेगा और इसके बाद १४१ और १९ वर्षके अंतरसे क्षय-मासका संभव जानना चाहिये ।। ३७ ।।

संवत्सर फल	नामसंख्या अंकोंके जो शेषफलवचे	अधिपति	अधिकमास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
१ शे. ३ शुभ	१९३५ विकृति श. १८००	विष्णुअ धिपति त्वाष्ट्र	शेष १ नास्ति	श्रावण १५ चंद्र स्प. ५२। १७ मो २।३१	प्रकृतिर्विकृतिंयातिविकृतिंप्रकृतिस्तथा॥ तथा पिसुखिनो लोकाश्चास्मिन् विकृतिवत्सरे ॥
२ शे. ५ सुभि.	१९३६ खर शाके १८०१	विष्णुअ धिपति त्वाष्ट्र	आश्विन शेष २	श्रा.कृ.३०मे.सू.पी. शु. १५ चं. स्पर्श३३।५२ मो. ३८।१८	खराब्देनिःस्वनालोका भन्योन्यसमरोत्सुकाः॥ मध्यमावृष्टिरत्युग्रं रोगैर्भूयात्प्रकंपनं ॥
३ शे. ० पीडा	१९३७ श. १८०२ नंदन ६	विष्णुअ धिपति अहिर्बुध्न्य.	चैत्रसंभ व शेष३ भब्दांशे	ज्ये.शु.१५चं.प्र.स्प.३१ मो.३८मार्ग.शु. १५चं. स्प. २८।३४ मो. ३७/२२	नंदनाब्दे सदापृथ्वी बहुसस्यार्घवृष्टयः ॥ आनंदोप्यखलानां च जंतूनांसमहीभुजाम् ॥
४ शे. २ महर्घ.	सं. १९३८ श. १८०३ विजय	विष्णुअ धिपति अहिर्बु०	नास्ति शेष४	मार्ग.शु.१५ चं. स्प.३८।८ मो. ४१। २२ उत्तरआशा	विजयाब्दे तु राजानः सदाविजयकांक्षिणः सुखिनोजंतवः सर्वेबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥
५ शे. ४ दुर्भि.	सं. १९३९ श. १८०४ जय	वि. अ. अहिर्बु.	श्राव. शेष ५	ज्येष्ठ कृ.३०स्प. १५। ५८ मोक्ष २३।५७ संभवदृष्टिनास्ति	जयमंगलघोषाद्यैर्धरणीभातिसर्वदा ॥ जया-ब्दे धरणीनाथाः संग्रामजयकांक्षिणः ॥
६ शे. ६ सम	सं. १९४० श. १८०५ मन्मथ	वि. अ. अहिर्बु.	नास्ति शेष ६	०	मन्मथाब्देजनाःसर्वे तस्करारतिलोलुपाः ॥ शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवाधरा ॥
७ शे. १ दुर्भि.	सं. १९४१ श १८०६ दुर्मुख	वि. अ. अहिर्बु.	नास्ति शेष ७	वै.शु. १५चं.प्र.दृष्टिना स्तिआ.शु. १५ चं.स्प. ४५।२० मो. ४७।२४	दुर्मुखाब्देमध्यवृष्टिरीतिचौराकुलाधरा॥महा-वैरामहीनाथा वीरवारणवाजिभिः ॥
८ शे. ३ सम	सं. १९४२ श. १८०७ हेमलंब	वि. अ. पितृ	ज्येष्ठ. शेष ८	वै. शु. १५ चं. स्प. ३४।५० मो. ४२।५८	हेमलंबेत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ मा-तिभूर्भूपतिक्ष्मांभाखड्गविद्युल्लतादिभिः ॥
९ शे. ५ दुर्भि.	सं. १९४३ श. १८०८ विलंबी	वि. १२ पितर	नास्ति शेष ९	माघशुक्ल १५ चंद्रग्रहणसंभव दृष्टिनास्ति	विलंबवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः॥ प्रजा-पीडात्वनर्घत्वंतथापिसुखिनोजनाः ॥
१० शे. ० पीडा	सं. १९४४ श. १८०९ विकारी	वि. १३ पितर	नास्ति शेष१०	श्राव.१५चं.स्प.४३।६ भा. ३० ग्र. सू. ९।४८मो. २२।४४	विकार्यब्देखिलालोकाःसरोगावृष्टिपीडिताः॥ पूर्वसस्यफलंस्वल्पं बहुलंचापरंफलम् ॥
११ शे. २ सुभि.	सं. १९४५ श. १८१० शर्वरी	वि. १४ पितर	वैशा. शेष ११	मा.१५ग्र.स्प४९।५२ मो.५९।१२ सं. १९।४५ नास्ति	शर्वरीवत्सरेपूर्णा धरासस्यार्थवृष्टिभिः॥जना-श्चसुखिनःसर्वेराजानःस्युर्विवैरिणः ॥
१२ शे० ४ दुर्भिक्ष	सं. १९४६ श. १८११ प्लव	वि. १५ पितर	नास्ति शेष १२	आषाढ शु. १५ चं ग्र. स्प. ४९।१३ मोक्ष ५६।४०	प्लवाब्देनिखिलाधात्रीवृष्टिभिःप्रवसांतिभाः॥रो-गाकुलात्वीतिभीतिः संपूर्णवत्सरेफलम् ॥
१३ शे. ६ शुभ	सं १९४७ शकः १८१२ शुभकृत्	विष्णु १६ विश्वेदेवा	भाद्रप. शेष १३	आ.३०सू.स्प. २२।४४ मो.२९।५७का.चं.स्प. २६।२५ मो. ३०।४७	शुभकृद्वत्सरेपृथ्वी राजते विविधोत्सवैः ॥ आतंकचौराभयदाराजानःसमरोत्सुकाः ॥
१४ शे. १ दुर्भि.	सं. १९४८ शकः १८१२ शोभन	विष्णु १७ विश्वेदेवा	शेष १४ नास्ति	वैशा.१५ चं. स्प.४१। १६ मो. ५० का.१५ चं. स्प. ५२।५७	शोभनेवत्सरेधात्री प्रजानांरोगशोकदा ॥ त-थापिसुखिनोलोकाबहुसस्यार्घवृष्टयः ॥

संवत्सर फल	शेषफलवचे अंकोकेजो नामसंख्या	अधिपति	अधिकमास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
१५ शेष ३ सम	सं. १९४९ शक:१८१४ क्रोधी	विष्णु १८ विश्वेदेवा	शेष १५ नास्ति	वै.शु.१५चं.स्प५१।४६ का. शु. १५ चं. स्प. ३२ मो. ४०।४४	क्रोध्यब्देत्वखिलाल्लोकाः क्रोधलाभपरायणाः। इति दोषेणसततंमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥ ९.
१६ शेष ५ दुर्भि.	सं. १९५० शक:१८१५ विश्वावसु	विष्णु १९ विश्वेदेवा	आषाढ शेष १६	फा.शु१५चंस्प३१।३१ मो. ३५।०चै.कृ. ३० सू.स्प१।२७मो.७।१९	अब्देविश्वावसोःशश्वद्घोररोगाधरासुच। सस्यार्घवृष्टयोमध्याभूपालानातिभूतयः ॥
१७ शेष ० पीडा	सं. १९५१ शक:१८१६ पराभव	विष्णु २० विश्वेदेवा	शे १७ नास्ति	नास्ति	पराभवाब्देराजास्यात् सपरंसहशत्रुभिः। आ- मयक्षुद्रसस्यातिप्रभूतान्यल्पवृष्टयः ॥
१८ शेष २ सम	सं. १९५२ शक: १८१७ प्लवंग	विष्णु शिव चंद्रमा	शेष १८ नास्ति	फा.शु. १५ भृ. चं. प्र. स्प. ४१।४ मो ४५।५४	प्लवंगाब्देमध्यवृष्टी रोगचौराकुलाधरा । अ- न्योन्यसमरेभूपाःशत्रुभिर्हृतभूमयः ॥
१९ शेष ४ दुर्भि.	सं. १९५३ शक:१८१८ कीलक	शिव अधिपति चंद्रमा	ज्येष्ठ ०	०	कीलकाब्देत्वीतिभीतिः प्रजाक्षोभनृपाह्वयौ। तथापिवर्द्धतेलोकः समधान्यार्घवृष्टिभिः ॥
२० शेष ६ सम	सं. १९५४ शक:१८१९ सौम्य	शिव ३ चंद्रमा	शेष १ नास्ति	पौ.शु१५चं.स्प२६/२९मो. १९/६मा.कृ.३०श.सू.स्प १३।५१ मो.२०।२६	सौम्याब्देत्वखिलालोका बहुसस्यार्घवृष्टिभिः। विवैरिणोधराधीशाविप्राश्चांध्यपरंपराः ॥
२१ शेष १ दुर्भि.	सं १९५५ शक:१८२० साधारण	शिव अधिप. चंद्रमा	आश्विन २ ०	आ.१५र.चं.स्प५०मो. ५८।२२मार्ग.१५भौ. चं.स्प४८।२८मो.५७/१२	साधारणाब्देवृष्टयर्द्धभयंचमारणेमनः । मध्य- संपद्धराधीश प्रजाःस्युः स्वस्थचेतसः॥
२२ शेष ३ सम	सं. १९५६ शक:१८२१ विरोधक	शिव ५ चंद्रमा	चैत्र ३ संभव अंतमे	ज्ये.१५भृ.चं.प्र.स्प३१/६८ मो.३५/३१मार्ग.१५श.स्प. ५३।४०मो.५७।२६	विरोधकृद्वत्सरेतुपरस्परविरोधिनः । सर्वे जनानृपाश्चैवमध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
२३ शेष ५ सम	सं. १९५७ शक:१८२२ परिधावी	वि. शि. ६ अग्नि	शेष ० ४	०	भूपाहवोमहारोगो मध्यसस्यार्घवृष्टयः । दुः- खिनोजंतवःसर्वेवत्सरेपरिधाविनः ॥
२४ शेष ० पीडा	सं. १९५८ शक:१८२३ प्रमाथी	शिव ७ अग्नि	० श्रावण ५	१ग्रह.सू. ३० चै. स्प. ७।३२ मो. १२।२७	प्रमाथीवत्सरेतत्रमध्यसस्यार्घवृष्टयः । प्रजा- नांजीवनेदुःखंसमात्सर्याःक्षितीश्वराः ॥
२५ शेष २ सुभिक्ष	सं. १९५९ शक:१८२४ आनंद	शिव ८ अग्नि	० ६	१ ग्रह. चं.चैत्र १५ भौम स्प. ४०।२२ मोक्ष ४२।४८	आनंदाब्देखिलालोकाः सर्वदानंदचेतसः।रा- जानः सुखिनः सर्वेबहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
२६ शेष ४ सुभिक्ष	सं. १९६० शक:१८२५ राक्षस	वि. शि. अग्नि	७ नास्ति	२प्र.चै.शु१५श.स्प२६/२३ मो.२।४५आ.शु१५स्प ३१।२मो. २९।१०	स्वस्वकार्येरताः सर्वेमध्यसस्यार्घवृष्टयः । रा- क्षसाब्देखिलालोकाराक्षसाइवनिष्क्रियाः ॥
२७ शेष ४ सम	सं. १९६१ शक:१८२६ नल	वि. शि. अग्नि	८ ज्येष्ठ	१ प्र. मा.शु.१५ र. स्प.४०।३९मो.४६। ५९	नलाब्देमध्यसस्यार्घवृष्टिभिःप्रवराधरा । नृप- संक्षोभसंजाताभूरितस्करभीतयः ॥
२८ शेष ६ दुर्भिक्ष	सं. १९६२ शक:१८२७ पिंगल	वि. शि. अश्वि. कुमार	नास्ति	३प्र.ना. श्रा.१५स्प २७।० मा. ३०।११	पिंगलाब्देत्वीतिभीतिमध्यसस्यार्घवृष्टयः।रा- जानोविक्रमाक्रांताभुंजतेशत्रुमेदिनीम् ॥ १०

[illegible]-स्सर फल	शेषफलवचे अंकोंकेजो नामसंख्या	आधिपाति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंकेफल ॥
२९ शेष१ सम	सं. १९६३ शकः १८२८ काल	वि. शि. अश्वि. कुमार	१० नास्ति	क्रा.३०सूस्प.९।३६मो १४।२४मा.१९मं. स्प. २५।२४ मों.३०।२४	वत्सरे कालयुक्ताख्ये सुखिनःसर्वजंतवः।स-न्त्यथापिचसस्यानिप्रचुराणितथागदाः ॥
३० शेष३ सुभिक्ष	सं. १९६४ शकः १८२९ सिद्धार्थ	वि.शि. आश्वि कुमार	११ वैशाख	ग्रहणंनास्ति	सिद्धार्थवत्सरेभूपो दानवैराग्ययुक्प्रजाः। व कलावसुधाभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
३१ शेष० पीडा	सं १९६५ शकः १८३० रौद्र	वि.शि. अश्वि कुमार १४	१२ नास्ति	प्र.मार्ग.शु.१५चं. स्प. ४८।२०मो. ५१।३०	रौद्राब्देनृपसंभूतक्षोभक्लेशसभागिने । सव-तंत्वखिलालोकामध्यसस्यार्घवृष्टयः ॥
३२ शेष२ सुभिक्ष	सं. १९६६ शकः १८३१ दुर्मति	वि.शि. अश्वि. कुमार	१३ भाद्र.	१ प्र. ज्ये. शु. १५भू. स्प. ५९।३मो.७।४३	दुर्मत्यब्देखिलालोका भूपादुर्मतयःसदा । तथापिसुखिनःसर्वे संग्रामाःसंतिचेदपि ॥
३३ शेष४ दुर्भिक्ष	सं. १९६७ शकः १८३२ दुंदुभि	वि.शि. १६ भग	१४ नास्ति	१ प्र. का.शु. १५ बु. स्प. ५३।३७ मोक्ष ५६।३७	सर्वसस्ययुताधात्री पालिताधरणीधरैः।स र्वदेशविनाशःस्यात्तत्रदुंदुभिवत्सरे ॥
३४ शेष६ सम	सं. १९६८ शकः १८३३ रुधिरोद्गारी	शि.वि. १७ भग २	१५ नास्ति	का.कृ.३० स्प.५९। २६ मो. ४।५०	आहवेनिहिताःसर्वेभूपारोगैस्तथाजनाः । यथा कथंचिज्जीवंतिरुधिरोद्गारिवत्सरे ।
३५ शेष१ दुर्भिक्ष	सं. १९६९ शकः १८३४ रक्ताक्षी	शि. वि. १८ भग	१६ आषा.	चं.चै.१५सो.स्प.५१मो. ५६ चै.३०बु. स्प२९। ०मो. ३३।३१	रक्ताक्षिवत्सरेसस्यवृद्धिर्वृष्टिरनुत्तमा । प्रेक्षंते सर्वदान्योन्यंराजानोरक्तलोचनं ॥
३६ शेष३ सं. १९	सं. १९७० शकः १८३५ क्रोधन	१७ ना. भग	१७ नास्ति	फा. १५ स्प.२२।२० चं.भा. १५ स्प. २४।९ मोक्ष ३२।५९	क्रोधनाब्देमध्यवृष्टिः पूर्वदेशेचवृष्टयः। संपूर्ण-मितरत्सर्वं भूपाःक्रोधपरायणाः ॥
३७ शेष३ सं. २०	सं. १९७१ शकः १८३६ क्षय	शि. वि. २० भग ५	१८ नास्ति	सू.भा. ३० भृ.स्प.३०। ३८मो३५।२८भा.१५ भृ.स्प२५।१मो३३।१६	कार्पासगंधतैलेक्षुमधुसस्यविनाशनं । क्षय-माणाश्चापिनराजीवंतिक्षयवत्सरे ॥
३८ शेष५ पीडा	सं. १९७२ शकः १८३७ प्रभव	वि १ ब्रह्मा १	०० ज्येष्ठ	नास्ति ०	काश्यप्यामीतयश्चाग्निकोपश्चव्याधयोभुवि । प्रभवाब्देमंदवृष्टिस्तथापिसुखिनोजनाः ॥
३९ शेष२ सुभिक्ष	सं. १९७३ शकः १८३८ विभव	ब्रह्मा २ विष्णु २	१ नास्ति	नास्ति १	दंडनीतिपराख्या बहुसस्यार्घवृष्टयः। विभवा-ब्देखिलालोकाः सुखिनःस्युर्विवैरिणः ॥
४० शेष४ दुर्भिक्ष	सं. १९७४ शकः १८३९ शुक्ल	ब्रह्मा ३ विष्णु ३	२ आश्वि.	१ चं. आषा. शु. १५ खग्रासस्पर्श ४९।५५ मो. ५९।२९	शुक्लाब्देनिखिलालोकाः सुखिनःस्वजनैःसह । राजानोयुद्धनिरताःपरस्परजयैषिणः ॥
४१ शेष० सम६	सं. १९७५ शकः १८४० प्रमोद	ब्रह्मा ४ विष्णु ४	३ चैत्र संभव	नास्ति	प्रमोदाब्देप्रमोदंतिराजानोनिखिलाजनाः।वी-तरोगावीतभयाईतिशत्रुविनाशकाः ॥
४२ शेष६ १५ सुभिक्ष	सं. १९७६ शकः १८४१ प्रजापति	ब्रह्मा ५ विष्णु ५	० ४	नास्ति	नचलंतिचलालोकाः स्वस्वमार्गात्कथंचन । अब्देप्रजापतौनूनं बहुसस्यार्घवृष्टयः ।

संवत्सर फल	शेषफलवचे अंकोंकेजो नामसंख्या	अधिपति	अधिक मास	सूर्यचंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल ॥
४३ शेष ५ सम ७	सं. १९७७ शकः १८४२ अंगिरा	ब्रह्मा ६ बृहस्पति	५ श्रावण	चं.ग्र.वै. शु. १५चं.स्प. ५८।३मो. ६।४७ आ. ११बु. स्प.३२।९	अन्नाद्यंभुज्यतेशश्वज्जनैरतिथिभिःसह। अंगिराब्देखिलालोकाभूपाश्वकलहोत्सुकाः ॥
४४ शेष ५ सुभि ७	सं. १९७८ शकः १८४३ श्रीमुख	ब्रह्मा बृहस्पति २	६ नास्ति	आश्वि. १५ र.स्प. ४९।३१मो.१७।४९ चंद्रग्रहण	श्रीमुखाब्देखिलाधात्रीबहुसस्यार्घसंयुता। अध्वरेनिरताविप्रावीतरोगाविवैरिणः ॥
४५ शेष ० पीडा ०	स. १९७९ शकः १८४४ भाव	ब्रह्मा बृहस्पति ३	७ नास्ति	आश्वि.कृ.३० गु.सू. स्प.५।५मो. १०।११ ३० आषा.	भावाब्दे प्रचुरारोगा मध्यसस्यार्घवृष्टयः जानोयुद्धनिरतास्तथापिसुखिनोजनाः ॥
४६ शेष २ शुभ.९	सं. १९८० शकः १८४५ युवा	ब्रह्मा गुरु ४	८ ज्येष्ठ	माघ. १५ बु. खग्रास ५।४७ स्प. ३२।३८ मो. ४१।४८ चं. ग्र.	प्रभूतपयसोगावः सुखिनस्सर्वजंतवः। सर्वैकामक्रियायुक्तो युवाब्देयुवतीजनः ॥
४७ शेष ४ १०	सं. १९८१ शकः १८४६ धाता	ब्रह्मा बृहस्पति ५	९ नास्ति	श्रा.१५शु.५०स्प. ४६ मो.५५ख.मा.१५र.स्प ४६।१मो.५१।३६चं.ग्र	धातृवर्षेखिलाःक्ष्मेशाः सदायुद्धपरायणाः।संपूर्णाधरणीभाति बहुसस्यार्घवृष्टिभिः ॥
४८ शेष ६ सम ११	सं. १९८२ शकः १८४७ ईश्वर	ब्रह्मा इंद्र १	१० नास्ति	श्रा. १५भौ.दृष्टि. ना. माघ३०गु.स्प.१२।१७ मो.१५।३३सू.ग्रहण	ईश्वराब्देखिलाजंतुधात्रीधात्रीवसर्वदा। पोषयत्यतुलेवान्नफलमाषैस्तुव्रीहिभिः
४९ शेष ६ दु.१२	सं. १९८३ शकः १८४८ बहुधान्य	ब्रह्मा इंद्र १२	११ वैशाख	० ० ०	अनीतिरतुलावृष्टिर्बहुधान्याख्यवत्सरे। विविधैर्धान्यनिचयः सुखपूर्णाखिलाधरा ॥
५० शेष ३ सम १३	सं. १९८४ शकः १८४९ प्रमाथी	ब्रम्हा इंद्र ०	१२ नास्ति	० ० ०	नमुंचतिपयोवाहःकुत्रचित्कुत्रचिज्जलम्। मध्यमावृष्टिरर्घश्चनूनमब्दे प्रमाथिनि ॥
५१ शेष ५ सुभिक्ष	सं. १९८५ शकः १८५० विक्रम	ब्रह्मा १४ इंद्र	१३ भाद्रपद	ज्ये.शु.१५ र.संभवअदृष्टिका.३० चं.स्प.१६।३७मो. २१।२१चं. सू.	विक्रमाब्देधराधीशा विक्रमाक्रांतभूमयः। सर्वत्रसर्वदामेघामुंचंति प्रचुरंजलम् ॥
५२ शेष ० पी. १५	सं. १९८६ शकः १८५१ वृष	ब्रह्मा १५ इंद्र	१४ नास्ति	वै. ३०गु. संभव ग्रहणं नास्ति सू	वृषाब्देनिखिलाःक्ष्मेशायुद्धयंतिवृषभाइव। विद्याप्रसक्ताविप्रेन्द्राः पज्यंतेसततंभुवाम् ।
५३ शेष २ १६सम	सं .१९८७ शकः १८५२ चित्रभानु	ब्रह्मा १६ अग्नि	१५ नास्ति	० ०	वित्तार्घवृष्टिसस्याद्यैर्विचित्रानिखिलाधरा। निराकुलाखिलालोकाश्चित्रभान्वाख्यवत्सरे ॥
५४ शेष ४ १७ दु.	सं. १९८८ शकः १८५३ सुभानु	ब्रह्मा १७ अग्नि	१६ आषा.	वै.१५स्प४८।३मो.५३ मा.१५स्प४०मो. ४९ फा.१६स्प१५मो२३ख	सुभानुवत्सरेभूमिर्भूमिपानांचविग्रहः। भातिभूर्भरिसस्याढ्या भयंकरभुजंगमाः ॥
५५ शेष ६ १७सम	सं. १९८९ शक १८५४ तारण	ब्रह्मा १८ अग्नि ३	१७ नास्ति	भा.५५ बु. स्प ० ४४मो.५३।० ख. चंद्रग्रहण	कस्यचिन्निखिलालोकास्तरंतिप्रातिपन्नताम्। नृपाहुंवक्ष्यताद्रोगा भैषज्यैस्तारणाब्दके ॥
५६ शेष १ १९ दु	स. १९९० शकः १८५५ पार्थिव	ब्रह्मा अग्नि ०	१८ ०	मा.३० सो.स्प. ७ मो ५४।३४फा.३०संभव दृष्टिनास्ति सू. २	पार्थिवाब्देतुराजानः सुखिनःसुप्रजाश्चथ। बहुभिःफलपुष्पाद्यैर्विविधैश्चपयोधरैः ॥

युग-ध्वर-काल	नामसंख्या अंकोंकेजो ईसवीसनपलखे	वर्षपति	अधिक मास	सूर्य चंद्र ग्रहण	प्रभवादिसंवत्सरोंके फल.
५७ [illegible] १ [illegible]	ई. १९९१ शकः १८५६ व्यय	ब्रह्मा ब्रह्मि ५	०० ज्येष्ठ	आषा. १५रव. २७घटी. १५पौ. १५रव. २५घटी. ३७ खग्रास ४।१८	व्ययाब्देमिथिलालोका बहुव्ययपराश्रयाः । विरमंतोहतुरमैरथैर्भूतानिसर्वदा ॥
५८ [illegible] ५ भूमि.	ई. १९९२ शकः १८५७ सर्वजित	विष्णु त्वाष्ट्र	१ ०	पौ. १५ बुधे स्व. १५ ४३ घटी. ४७।० चंद्रग्रहण	सर्वजिद्वत्सरेसर्वे जनाश्चिदशराश्रिभाः । राजानोविलयंयांति भीमसंग्रामभूमिपाः ॥
५९ [illegible] ० [illegible]	ई. १९९३ शकः १८५८ सर्वधारी	विष्णु त्वाष्ट्र	२ आश्वि.	आ. १०रव. ९।४८घटी. १७आ. १५रव ४०।८ मोक्ष ४३।२	सर्वधार्यब्दकेभूपाः प्रजापालनतत्पराः । प्रशांतवैराःसर्वत्र बहुसस्यार्घवृद्धयः ॥
६० [illegible] २ [illegible]	ई. १९९४ शकः १८५९ विरोधी	विष्णु त्वाष्ट्र	३ संभव	ग्रहणंनास्ति ०	विरोधीवत्सरेभूपाः परस्परविरोधिनः । भूरिभूरियुताभूमिर्भूरिकादिसमाकुलाः ॥

तिथिप्रकरण

मासभाच्चांद्रभं यावत् गणयेत्तावदेव तु ।।
यावंति गणनाङ्कानि तावत्यस्तिथयः क्रमात् ।।३८।।

टीका—चैत्रादि बारह मासोंके नाम और उन नामोंके नक्षत्रसे मासनक्षत्र जानिये, जैसे–चैत्रका चित्रा विशाखा ज्येष्ठा पूर्वषाढा श्रवण पूर्वाभाद्रपदा अश्विनी कृत्तिका मृगशिर पुष्य मघा पूर्वाफाल्गुनी इस प्रकार नक्षत्रोंमें क्रमसे जानिये, इन मासनक्षत्रसे दिनके चंद्रनक्षत्र जहां तक हो वहांतक गिनना, गिननेसे जितनी संख्या आये उतनीही क्रमसे तिथि जानना। उदाहरण–किसीने पूछा कि चैत्र कृष्णमें अनुराधानक्षत्रके दिन कौन तिथि है, उत्तर–चैत्रामासमें मासनक्षत्र चित्रा है और वहां चांद्रनक्षत्र अनुराधा है इसलिये चित्रा अनुराधातक गिननेसे संख्या ४ आई इससे चैत्रकृष्णमें अनुराधाके दिन तृतीया तिथि है परंतु पूर्णिमांत महीनेसे गणित बरावर होता है ।। ३८ ।।

तिथिसंज्ञापरिज्ञानम्

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीयाकार्यसाधिनी।।तृतीयारोग्यदात्री च हानिदाच चतुर्थिका ।।३९।। शुभा तु पंचमी ज्ञेया षष्ठिका त्वशुभा मता ।। सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी ।।४०।। मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्यदा दशमी तथा ।। एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ।।४१।। त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी ।। पुष्टिदा पौर्णिमा ज्ञेया त्वमावस्याऽशुभा तिथिः ।।४२।। वृद्धिश्चाथ सुमंगलाथ सबला प्रोक्ता खला श्रीमती कीर्तिर्मित्रपदा तथा बलवती चोग्रा क्रमाद्धर्मिणी ।। नंदाख्या हि यशोवती जयकरी क्रूरा हि सौम्या तिथिर्नाम्ना तुल्यफलं क्रमात् प्रतिपदो दर्शस्त्वमासंज्ञकः ।।४३।। नंदा सिते सोमसुते च भद्रा कुजे जया चैव शनौ च रिक्ता ।। पूर्णा गुरौ ताश्च मृता कुजार्के सितांबुजे ज्ञे च गुरौशनिः स्युः ।।४४।।

इन श्लोकोंकी टीका चक्रमें लिखी है

स्वामी

वह्निर्विरिंचो गिरिजा गणेशः फणी विशाखो दिनकृन्महेशः ।। दुर्गान्तकौ विष्णुहरी स्मरश्च शर्वः शशी चेति पुराणदृष्टः ।। ४५ ।। अमायाः पितरः प्रोक्तास्तिथीनामधिपाः क्रमात् ।।

संज्ञा–नंदा न भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति सर्वास्तिथयः क्रमात्स्युः ।। कनिष्ठ मध्येष्टफलाश्च शुक्ले कृष्णे भवंत्युत्तममध्यहीनाः ।।४६।। वर्जित–कूष्मांडी बृहतीफलानि लवणं वर्ज्यं तिलाम्लं तथा तैलं चामलकं दिवं प्रवसता शीर्षं कपालांत्रकम् । निष्पावाश्च मसूरिकाफलमथो वृंताकसंज्ञं मधु द्यूतं स्त्रीगमनं क्रमात्प्रतिपदादिष्वेवमाषोडश ।।४७।। टीका

ति.	नामातिथि	तिथि०	फल	स्वामी	नाम	शुक्ल	कृष्ण	तिथिपालन न करनेसे
१	वृद्धि	प्रतिपदा	सिद्धि	अग्नि	नंदा	अशुभ	शुभ	कूष्मांड
२	सुमंगला	द्वितीया	कार्यसाध.	ब्रह्मा	भद्रा	अशुभ	शुभ	कटेरीफ.
३	सबला	तृतीया	आरोग्य	गौरी	जया	अशुभ	शुभ	लवण
४	खला	चतुर्थी	हानि	गणेश	रिक्ता	अशुभ	शुभ	तिल
५	श्रीमती	पंचमी	शुभा	सर्प	पूर्णा	अशुभ	शुभ	खटाई
६	कीर्ति	षष्ठी	अशुभा	स्कंद	नंदा	मध्यम	मध्यम	तैल
७	मित्रपदा	सप्तमी	शुभा	सूर्य	भद्रा	मध्यम	मध्यम	आंवला
८	बलावती	अष्टमी	व्याधिना.	शिव	जया	मध्यम	मध्यम	नारियल
९	उग्रा	नवमी	मृत्यु	दुर्गा	रिक्ता	मध्यम	मध्यम	काशीफल
१०	धर्मिणी	दशमी	धनदा	यम	पूर्णा	मध्यम	मध्यम	परवल
११	नंदा	एकादशी	शुभा	विश्वेदे.	नंदा	शुभ	अशुभ	दलिया
१२	यशोवती	द्वादशी	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	जयकरा	त्रयोदशी	सर्वसिद्धि	मदन	जया	शुभ	अशुभ	बैंगन
१४	क्रूरा	चतुर्दशी	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अशुभ	मधु
१५	सौम्या	पूर्णिमा	पुष्टिदा	चंद्र	पूर्णा	शुभ	शुभ	द्यूत
१६	दर्श	अमा०	अशुभा	पितर	०	०	०	स्त्रीसंगम

नंदासु चित्रोत्सववास्तु तंत्रक्षेत्रादिकुर्वीत तथैव नृत्यम् ।। विवाहभूषा-शकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ।।४८।। जया तु संग्रामबलोपयोगी कार्याणि सिध्यन्त्यपि निर्मितानि ।। रिक्तासु विद्वद्वधघातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादिच यांति सिद्धिम् ।।४९।। पूर्णासु मांगल्यविवाहयात्रा सुपौष्टिकं शांतिककर्म कार्यम् ।। सदैव दर्शे पितृकर्म युक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभ मंगलानि ।।५०।।

टीका––पडवा, छठ, एकादशीको नंदा तिथि कहते हैं इसमें आनंदादिक कर्म और देवताओंके उत्साह और गृहसम्बन्धी कार्य गृहस्थल बनाना वस्तु मोल लेना नृत्य संबन्धी गीत वाद्य इत्यादिक कर्म करना चाहिये १ । द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी इनको भद्रा कहते हैं इन तिथियोंमें विवाह गाड़ी सम्बन्धी काम मार्गसम्बन्धी काम पुष्टिक्रिया करनी चाहिये २ । तीज, अष्टमी त्रयोदशीको जया कहते हैं इनमें संग्राम और सेनाके उपयोगी अस्त्र-शस्त्र, ध्वजा, पताका आदि निर्माण करने योग्य है ३ । चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये रिक्ता हैं इनमें विद्वानोंका वध, घातकर्मकी सिद्धि, विषप्रयोग, शस्त्र इत्यादि उग्रकर्म करने योग्य हैं ४ । पञ्चमी, दशमी, पूर्णमासी इन तिथियोंको पूर्णा कहते हैं इनमें विवाह इत्यादि कर्म यात्रा शांतिक पौष्टिक कर्म इत्यादि करने चाहिये और अमावास्याको पितृकर्म करने योग्य हैं ५ ।। ४८ ।। ४९ ।। ५० ।।

अथ वारसंज्ञापरिज्ञान

आदित्यश्चन्द्रमा भौमौ बुधश्चाथ बृहस्पतिः । शुक्रः शनैश्चरश्चैव वासराः परिकीर्तिताः ।।५१।। शिवो दुर्गा गुहो विष्णुः कालब्रह्मेन्द्रसंज्ञकाः । सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः ।।५२।। गुरुश्चंद्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः ।। क्रूरास्तु क्रूरकृत्ये स्युः सदा भौमार्कसूर्यजाः ।।५३।। सूर्यश्चरः स्थिरश्चंद्रो भौमश्चोग्रो बुधः समः ।। लघुर्जीवो मृदुः शुक्रः शनिस्तीक्ष्ण समीरितः ।।५४।।

अष्टदिशाओंके स्वामी

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधिः
बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ।। ५५ ।।

टीका––पूर्वका स्वामी रवि १ आग्नेयका स्वामी शनि २ दक्षिणका स्वामी मंगल ३ नैर्ऋत्यका स्वामी राहु ४ पश्चिमका स्वामी शनि ५ वायव्यका स्वामी चंद्र ६ उत्तराका स्वामी बुध ७ ईशानका स्वामी गुरु ८ इन दिशाओंके स्वामी नवग्रह भी जानिये ।। ५५ ।।

ग्रहोंकी जाति

ब्राह्मणौ जीवशुक्रौ च क्षत्रियौ भौमभास्करौ ।।
सोमसौम्यौ विशौ प्रोक्तौ राहुमन्दौ तथान्त्यजौ ।।५६।।

टीका––गुरु शुक्र ये ब्राह्मण, मंगल रवि ये क्षत्रिय, बुध चंद्र ये वैश्य, राहु केतु और शनि ये शूद्र हैं ।। ५६ ।।

ग्रहोंका वर्ण

रक्तावङ्गारकादित्यौ श्वेतो शुक्रनिशाकरौ ।।
गुरुसौम्यौ पीतवर्णौ शनिराह्वसितौ शुभौ ।।५७।।

टीका—मंगल और सूर्य इनका रंग लाल, चंद्रमा और शुक्र इनका वर्ण श्वेत, गुरु बुध इनका वर्ण पीत, शनि राहु केतु इनका वर्ण कृष्ण है ।। ५७ ।।

वारोंके अनुसार कर्म

रविवारके कर्म

राज्याभिषेकोत्सवयानसेवागोवह्निमन्त्रौषधशस्त्रकर्म ।।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यापि रवौ विदध्यात् ।।५८।।

टीका—राज्याभिषेक गीत वाद्य यान कर्म राजसेवा गाय बैलका लेना देना हवन यज्ञादि मंत्र उपदेश लेना देना औषधिका लेना शस्त्रप्रारंभ सोना तांबा ऊर्णविस्त्र चर्म काष्ठ लेना युद्धप्रसंग और खरीदना-बेचना ये कर्म रविवारको करे ।। ५८ ।।

सोमवार के कर्म

शंखाब्जमुक्तारजतेक्षु भोज्यस्त्रीवृक्षकक्ष्याम्बुविभूषणाद्याः ।।
गीतक्रतु क्षीरविकार शृङ्गी पुष्पाम्बरारम्भणमिन्दुवारे ।।५९।।

टीका—शंख कमल मोती रूपा ऊख भोजन स्त्रीभोग वृक्ष जलादि कर्म अलंकार गाना यज्ञादि गोरस गाय भैंस पुष्प वस्त्र इत्यादिका ग्रहण करना सोमवारको योग्य हैं ।।५९।।

भौमवारके कर्म

भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवध्याभिघाताहवशाठ्य दम्भान् ।।
सेनानिवेशाकरधातु हेमप्रवालरक्तानि कुजे विदध्यात् ।।६०।।

टीका—भेद करना, अनृत, चोरी, विष, अग्नि,शस्त्र, वध नाश, संग्राम कपट सेनाका पडाव खानि धातु सुवर्ण मूंगा रक्तस्राव ये कर्मभौमवारको करे ।। ६० ।।

बुधवारके कर्म

नैपुण्यपुण्याध्ययनंकलाश्च शिल्पादिसेवालिपिलेखनानि ।।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसंधिव्यायामवादाश्चबुधे विधेयाः ।।६१।।

टीका—चातुर्य पुण्य अध्ययन कला शिल्प सेवा लिखना चित्र काढना धातु क्रिया सुवर्णयुक्ति सख्यत्व व्यायाम और वाद करना ये कर्म बुधवारको करना चाहिये ।। ६१ ।।

गुरुवारके कर्म

धर्मक्रिया पौष्टिकयज्ञविद्यामाङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः ।।
रथाश्वभैषज्यविभूषणादिकार्यं विदध्यात्सुरमन्त्रिवारे ।।६२।।

टीका—धर्म करना नवग्रहादि पूजा यज्ञ विद्याभ्यास सुभग वस्त्र गृहकर्म यात्रा रथ अश्व औषधि विभूषण आदि कृत्य गुरुवारको करे ।। ६२ ।।

शुक्रवारके कर्म

स्त्रीगीतिशय्यामणिरत्नगन्धवस्त्रोत्सवालंकरणादिकर्म ।।
भूपण्य गोकोश कृषिक्रियाश्च सिध्यन्ति शुक्रस्य दिने समस्ताः ।।६३।।

टीका—स्त्री गायन शय्या मणि रत्न हीरा गंध वस्त्र उत्साह अलंकार वाणिज्य पृथ्वी दूकान गाय द्रव्य खेती, ये कर्म शुक्रवारको करना चाहिये ।। ६३ ।।

शनिवारके कर्म

लोहाश्मसीसत्रपुशस्त्रदासपापानृतस्तेयविषार्कविद्याम् ।।
गृहप्रवेशद्विपबन्धदीक्षा स्थिरं च कर्मार्किसुतेऽह्निकुर्यात् ।।६४।।

टीका—लोहा पत्थर सीसा जस्त शस्त्र दास पाप अनृतभाषण चोरी विष अर्क काढना गृहप्रवेश हाथी बांधना मन्त्र लेना और स्थिर कर्म इत्यादि शनिवारको करे ।। ६४ ।।

वारोंके देवता अधिदेवताओंके नाम

सूर्यादितः शिवशिवागुहविष्णुकेन्द्रकालाः क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणाम् ।।
वह्न्यम्बुभूमिहरिशक्रशचीविरिञ्चिस्तेषां पुनर्मुनिवरैरधिदेवताश्च ।।६५।।

टीका—शिव पार्वती षडानन विष्णु ब्रह्मा इंद्र काल ये ७ क्रमसे सूर्यादिक वारोंके देवता जानिये अग्नि जल भूमि हरि इंद्र इंद्राणी ब्रह्मा ये ७ सूर्यादिक वारोंके अधिदेवता हैं ।। ६५ ।।

विचार करनेका कालपरिमाण

पतंगसूनोर्विदसाधिपत्यं निशाप्यहश्चैव तु तिग्मभानोः ।
रात्रिद्वयं चैकदिनं च सोमे शेषग्रहाणामुदयप्रवृत्तिः ।।६६।।

टीका—शनैश्चरसे कालका प्रमाण दिन रात्रि अर्थात् अष्ट प्रहरका कहना चाहिये और सूर्यके दिन अर्थात् चार प्रहरका कहना और चंद्रमासे दो रात्रि १ दिनका कहना और शेष ग्रहोंसे उदय प्रवृत्ति अर्थात् उदयसे आठ प्रहरका काल प्रमाण मानना चाहिये ।। ६६ ।।

दोषादोषमाह

न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ दैवेज्यदैवेज्यदिवाकराणाम् ।।
दिवा शशाङ्कार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्दो बुधवारदोषः ।।६७।।

टीका—गुरु शुक्र रवि इन तीन वारोंका रात्रिमें दोष नहीं है और सोम शनि मंगल इन तीन वारोंका दिनको दोष नहीं और बुधवारको सर्वत्र निंदित जानना चाहिये ।। ६७ ।।

कृत्य

सोमसौम्य गुरुशुक्रवासराः सर्वकर्मसु भवन्ति सिद्धिदाः ।।
भानुभौमशनिवासरेषु च प्रोक्तमेव खलु कर्म सिध्यति ।।६८।।

टीका—चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र इन वारोंमें सर्व कर्म सिद्धि जानिये और रवि भौम शनि इनमें उक्त कार्यमात्रकी सिद्धि जानना चाहिये ।। ६८ ।।

तैलाभ्यंगमें शुभाशुभ

रविस्तापं कान्ति वितरति शशी भूमितनयो मृतिं लक्ष्मीं सौम्यः सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम् ।। विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभोगानुगमनं नृणां तैलाभ्यंगात् सपदि कुरुते सूर्यतनयः ।।६९ ।।

टीका—रविवारको तैलाभ्यंग संतापप्रद, सोमवारको कांतिप्रद, मंगलको मृत्युप्रद, बुधवारको लक्ष्मीप्रद, गुरुवारको वित्तनाशक, शुक्रवारको तैल लगानेसे विपत्ति आती है; शनिवारको तैल लगाना संपत्तिका कर्ता है ।। ६९ ।।

वस्त्रपरिधानशुभाशुभ

जीर्णं रवौ सततमम्बुभिरार्द्रमिन्दौ भौमे शुचे बुधदिने च भवेद्धनाय ।। ज्ञानाय मंत्रिणि भृगौ प्रियसंगमाय मन्दे मलाय च नवाम्बरधारणं स्यात् ।।७०।।

टीका—रविवारको नूतन वस्त्र परिधान करनेसे शीघ्र जीर्ण होगा; सोमवारको, अशौच निमित्त स्नानके जलसे सदा आर्द्र ही रहेगा, मंगलके दिन पहननेसे शोकप्रद होगा, बुधवारको धनप्राप्ति, गुरुवारको ज्ञानप्राप्ति, शुक्रवारको मित्रप्राप्ति, शनिवारको पहननेसे मलिन रहेगा ।। ७० ।।

श्मश्रुकर्म

भानुर्मासं क्षपयति तथा सप्त मार्तंडसूनुर्भौमश्चाष्टौ वितरति शुभं बोधनः पञ्चमासान् ।। सप्तैवेन्दुर्दश सुरगुरुः शुक्र एकादशेति प्राहुर्गर्गप्रभृतिमुनयः क्षौरकार्येषु नूनम् ।।७१।।

टीका—रविवारको क्षौर करनेसे १ महीना आयुष्य नाश जानिये, सोमवारको क्षौर करनेसे ७ महीने आयुकी वृद्धि जानिये, मंगलको ८ महीने आयुष्य नाश जानिये, बुधवारको ५ महीने आयुकी वृद्धि जानिये, गुरुवारको १० महीने आयुकी वृद्धि जानिये; शुक्रवारको ११ महीने आयुकी वृद्धि जानिये, शनिवारको ७ मास आयुका नाश जानिये यह गर्ग लल्ल नारदप्रभृति मुनियोंने क्षौरकार्यमें लिखा है ।। ७१ ।।

विद्यारम्भ

विद्यारम्भः सुरगुरुसितज्ञेष्वभीष्टार्थदायी कर्तुश्चायुश्चिरमपि करोत्यंशुमान्मध्यमोऽत्र ।। नीहारांशौ भवति जडता पञ्चता भूमिपुत्रे छायासूनावपि च मुनयः कीर्तयन्त्येवमाद्याः ।।७२।।

टीका—गुरु, शुक्र, बुध, इन तीन वारोंमें विद्यारंभ करनेसे उत्तमविद्या शीघ्रही प्राप्त होती है और चिरंजीवी होता है और रविवार मध्यम है, सोमवारको बुद्धि जड़ होती है, मंगल और शनिवारको विद्यारंभ करनेसे मृत्यु होती है यह नारद गर्गादि मुनियोंने कहा है ।। ७२ ।।

वारोंकेनाम	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
वारोंकेपति	शिव	पार्वती	स्कंध	विष्णु	ब्रह्मा	इन्द्र	काल
देवता	अग्नि	जल	पृथ्वी	हरि	इंद्र	इंद्राणी	ब्रह्मा
विचारयोग्य समय	८ प्रहर	२रात्री ४प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर	८प्रहर
दोषादोष	रात्रिदोष	दिनदोष	दिनदोष	दिनदोष	रात्रिदो.	रात्रिदोष	दिनदोष
कृत्य	उक्तकर्म सिद्ध	सर्वकाम सिद्ध	उक्तकर्म सिद्धि	कर्मसिद्ध	कर्मसि.	कर्मसि.	उक्तकर्म सिद्धि
तैलाभ्यंग	ज्वरप्रद	कांतिप्रद	मृत्युद	लक्ष्मीप्र.	वित्तना.	दुःखद	संपत्तिप्र.
वस्त्र परिधान	जीर्ण होय	सदा गीलारहे	शोक प्राप्ति	धन प्राप्ति	ज्ञान प्राप्ति	इष्ट सन्मान	मलिन रहे
श्मश्रुकर्म	१महीना आ.न्यून	७महीना आ.वृद्धि	८महीना आ.न्यून	५मास आ.वृद्धि	१०मास आ०वृ.	११मास आ०वृ.	७मास आ.न्यू.
विद्यारम्भः	मध्यम	जडत्व	मृत्यु	आयु.वृ. अर्थसि.	तथा	तथा	मृत्यु

नक्षत्रपरिज्ञान

द्विनिघ्नमासस्तिथियुक् विधूनो भशेषितः स्यादुडुशेषसंख्या ।।
मासस्तु शुक्लादित एव बोध्यः कृष्णे द्विहीने मुनयो वदन्ति ।।७३।।

टीका—चैत्रसे लेकर गत मास चलते मास सहित दूने करे और उसमें गत तिथि चलते दिवस समेत मिलाये मास दिन जोड़े और एक घटाये शेषमें सत्ताइसका भाग देनेसे शेष वचे वही नक्षत्रकी संख्या जानिये ।। ७३ ।।

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।। आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततः श्लेषा मघा ततः ।।७४।। पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः ।। हस्तचित्रा तथा स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ।।७५।। अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते ।। पूर्वाषाढो उत्तराषाढस्त्वभिजिच्छ्रवणस्ततः ।। धनिष्ठा शतताराख्यं पूर्वभाद्रपदा ततः ।। उत्तराभाद्रपदश्चैव रेवत्येतानि भानि च ।।७६।।

अथ गमनादौ शुभाशुभनक्षत्र

अश्विनी तु शुभा प्रोक्ता भरणी नाशकारिणी ।। कार्यघ्नी कृत्तिका चोक्ता रोहिणी सिद्धिदा बुधैः ।।७७।। मृगः शुभस्ततश्चार्द्रा मध्यमस्तु पुन-

वंसु ।। पुष्यः शुभः सार्पमघापूर्वाः शुङ्नाशमृत्युदाः ।।७८।। उत्तराहस्तचित्रास्तु विद्यालक्ष्मीशुभप्रदाः ।। स्वातीविशाखे त्वशुभे मैत्रं सर्वार्थसिद्धिदम् ।।७९।। ज्येष्ठा मूलं क्रमात्तोयक्षयनाशार्थहानिदम् ।। विश्वब्रह्मविष्णवश्च बुद्धिवृद्धि सुखप्रदाः ।।८०।। वासवं वरुणं शैवं शुभं भद्रं मृतिप्रदम् ।। उत्तराभाद्रकं श्रीदं रेवती कामदायिका ।।८१।।

नक्षत्रोंके स्वामी

भेशादस्त्रयमाग्निकेन्दुगिरिशाः प्रोक्ता अदित्यङ्गिराःसर्पाः कव्यभुजो भगोर्यमरवी त्वष्टा समीरः क्रमात् ।। इन्द्राग्नी त्वथ मित्र इन्द्रनिर्ऋतिर्नीरं च विश्वेविधिर्वैकुण्ठो वसुपाश्यजैकचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः ।८२।। अधोमुखनक्षत्र।।मूलाग्नेयमघाद्विदैव भरणी सार्पाणिपूर्वात्रयं ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं हि नवकं भानामिदं कीर्तितम् ।। तिर्यङमुखनक्षत्र ।। ज्योष्ठादित्यकराश्विनीमृगशिरः पूषानुराधानिलत्वष्ट्राख्यानि वदन्ति भानि मुनयस्तिर्यङमुखान्येषु च ।। ८३ ।। ऊर्ध्वमुख नक्षत्र ।। पुष्यार्द्रश्रवणोत्तरा शतभिषक् ब्राह्मश्रविष्ठाह्वयान्यूर्ध्वास्यानि नवोदितानि मुनिभिर्धिष्ण्याम्यथैतेषु तु ।। ८४ ।। ध्रुवस्थिरनक्षत्र ।। रोहिणीसहितमुत्तरात्रयं कीर्तयन्ति मुनयो ध्रुवाह्वयम् ।। ८५ ।। मृदुनक्षत्र ।। त्वाष्ट्रमित्र शशिपूषदैवतान्या मनन्ति मुनयो मृदून्यथ ।। ८६ ।। लघु नक्षत्र ।। अश्विनी गुरुभमर्कदैवतं साभिजिल्लघु चतुष्टयं मतम् ।। ८७ ।। तीक्ष्णनक्षत्र ।। मूलशुक्रशिवसार्पदैवतान्युल्लपन्त्यथ च तीक्ष्णसंज्ञया ।।८८।। चरनक्षत्र ।। वैष्णवत्रययुतः पुनर्वसुर्मारुतं च चरपञ्चकं त्विदम् ।।८९।। उग्रनक्षत्र ।। पूर्विकात्रितयमान्तकं मघात्युग्रपञ्चकमिदं जगुर्बुधाः ।। ९० ।। मिश्रनक्षत्र।। हव्यवाहभयुतं द्विदैवतं मित्रसंज्ञमथ मिश्रकर्मसु ।।९१।। चरादिनक्षत्र ।। चरं चलं क्रूरमुशन्ति चोग्रं ध्रुवं स्थिरं दारुणभं च तीक्ष्णम् ।। क्षिप्रं लघुत्वं मृदुमैत्रसंज्ञं साधारणं मिश्रमिति ब्रुवन्ति ।। ९२ ।।

अन्धादिक नक्षत्रसंज्ञा

अन्धकं तदनु मन्दलोचनं मध्यलोचनमतः सुलोचनम् ।।
रोहिणी प्रभृतिभं चतुष्टयं साभिजिच्च गणयेत्पुनः पुनः ।।९३।।

नक्षत्रोंके स्वरूप

तुरगमुखसदृशं योनिरूपं क्षुराभं शकटसममथैणस्योत्तमोङ्गेन तुल्यम् ।। मणिगृहशरचक्रं भाति शालोपमं भं शयनसदृशमन्यच्चात्र पर्यंकरूपम् ।।९४।। हस्ताकारमतश्च मौक्तिकसमं चान्यत् प्रवालोपमं धिष्ण्यं तोरणवत्स्थिते बलिनिभं सत्कुण्डलाभं परम् ।। क्रुध्यत्केसरिविक्रमेण सदृशं शय्यासमानं परं चान्यद्दन्तिविलासवत्स्थितमतः शृङ्गानिभं व्यक्तिमत्।।९५।।त्रिविक्रमाभं च मृदङ्गरूपं वृत्तं ततोऽन्यद्यमलद्वयाभम् ।। पर्यंकरूपं मुरजानुकारी चेत्येवमश्वादिवचक्ररूपम्।।९६।।

नक्षत्रोंके तारोंकी संख्या

वह्नित्रिऋत्विषुगुणेन्दुकृताग्निभूतबाणाश्विनेत्रशरभूकुयुगाब्धिरामाः ॥
रुद्राब्धिरामगुणवेदशतद्वियुग्मदन्ताबुधैर्निगदिताः क्रमशोभताराः ॥ १७ ॥

संख्या	नक्षत्रोंके नाम	शुभाशुभ संज्ञा	स्वामिकों नाम	मुख संज्ञा	रूपसंज्ञा नाम	नाम	लोचन संज्ञा	स्वरूपकी आकृति	तारा संख्या
१	अश्विनी	शुभ	अश्वि.कु.	तिर्यङ्मु.	लघु	क्षिप्र	मंदलोच.	अश्वरूप	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	योनिरूप	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	अधोमुख	मिश्र	साध	सुलोचन	क्षुररूप	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	अंधलो०	शकट	५
५	मृगशिर	शुभ	चंद्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	मैत्र	मंदलोच.	मृगसम	३
६	आर्द्रा	शुभ	शिव	ऊर्ध्वमुख	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो०	मणिसम	१
७	पुनर्वसु	मध्यम	अदिति	तिर्यङ्मु.	चर	चल	सुलोचन	गृहसम	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमुख	लघु	क्षिप्र	अंधलो०	शरसम	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमुख	तीक्ष्ण	दारुण	मंदलोच.	चक्रसम	५
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	शालासम	५
११	पूर्वाफा०	मृत्युद	भग	अधोमुख	उग्र	क्रूर	सुलोचन	शय्यासम	२
१२	उत्तराफा.	विद्या	अर्यमा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	अंधलो०	पर्यंकसम	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	रवि	तिर्यङ्मु.	लघु	क्षिप्र	मंदलोच.	हस्ताकृति	५
१४	चित्रा	शुभद	त्वष्टा	तिर्यङ्मु.	मृदु	मैत्र	मध्यलो०	मौक्तिक	१
१५	स्वाति	अशुभ	वायु	तिर्यङ्मु.	चर	चल	सुलोचन	प्रवाल	१
१६	विशाखा	अशुभ	इन्द्राग्नि	अधोमुख	मिश्र	साधा.	अंधलो०	तोरण	४
१७	अनुराधा	सर्वसिद्धि	मित्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	मैत्र	मंदलोच.	बलिसम	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयनाश	इन्द्र	तिर्यङ्मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो.	कुंडल	३
१९	मूल	अर्थनाश	राक्षस	अधोमुख	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोचन	सिंहसम	११
२०	पूर्वाषाढा	हानि	उदक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	अंधलो०	शय्यासम	४
२१	उत्तराषा.	बुद्धिदा	विश्वेदेव	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	मंदलोचन	हस्तीसम	३
२२	अभिजित्	वृद्धिदा	ब्रह्मा	०	लघु	क्षिप्र	मध्यलो०	त्रिकोण	३
२३	श्रवण	सुखदा	विष्णु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	सुलोचन	व्यक्ताकार	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	अंधलो०	वामनसम	४
२५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमुख	चर	चल	मंदलोच.	मृदंगसम	१००
२६	पूर्वाभाद्र.	मृत्युदा	अजैक	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्यलो०	वर्तुलाकार	२
२७	उत्तराभा.	लक्ष्मी	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	सुलोचन	यमलाकार	२
२८	रेवती	कामदा	पूषा	तिर्यङ्मुख	मृदु	मैत्र	अंधलो०	मृदंगसम	३२

कार्याकार्यविचार

अधोमुख

वापीकूपतडागगर्तपरिखाखाता निधेरुद्धृति-
क्षेपौ द्यूतबिलप्रवेशगणितारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ।।

टीका--अधोमुख नक्षत्र ये हैं मूल कृत्तिका मघा विशाखा भरणी आश्लेषा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा इनमें वापी कूप तालाब गर्त और खाई खोदना द्रव्य काढना और रखना जुआ खेलना बिलांतः प्रवेश गणितारम्भ ये कर्म करने योग्य हैं ।

तिर्यङ्मुख

अश्वेभोष्ट्रलुलायरासभवृषोरभ्रादिदान्त्यश्विनौ
गन्त्रीयन्त्रहलप्रवाहगमनारम्भाः प्रसिध्यन्ति च ।।

टीका--तिर्यङ्मुख कहिये ज्येष्ठा पुनर्वसु हस्त अश्विनी मृग रेवती अनुराधा स्वाती चित्रा इन नक्षत्रोंमें घोड़ा हाथी ऊँट भैंस गधा बैल मेंढ सूकर श्वान लेना, नाव पानीमें डालना गंत्री यंत्र हल चलाना और धारण गमनादिक करे ।

ऊर्ध्वमुख

प्रासादध्वज धर्मवारणगृहप्राकारसत्तोरणो-
च्छायारामविधिर्हितो नरपतेः पट्टाभिषेकादि च ।।

टीका--पुष्य आर्द्रा श्रवण उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढ़ा उत्तराभाद्रपदा शतभिषा रोहिणी धनिष्ठा इन नक्षत्रोंको ऊर्ध्वमुख कहते हैं इनमें देवस्थान ध्वजा मंडप घर कोट भीत तोरण बाग राज्याभिषेक आदि कर्म करने योग्य हैं।

ध्रुवनक्षत्र

बीजहर्म्यनगराभिषेचनारामशान्तिषु हितं स्थिरेषु च

टीका--रोहिणी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा ये ध्रुव नक्षत्र हैं, इनमें बीज बोना, हर्म्य तथा नगरमें प्रवेश, राज्याभिषेक, बाग लगाना ये कर्म करने योग्य हैं।

मृदुनक्षत्र

मित्रकार्यरतिभूषणाम्बरोद्गीतिमङ्गलविधानमेषु तु ।

टीका--मृगशिर चित्रा अनुराधा रेवती इनको मृदु कहते हैं इनमें मित्रकार्य स्त्रीप्रसंग भूषण और वस्त्रधारण गाना आदि नाना प्रकारके मंगल कर्म करने योग्य हैं ।

लघुनक्षत्र

पण्यभूषणकलारतौषधज्ञानशिल्पगमनेषु सिद्धिदम् ।

टीका--अश्विनी पुष्य हस्त अभिजित् इनको लघु कहते हैं इनमें दूकान खोलना, भूषण धारण करना, क्रीडा करना, औषधी बनाना, कारखाना, ज्ञान, विद्या, शिल्पविद्या, प्रस्थान गमनादिक शुभ हैं ।

तीक्ष्णनक्षत्र

भूतयक्षनिधिमन्त्रसाधनं भेदबन्धवधकर्म चात्र तु ।

टीका––आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा मूल ये तीक्ष्ण नक्षत्र हैं इनमें भूत और यक्षादिकोंकी पीडाका निवारण करना: द्रव्य काढना, मन्त्रसाधन, भेद, बन्धन वध ये कर्म उक्त हैं ।

चरनक्षत्र

दन्तवाजिकरभादिवाहनारामयानविधिषु प्रशस्यते ।

टीका––पुनर्वसु स्वाती श्रवण धनिष्ठा शततारका ये चर नक्षत्र हैं इनमें हाथी, घोडा, नाना प्रकारके वाहन, बागमें जाना; पालकी रथ गाडी आदिकी सवारीमें बैठना योग्य है ।

उग्रनक्षत्र

शाठ्यनाशविषघातबन्धनोत्साहशस्त्रदहनादिषु स्मृतम् ।

टीका––भरणी मघा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाषाढा पूर्वाभाद्रपदा ये उग्र नक्षत्र हैं इनमें शठता करना, नाश, विषघात, बंधन, उत्साह, शस्त्र, जलाना आदि कर्म करना विहित है ।

मिश्रनक्षत्र

स्वाभिधानसमकर्मसाधने कीर्तितानि सकलानि सूरिभिः ।

टीका––कृत्तिका विशाखा भरणी ये मिश्र हैं इनमें नक्षत्रोंके समान कर्म करने योग्य हैं।

नष्टवस्तुके देखनेका प्रकार

नक्षत्रोंकी लोचनसंज्ञा

अन्धके लभते शीघ्रं मन्दके च दिनत्रयम् ।
मध्यके च चतुःषष्टिर्न प्राप्नोति सुलोचने ॥

टीका––अंध नक्षत्रमें गई वस्तु शीघ्र मिलती है और मंदलोचनमें जानेसे ३ दिन पीछे प्राप्त होती है मध्यलोचन नक्षत्रमें वस्तु नष्ट हो तो ६४ दिवस पर्यंत मिल जाय । सुलोचनमें गई वस्तु कभी प्राप्त नहीं होती

नष्टवस्तुदिग्ज्ञान

अन्धके पूर्वतो वस्तु मंदके दक्षिणे तथा ।
पश्चिमे मध्यनेत्रे च उत्तरे तु सुलोचने ॥

टीका––अंधे नक्षत्रमें नष्ट वस्तु पूर्व दिशामें जानिये और मंदलोचनमें नष्ट वस्तु दक्षिणमें और मध्यलोचनमें गत वस्तु पश्चिम दिशामें और सुलोचनमें गई वस्तु उत्तर दिशामें गई हुई जानिये ।

अंधादिनक्षत्रोंमें नष्टवस्तुकी प्राप्ति अप्राप्ति

अन्धे सद्यः प्राप्यते वस्तु नष्टं कष्टात्प्राप्यं मन्दनेत्रे च तद्वत् ।
दूरात् श्राव्यं मध्यनेत्रे न लभ्यं न श्रोतव्यं नैव लभ्यं सुनेत्रे ॥

टीका––अंध नक्षत्रमें नष्ट वस्तु शीघ्र प्राप्त होती है, मंदलोचनमें वस्तु परिश्रम और विलंबसे और मध्य लोचनमें गई वस्तु दूर जानिये और मिलनेवाली भी नहीं और सुलोचनमें नष्ट वस्तु न सुननेमें आये न मिले ।

नक्षत्रानुसारप्रश्न

मघादि अर्यमान्तंच समीपेवस्तु दृश्यते। हस्तादिवसुपर्यन्तमन्यहस्ते च दृश्यते ।। शतताराद्यमान्तं तु स्वगृहे वस्तु दृश्यते। अन्यादि सार्पपर्यन्तमदृष्टं दूरगं तथा ।।

टीका—मघासे लेकर उत्तराफाल्गुनीपर्यन्त नक्षत्रोंमें जो वस्तु चोरी जाय तो वह समीप जानिये, हस्तसे धनिष्ठातक दूसरे हाथमें वस्तु जानिये, शतभिषासे भरणीतक अपने घरमें जानिये और कृत्तिकासे आश्लेषातक गई वस्तु प्राप्त नहीं होती।

तिथीवारं च नक्षत्रं प्रहरेण समन्वितम् । दिक्संख्यया हतं चैव सप्तभिर्विभजेत्पुनः ।। एकेन भूतले द्रव्यं द्वयं चेद्भाण्डसंस्थितम् । तृतीये जलमध्यस्थमन्तरिक्षे चतुर्थके ।। तुषस्थं पञ्चमे तु स्यात् षष्ठे गोमयमध्यगम् । सप्तमे भस्ममध्यस्थमित्येतत्प्रश्नलक्षणम् ।।

टीका—प्रश्नसमयकी तिथि वार और ग्रह नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करे और इनमें प्रहर मिलाकर आठगुणा करे और सातका भाग देनेसे जो शेष रहे उससे फल विचारे। एक शेष रहे तो भूमिमें वस्तु जानिये और २ शेष रहें तो बरतनमें, ३ शेष रह तो जलमें; ४ बचें तो अंतरिक्षमें जानिये, ५ बचें तो तुषमें, ६ बचें तो गोबरमें, ७ बचें तो भस्ममें वस्तु जानिये।

दिवारात्रिमुहूर्तान्याह

शिवोर्हिमित्रपितरौ वस्वम्भाविश्ववेधसः । विधिरिन्द्रोथ शक्राग्नीरसाब्धीशोर्यमा भगः ।। मुहूर्त्तेशा इमे प्रोक्ता दिवा पंचदशक्रमात् । मुहूर्ता रजनौ शंभुरजैकचरणाश्रयः ।। दस्रात्पश्चादितेर्जीवो विश्वकौ तक्षमारुतैः । दिनमानस्य तिथ्यंशो रात्रेरपि मुहूर्तकाः ।। नक्षत्रनाथतुल्येऽस्मिन् स्थितकार्यात् खभोदितम् । दिनमध्येऽभिजिन्मध्येदोषसंघेषु सत्स्वपि।। सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं विना ।

अथ रव्यादिवारे त्याज्यमुहूर्ताः

अर्यमा भानुमद्वारे चन्द्रेहि विधिराक्षसौ । पित्राग्नी कुजवारे तु चन्द्रपुत्रे तथाऽभिजित् ।। पितृब्राह्मौ भृगोर्वारे राक्षसाम्बू गुरोर्दिने ।। रौद्रसार्पौ शनेरह्नि इमे त्याज्या मुहूर्त्तकाः ।।

दिवारात्रिचक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	सं
शिव	सर्प	मित्र	पितर	वसु	अंबु	विश्वे	विधि	विधि	इंद्र	इंद्रा.	राक्ष.	वरुण	अर्य.	भग	मुहू.
आ०	श्लेषा	अनु.	मघा	धनि	पूषा	उत्त.	ऽभि.	रोहि	ज्ये.	वि.	मूल	शत	उ.	पू०	नक्ष.
[illegible]	अजे.	अहि	पूषा	दस्र	यम	आग्नि	ब्रह्मा	चंद्र	अदि	गुरु	वि.	सूर्य	त्वा.	वायु	रात्रि
आ०	पू.भा	उ.भा	रेवती	अश्वि	भर.	कृत्ति	रोहि	मृग	पुन.	पुष्य	श्रव	हस्त	चि.	स्वा.	नक्ष.

अथ रव्यादिवारे त्याज्यचक्रम्

सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	वाराः
अर्यम	ब्रह्माराक्ष.	पितृ अग्नि	अभिजित्	राक्षसशंभु	पितृब्रह्म	शिवसर्प	मुहूर्ताः
उ० फा०	रोहि. मूल	मघा.कृत्ति	अभिजित	मूलपूर्वाषा	मघा. रो.	आर्द्राश्लेषा	नक्षत्र
दिन १४	रा. ८।	दि. ४।	दिन ८ रा. ०	दिन१२।६ रा. ०	दिन४।८ रा. ०	दिन १।२ रा. १	दिनरात्रि

मद्य काढनेका मुहूर्त

रौद्रे पैत्र्यै वारुणे पौरुहूते याम्ये सार्पे नैऋते चैव धिष्ण्ये ।
पूर्वाख्येषु त्रिष्वपि श्रेष्ठ उक्तो मद्यारम्भः कालविद्भिपुराणैः ।।

टीका—आर्द्रा मघा शतभिषा ज्येष्ठा भरणी आश्लेषा मूल तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंमें प्रथम मद्य काढना प्रारंभ करे।

नवीनवस्त्रधारण

रोहिणीषुकरपंचकेऽश्विभे त्र्युत्तरेपि च पुनर्वसुद्वये ।
रेवतीषु वसुदैवते च भे नव्यवस्त्रपरिधानमिष्यते ।।

टीका—रोहिणी हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपदा पुनर्वसु पुष्य रेवती धनिष्ठा इनमें नवीन वस्त्र धारण करे और कराये।

मोतीसुवर्णमणिरक्तवस्त्रधारण

नासत्यपौष्णवसुभे करपञ्चके च मार्त्तण्ड भौमगुरुमन्त्रिशशांकवारे ।
मुक्तासुवर्णमणिविद्रुमन्तशंखरक्ताम्बराणि विधृतानि भवन्ति सिद्धौ ।

टीका—अश्विनी रेवती धनिष्ठा हस्त चित्रा स्वातीविशाखा अनुराधा इन नक्षत्रोंमें और भौम रवि गुरु शुक्र सोम इन वारोंमें मोती सुवर्ण मणि मूंगा हस्तिदंतका चूडा नूतन शंख पूजामें लाना रक्तवस्त्र धारण करना शुभ जानिये।

पुंसवनके नक्षत्र

श्रवणः सकरः पुनर्वसुर्निर्ऋतेभं च सपुष्यको मृगः ।
रविभूसुतजीववासराः कथिताः पुंसवनादिकर्मसु ।।

टीका—श्रवण हस्त पुनर्वसु मूल पुष्य मृगशिर और रवि भौम गुरु ये वार पुंसवनादिक कर्ममें उक्त हैं।

कर्णवेधन

पौष्णवैष्णवकराश्विनिचित्रापुष्यवासवपुनर्वसुमैत्रे ।
सैन्दवे श्रवणवेधविधानं निर्दिशन्ति मुनयो हि शिशूनाम् ।।

टीका—रेवती श्रवण हस्त अश्विनी चित्रा पुष्य धनिष्ठा पुनर्वसु अनुराधा मृगशिर इनमें बालकका कर्णवेध कराये।

अन्नप्राशन

रेवती श्रुतिपुनर्वसुहस्तब्राह्मतः पृथगपि द्वितये च ।
त्र्युत्तरेषु गदितं हि नवान्नप्राशनं तु ऋषिभिः पृथुकानाम् ।।

टीका—रेवती श्रवण पुनर्वसु हस्त रोहिणी मृगशिर आर्द्रा तीनों उत्तरा इनमें ऋषियोंने आद्यमें और नया अन्न भक्षण करना कहा है।

क्षौरकर्म

पुष्ये पौष्णे चाश्विनीष्वैन्दवे च शाक्रे हस्ताद्ये त्रिके भेष्वदित्याः ।
क्षौरं कार्यं वैष्णवाद्यत्रये च मुक्त्वा भौमादित्यपार्तङ्गिवारान् ।।

टीका—पुष्य रेवती अश्विनी मृगशिर ज्येष्ठा हस्त चित्रा स्वाती पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा शतभिषा इन नक्षत्रोंमें श्मश्रुकर्म कराइये और ये वार वर्जित हैं भौम रवि शनि इनमें न करे।

दन्तबन्धन

येषु येषु प्रशंसन्ति क्षौरकर्म महर्षयः ।
तेषु तेष्वेव शंसन्ति नखदन्तादिलेखनम्

टीका—दंतबंधन और वेधना दांत और नख काटना, जो नक्षत्र ऊपरके श्लोक क्षौरकर्ममें कहे गये हैं उन्हीमें करना चाहिये।

आज्ञया नरपतेर्द्विजन्मनां दाहकर्ममृतसूतकेषु च ।
बन्धमोक्षमखदीक्षणेषु च क्षौरमिष्टमखिलेषु तुष्टिदम् ।।

टीका—राजा अथवा ब्राह्मणोंकी आज्ञा और दाहक्रिया करनेमें सूतकके अंतदिनमें यज्ञकी दीक्षामें बंधनके छूटनेमें अवश्य क्षौर कर्म करानेसे पुष्टिका देनेवाला होता है।

ताराशुद्धं क्षौरं रविगुरुशुद्धा व्रतदीक्षा ।।
शुक्रविशुद्धा यात्रा सर्वं शुद्धं शशांकेन ।।

टीका—क्षौरकर्ममें नक्षत्रकी शुद्धि और व्रतके प्रारंभमें दीक्षाके लेनेमें रवि गुरुकी शुद्धि और यात्रामें शुक्रशुद्धि और चंद्रमाकी शुद्धि सब कामोंमें चाहिये।

श्मश्रुकर्ममें वर्जनीय

भद्रापक्षान्तरिक्ताव्रतदिनवसुभू श्राद्धषष्ठीषु रात्रौ
संध्यापातारभास्वच्छनिषु घटधनुः कर्ककन्यागतेऽर्के ।।
जन्मर्क्षेजन्ममासे सुरदिनयजने भूषितोग्रामयायी
भुक्तोभ्यक्तोभिषिक्तः समदिनरजिगः श्मश्रुकार्यं न कुर्यात् ।।

टीका—भद्रा पूर्णिमा अमावस्या चतुर्थी नवमी चतुर्दशी व्रतदिवस अष्टमी प्रतिपदा श्राद्धदिवस षष्ठीमें रात्रिमें संध्याकाल व्यतिपातादिक दुष्टयोग भौम वार रविवार शनिवारमें कुंभ धनु कर्क कन्या इन चार राशियोंके सूर्यमें जन्मनक्षत्र और जन्ममास देवताके पूजन वा हवनादि कर्मदिवस अलंकारादिधारण दिवस और यात्रा की तय्यारी हो उस

दिन भोजनके पीछे तेल लगाने और स्नानके पीछे मंगल अभिषेक तथा स्त्रीके रजस्वला होने और सम दिवस आदिकमें क्षौरकर्म वर्जनीय है।

मौंजीबन्धन

सौम्ये पौष्णे वैष्णवे वासवाख्ये हस्ते स्वातित्वाष्ट्रपुष्याश्विभेषु ।
ऋक्षेऽदित्यां मेखलाबन्धमोक्षौ संस्मर्येते नूनमाचार्यवर्यैः ।।

टीका—मृगशिर रेवती श्रवण धनिष्ठा हस्त स्वाती चित्रा पुष्य अश्विनी पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें मौंजी बंधन और त्यागना आचार्योंने श्रेष्ठ कहा है।

विवाहनक्षत्राणि

मूलमैत्रमृगरोहिणीकरैः पौष्णमारुतमघोत्तरान्वितैः ।।
निर्विधाभिरुडुभिर्मृगीदृशां पाणिपीडनविधिर्विधीयते ।।

टीका—मूल अनुराधा मृगशिर रोहिणी हस्त रेवती स्वाती मघा तीनों उत्तरा इन सब नक्षत्रोंमें विवाह शुभ जानिये।

अग्निहोत्रारम्भ

प्राजापत्ये पूषभे सद्विदैवे पुष्ये ज्येष्ठास्वैंदवे कृत्तिकासु ।
अग्न्याधानं चोत्तराणां त्रयेऽपि श्रेष्ठ प्रोक्तं प्राक्तनैर्विप्रमुख्यैः ।।

टीका—रोहिणी रेवती विशाखा पुष्य ज्येष्ठा मृगशिर कृत्तिका और तीनों उत्तरा इनमें प्रथम अग्निहोत्र प्रारंभ करे।

विद्यारम्भमुहूर्त

मृगादि पञ्चस्वपि भेषु मूले हस्तादिके च त्रितयेऽश्विनीषु ।
पूर्वात्रये च श्रवणे च तद्वद्विद्यासमारम्भमुशन्ति सिद्धयै ।।

टीका—मृगशिर आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मूल हस्त चित्रा स्वाती अश्विनी पूर्वाषाढा पूर्वाफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा श्रवण इन नक्षत्रोंमें बालकको प्रथम विद्याभ्यास आरंभ कराये।

औषधीग्रहण

पौष्णद्वये चादितिभद्वये च हस्तत्रये च श्रवणत्रये च ।
मैत्रे च मूले च मृगे च शस्तं भैषज्यकर्म प्रवदन्ति सन्तः ।।

टीका—रेवती अश्विनी पुनर्वसु पुष्य हस्त चित्रा स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषा अनुराधा मूल मृग इन नक्षत्रोंमें औषध बनाना खाना शुभ है।

रोगोत्पत्तिमें शुभाशुभ नक्षत्र

स्वात्या श्लेषा रौद्रपूर्वात्रयेषु शाक्रे भौमे सूर्यजे सूर्यवारे ।।
नंदारिक्तास्वेव रोगस्य चाप्तिर्मृत्युर्ज्ञेयः शंकरो रक्षितापि ।।

टीका––स्वाती आश्लेषा आर्द्रा तीनों पूर्वा ज्येष्ठा और भौम शनि रवि ये वार, नंदा तिथि अर्थात् पडवा षष्ठी एकादशी और रिक्ता तिथि, चौथ नवमी चतुर्दशी इनमें रोग उत्पन्न होते हैं उनकी शिवभी रक्षा नहीं करते ।

रोगसे मुक्ति होनेका प्रमाण

व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्णे समैत्रे प्राणत्राणं जायते तस्य कृच्छ्रात्
वश्ये सौम्ये रोगमुक्तिस्तु मासार्द्विशत्या स्याद्वासराणां मघासु ।।

टीका––रोग उत्पन्न होनेके दिवस जो रेवती अथवा अनुराधा हो तो रोगीके प्राण अति कठिनतासे बचें; उत्तराषाढा अथवा मृगशिर हो तो एक मासपर्यंत और मघा हो तो बीस दिवसतक पीडा रहे।

पक्षाद्धस्ते वासवे सद्विदेवे मूलाश्विन्योरग्निधिष्ण्ये नवाहात् ।।
याम्ये त्वाष्ट्रे वैष्णवे वारुणे च नैरुज्यं स्यान्नूनमेकादशाहात् ।।

टीका––हस्तनक्षत्रमें उत्पन्न हुआ रोग १५ दिवस रहता है और धनिष्ठा विशाखा मूल अश्विनी कृत्तिकामें उत्पन्न हुआ रोग ९ दिन और भरणी चित्रा श्रवण शततारकामें उत्पन्न हुआ रोग ११ दिवस रहता है।

आहिर्बुध्न्ये तिष्यसंज्ञे सभागे प्राजापत्यादित्ययोः सप्तरात्रात् ।।
रोगान्मुक्तिर्जायते मानवानां निःसंदिग्धं जल्पितं गर्गमुख्यैः ।।

टीका––उत्तराभाद्रपदा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, अभिजित, पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें उत्पन्न हुआ रोग सात दिवसतक निश्चय भोगना पड़ता है वह गर्ग मुनिका वाक्य है।

रोगमुक्तिस्नाननक्षत्र

इंदोर्वारे भार्गवे च ध्रुवेषु सर्पादित्यस्वातियुक्तेषु भेषु ।।
पित्र्ये चान्त्ये चैव कुर्यात्कदाचिन्नैव स्नानं रोगमुक्तस्य जन्तोः ।।

टीका––सोम शुक्रवार और ध्रुवनक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा, और आश्लेषा पुनर्वसु-स्वाती ये शुभ हैं और मघा रेवती इनमें रोगीका स्नान अयोग्य और दुःखदायक है।

रोगमुक्तस्नानलग्न

लग्ने चरे सूर्यकुजेज्यवारे रिक्तातिथौ चंद्रबले च हीने ।।
केन्द्रत्रिकोणार्थगते च पापे स्नानं हितं रोगविमुक्तिकानाम् ।।

टीका––मेष कर्क तुला मकर ये चार लग्न, रवि भौम गुरु ये वार और रिक्ता तिथि ४। ९। १४ और चन्द्र हीनबल हो, केंद्र तथा त्रिकोणमें पाप ग्रह हों, ऐसे लग्नमें स्नान कराये तो आरोग्य हो।

लता, औषधी तथा वृक्षारोपण

सावित्रतिष्याश्विनवारुणानि मूलं विशाखा च मृदुध्रुवाणि ।।
लतौषधीपादपरोपणेषु शुभानि भानि प्रतिपादितानि ।।

टीका——हस्त पुष्य अश्विनी शततारका मूल विशाखा और मृदु ध्रुव इन नक्षत्रोंमें लता औषधी और वृक्षोंका लगाना शुभ है।

कूपारंभके नक्षत्र

हस्तात्तिस्रो वासवं वारुणं च शैवं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि ॥
प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनींद्राः ॥

टीका——हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शततारका आर्द्रा मघा तीनों उत्तरा और रोहिणी इन नक्षत्रोंमें अगले मुनीश्वरोंने कूपारंभ श्रेष्ठ कहा है।

द्रव्य देना व स्थापित करना

साधारणोग्रध्रुवदारुणाख्यैर्धिष्ण्यैर्यदत्र द्रविणं प्रयुक्तम् ॥
हस्तेन विन्यस्तवसु प्रनष्टं न लभ्यते तन्निकृतं कदाचित् ॥

टीका——साधारण उग्र ध्रुव और दारुणसंज्ञक नक्षत्रोंमें दूसरेको द्रव्यदे, वा स्थापित करे तो वह वस्तु फिर प्राप्त नहीं हो।

हस्ती लेना व देना

हस्ते सुचित्रासु तथाश्विनीषु स्वातौ च पुष्ये च पुनर्वसौ च ॥
प्रोक्तानि सर्वाण्यपि कुञ्जराणां कर्माणि गर्गप्रमुखैः शुभानि ॥

टीका——हस्त चित्रा अश्विनी स्वाती पुष्य और पुनर्वसु इन नक्षत्रोंमें हाथी लेना और देना और उसके अलंकार शृंगारादिक सकल कर्म करना गर्गादि मुनियोंने शुभ कहे हैं।

अश्व लेना व देना

पुष्य श्रविष्ठाश्विन सौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराह्वयेषु ॥
सवारुणर्क्षेषु बुधैः स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमानाम् ॥

टीका——पुष्य, धनिष्ठा अश्विनी, मृगशिर, रेवती, स्वाती, पुनर्वसु, हस्त, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें तुरंग ले और दे तथा उसके अलंकार और शृंगार आदि कर्म करे।

गवादि पशुओंके नगरमें लाने और पहुँचानेमें वर्ज्य

चित्रोत्तरावैष्णवरोहिणीषु चतुर्दशीदर्शदिवाष्टमीषु ॥
ग्रामप्रवेशं गमनं विदध्याद्धीमान् पशूनां न कदाचिदेव ॥

टीका——चित्रा तीनों उत्तरा श्रवण रोहिणी चतुर्दशी अमावास्या अष्टमी इनमें गवादि पशुओंको ग्राममें न लाये और न बाहर पहुँचाये।

गवादि पशुओंके क्रयविक्रयमें वर्जित

शुक्रवासवकरेषु विशाखापुष्यवारुणपुनर्वसुभेषु ॥
अश्विपूषभयुतेषु विधेयो विक्रयक्रयविधिः सुरभीणाम् ॥

टीका——ज्येष्ठा धनिष्ठा हस्त विशाखा पुष्य शतभिषा पुनर्वसु अश्विनी रेवती इन नक्षत्रोंमें गायका बेचना और मोल लेना दोनों वर्जनीय हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहमें वर्ज्य

वासवोत्तरदलादिपञ्चके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् ।।
प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्यकावितरणं च वर्जयेत् ।।

टीका—धनिष्ठाके उत्तरार्द्धसे लेकर पांच नक्षत्रोंको पंचक कहते हैं इनमें दक्षिण-दिशाका गमन और घर बनाना, प्रेतदाह, तृणकाष्ठ संग्रह, शय्यादिक निर्माण करना वर्जित है।

हल चलनेका नक्षत्र

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखासहितेषु भेषु ।।
हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नीरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः ।।

टीका—मृदु ध्रुव क्षिप्र चरसंज्ञक नक्षत्रोंमें तथा मूल और मघा विशाखा इन नक्षत्रोंमें रोगरहित आंडू बैलोंसे प्रथम हल चलाये।

बीजबोना

रौद्राहियाम्यानिलवारुणेन्द्राग्न्याहुर्जघन्यानि तथा बृहन्ति ।।
ध्रुवद्विदैवादितिभानि नूनं समानि शेषाणि पुनर्मुनीन्द्रैः ।।
बृहत्सुधान्यं कुरुते समर्घं जघन्यधिष्ण्ये ऽभ्युदितो महर्घः ।।
समेषु धिष्ण्येषु समं हिमांशुर्वदन्ति संदिग्धमिदं महान्तः ।।

टीका—आर्द्रा आश्लेषा भरणी स्वाती शतभिषा ज्येष्ठा इन नक्षत्रोंको जघन्य कहते हैं इनमें मासके आदिमें चंद्रमा उदय हो तो धान्य महंगा हो ध्रुव अर्थात् तीनों उत्तरा रोहिणी विशाखा पुनर्वसु इनको बृहत् कहते हैं इनमें चंद्रमा उदय हो तो अन्न सस्ता हो और शेष नक्षत्र सम जानिये उनमें चंद्रोदय होनेसे अन्नका भाव साधारण रहता है।

राशिपरत्वमें चंद्रोदयका फल

मीनमेषोदितश्चन्द्रः सततं दक्षिणोन्नतः ।। शेषोन्नतश्चोत्तरायां समता वृषकुम्भयोः ।। विड्वरं तु समे चंद्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते ।। सुभिक्षं क्षेममारोग्य-मुत्तराश्रितचन्द्रमाः ।।

टीका—मीन अथवा मेष राशिमें जो शुक्ल द्वितीयाका चंद्रमा उदय हो तो उससे दक्षिणको उन्नत जानिये और दुर्भिक्षका संभव होता है और मिथुनसे लेकर मकरपर्यंत जो चंद्रोदय हो तो उत्तरको उन्नत जानिये यह चद्रमा सुभिक्ष क्षेम और आरोग्यताका कर्ता, वृष और कुंभमें चंद्रमाका उदय हो तो सम रहता है इसमें राजाओंके कलह और विड्वरता होती है।

पुष्यनक्षत्रके गुणदोष

परकृतमखिलं निहन्ति पुष्यो न खलु निहन्ति परंतु पुष्यदोषम् ।।
ध्रुवममृतकरोऽष्टमेऽपि पुष्ये विहितमुपैति सदैव कर्मसिद्धिम् ।।

टीका––पुष्य दूसरेके दोष और अष्टमस्थानस्थित चंद्रके दोषको दूर करता है परंतु उसी नक्षत्रका दोष हो तो वह दूर नहीं होता और इस नक्षत्रमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है।

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषु चित्रानुराधामृगरेवतीषु ।।
स्वातौ धनिष्ठासु मघासु मूले बीजोप्तिरुत्कृष्ट फलप्रतिष्ठा ।।

टीका––हस्त अश्विनी पुष्य तीनों उत्तरा रोहिणी चित्रा अनुराधा मृग रेवती स्वाती धनिष्ठा मघा मूल इन नक्षत्रोंमें बीज बोनेसे खेत अधिक फलते हैं।

सर्पदंशविचार

यः कृत्तिकामूलमघाविशाखासार्पान्तकार्द्रासु भुजंगदष्टः ।।
स वैनतेयेन सुरक्षितोपि प्राप्नोति मृत्योर्वदनं मनुष्यः ।।

टीका––कृत्तिका मूल मघा विशाखा आश्लेषा रेवती आर्द्रा इन नक्षत्रोंमें जो सर्प काटे तो गरुड़ भी रक्षक होने पर मनुष्य मृत्युको प्राप्त हो।

गानारंभविचार

हस्तस्तिष्यो वासवं चानुराधा ज्येष्ठा पौष्णं वारुणं चोत्तरा च ।।
पूर्वाचार्यैः कीर्तितश्चन्द्रवर्तो नृत्यारम्भे शोभनो ऋक्षवर्गः ।।

टीका––हस्त पुष्य धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा रेवती शततारका तीनों उत्तरा और शुभ चद्रमा पाकर गाना और नृत्यका प्रारंभ करना पूर्वाचार्योंने शुभ कहा है।

राज्याभिषेकनक्षत्र

मैत्रशाक्रकरपुष्यरोहिणीवैष्णवेषु तिसृषूत्तरासु च ।।
रेवतीमृगशिराश्विनीषु च क्ष्माभृतां समभिषेक इष्यते ।

टीका––अनुराधा ज्येष्ठा हस्त पुष्य रोहिणी श्रवण तीनों उत्तरा रेवती मृगशिर अश्विनी इन नक्षत्रोंमें राज्याभिषेक करना उचित है।

राजदर्शन

सौम्याश्वितिष्य श्रवण धनिष्ठाहस्तध्रुवत्वाष्ट्रभपूषभानि ।।
मित्रेण युक्तानि नरेश्वराणां विलोकने भानि शुभप्रदानि ।।

टीका––मृगशिर, अश्विनी, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, हस्त, ध्रुव, चित्रा, रेवती, अनुराधा इन नक्षत्रोंमें राजाका प्रथम दर्शन शुभदायक है।

पुष्यकाफल

सिंहो यथा सर्वचपुष्पदानाः तथैव पुष्यो बलवानुडूनाम् ।।
चन्द्रे विरुद्धेऽप्यथ गोचरेऽपि सिद्धयन्ति कार्याणि कृतानि पुष्ये

टीका––जैसे सब चतुष्पद जीवोंमें सिंह बलवान् है वैसेही नक्षत्रोंमें पुष्य है, पुष्यमें किया कार्य गोचर दोष और कनिष्ठ अर्थात् चौथा आठवां बारहवां चंद्र होनेपर भी सिद्ध होता है।

ग्रहेण विद्धोप्यशुभान्वितोपि विरुद्ध तारोपि विलोमगोपे ।।
करोत्यवश्यं सकलार्थसिद्धि विहाय पाणिग्रहणं पु पुष्यः ।।

टीका—ग्रहसे विद्ध अथवा अशुभ ग्रहसे युक्त अथवा तारा इससे प्रतिकूल हो, तथापि पुष्यमें किया हुआ कार्य सिद्ध होता है परंतु विवाहमें पुष्य नक्षत्र वर्जित है।

योगप्रकरण

प्रतिदिनके योग जाननेकी रीति

वाक्पतेरर्कनक्षत्रं श्रवणाच्चचान्द्रमेव च ।।
गणयेत्तद्युतिं कुर्याद्योगः स्यादृक्षशेषतः ।।

टीका—पुष्यसे सूर्यनक्षत्रतक चलते नक्षत्रोंको गिने और श्रवणसे दिवस नक्षत्रतक गिने दोनों संख्याओंको इकट्ठा करे और सत्ताईसका भाग दे जो शेष रहे वही योग जानिये।

योगोंके नाम

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्य शोभनस्तथा ।। अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ।। गण्डो वृद्धिध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा ।। वज्रसिद्धि व्यातीपातो वर्याण परिघः शिवः ।। सिद्धिः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मेन्द्रो वैधृतिः क्रमात् ।। सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ।।

टीका—विष्कंभ १ प्रीति २ आयुष्मान् ३ सौभाग्य ४ शोभन ५ अतिगंड ६ सुकर्मा ७ धृति ८ शूल ९ गंड १० वृद्धि ११ ध्रुव १२ व्याघात १३ हर्षण १४ वज्र १५ सिद्ध १६ व्यतीपात १७ वर्याण १८ परिघ १९ शिव २० सिद्ध २१ साध्य २२ शुभ २३ शुक्ल २४ ब्रह्मा २५ ऐंद्र २६ वैधृति २७ ये सत्ताईस योग निज नामके तुल्य फल करते हैं अर्थात् जो इनके नामोंका अर्थ है वही फल जानिये।

योगोंमें वर्जनीय घटिका

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्ट खलु पाद आद्यः ।।
स वैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ।।
तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नव पञ्च शूले ।।
गण्डेऽतिगण्डे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ।।

टीका—और इनमें अशुभ योगोंका आदिका चतुर्थांश वर्जनीय है व्यतीपात वैधृति ये सम्पूर्ण और विष्कंभकी ३ वज्रकी ४ व्याघातकी ५ गंडकी ६ अतिगंडकी ६ शूलकी १५ घडी सकल शुभ कार्यमें वर्जनीय हैं।

करण जाननेकी रीति

गतितिथ्यो द्विनिघ्नाश्च शुक्लप्रतिपदादितः ।।
एकोनाः सप्तहृच्छेषः करणं स्याद्बवादिकम् ।।

टीका—शुक्ल प्रतिपदासे जिस तिथिका करण जानना हो उसकी पूर्वगत तिथिको द्विगुण करे उसमें एक मिलाकर सातका भाग दे जो शेष बचे वही उस तिथिका करण जानिये और प्रत्येक तिथियोंके दो करण भोगते हैं।

नाम

बवाह्वयं बालवकौलवाख्ये ततो भवेत्तैतिलनामधेयम् ।।
गराभिधानं वणिजं च विष्टिरित्याहुरार्याः करणानि सप्त ।।

अन्ते कृष्ण चतुर्दश्यां शकुनीर्दर्शभागयोः ।।
ज्ञेयं चतुष्पदं नागं किंस्तुघ्नं प्रतिपद्दले ।।

स्वामी

इन्द्रोब्रह्मामित्रनासार्यमाभूः श्रीः कीनाशश्चेति तिथ्यर्धनाथाः ।।
कल्युक्षाख्यो सर्पवायुस्तथैव ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णाम् ।।

कृत्य

पौष्टिकस्थिरशुभानि बवाख्ये बालवे द्विजहितान्यपि कुर्यात् ।। कौलवे प्रमदमित्रविधानं तैतिले शुभगताश्रयकर्म।।गरे च बीजाश्रयकर्षणानि वाणिज्यके स्थैर्यवणिक् क्रियाश्च।।न सिद्धिमायाति कृतंच विष्टयां विषारिघातादिषु तन्त्रसिद्धिः।।मन्त्रौषधानि शकुनौतुसपौष्टिकानि गोविप्रराज्यपितृकर्म चतुष्पदेति।। सौभाग्यदारुणधृतिध्रुवकर्मनागे किंस्तुघ्ननाम्नि निखिलं शुभकर्म कार्यम् ।।

शुक्लतिथी				कृष्णतिथी				नाम	स्वामी	कृत्य
पूर्वदल		उत्तरदल		पूर्वदल		उत्तरदल				
१	स्थिर			०	०	०	०	किंस्तु.	वायु	समस्त शुभकार्य करे
५	१२	८	१५	४	११	७	०	बव	इन्द्र	व्रतउत्साह देवालय आदि शुभकर्म करे
२	९	५	१२	१	८	४	११	बालव	ब्रह्मा	ब्राह्मणोंसे हितकरे
६	१३	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र	उन्माद और मित्रताकरे
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	सूर्य	विवाहादिक मंगलकार्य करे
७	१४	३	१०	६	१३	२	९	गर	भूमि	बीजबोना हल चलाना
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी	देवप्रतिष्ठा घर दुकान और व्यापार करावे
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि	यम	सकल कर्म वर्जित परंतु विष और घात ये क्रूरकर्म वर्जित नही
स्थिर		०	०	०	०	०	१४	शकुनि	कलि	मित्रोपदेश औषधि ग्रहपूजा करावे
स्थिर		०	०	३०	०	०	०	चतुष्प	वृषभ	गौ ब्राह्मण राज्य पितृ इनसंबंधी कृत्य करावे-
स्थिर		०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प	सौभाग्यकर्म युद्धमेंजाना धीरज और विद्याभ्यास करना ये कर्म करावे

कल्याणीतिथिमानम्

कृष्णोऽग्निदिशयोरूर्ध्वं सप्तमीभूतयोरधः ।। शुक्ले वेदेशयोरूर्ध्वं भद्रा प्राग्वसुपूर्णयोः।।मनुवसुमुनितिथियुगदशशिवगुण संख्यासु तिथिषु पूर्वान्त्याः।।

आयाति विष्टिरेषा पृष्ठेषु भद्रा च पुरस्त्वशुभा ।।शास्त्रार्थः।। दिवासर्पमुखी भद्रा रात्रौ भद्रा च वृश्चिकी ।। सर्पस्य च मुखं त्याज्यं रात्रौ पुच्छं परित्यजेत्।। रात्रि भद्रा यदाह्नि स्याद्दिवाभद्रा यदानिशि।। न तत्र भद्रादोषः स्यात्सर्वकार्याणि साधयेत् ।। शरीरभागः ।। नाड्यस्तु पञ्च वदनेथ गले तथैका वक्षोदशैकसहितं नियतं चतस्रः।।नाभ्यां कटौ षडथ पुच्छलता च तिस्रो विष्टे बुधैरभिहितोङ्ग-विभाग एषः।स्थानफलम्।मुखे कार्यध्वस्तिर्भवति मरणं चाथ गलके धनाहानि-र्वक्षस्यथ कटितटे बुद्धिविलयः।।कलिर्नाभौ देशे विजयमथ पुच्छे च जगदुः शरीरे भद्रायाः पृथगितिफलं पूर्वमुनयः।। चन्द्रः।।मीने मेषालिकर्के शशिनि निवसति स्वर्गसंस्थापि विष्टिः कन्यायां तौलिसंस्थे धनमिथुनगते नागलोके निवासः।। कुंभे सिंहे वृषे वा मकरमुपगते राजते मृत्युलोके भद्रा चन्द्रप्रभावा हिमकरतनया नो शुभा लौकिके स्यात्।।स्थानफलम्।। स्वर्गे भद्रा भवेत् सौख्यं पाताले च धना-गमः।।मृत्युलोके यदा भद्रा कार्यसिद्धिस्तदा नहि ।। वारानुसारनाम ।। सोमे शुक्रे च कल्याणी शनौ चैव तु वृश्चिकी ।। गुरौ पुण्यवती ज्ञेया चान्यवारेषु भद्रिका।।

तिथि		शास्त्रार्थ	सं०	स्थान	फल	चंद्र स्थान		फल	वार	नाम
	३	इनतिथियोंकी ३० घडी	३	पुच्छ	विजय	मीन			सो.	
कृष्ण		३० घडीकीभद्रातिस्काना				मेष	स्वर्ग	सौख्य	शु.	कल्याणी
	१०	म वृश्चिक. मेंदिवसहोती है	६	कटि	बुद्धि	वृश्चि				
	४	उत्तरकी ३० घटिका पुच्छ			नाश	कर्क				
शुक्ल		वर्जनीय मुख शुभहोय,	४	नाभि	कलह	कन्या				वृश्चिक
	११	उत्तरार्द्ध कहिये रात्रि	११	कपाल	धन	तुला	पाताल	धनप्राप्ति.		
	७	३०घ.पूर्वार्द्धकीभद्राकाना			नाश	धन				
कृष्ण		मसर्पिणी रात्रिमेंआतीहैउ	१	गल	मरण	मिथु			गुरु	पुण्यवती
	१४	सकी५घडी.मुखवर्जनीयहै				कुंभ				
	८	विध्वंस करता पांछे पुच्छ	५	मुख	विध्वंस	सिंह			रवि	
शुक्ल		शुभहोय पूर्वार्द्ध कहिये				वृषभ	मृत्युलो०	अशुभ	बुध	[illegible]
	१५	दिवसमें भद्र होय	१०			मकर			भौ.	

दैत्येन्द्रैः समरेऽमरेषु विजयेश्वोशः क्रुधा दृष्टवान् स्वंकायात्किल निर्गता खर-मुखी लांगूलिनीचक्रपात् ।। विष्टिःसप्तभुजा मृगेन्द्रगलका क्षामोदरीप्रेतगा दैत्य-घ्नी मुदितैः सुरैस्तु करणप्रान्ते नियुक्ता तुसा ।।

टीका—दैत्य और देवताओंमें बड़ा घोर युद्ध हुआ तब देवताओंका पराजय हुआ, उस समय शिवजीके क्रोध करनेसे उनकी देहसे एक स्त्री गर्दभमुखी पुच्छवती पहियेके समान जिसके चरण विष्टि नाम सप्त भुजा मृगकीसी ग्रीवा कृश उदर प्रेतपर चढी दैत्योंके वध करनेवाली निकली और देवताओंने प्रसन्न होकर अपने करणोंमें लगाया ।

संक्रान्ति

वारानुसारनाम ।। घोरा रवौ ध्वांक्ष्यमृतद्युतौ च संक्रांतिवारे च महोदरी स्यात्।।मंदाकिनी ज्ञेच गुरौ च नन्दामिश्रा भृगौ राक्षसि चार्कपुत्रे।।नक्षत्रोंके अनुसारनाम।।उग्रक्षिप्रचरमैत्रध्रुव मिश्राख्यदारुणैः।। ऋक्षैः संक्रांतिरर्कस्य घोराद्याः क्रमशो भवेत्।। फलम् ।। ध्वांक्षी वैश्यान् सुखयति महोदर्यलं चौरसार्थान् घोरा शूद्रानथ नगपतीनेव मन्दाकिनी च।। नंदाख्या च द्विजवर गणान्मिश्रकाख्या पशूंश्च चाण्डालांतां प्रकृतिमखिलां राक्षसीसंज्ञिता च।। कालफलम् ।। पूर्वाह्ल-काले नृपतिद्विजेन्द्रान्मध्यांदिने चाथ विशोपराह्ले ।। शूद्रान् रवावस्तमिते प्रदोषे पिशाचकान्रात्रिचरान्निशीथे ।। नटादिकांश्चापररात्रिकाले प्रत्यूषकालेपशुपाल-कांश्च ।। संक्रांतिरर्कस्य समस्तलिंगा प्रभातसंध्यासमये निहन्ति ।। दिशाको मुख ।। अर्के शुक्रे मुखं पूर्वे सौम्ये भौमे च दक्षिणे ।। शनौचन्द्रेमुखंपश्चाद्गुरौचै-वोत्तरामुखी ।।

वार और नक्षत्रोंके अनुसार जाननेका कोष्टक

वार	नक्षत्र	नाम	फल	काल	फल	दिशा
रवि	उग्र	घोरा	शूद्रोंकोसुख	पूर्वाह्ण	विप्रराजाओं.	पूर्वको
सोम	क्षिप्र	ध्वांक्षी	वैश्योंकोसु०	मध्याह्न	वैश्योंको	पश्चिमको
भौम	चर	महोदरी	चोरोंकोसु०	अपराह्ण	शूद्रोंको	दक्षिणको
बुध	मैत्र	मंदाकि.	राजाओंकोसु.	प्रदोष	पिशाचोंको	दक्षिणको
गुरु	ध्रुव	नंदा	द्विजगणको०	अर्द्धरात्रि	राक्षसोंको	उत्तरको
शुक्र	मिश्र	मिश्रा	पशुको०	अपररात्रि	नटादिकको	पूर्वको
शनि	दारुण	राक्षसी	चांडालोंको०	प्रत्यूषका०	पशुपालकोंको	पश्चिमको

करणानुसार संक्रांति

स्थितिः ।। चतुष्पदेतैतिलनागयोश्च सुप्ते रविः संक्रमणं करोति ।। विद्या-द्बवाख्येचगराह्वये च सबालवाख्यैस्थितएववविष्टौ ।। फलम् ।। किंस्तुघ्नना-म्निशकुनेवणिकौलवाख्ये चोर्ध्वस्थितस्य खलुसंक्रमणं रवेःस्यात् ।। धान्या-र्घविष्टिषुभवेत्क्रमशस्त्वनिष्टो मध्येष्टलेतिमुनयः प्रवदन्तिपूर्वे ।। वाहनम्।। सिंहो व्याघ्रोवराहश्च गर्दभः कुञ्जरस्तथा ।। महिषीघोटकः श्वा च छागो वृषभकुक्कुटौ ।। उपवाहनम् ।। गजोवाजिवृर्षोमेषः खरोष्ट्रौ केसरी क्रमात्।। शार्दूलमहिषीव्याघ्रवानराश्चबवादितः ।। फलम् ।। गजेलक्ष्मीवृर्षेस्थैर्यंघोटके वाहनंतथा ।। सिंहेव्याघ्रेभयंप्रोक्तंसुभिक्षंगर्दभेशुनौ ।। वाराहे महतीपीडाजायते मेषवाहने ।। महिष्यां च भवेत्क्लेशः कुक्कुटेमृत्युरेवच ।। वस्त्रम् ।। श्वेतपीत

हरितंच पांडुरक्तश्यामसितंबहुवर्णम् ।। कंबलोविवसनंधनवर्णान्यंशुकानिच बवादितः क्रमात् ।। आयुधम् ।। भुशुण्डीचगदाखड्गदण्डकोदण्डतोमरान् ।। कुन्त-पाशांकुशास्त्रं च बाणश्चैवायुधंबवात् ।। भोजनपात्रम् ।। सौवर्णराजतंताम्रं कांस्यलौहंचखर्परम् ।। पत्रंवस्त्रंकरोभूमिः काष्ठपात्रं बवादितः ।। भक्ष्य-पदार्थः ।। अन्नंचपायसंभक्ष्यं पक्वान्नंचपयोदधि ।। चित्रान्नंगुडमध्वाज्यं शर्करा-तुबवादितः ।। गन्धम् ।। कस्तूरीकुंकुमं चैव चन्दनं मृत्तिका तथा ।। गोरोचन-मलक्तंच हरिद्राचतथाञ्जनम् ।। सिन्दूरमगुरुश्चैव कर्पूरश्चबवादितः ।। जातिः ।। देवभूताहिविहगपशवोमृगएवच ।। ब्रह्मक्षत्रियबिट्छूद्रमिश्रजातिर्बवादितः ।। पुष्पम् ।। पुन्नागजातीबकुलाश्चकेतकी बिल्वस्तथार्कः कमलंचदूर्वाः मल्ली-तथा पाटलिका जपाचबवादिपुष्पाणिचयोः जयेत्तु ।। भूषणम् ।। नूपुरंकंङ्कणं-मुक्ता विद्रुमं मुकुटं मणिम् ।। गुञ्जावराटकंनीलंगरुत्मंरुक्मकंबवात् ।। कंचुकी ।। विचित्रपर्णा शुकभूर्जपत्रिका सिता तथापाटलनीलवर्णा ।। कृष्णाजिनंचर्मंच-वल्कपाण्डुरा बवादितश्चैवतुकंचुकीस्यात् ।। वयः ।। शिशुःकुमारीचगतालका-युवाप्रौढाप्रगल्भाथततश्चवृद्धा ।। वन्ध्यातिवन्ध्याचसुतार्थिनीच प्रव्राजिकाचैव-फलंशुभं बवात् ।।

करण	बव	बालव	कौलव	तैतिल	गर.	वणिज	विष्टि	शकुनि	चतुष्प.	नाग	किंस्तु.
स्थिति	बठा	बैठी	खडी	सूता	बैठी	ठडां	वठा	खडी	सूता	सूती	खडी
फल	मध्यम	मध्यम	[illegible]र्घ.	महर्घ	मध्य	मध्य	मध्य	समर्घ	महघ	समर्घ	महर्घ
वाहन	सिंह	व्याघ्र	वराह	गर्दभ	हस्ती	महिषी	घोटक	कुत्ता	मेंढा	बैल	कुक्कुट
उपवा.	गज	अश्व	बैल	मेंढा	गर्दभ	ऊंट	सिंह	शार्दू.	महिष	व्याघ्र	वानर
फल	भय	भय	पीडा	सुभिक्ष	लक्ष्मी	क्लेश	स्थैर्य	सुभिक्ष	क्लेश	स्थैर्य	मृत्यु
वस्त्र	श्वेत	पीत	हरित	पांडुर	रक्त	श्याम	काला	चित्र	कंबल	नग्न	घनवर्ण
आयुध	भुशुंडी	गदा	खड्ग	दंड	धनुष	तोमर	कुंत	पाश	अंकुश	तलवार	बाण
पात्र	सुवर्ण	रूपा	ताम्र	कांस्य	लोह	तीकर	पत्र	वस्त्र	कर	भूमि	काष्ठ
भक्ष्य	अन्न	पायस	भक्ष्य	पक्वान्न	पय	दधि	चित्रा.	गुड	मधु	घृत	शर्करा
लेपन	कस्तूरी	कुंकुम	चंदन	माटी	गोरोच	अलक्त	हलद	सुरमा	सिंदूर	अगर	कर्पूर
वर्ण	देव	भूत	सर्प	पशु	मृग	विप्र	क्षत्री	वैश्य	शूद्र	मिश्र	अंत्यज
पुष्प	पुन्नाग	जाती	बकुल	केतकी	बेल	अर्क	कमल	दूर्वा	मल्ली	पाटल	जपा
भूषण	नूपुर	कंकण	मोती	मूंगा	मुकुट	मणि	गुंजा	कौडी	नीलक	पुष्पा.	सुवर्ण
कंचु॰	विचित्र	पर्ण	हरित	भूर्जपत्र	सीत	पांढरी	नील	कृष्ण	अंजन	वल्कल	पांडुर
वय	बाल	कुमारी	गताल.	युवा	प्रौढा	प्रगल्भा	वृद्धा	वंध्या	अतिवं.	पुत्रव॰	संन्या.

फलश्रुति

वाहनादिबुधैर्ज्ञेयमथोत्क्रान्तिविशेषतः ।।
वाहनादिकवस्तूनां संक्रमात्तु विनाशता ।।

टीका––संक्रांति जिस वाहनपर स्थित हो और जो वस्तु धारण करे उन सबका नाश हो ।

मुहूर्त्त

संक्रांति कितने मुहूर्त होती है उसके नक्षत्र और फल

संक्रान्तौ मूर्त्तभेदा हरपवनयमे वारुणे सार्परौद्रे एषापञ्चेन्दुसंज्ञागुरुकरपितृभे चाग्निदस्त्रे च सौम्ये।। त्वाष्ट्रे मैत्रे च मूले श्रुतिवसुवपुषा त्रीणि पूर्वा खरामे ब्राह्मेदित्ये द्विदैवे भवति शरकृतादुत्तरा त्रीणि ऋक्षम् ।। बाणवेदैः समर्घं स्यान्मध्यस्थं व्योमरामयोः ।। मूर्तौ पञ्चदशे याते दुर्भिक्षं च प्रजायते

टीका––आर्द्रा स्वाती भरणी शतभिषा आश्लेषा ज्येष्ठा इनमें जो संक्राति अर्के वह १५ मुहूर्त्त होती है और दुर्भिक्ष करनेवाली है और पुष्य हस्त मघा कृतिका अश्विनी मृगशिर चित्रा अनुराधा मूल श्रवण धनिष्ठा रेवती तीनों पूर्वा इन नक्षत्रोंकी संक्रांति ३० मुहूर्त होती है यह साधारण फलदायक है और रोहिणी पुनर्वसु विशाखा तीनोंउत्तरा इनमें संक्रांति अर्के तो ४५ मुहूर्त होती है यह स्वस्थताका कारण है ।

दूसरा प्रकार

पूर्वसंक्रांतिनक्षत्रात्परसंक्रातिऋक्षकम् ।।
द्वित्रिसंख्यासमर्घं स्याच्चतुः पञ्च महर्घता ।।

टीका––गतमासदिन संक्रांतिनक्षत्र और प्राप्त संक्रांति दिन नक्षत्र इनका अंतर २ अथवा तीन हो तो सस्ता और ४ वा ५ का नक्षत्रोंमें अंतर आये तो महर्घ अर्थात् महंगा जानिये।

धान्यविचार

संक्रांतिनाड्या तिथिवारऋक्षधान्यक्षरं वह्नि हरेत्तु भागम् ।।
संक्रांतिनाडी नवमिश्रिता च सप्ताहता पावकभाजिता च ।।
एके समर्घं द्वितये च सौम्यं शून्ये समर्घं मुनयो वदन्ति ।।

टीका––संक्रांतिकी घडी और गततिथि वार नक्षत्र और धान्यको एकत्र करके तीनका भाग दे वह एक मत और दूसरे मतके आज्ञानुसार संक्रांतिकी घडियोंमें ९ मिलाकर ७ से गुणाकर ३ का भाग दे । १ शेष रहे तो धान्यकी स्वस्थता और २ बचे तो साधारण और निःशेष हो तो महर्घता जानिये ।

नक्षत्रअनुसारसंक्रांतिपीडा

सक्रांत्यधरनक्षत्राद्गणयेज्जन्मभावधि ।। त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं त्रिकं षट्कं पुनः पुनः।। पन्थाभोगव्यथावस्त्रं हानिश्च विपुलं धनम् ।।

टीका—संक्रांतिके अधर नक्षत्रसे अपने नक्षत्रतक गिने और इस रीतिसे उसका विचार करे प्रथम ३ पंथ चलाये फिर ६ भोग फिर ३ दुःख ६ वस्त्र फिर ३ हानि और ५ धनप्राप्ति कहते हैं।

जन्मनक्षत्रोंका फल

यस्य जन्मर्क्षमासाद्य तिथौ संक्रमणं भवेत् ।।
तन्मासाभ्यन्तरे तस्य वैरं क्लेशं धनक्षयः ।।

टीका—जिसके जन्मनक्षत्र में संक्रांति अर्के उसका किसीसे वैर हो और जिसके जन्म-मासमें संक्रांतिका संभव हो उसे क्लेश और जिसकी जन्म-तिथिमें संक्रांति पड़े उसका धनक्षय होता है।

संक्रान्तिका स्वरूप

षष्टियोजनविस्तीर्णा संक्रांतिः पुरुषाकृतिः ।। एकवक्त्रा नवभुजा लम्बोष्ठी दीर्घनासिका ।। पृष्ठे लोका भ्रमत्येव गृहीत्वा खर्परं करे ।। एवं संक्रमणे यस्याः फलं प्रोक्तं मनीषिभिः ।।

टीका—शरीर साठ योजन लम्बा और चौड़ा, पुरुषाकृति, एकमुंह, नौभुजा, ओठ और नासिका लंबे और खर्पर हाथमें लिये, पीछे लोक-भ्रमण करते हैं।

चंद्रसे संक्रांतिका वर्ण और फल

मेषालिकर्के च तथैव रक्तं चापे च मीने च तुले च पीतम् ।। श्वेतं वृषे स्त्री मिथुने च चन्द्रे कृष्णं च नक्रेऽथ घटे च सिंहे ।। रक्ते फलं भवेद्दुःखं श्वेतं चैव सुखं शुभम् ।। पीते श्रीस्तु तथा प्रोक्ता श्यामेमृत्युर्न संशयः ।।

टीका—मेष वृश्चिक कर्क इन राशियोंके चंद्रमा में यदि संक्रांतिका प्रवेश हो तो इसका रक्तवर्ण जानिये वह दुःखदायक है और धनु मीन तुलाके चंद्रमामें संक्रांतिका पीतवर्ण ये लक्ष्मीकी प्राप्ति कराती हैं और वृष कन्या मिथुनकी संक्रांतिका श्वेतवर्ण सुख और शुभप्राप्ति करानेवाली है मकर कुंभ और सिंहके चंद्रमाकी संक्रांतिका कृष्णवर्ण है यह मृत्युदायी है।

राशि अनुसार चंद्रमा

यादृशेन हिमरश्मिमालिना संक्रमो भवति तिग्मरोचिषा ।।
तादृशं फलमवाप्नुयान्नरः साध्वसाध्वपि वशेन शीतगोः ।।

टीका—जैसे चंद्रमा नष्टस्थानी व उत्तमस्थानी होकर शुभाशुभ फलको देता है उसी भांति नष्ट अथवा उत्तम चंद्रमाकी अर्की हुई संक्रांति चंद्रमाके अनुसार फलदायक होती है।

पुण्यकाल

पर्वतोपि हि रवेश्च संक्रमात्पुण्यकालघटिकास्तु षोडश ।।
अर्धरात्रिसमयादनन्तरं संक्रमे परदिनं हि पुण्यदम् ।।

टीका—सोलह घटिका पुण्यकाल होता है यदि संक्रांति दिनमें पड़े पूर्व रात्रि तक तो पुण्यकाल उसी दिवस जानना चाहिये और यदि वृद्धि रात्रिके पीछे पड़े तो दूसरे दिवस पुण्य-काल होगा।

ग्रहण प्रकार

चंद्रग्रहणकी प्रवृत्ति

भानोः पञ्चदशे ऋक्षे चन्द्रमा यदि तिष्ठति।।
पौर्णमास्या निशाशेषे चन्द्रग्रहणमादिशेत् ।।

टीका––सूर्यसे पंद्रहवें नक्षत्रमें जो चंद्रमा स्थित हो तो पूर्णमासीके निशा शेष अर्थात् प्रतिपदाकी संधिमें चंद्र ग्रहण होता है।

सूर्यग्रहण

मघोनं ग्रस्तनक्षत्रात् षोडशं यदि सूर्यभम् ।।
अमावास्या दिवाशेषे सूर्यग्रहणमादिशेत् ।।

टीका––संपूर्ण महीनोंकी अमावास्याके दिन सूर्य और चंद्रमा एक राशिके होते हैं परन्तु अमावास्याके दिन सूर्य नक्षत्र और दिवसनक्षत्र एक हो तो अमावास्या और प्रतिपदाकी संधिमें सूर्यग्रहण होता है उस दिन सूर्यनक्षत्रसे चन्द्रनक्षत्र देखिये उसमें से ११ दिन काटकर शेष १६ वें सूर्य नक्षत्र हो तो वही सूर्य ग्रहण होता है ।।

राशि अनुसार शुभाशुभ ग्रहण फल

त्रिषड्दशायोपगतं नराणां शुभप्रदं स्याद्ग्रहणं रवीन्दोः ।।
द्विसप्तनन्देषु च मध्यमं स्याच्छेषेष्वनिष्टं मुनयो वदन्ति ।।

टीका––सूर्य अथवा चंद्रग्रहण अपनी राशिसे जिस राशिपर हो उसका शुभाशुभ फल विचारिये तीसरी छठी दशवीं राशिपर हो तो शुभ जानिये और दूसरा सातवां नववां ये मध्यम और पहिला चौथा पांचवां आठवां ग्यारहवां बारहवां ये अशुभ हैं ।।

दूसरा पक्ष

ग्रासात्तृतीयोऽष्टमगश्चतुर्थस्तथायसंस्थः शुभगः स्वराशेः ।
ग्रासाद्रविः पञ्चनवर्तमध्यस्ततोऽधमोक्ताश्च बुधैश्च शेषाः ।।

टीका––जिस राशिपर सूर्यग्रहण हो उससे अपनी राशितक गिने तो ३।८।४।११ ये उत्तम और ५।९।६ ये मध्यम और १।२।७।१०।१२ ये राशि अधम जैसी राशि हो वैसा ही फल होता है ।।

ऋतुप्रकरण शुभाशुभ फल

तिथिरैकगुणा प्रोक्ता नक्षत्रं च चतुर्गुणम् ।। वारः षष्ठगुणो ज्ञेयो मासश्चाष्टगुणः स्मृतः ।। वस्त्रं शतगुणं विद्याद्दर्शनं च ततोऽधिकम् ।।

टीका–तिथि एक गुणी नक्षत्र चार गुणा वार ६ गुणा मास ७ गुणा और वस्त्र १०० गुणा जो अधिकज्ञान हो उसका गुण सबसे अधिक परंतु अच्छा दिवस हो तो अच्छा गुण और दुष्ट हो तो बुरा जानिये ।।

मासफल

आर्तवे प्रथमे चैत्रे वैधव्यं जायते ध्रुवम् ।। वैशाखे धनवृद्धिःस्याज्ज्येष्ठे रोगान्विता भवेत् ।। आषाढे मृतवत्सा च श्रावणे धनसंयुता ।। भाद्रे च दुर्भगा नारी आश्विने धनधान्यभाक्।।कार्तिके निर्धना नारी मार्गशीर्षे बहुप्रजा ।। पौषे च पुंश्चला नारी माघे पुत्रवती भवेत् ।। फाल्गुने पुत्रसंपन्ना ज्ञेयं मासफलं बुधैः ।।

टीका––चैत्रमासमें प्रथम ऋतुदर्शन हो तो विधवा हो, वैशाखमें धनवृद्धि, ज्येष्ठमें रोगयुक्त, आषाढमें मृतवत्सा, श्रावणमें लक्ष्मी, भाद्रपदमें दरिद्र, आश्विनमें धनधान्य, कार्तिक में निर्धन, मार्गशीर्षमें बहुप्रजा, पौषमें व्यभिचारिणी, माघमें पुत्रवती और फाल्गुनमें ऋतुदर्शन होनेसे पुत्रसंपन्न जानिये ।

तिथिफल

शुचिर्नारी प्रतिपदि द्वितीयायां तु दुःखिनी ।। तृतीयायां पुत्रवति चतुर्थ्यां विधवा भवेत्।। पञ्चम्यां चैव सौभाग्यं षष्ठ्यां कार्यविनाशिनी।। सप्तम्यां सुप्रजा नारी चाष्टम्यां राक्षसी तथा ।। नवम्यां विधवा नारी दशम्यां सौख्य-भोगिनी ।। एकादश्यां शुचिर्नारी द्वादश्यां मरणं ध्रुवम् ।। त्रयोदश्यां शुभा प्रोक्ता चतुर्दश्यां परान्विता ।। पौर्णमास्याममायां च शुभं चाशुभमेव च।।

टीका––प्रतिपदामें ऋतुदर्शन हो तो शुचि, द्वितीयामें दुःखिनी, तृतीयामें पुत्रवती, चतुर्थीमें विधवा, पंचमीमें सौभाग्यवती, षष्ठीमें कार्यनाशिनी, सप्तमीमें उत्तम संतति, अष्टमीमें राक्षसी, नवमीमें विधवा, दशमीमें सौख्यभोगिनी, एकादशीमें शुचि, द्वादशीमें मरण, त्रयोदशीमें शुभ, चतुर्दशीमें व्यभिचारिणी, पूर्णिमामें शुभ, अमावास्यामें अशुभ जानिये ।

ग्रहण और संक्रांतिका फल

संक्रान्त्यां ग्रहणे चैव वैरिणी च गतालका ।।

टीका––संक्रांतिमें प्रथम ऋतुदर्शन हो तो वैरिणी और ग्रहणमें हो तो विधवा जानिये ।

वार फल

आदित्ये विधवा नारी सोमे चैव मृतप्रजा ।। मंगले आत्मघाती स्याद्बुधे कन्याप्रसूः स्मृता ।। गुरुवारे सुतप्राप्तिः कन्यापुत्रयुता भृगौ ।। मन्दे च पुंश्चली नारी ज्ञेयं वारफलं शुभम् ।।

टीका––रविवारको ऋतुदर्शन हो तो विधवा हो, सोमवारको मृतप्रजा, भौमवारको आत्मघातिनी, बुधवारको कन्यासंतति हो, गुरुवारको पुत्रप्रसूति, शुक्रवारको कन्या और पुत्रप्रसूति और शनिवारको हो तो व्यभिचारिणी हो ।

नक्षत्रफल

अश्विन्यां सुभगा नारी भरण्यां विधवा भवेत् ।। कृत्तिकायां च वन्ध्या स्याद्रोहिण्यां चारुभाषिणी ।। मृगे दारिद्र्चयुक्तोक्ता चार्द्रायां क्रोधकारिणी ।।

पुनर्वसौ पुत्रवती पुष्ये पुत्रधनेश्वरी ।। आश्लेषायां भवेद्वन्ध्या मघायां चार्थ-संयुता ।। पूर्वायां चार्थयुक्ता हि चोत्तरायां सती तथा ।। हस्ते पुत्रधनैर्युक्ता चित्रायामनुचारिणी ।। स्वात्यान्यगर्भावयवा विशाखायां तु निष्ठुरा।। मैत्रे च दुर्भगा नारी ज्येष्ठायां विधवा भवेत् ।। मूले पतिव्रता साध्वी पूर्वा सौभाग्य-भोगिनी ।। उत्तरार्थवती प्रोक्ता श्रवे सौभाग्यसंपदा । धनिष्ठायां शुभा नारी शते भद्रान्विता बुधैः ।। कुम्भे चोक्ता कामिनी तु उभे लक्ष्मीयुता शुभा ।। रेवत्यां पतिरिक्ता तु ज्ञेयं भानां फलं बुधैः ।।

टीका—अश्विनी नक्षत्रमें यदि स्त्रीको प्रथम ऋतुदर्शन हो तो शुभ, भरणीमें विधवा, कृतिकामें वंध्या, रोहिणीमें प्रियभाषिणी, मृगशिरमें दरिद्रिणी, आर्द्रामें क्रोधिनी, पुनर्वसुमें पुत्रवती, पुष्यमें पुत्र और धनवती, आश्लेषामें बांझ, मघामें धनवती, पूर्वामें अर्थवती, उत्तरामें पतिव्रता, हस्तमें पुत्रवती, धनवती, चित्रामें दासी, स्वातीमें अन्यगर्भवती, विशाखामें निष्ठुर, अनुराधामें दुर्भागिनी, ज्येष्ठामें विधवा, मूलमें पतिव्रता, पूर्वाषाढामें सौभाग्यवती, उत्तरा-षाढामें अर्थवती, श्रवणमें सौभाग्य और संपतियुक्त, धनिष्ठामें शुभ, शतभिषामें शुभ, पूर्वा-भाद्रपदामें उत्तमभोगवती, उत्तराभाद्रपदामें लक्ष्मीवती, रेवतीमें पतिरहित जानिये ।

योगफल

आद्यतौ विधवा नारी विष्कंभे च रजस्वला ।। स्नेहः प्रीत्या तु दम्प-त्योरायुष्मांस्तु धनप्रदः ।। सौभाग्ये पुत्रयुक्ता तु शोभने मङ्गलान्वितः ।। अति-गण्डे तु विधवा सुकर्मणि तु शोभना ।। धृतौ संपत्तियुक्ता च शूले रोगयुताभवेत्।। गण्डे दुःखान्बिता नारी वृद्धौ पुत्रान्विता भवेत्।। ध्रुवे तु शोभना नारी व्याघाते भर्तृघातकी।। हर्षणे हर्षयुक्ता तु वज्रे चैवानपत्यता ।। सिद्धौ पुत्रान्विता नारी व्यतीपाते विभर्तृका ।। मृतवत्सा च वर्याणे परिघे चाल्पजीविनी ।। शिवे पुत्र-वती नारी सिद्धे शीघ्रफलान्विता ।। साध्ये धर्मपरा नारी शुभे शुभगुणान्विता ।। शुक्ले शुभकरा नारी ब्रह्मणि स्वपतौ रता ।। ऐन्द्रे देवररता वैधव्यं वैधृतौ स्मृतम् ।।

टीका—विष्कंभयोगमें यदि प्रथम ऋतुदर्शन हो तो स्त्री विधवा हो, प्रीति योगमें, पतिसे स्नेह, आयुष्मान्में धनप्राप्ति, सौभाग्यमें पुत्रवती, शोभनमें मंगलदायक, अतिगंडमें विधवा, सुकर्मामें शुभ, धृतिमें संपत्तियुक्त, शूलमें रोगिणी, गण्डमें दुःखान्विता, वृद्धिमें पुत्रयुक्ता, ध्रुवमें शुभ, व्याघातमें पतिघातिनी, हर्षणमें हर्षयुक्ता, वज्रमें वंध्या, सिद्धियोगमें पुत्रयुक्ता, व्यतीपातमें पतिरहिता, वर्याणमें मृतपुत्रा, परिघमें अल्पजीविनी, शिवमें पुत्र-वती, सिद्धिमें शीघ्र फलयुक्ता, साध्ययोगमें अधर्मपरा, शुभयोगमें शुभगुणयुक्ता, शुक्लयोगमें शुभकर्मपरा, ब्रह्मयोगमें निजपतिरता, ऐंद्रमें देवररता और वैधृतियोगमें विधवा हो ।।

करणफल

बवे प्रोक्ता तु वन्ध्या स्त्री बालवे पुत्रसंपदः ।। कौलवेपुंश्चली नारी तैतिले चारुभाषिणी ।। गरे च गुणसंपन्ना वणिजे पुत्रिणी स्मृता ।। विष्टचा च मृतवत्सा च शकुनौ कामपीडिता ।। चतुष्पदे शुभा नारी नागे पुत्रवती भवेत् ।। किंस्तुघ्ने व्यभिचारः स्यात् करणानां शुभं फलम् ।।

टीका—बवकरणमें जो स्त्री प्रथम पुष्पवती हो तो वह बंध्या हो, बालवमें पुत्रकी प्राप्ति, कौलवमें वेश्या, तैतिलमें प्रियभाषिणी, गरमें गुणसंपन्ना, वणिजमें पुत्रिणी, विष्टिमें मृतवत्सा अर्थात् उसका बालक मर जाय, शकुनिमें कामातुरा, चतुष्पदमें शुभ, नागमें पुत्रवती, किंस्तुघ्नमें व्यभिचारिणी हो ।

राशिफल

व्यभिचारी तु मेषे स्याद्वृषभे सुखभोगिनी ।। मिथुने धनयुक्तोक्ता कर्कटे दुःखिताः बुधैः ।। सिंहे पुत्रवती नारी कन्यायां मानिनी शुभा ।। तुले विचक्षणा नारी वृश्चिके व्यभिचारिणी ।। धने पतिव्रता ज्ञेया मांसहीना च नक्रके ।। कुम्भे धनवती ज्ञेया मीने च चपला बुधैः ।।

टीका–मेष राशिमें यदि ऋतुमती हो तो व्यभिचारिणी, वृषमें सुखभोगिनी, मिथुनमें धनयुक्ता, कर्कमें दुःखी, सिंहमें पुत्रवती, कन्यामें अभिमानी, तुलामें कुचाली, वृश्चिकमें जारिणी, धनमें पतिव्रता, मकरमें कृशा, कुंभमें धनवती, मीनमें चपला हो ।

होराफल

सूर्ये च व्याधिसंयुक्ता चन्द्रे होरे प्रतिव्रता ।। कुजे होरेतु दौर्भाग्यं बुधे होरे तु पुत्रिणी ।। जीवे सर्वसमृद्धिः स्याद्भृगौ सौभाग्यमेव च ।। शनौ सर्वविनाशाय होरकस्य फलं बुधैः ।।

होरा	फल	होरा	फल
रविकाहोरा	योगिनी	गुरुकाहोरा	सर्वसिद्धि
सोमका होरा	पतिव्रता	शुक्रकाहोरा	सौभाग्य
भौमकाहोरा	दुर्भगा	शनिकाहोरा	सर्वविनाशिनी
बुधकाहोरा	पुत्रिणी		

लग्नफल

मेषलग्ने दरिद्रा च वृषभे धनसंयुता ।। कामिनी मिथुने लग्ने कर्कटे पतिनाशिका ।। सिंहे पुत्रप्रसूता च पतियुक्तस्त्र्याख्यलग्नके ।। तुले चैवान्धतादायी वृश्चिके दद्रु दुःखिनी ।। धनुर्लग्ने धनैश्वर्यं मकरे कर्कशा भवेत् ।। कुम्भे वंशद्वयघ्नी च मीने सर्वगुणान्विता ।।

टीका--प्रथमसंक्रांति चलती हो तो वही प्रथम लग्न जानिये । १ मेष लग्नमें ऋतुमती हो तो दरिद्रिणी, २ धनयुक्ता, ३ कामिनी, ४ पतिनाशिनी, ५ पुत्रप्रसूता, ६ पतिव्रता, ७ अंधतादायक, ८ दद्रुदुःखित, ९ धनैश्वर्यवती, १० कर्कशा, ११ उभयवंशनाशिनी, १२ गुणयुक्ता हो ।

ग्रहोंका फल

लग्ने राहुश्च सौरिश्च रविचन्द्रौ तथैव तु ।।
तदा सा विधवा नारी सर्वसौभाग्यवर्जिता ।।

टीका--जिस लग्नमें स्त्री प्रथम रजस्वला हो उसमें राहु, शनि, रवि, चन्द्र ये चार ग्रह स्थिर हों तो वह स्त्री विधवा हो ।

रक्तफल

शोणिता बिन्दुमात्रेण स्वैरिणी चाल्पशोणिता ।। रक्ते रक्ते भवेत्पुत्रः कृष्णे चैव मृत प्रजा ।। पिच्छिले च भवेद्वन्ध्या काकवन्ध्या च पांडुरे ।। पीते दुश्चारिणी ज्ञेया सुभगा गुञ्जसादृशे ।। सिन्दूरवर्णे रक्ते तु कन्यासंततिरेव च ।।

टीका--प्रथम ऋतुदर्शनके समय रक्त बिंदुमात्र और अल्पवर्ण हो तो उसका फल यह है कि स्त्री व्यभिचारिणी हो, रक्तवर्ण रुधिर हो तो पुत्रवती, काला हो तो मृतप्रजा, पिच्छिल अर्थात् गाढ़ा हो तो बांझ, पांडुर वर्णसे वन्ध्या, पीतवर्णसे दुराचारिणी, गुंजा सदृशसे सौभागिनी, सिंदूरवर्णसे कन्याप्रसूति इस प्रकार फल जानिये ।

कालफल

पूर्वाह्णे सुभगा प्रोक्ता मध्याह्ने चैव निर्धना ।। अपराह्णे शुभा चैव सायाह्ने सर्वभोगिनी ।। सन्ध्योरुभयोर्वेश्या निशीथे विधवा भवेत् ।। पूर्वरात्रे तथा वन्ध्या दुर्भगा सर्वसंधिषु ।।

टीका--जो स्त्रीके प्रथम ऋतुदर्शन प्रातःकाल हो तो सुभगा जानिये, मध्याह्नम निर्धना, तीसरे पहर हो तो शुभ, संध्याको हो तो सर्वभोगिनी और दोनों संधिमें हो तो वेश्या, आधी रात्रिमें हो तो विधवा, पूर्वरात्रिमें हो तो बांझ, सब सन्धिमें दुर्भागिनी हो ।

पहिने हुए वस्त्रोंका फल

सुभगा श्वेतवस्त्रा च रोगिणी रक्तवस्त्रका ।। नीलाम्बरधरा नारी विधवा पुष्पवन्तिका ।। भोगिनी पीतवस्त्रा च मिश्रवस्त्रा वरप्रिया ।। सूक्ष्मा स्यात्सूक्ष्मवस्त्रा च दृढ़वस्त्रा पतिव्रता ।। दुर्भगा जीर्णवस्त्रा च सुभगा मध्यवाससा ।। धौतवस्त्रा शुभा नारी मलिनी मलिना भवेत् ।।

टीका--प्रथम ऋतुसमय पांडुर वस्त्र पहिने हो तो शुभ लाल वस्त्र पहिने स्त्री पुष्पवती हो तो रोगिणी, नीले वस्त्रसे विधवा, पीत वस्त्र से भोगिनी, मिश्र वर्णवस्त्रयुता पतिप्रिया, सूक्ष्मवस्त्रयुता कृश, मोटे वस्त्रयुता पतिव्रता, जीर्णवस्त्र पहिननेसे स्त्री दुर्भागिनी,

मध्यम वस्त्रयुता सुभगा, धुले वस्त्रयुता सुभगा और मलिन वस्त्र पहिने स्त्री प्रथम ऋतुधर्म को प्राप्त हो वह मलिन जानिये ।

रजस्वलाधर्म

आर्तवाभिष्लुता नारी नैकवेश्मनि संश्रयेत् ।। न चान्यजतिसंस्पर्शंकुर्यात्स्पर्शं नच क्वचित् ।। त्रिरात्रंस्वमुखं नैव दर्शयेद्यस्य कस्यचित् ।। स्ववाक्यं श्रावयेन्नैव न कुर्याद्दन्तधावनम् ।। न कुर्यादार्तवे नारी ग्रहाणामीक्षणं तथा ।। अञ्जनाभ्यञ्जनं स्नानं प्रवासं वर्जयेत्तथा ।। नखादिकृन्तनं रज्जुतालपत्रादि बन्धनम्।। नवे शरावे भुञ्जीत तोयं चाञ्जलिना पिबेत् ।।

टीका--ऋतुमती स्त्रीको एक घरमें न रखना, अन्य जातिको स्पर्श न करना अपनी जातिमें भी स्पर्श न करना, तीन रात्रि अपना मुख किसीको न दिखाना, अपनी वाणी किसीको न सुनाना,दातुन नहीं करना, नक्षत्रों को न देखना, काजल, तैल, स्नान, रास्ता चलना, डोरीका स्पर्श, तालपत्रका बांधना इतने कर्म न करे नवीन मृत्तिकाके पात्रमें भोजन करे और अंजुली से जल पीये ।

गर्भाधानका मुहूर्त

ऋतौ तु प्रथमे कार्यं पुन्नक्षत्रे शुभे दिने ।।
मघामूलान्त्यपक्षान्तंमुक्त्वा चन्द्रबले सति ।।

टीका--प्रथम ऋतुदर्शन समय पुरुषनक्षत्र और शुभदिनमें मघा, मूल, रेवती, अमावास्या, पूर्णिमा इनको छोड बलवान् चंद्रमें गर्भाधान करना योग्य है ।

गर्भाधानमें त्याज्य

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिम् ।। पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्द्धं स्वपत्नीगमे भानूत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ।। भद्रा षष्ठी पर्व रिक्ताच सन्ध्या भौमार्कार्कीनाद्यरात्र्यश्चतस्रः ।।

टीका--गण्डान्त ३ प्रकारके अर्थात् तिथिगंडांत, लग्नगंडांत, नक्षत्रगडांत, वधतारा, जन्मतारा, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, ग्रहणदिन, व्यतीपात, वैधृति, श्राद्धदिन, परिघार्ध उत्पातनक्षत्र, पापयुक्तनक्षत्र, जन्मलग्नसे, अष्टम लग्न, भद्रा, षष्ठीतिथि, पर्वतिथि अर्थात् चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पौणिमा, संक्रांति, रिक्तातिथि अर्थात् चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी, संध्याकाल भौम, रवि शनि ये वार और प्रथम रात्रिसे चार रात्रि ये गर्भाधानमें त्याज्य हैं ।

ऋतुकी षोडशरात्रियोंका शुभाशुभ निर्णय

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः ।। तासामाद्याश्चतस्रस्तु निन्दितैकादशी च या ।। त्रयोदशी च शेषाः स्युः प्रशस्ता दश वासराः ।। तस्मात् त्रिरात्रं चाण्डालीं पुष्पितां परिवर्जयेत् ।।

टीका––स्त्रियोंके ऋतुधर्मसंबंधी स्वाभाविक १६ रात्रि होती हैं उनमेंसे प्रथम तीन रात्रिमें पुष्पवती चांडाली होती है और चौथी ग्यारवीं तेरहवीं ये निंदित अर्थात् वर्जनीय और शेष दश रात्रि प्रशस्त हैं।

रात्रौ चतुर्थ्यां पुत्रः स्यादल्पायुर्धनवर्जितः ।। पञ्चम्यां पुत्रिणी नारी षष्ठ्यां पुत्रस्तु मध्यमः ।। सप्तम्यामप्रजा योषिदष्टम्यामीश्वरः पुमान् ।। नवम्यां सुभगा नारी दशम्यां प्रवरः सुतः ।। एकादश्यामधर्म्या स्त्री द्वादश्यां पुरुषोत्तमः ।। त्रयोदश्यां सुता पापा वर्णसंकरकारिणी ।। धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च आत्मवेदी दृढव्रतः।। प्रजायते चतुर्दश्यां पंचदश्यां पतिव्रता।। आश्रयः सर्वभूतानां षोडश्यां जायते पुमान् ।।

टीका––चौथी रात्रिमें स्त्रीसंग करे तो पुत्र अल्पायु और धनवर्जित हो, पांचवी रात्रिमें पुत्रवती, छठी रात्रिमें मध्यम पुत्र सातवींमें पुत्र उत्पन्न नहीं होगा, अष्टमी रात्रि ईश्वरभक्ति, नवमीरात्रिमें सौभाग्यवृद्धि, दशमीमें गुणवान् पुत्र, ग्यारहवींमें अधर्मी पुत्र, बारहवीं रात्रिमें उत्तम पुरुष, तेरहवींमें पापकर्मिणी कन्या, चौदहवींमें धर्मात्मा कृतज्ञ और व्रत करनेवाला पुत्र, पन्द्रहवीं रात्रिको पतिव्रता, सोलहवीं रात्रिको सब जीवोंको आश्रय देनेवाला पुत्र उत्पन्न होता है ।

निषेकके तिथि और वार

षष्ठ्यष्टमी पञ्चदशी चतुर्थी चतुर्दशीरप्युभयत्र हित्वा ।।
शेषाः शुभाः स्युस्तिथयो निषेके वाराः शशाङ्कार्यसितेंदुजाश्च ।।

टीका––षष्ठी, अष्टमी, पौर्णिमा, अमावास्या, चतुर्दशी इन तिथियोंको छोड़कर शेष तिथि और सोम, गुरु, शुक्र, बुध ये वार शुभ जानिये ।

नक्षत्र

विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानि निषेककार्ये ।।
पूज्यानि पुष्यवसुशीतकराश्विचित्रादित्याश्च मध्यमफलाः अधमा स्युरन्ये ।।

टीका––श्रवण, रोहिणी, हस्त, अनुराधा, स्वाती, रेवती, मूल, तीनों उत्तरा, शतभिषा ये नक्षत्र उत्तम कहे हैं और पुष्य, धनिष्ठा, मृगशिर, अश्विनी चित्रा, पुनर्वसु ये मध्यम हैं और शेष नक्षत्र अधम जानिये। मुहूर्तमार्तंडके मतसे वैधृति, संक्रांति, महापात आदि दुष्ट योग और श्राद्धांत, पर्वदिन, जन्मनक्षत्रसंधि, दिवस रात्रि नक्षत्र इत्यादि वर्जनीय हैं और जिस लग्नमें विषमस्थानी नवांशकमें उच्च बृहस्पति अथवा सूर्य चन्द्रमा हो तो पुत्र प्राप्ति हो और येही ग्रह समराशिके हों तो कन्याप्राप्ति होय ।

गर्भाधानमें लग्नशुद्धि

केन्द्रत्रिकोणेषु शुभैश्च पापैस्त्र्यायारिगैः पुंग्रहदृष्टलग्ने ।।
ओजांशकेजेऽपि च युग्मरात्रौ चित्रादितीज्याश्विषु मध्यमं स्यात् ।।

टीका--प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, दशम ये केंद्र इनमें शुभग्रहण हो, त्रिकोण, नवम, पञ्चम इसमें शुभग्रह हों ३ । ११ । १० । ६ इसमें पापग्रह हो लग्नको पुरुष ग्रह देखते हों और विषम नवांशमें चंद्रमा हो तो इसमें गर्भाधान शुभ है और समरात्री, पुनर्वसु, पुष्य, अश्विनी ये नक्षत्र मध्यम होते हैं ।

प्रथम गर्भिणीके पुंसवनादिक संस्कार

मूलादित्रितये करे श्रवणके भाद्रद्वयार्द्रात्रिये रेवत्यां मृगपञ्चके दिनकरे भौमेन रिक्तातिथौ ।। नेत्रे मास्यथवाग्निमासि धनुषि स्त्रीमीनयोश्च स्थिरे लग्ने पुंसवनं तथैव शुभदं सीमन्तकर्माष्टमे ।।

टीका--मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, हस्त, श्रवण, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी, मृगशिर और रवि भौमवार और रिक्ता तिथि वर्जनीय हैं और गर्भाधानसे दूसरा महीना, तीसरा मास और धन कन्या मीन और स्थिर लग्नोंमें पुंसवन कर्म करे और इन्हीं नक्षत्र वा लग्नोंमें ये अष्टमासमें सीमन्त कर्म करना शुभ है ।

वारफल

मृत्युश्च सौरेस्तनुहानिरिन्दोः प्रजामृतिः पुंसवने बुधस्य ।।
काकी च वन्ध्या भवतीह शुक्रे स्त्रीपुत्रलाभो रविभौमजावः ।।

टीका--शनिवारको पुंसवन कर्म करे तो मृत्यु हो, चन्द्रवारको शरीरका नाश, बुधवारको सन्ताननाश, शुक्रवारको काकवन्ध्या एकवार प्रसूति और रवि, भौम, गुरु इन वारोंमें पुत्र प्राप्त हो, परंतु स्त्रीके चन्द्रमा शुभ हो, दुष्ट योगादिक वर्जित हैं, उक्त नक्षत्र आदिमें और शुभ दिवसमें पुंसवन कहिये गर्भकी पुरुषाकृति होना यह कर्म कराये और जिस मुहूर्त्तमें गर्भकी स्थिरता कही है इसीमें अनवलाभेन भी कर्म उक्त है ।

अन्य मत

चतुर्थषष्ठाष्टममासभाजि सौरेण गर्भे प्रथमं विधेयम् ।।
सीमन्तकर्म द्विजभामिनीनां मासेऽष्टे विष्णुबलिं च कुर्यात् ।।

टीका--प्रथम गर्भधारण होनेसे चतुर्थ षष्ठ अष्टम ऐसे सम और मासोंमें आठ मास पर्यंत ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्योंकी स्त्रियोंका सीमंतकर्म और विष्णुबलि करना उचित है ।

सीमन्ते तिष्यहस्तादितिहरिशशभृत्पौष्णविद्धचुत्तराख्या ।।
पक्षच्छिद्रा च रिक्ता पितृतिथिमपहायापराः स्युः प्रशस्ताः ।।

टीका--सीमंतकर्ममें पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, श्रवण, मृगशिर रेवती, रोहिणी तीनों उत्तरा ये नक्षत्र शुभ हैं और पक्षरंध्र तिथि, रिक्ता तिथि और अमावास्याको छोड शेष तिथियां शुभ हैं ।

पक्षच्छिद्रातिथि

चतुर्दशी चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा ।। षष्ठी च द्वादशी चैव पक्षच्छिद्राह्वयाः स्मृताः ।। कर्मोदितासु तिथिषु वर्जनीयाश्च नाडिकाः ।। भूताष्टमनुतत्त्वाङ्कदशशेषास्तु शोभनाः ।।

टीका––चतुर्दशीकी प्रथमकी ५ घटिका, चौथकी ८ घटिका, अष्टमीकी १४ घटिका षष्ठीकी ८ घटिका, द्वादशीकी १० घटिका वर्जनीय हैं और शेष घडी शुभ हैं ।

मासेश्वरज्ञान

मासेश्वराः सितकुजेज्यरवीन्दुसौरचन्द्रात्मजास्तनुपचन्द्रदिवाकराःस्युः ।।

मासेश्वरज्ञानार्थं मासेशचक्रम् ।

१	२	३	४	५
स्वामी-शुक्र	स्वामी-भौम	स्वामी-गुरु	स्वामी-रवि-	स्वामी-चंद्र
६	७	८	९	१०
स्वामी-शनि	स्वामी-बुध	स्वा.गर्भाधा.ल	स्वामी-चंद्र	स्वामी-सूर्य

गर्भिणीधर्म

भूम्यां चैवोच्चनीचायामारोहणेऽवरोहणे।। नदीप्रतरणं चैव शकटारोहणं तथा।। उग्रौषधं तथा क्षारं मैथुनं भारवाहनम् ।। कृते पुंसवनं चैव गर्भिणीपरिवर्जयेत् ।।

टीका––पुंसवन कर्म होने उपरांत गर्भिणीको ऊँचे नीचे स्थानपर चढ़ना-उतरना, भागकर चलना, नदी तैरना, गाडीपर बैठकर चलना, तीक्ष्ण अर्थात् गरम औषध, नीरस क्षार आदि खाना, मैथुन, भार उठाना ये कर्म वर्जित हैं ।

गर्भिणीप्रश्न

**नामाक्षराणि त्रिगुणीकृतानि तुरङ्गदेशे तिथिमिश्रितानि।।
अष्टौ च भागं लभते च शेषं समे च कन्या विषमे च पुत्रः ।।**

टीका––गर्भिणीके नामके अक्षर तिगुणे करे उनमें घोडेके नामाक्षर और देशके अक्षर मिलाकर वर्तमानतिथि मिलाये और आठका भाग दे शेष अंक सम बचें तो कन्या और विषम बचें तो पुत्र हो ।

प्रसूतिस्थानप्रवेशनक्षत्र

रोहण्यैन्दवपौष्णेषु स्वातीवारुणयोरपि ।। पुनर्वसौ पुष्यहस्तधनिष्ठात्र्युत्तरासु च ।। मैत्रे त्वाष्ट्रे तथाश्विन्यां सूतिकागार वेशनम्।। प्रसूतिसम्भवे काले सद्य एव प्रवेशयेत्।।

टीका—रोहिणी, मृगशिर, रेवती, स्वाती, शतभिषा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त धनिष्ठा, तीनों उत्तरा, अनुराधा, चित्रा, अश्विनी ये नक्षत्र प्रसूतिका भवनके प्रवेशमें श्रेष्ठ हैं प्रसूति समयमें इन नक्षत्रोंमें तत्काल प्रवेश कराये ।

गर्भके लक्षण

कललं १ च घनं २ शाखा ३ स्थि ४ त्व ५ ग्रोमोद्गमः ६ स्मृतिः।।७।।
७ भुक्ति ८ रुद्वेग ९ संसूति १० र्मासेष्वाधानतः क्रमात् ।।

टीका—गर्भाधानसे १० मासतक गर्भका रूप कहते हैं. १ मासमें कलल अर्थात् शुक्र रुधिर इसके संयोगसे पिंडित होता है. २ मासमें घन अर्थात् वह पिंड दृढ होता है. ३ मासमें उस पिंडमें शाखा अर्थात् हस्त और पाद उत्पन्न होते हैं. ४ मासमें उसमें अस्थि हाड होते हैं. ५ मासपर उसपर त्वचा अर्थात् चमडा. ६ मासमें रोम होते हैं. ७ मासमें स्मृति अर्थात् ज्ञान होता है. ८ मासमें क्षुधाका होना. ९ मासमें उद्वेग अर्थात् गर्भस्थल उदर से निकलने की इच्छा करता है. १० मासमें प्रसव जानना चाहिये ।

प्रसूतिसमयका प्रश्न

मीने मेषे स्त्रियौ द्वे च चतस्रो वृषकुम्भयोः ।। तुलाकन्यकयोः सप्त बाणाख्या धनकर्कयोः।। अन्यलग्ने भवेत्तिस्र एवं ज्ञेयं विचक्षणैः ।। यथा राहुस्तथा शय्या भौमे खट्वाङ्गभङ्गता ।। रविस्थाने भवेद्दीपः शनिस्थाने तु नालकम्।।

टीका—मीन अथवा मेष इन लग्नोंमें यदि स्त्रीके प्रसव हो तो उस समय उसके निकट दो स्त्रियाँ और वृष कुंभ हो तो ४; तुला कन्या हों तो ७, धन और कर्कमें ५, अन्य लग्नोंमें तीन तीन स्त्रियाँ जानना चाहिये, जन्मकुंडलीके मध्य जिस दिशामें राहु स्थित हो उसी दिशामें शय्या जाननी, जो लग्नमें मंगल बैठा हो तो खाटका अंग जानिये, जिस स्थानमें रवि हो उसी दिशामें दीपक और जिस दिशामें शनि हो उसमें नाल समझना ।

तिथिगण्डान्त

पूर्णानन्दाख्ययोस्तिथ्योः सन्धिर्नाडीद्वयं तथा ।।
गण्डान्तं मृत्युदं जन्म यात्रोद्वाहव्रतादिषु ।।

टीका—पूर्णातिथि १५।५।१० और पडवा, छठ, एकादशी अर्थात् नंदा इनकी संधिकी दो २ घटी अर्थात् पूर्णिमा पंचमी दशमीके अंतकी एक २ और पडवा छठी एकादशीके आदिकी एक एक घटी गंडांत है, यात्रा विवाह यज्ञोपवीतमें वर्जित हैं, करे तो मृत्यु हो ।

लग्नगंडान्त

कुलीरसिंहयोः कीटचापयोर्मीनमेषयोः ।।
गण्डान्तमन्तराले स्याद्घटिकार्द्धं मृतिप्रदम् ।।

टीका—कर्क सिंह इन दोनों लग्नोंकी घटिका आधी और इस क्रमसे वृश्चिक और धन मीन मेष इनकी आदिकी घडी गंडांतरमें शुभकर्म करे तो ये मृत्यु देती हैं ।

नक्षत्रगंडांत

पौष्णाश्विन्योः सार्पपित्र्यर्क्षयोश्च यच्च ज्येष्ठामूलयोरन्तरालम्।।
तद्गण्डान्तं स्याच्चतुर्नाडिकं हि यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम्।।

टीका—रेवती अश्विनी इनकी संधिकी २ घटिका इसी क्रमसे आश्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल इनकी संधिकी २ धटिका वर्जनीय और वैसेही तिथि लग्न और नक्षत्र ये त्रिविध गंडांत जानिये. यह यात्रा जन्मकाल और विवाहमें वर्जित हैं।

जन्मकालमें गंडांतका शुभाशुभ फल

अश्विनीमघमूलानां पूर्वार्द्धे बाध्यते पिता ।। पूषादिशाक्रपश्चार्द्धे जननी बाध्यते शिशुः ।। सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो विधीयते ।। वर्जयेद्दर्शनं शावं तच्च षाण्मासिकं भवेत् ।।

टीका—अश्विनी मघा मूल इन नक्षत्रोंके पूर्वार्द्धमें जन्म हो तो पिताको अशुभ और रेवती ज्येष्ठा इन दोनों नक्षत्रोंके उत्तरार्द्धमें जन्म हो तो माताको अशुभ और गंडांतमें जन्म हो तो शिशुका त्याग करना योग्य है अथवा छः मासतक पुत्रको न देखे ।

कृष्णचतुर्दशीका जन्मफल

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलम् ।। चतुर्दश्याश्च षड्भागान् कुर्यादादौ शुभं स्मृतम् ।। द्वितीये पितरं हन्ति तृतीये मातरं तथा ।। चतुर्थे मातुलं हन्ति पञ्चमे वंशनाशनम्।। षष्ठे च धनहानिः स्यादात्मनो वंशनाशनम् ।।

टीका—यदि कृष्णचतुर्दशीको जन्म हो तो तिथिके छः खंड दश २ घटिकाके करे. जो प्रथम खंडमें जन्म हो तो शुभ, द्वितीयामें पिताको अशुभ, तृतीयामें माताको अशुभ, चतुर्थमें मामाको अशुभ, पंचममें वंशनाश, छठेमें धनहानिकारक और अपने वंशका नाशक जानिये ।

अमावास्याके जन्मका फल

सीनीवाल्यां प्रसूताश्च दासी भार्या पशुस्तथा ।। गजोऽश्वो महिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ।। कुहूप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषकरी स्मृता ।। यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशनम् ।। सर्वगण्डसमस्तत्र दोषस्तु प्रबलो भवेत् ।।

टीका—चतुर्दशीयुक्त अमावास्याको दासी अथवा भार्या गाय हस्तिनी घोडी भैंस जो प्रसूता हो तो इंद्रकीभी संपत्ति हर लेती है और ठीक अमावस्याको प्रसूता हो तो बहुतसे दोष लगें और जिसकी इनमें प्रसूति हो उसकी आयु धनका नाश हो और गंडांतमें प्रसूति हो तो बहुतसे दोष जानिये ।

दिनक्षयादिफल

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ ।। शूले गण्डेऽतिगण्डे च परिघे यमघण्टके ।। कालगण्डे मृत्युयोगे दग्धयोगे सुदारुणे। तस्मिन्गंडदिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते ।। अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुता सती ।।

टीका—दिनक्षय व्यतीपात व्याघात भद्रा वैधृति शूल गण्ड अतिगंड परिघार्द्ध यमघंट कालगंड मृत्युयोग दग्धयोग दारुणयोग इनमें जन्म हो तो भारी पाप लगे ऐसी प्रसूतिकी स्त्रीको पापयुक्त जानिये ।

ज्येष्ठानक्षत्रफल

ज्येष्ठादौ जनने माता द्वितीये जनने पिता ।। तृतीये जनने भ्राता स्वयं माता चतुर्थके ।। आत्मानं पञ्चमे हन्ति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ।। सप्तमे चोभय-कुलं ज्येष्ठभ्रातरमष्टमे ।। नवमे श्वशुरं चैव सर्वं हन्ति दशांशके ।।

टीका—ज्येष्ठा नक्षत्रमें जो जन्म हो तो उस नक्षत्रकी छः घटियोंके दश भाग समान करे उसका फल प्रथमभाग माताको अशुभ, दूसरा पिताको, तीसरा मामाको, चौथा माताको, पांचवां शिशुको, छठा भाग गोत्रजोंको, सातवां पिता, नानाके परिवारको आठवां, बड़े भ्राता को नवम, श्वशुरको, दशवां सर्व जनोंको बुरा है ।

मूलनक्षत्रफल

मूलं स्तम्भं त्वक् च शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ।। वेदाश्च मुनयश्चैव दिशश्च वसवस्तथा ।। नंदा बाणरसा रुद्रा मूलभेदाः प्रकीर्तिताः ।। मूले मूल-विनाशाय स्तम्भे हानिर्धनक्षयः ।। त्वचि भ्रातृविनाशाय शाखा मातृविनाशकृत् ।। पत्रे सपरिवारः स्यात् पुष्पेषु नृपवल्लभः ।। फलेषु लभते राज्यं शाखायामल्प-जीवितम् ।।

टीका—मूलनक्षत्रको मूल वृक्ष कल्पना करते हैं उसकी ६० घटीके स्थान इस भांति हैं, प्रथम ४ घटिका वृक्षका मूल उनमें जन्म हो तो नाश, दूसरा भाग ७ घटिका स्तंभ उनमें हानि और धनका नाश, तीसरा भाग १० घटिका वृक्षकी त्वचा उनमें भ्राताको अशुभ हो, चौथा भाग ८ घटिका शाखा उनमें माताको अशुभ, पांचवा भाग ९ घटिका वृक्षके पत्र उनमें परि-वारनाशन, छठा भाग ५ घटिका पुष्प उनमें राजमंत्री, सातवां भाग ६ घटिका फल उनमें राज्यप्राप्ति, आठवां भाग ११ घटिका वृक्षकीशाखा उनमें जन्म हो तो शिशु अल्पायु हो, ऐसे आठ स्थानका फल जानिये ।

जन्मकालमें मूल किस लोकमें है जाननेकी लग्न

वृषालिसिंहेषु घटे च मूलं दिवि स्थितं युग्मतुलांगनान्त्ये ।।
पातालगं मेषधनुः कुलीरनक्रेषु मर्त्येष्विति संस्मरन्ति ।।

टीका—वृष सिंह कुंभ वृश्चिक लग्नोंमें जन्म हो तो उस दिन मूलनक्षत्र स्वर्गमें होता है उसका फल राज्यप्राप्ति और मिथुन तुला कन्या मीनमें मूल पातालमें जानिये उसका फल धनप्राप्ति और मेष धन कर्क मकर इन लग्नोंमें मूल मृत्युलोकमें होता है इसका फल कुटुंबनाश १२ लग्नोंका फल है ।।

आश्लेषानक्षत्रका नराकारचक्र

मूर्द्धास्यनेत्रगलकांसयुगं च बाहुहृज्जानुगुह्यपदमित्यहिदेहभागः ।। बाणा-

द्विनेत्रहुतभुक्श्रुतिनागरुद्रषण्नन्दपञ्चशिरसः क्रमशस्तु नाड्यः ।। राज्यं पितृक्षयो मातृनाशः कामक्रियारतिः पितृभक्तो बली स्वप्नस्त्यागी भोगी धनी क्रमात् ।।

टीका—आश्लेषानक्षत्रकी घटिकाओंको नराकार चक्रमें स्थापन करनेमें प्रथम ६ घटिका मस्तक उनका फल राज्यप्राप्ति, द्वितीय ७ घटी मुख उनका फल पिताका नाश, तीसरा विभाग दो घडी उनका फल माताका नाश, चौथा ३ घटिका ग्रीवा उनका फल परस्त्रीरत, पांचवां भाग ४ घटी दोनों कांधे उनका फल पितृभक्त छठा भाग ८ घटी दोनों बाहु उनका फल बली ७ भाग ११ घटी हृदय उनका फल आत्मघाती, आठवां भाग ६ घटी दोनों जानु उनका फल त्यागी, नौवां विभाग ९ घटीका गुह्य उसका फलभोगी दशवां भाग ५ घटी दोनों पांव उनका फल धनवान् जिस विभागमें जन्म हो उसका फल स्थानानुसार कहना योग्य है ।

जन्मसमयमें सूर्यादि ग्रहोंका फल

तनुस्थान ।। लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम् ।। छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखभाजं जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः ।। धनस्थान ।। दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा वित्ते स्थिता रविशनैश्चरभूमि पुत्राः ।। चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा नानाविधं धनचयं कुरुते नसंस्थः ।। सहजस्थानम् ।। भानुः करोतिविरुजंरजनीकरोति कीर्त्यायुतंक्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ।। ऋद्धि बुधः सुधिषणंसुविनीतवेषं स्त्रीणांप्रियं गुरुकवीरविजस्तृतीये।।सुहृत्स्थानम् ।। आदित्य भौमशनयः सुखवर्जिताङ्गंकुर्वतिजन्मनि नरं सुचिरं चतुर्थे ।। सोमोबुधःसुरगुरुभृगुनन्दनोवासौख्यान्वितं च नृपकर्मरतं प्रधानम् ।। सुतस्थानम् ।। पुत्रेरविः प्रचुरकोपयुतं बुधश्चस्वल्पात्मजंशनिधरातनुजावपुत्रम् ।। शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः कुर्वन्ति पुत्रबहुलंसुखिनं सुरूपम् ।। रिपुस्थानप् ।। मार्तण्डभूमितनुजौहनशत्रुपक्षंपङ्गुर्नरंरिपुगृहेष्वतिपूजनीयम् ।। काव्येन्दुजौमतिविहीनमनल्परोगं जीवः करोतिविकलंमरणंशशाङ्कः ।। जायास्थानम् ।। तिग्मांशुभौमरविजाः किलसप्तमस्थाजायांकुकर्मनिरतां तनुसंततिं च ।। जीवेन्दुभार्गवबुधाबहु पुत्रयुक्तांरूपान्वितां जनमनोहररूपशीलाम् ।। मृत्युस्थानम् ।। सर्वग्रहादिनकर प्रमुखानितातंमृत्युस्थितावितनुते किलदुष्टबुद्धिम् ।। शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रयष्टिसौख्यैर्विहीनमतिरोगगणैरुपेतम् ।। धर्मस्थानम्।। धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः कुर्वन्तिधर्मरहितंविमतिंकुशीलम् ।। चन्द्रो बुधोभृगुसुतः सुरराजः मन्त्री धर्मक्रियासुनिरतं कुरुते मनुष्यम् ।। कर्मस्थानम् ।। आदित्यभौमशनयः किलकर्मसंस्थाः कुर्युर्नरंबहुकुकर्मरतंकुपुत्रम् ।। चन्द्रः सुकीर्तिमुशनाबहुवित्तयुक्तं रूपान्वितंबुधगुरूशुभकर्मभाजम् ।। लाभस्थानम् ।। लाभस्थितोदिनकरोनृपलाभयुक्तंतारापतिर्बहुधनं क्षितिजः क्षितीशम् ।। सौम्यो विवेकसुभगं च धनायुषीज्यः शुक्रः करोतिसगुणंरविजः सुकीर्तिम् ।। व्ययस्थानम् ।। सूर्यः करोतिपुरुषंव्ययगो विशीलं काणंशशीक्षितिसुतो बहुपापभाजम् ।। चन्द्रा-

ङ्गजो गतधनं धिषणः कृशाङ्गंशुक्रोबहुव्ययकरं रविजः सुतीव्रम् ।। राहुकेतुफलं- सर्वं मन्दवत्कथितं बुधैः ।।

सं०	स्था	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि राहु के.
१	तनु	अंगपीडा	कांति और सुख	रक्तकोप	कांति और सुख	कांतिऔरसुख	कांतिऔरसुख	अतिदुःखदायक
२	धन	अतिदुःखबाधनकानाश	संपत्तिकीबहुत प्राप्ति	दुःखप्राप्तिधन कानाश	नानाप्रकारके सं० प्राप्ति	नानाप्रकारकी संपत्ति प्राप्ति	नानाप्रकारकी संपत्तिप्राप्ति	अतिदुःखप्राप्ति धनकानाश
३	सह.	निरोगीरहे	कीर्तिलाभ	क्रोधयुक्तरहै	समृद्धि	सुबुद्धि	नम्र वेषधारण०	स्त्रियोंकोप्रियहो
४	सुहृत	शरीरकापीडा बहुतहो	सुखभोगी	शरीरकोबहुत पीडा	सुखभोगी	सुखभोगी	सुखभोग	शरीरकोपीडाबहुतहो
५	सुत	रोगबहुतहो	बहुतपुत्रहोय	सतानरहित	अल्पपुत्रसंतानि	बहुपुत्रप्राप्ति	बहुतपुत्र	संत. नहो
६	रिपु	शत्रुकानाशकरे	मरणपावे	शत्रुनाश	बुद्धिहीनबहुरोग	शरीरविकलरहै	बुद्धिहीनब.	
७	जाया	स्त्रीदुष्टकर्मी संतानीअल्प	स्त्रीरूपवतीगुणवती गुणयुक्तपुत्र	स्त्रीदुष्टकर्मी व संततिअल्प	स्त्रीरूपवान् बहु पुत्रप्राप्ति	स्त्री नहारिणी हो पुत्रवती	मनहरनेवाली पुत्रवतीचतुर	स्त्रीदुष्टकर्मी संतानथोडीउत्पन्न
८	मृत्यु	इसमें सब ग्रहोंकाफल एक समानहोताहै दुष्टबुद्धि शस्त्रघाति शरीरपीडा सुखरहित और रोगीहो जो ग्रह इस स्थानमें हो ऐसा फल जानिये						
९	धर्म	अधर्मीदुःष्टमति दुष्टशील	धार्मिकहो	अधर्मीदुष्टमति दुष्टशील	धर्मनिरतरकरे	धर्मनिरंतरकरे	धर्मनिरंतरकरे	अधर्मी
१०	कर्म	अत्यंतदुष्टकर्मी कुपुत्र	अत्यंतकीर्तिवान् हो	दुष्टकर्मीकुपुत्र	कीर्तिवान्	शुभकर्मकरे	संपत्तिवान्	अत्यंतदुष्टकर्मी व कुपुत्र
११	आय	राजसेलाभ करे	धनबहुतमिले	पृथ्वीलाभरा नासे	विवेकयुक्तऔर सुंदर	धन और आयु की वृद्धि	गुणवान्	अच्छीकीर्तिपावे
१२	व्यय	दुष्टस्वभाव	काणाहो	पापकर्म	धनहीन	कृशगात्र	व्याधियुक्त	[illegible]

पुरुषकेजन्मकालमें पड़े ग्रहों का फल

टीका—जन्म लग्नमें तनु आदि द्वादशस्थानोंमें जो ग्रह पडे हों उनमें पृथक् २ फल जानने के लिये कोष्ठक और राहुकेतुके फल शनिके समान जानिये

जन्मलग्नमें बालकके मृत्युकारकग्रह

चन्द्राष्टमं च धरणीसुतसप्तमं च राहुर्नवं च शनिजन्मगुरुस्तृतीये ।। अर्कस्तुपञ्चभृगुषष्ठबुधश्चतुर्थे जातो न जीवति नरः प्रवदन्ति सन्तः ।।

टीका––जन्मलग्नसे चंद्रमा अष्टमस्थानी भौम स्थानमें राहु ९ स्थानमें शनि जन्म लग्नमें गुरु तृतीय स्थानमें रवि ५ स्थानमें शुक्र ६ स्थानमें बुध ४ स्थानमें ऐसे ग्रह पड़ें तो शिशु मृत्युको प्राप्त हो ।

जन्मलग्नमें स्त्रीके मृत्युकारकग्रह

षष्ठे च भवनेभौमोराहुः सप्तमसम्भवः ।।
अष्टमे च यदा सौरिस्तस्यभार्या न जीवति ।।

टीका––जन्मलग्नके छठे स्थानमें भौम राहु ७ स्थानमें शनि ८ स्थानमें ऐसे ऐसे ग्रह जिसकी कुण्डलीमें पड़े हों उस पुरुषकी स्त्री न जीवित रहे ।

अच्छे पराक्रमी ग्रह

मूर्तौशुक्रबुधौयस्य केन्द्रे चैवबृहस्पतिः ।।
दशमोङ्गारकोयस्य सज्ञेयः कुलदीपकः ।।

टीका––जिसके जन्म लग्नमें शुक्र बुध और केन्द्र अर्थात् प्रथम चतुर्थ सप्तम दशम इन स्थानोंमें बृहस्पति तथा दशम स्थानमें मंगल हो तो उस बालकको कुलदीपक जानिये ।।

पराक्रमी ग्रह

नैवशुक्रोबुधो नैवनास्तिकेन्द्रे बृहस्पतिः ।।
दशमोंगारकोनैवसजातः किंकरिष्यति ।।

टीका––जिस बालकके लग्नमें बुध शुक्र अथवा केन्द्रमें बृहस्पति अथवा दशम स्थानमें मंगल ऐसे ग्रह न पडे हों तो उसका जन्म होना वृथा जानिये ।

जातिभ्रंशकारक

धनस्थाने यदासौरिः सैंहिकेयोधरात्मजः ।। शुक्रोगुरुःसप्तमे च त्वष्टमेरविचन्द्रकौ ।। ब्रह्मपुत्रेपदेवापिवेश्यासु चसदारतिः ।। प्राप्तेविंशतिमेवर्षेम्लेच्छोभवतिनान्यथा ।।

टीका––जिसके धनस्थानमें शनि राहु मंगल और सप्तम स्थानमें शुक्र गुरु तथा अष्टम स्थानमें रवि चंद्र ऐसे ग्रह हों वह बालक कदाचित् ब्राह्मण जातिमें भी जन्म ले तो भी वेश्या प्रसंगी हो और बीस वर्षकी अवस्थामें अवश्य म्लेच्छ हो ।

मातापिताके नाशक

षष्ठे च द्वादशेराशौ यदा पापग्रहो भवेत् ।।
तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थेदशमे पितुः ।।

टीका––यदि छठे अथवा बारहवें स्थानमें पापग्रह हों तो माताका अशुभ तथा चतुर्थ अथवा दशमस्थानमें पापग्रह हों तो पिताको अशुभ जानिये ।

मृत्युकारकग्रह

अर्कोराहु कुजः सौरिर्लग्नेतिष्ठति पञ्चमे ॥
पितरंमातरंहन्ति भ्रातरंस्वशिशून्क्रमात् ॥

टीका—यदि सूर्य राहु मंगल शनि ये ग्रह जन्म लग्नसे पांचवें स्थानमें पडे हों तो क्रमसे रवि पिताको, राहु माताको, भौम भ्राताको और शनि अपने बालकोंके लिये अशुभ जानना ।

लग्नस्थानेयदासौरिः षष्ठोभवतिचन्द्रमाः ॥
कुजस्तुसप्तमस्थाने पितातस्यनजीवति ॥

टीका—जिसके जन्मलग्नमें शनि और छठे स्थानमें चंद्रमा, सप्तममें मंगल ऐसे ग्रह हों उसका पिता न जीवित रहे ।

पातालस्थोयदाराहुश्चेन्दुः षष्ठाष्टमेऽपिच ॥
पापदृष्टोविशेषेणसद्यः प्राणहरः शिशोः ॥

टीका—जन्मलग्नके सप्तम स्थानमें राहु छठे अथवा आठवें स्थानमें चंद्रमा और शेष ग्रहोंकी पापदृष्टि हो तो जन्म होतेही बालककी मृत्यु हो ।

जन्मलग्नेयदाराहुः षष्ठे भवति चन्द्रमाः ॥
जातोमृत्युमवाप्नोति कुदृष्टयात्वपमृत्युना ॥

टीका—जन्मलग्नमें राहु षष्ठ स्थानमें चंद्रमा ऐसे समय जन्मे तो बालककी मृत्यु हो और जन्मलग्नपर किसी ग्रहकी कुदृष्टि हो तो अपमृत्यु जानिये ॥

जन्मलग्नेयदाभौमश्चाष्टमे च बृहस्पतिः ॥
वर्षे च द्वादशेमृत्युर्यदिरक्षतिशंकरः ॥

टीका—यदि जन्मलग्नमें मंगल और अष्टमस्थानी वृहस्पति ग्रह हों तो बारहवें वर्ष शंकर रक्षक हो तो भी मृत्यु जानिये ।

शनिक्षेत्रेयदासूर्ये भानुक्षेत्रे यदाशनिः ॥
वर्षे च द्वादशेमृत्युर्देवो वै रक्षिता यदि ॥

टीका—जो शनिके क्षेत्रमें सूर्य हो और सूर्यके गहमें शनि हो तो बारहवें वर्ष देवरक्षित भी शिशु मृत्युको प्राप्त होता है ।

षष्ठोष्टमस्तथामूर्तौ जन्मकालेयदाबुधः ॥
चतुर्थवर्षेमृत्युश्च यदि रक्षति शंकरः ॥

टीका—षष्ठ अष्टम अथवा जन्मलग्नमें बुध हो तो चौथे वर्ष शंकरजी रक्षा करें तो भी बालक न बचे ।

भौमक्षेत्रेयदाजीवः षष्ठाष्टसु च चन्द्रमाः ॥
वर्षेष्टमेपि मृत्युर्वै ईश्वरोरक्षितायदि ॥

टीका—मंगलके घरमें बृहस्पति और षष्ठ अथवा अष्टमस्थानी चन्द्रमा ग्रह हों तो ईश्वर रक्षित भी बालक आठवें वर्ष मृत्युको प्राप्त हो ।

दशमोपियदाराहुर्जन्मलग्नेयदाभवेत् ।।
वर्षेतुषोडशेज्ञेयो बुधैर्मृत्युनरस्य च ।।

टीका—जन्मलग्नसे दशमस्थानी अथवा जन्मलग्नमें राहु हो तो सोलहवें वर्षमें मृत्यु हो।

ग्रहोंकी दृष्टि

पादैकदृष्टिर्दशमेतृतीये द्विपाददृष्टिर्नवपञ्चमेवा ।। त्रिपाददृष्टिश्चतुरष्टके च सम्पूर्णदृष्टिः समसप्तके च ।। शनेस्त्वेकादशेपूर्णा दृष्टिर्जीवस्यकोणके ।। बुधैर्ज्ञेयापूर्णदृष्टिर्भौमस्यचतुरष्टके ।।

टीका—जन्मलग्नसे दशवें और तीसरे स्थानमें ग्रह हों तो एकपाददृष्टिसे जन्मलग्नको देखते हैं इसी क्रमसे नवम पंचमस्थानी ग्रह द्विपाद दृष्टिसे देखते हैं चौथे और आठवें स्थानमें जो ग्रह पडे हों वे त्रिपाददृष्टिसे सप्तम स्थानी हों उनकी पूर्ण समदृष्टि जानिये जन्मलग्नसे शनैश्चर एकादश अथवा तीसरे स्थानमें हो तो पूर्णदृष्टिसे लग्नको देखता है; पांचवें नवें गुरु और चतुर्थ अष्टम स्थानमें भौम हो तो पूर्ण दृष्टिसे देखता है ।

ग्रहोंका उच्चत्व व नीचत्व

रविर्मेषेतुलेनीचोवृषेचन्द्रस्तुवृश्चिके ।। भौमश्चनक्रेकर्के च स्त्रियां सौम्योझषेतथा ।। गुरु कर्के च नक्रे च मीन कन्ये सितस्य च ।। मन्दस्तुलायांमेषे च कन्याराहुग्रहस्य च ।। राहुर्युग्मे तु चापे च तमोवत्केतुजं फलम् ।। प्रोक्तंग्रहाणामुच्चत्वं नीचत्वं च क्रमाद्बुधैः ।।

ग्रह	रवि	चंद्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
उच्च	मेष	वृष	मकर	कन्या	कर्क	मीन	तुला	कन्या मिथुन	तुला
नीच	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष	धन	मेष

जन्मलग्नका फल

मेषेदैन्यमुपैतिगर्वितवृषो नानामतिर्मन्मथेशूरः कर्कटकेधृती च वनपे कन्या च मायान्विता ।। सत्यंचैवतुलेत्वलौ मलिनता पापान्वितं वै धनुर्मूर्खोयं मकरे घटे चतुरतामीनेत्वधीरामतिः ।।

टीका—मेषलग्नमें जन्म हो तो दीनता, वृषमें गर्वित, मिथुनमें नानाप्रकारकी बुद्धियुत, कर्कमें बड़ाशूर, सिंहमें स्थिरबुद्धि, कन्यामें अत्यंतमानी, तुलामें सत्यवादी, वृश्चिकमें मलिन, धनमें पापबुद्धि, मकरमें मूर्ख, कुंभमें चतुर, मीन लग्नमें जो जन्म पाये वह बड़ा अधीर हो ऐसे जन्मलग्नका फल जानिये ।

स्त्रीजातकमाह

लग्ने च सप्तमेपापे सप्तमेवत्सरे पतिः ।
म्रियतेचाष्टमेवर्षेचन्द्रः षष्ठाष्टमे यदि ।।

टीका–स्त्रीके जन्मकालमें लग्नमें पापग्रह हो तो ७ वर्षमें और चंद्र षष्ठ वा अष्टम स्थानमें हो तो अष्टम वर्षमें पतिका नाश जानिये ।

अन्यमते ।। द्वादशेचाष्टमे भौमे क्रूरेतत्रैवसंस्थिते ।।
लग्ने च सिंहिकापुत्रेरण्डाभवतिकन्यका ।।

टीका––जन्मसमयमें १२ । ८ स्थानमें मङ्गल हो और क्रूरग्रहभी १२ । ८ स्थानमें हो और यदि लग्नमें राहु हो तो स्त्री विधवा हो ।

अन्यमते ।। लग्नात्सप्तमगः पापश्चन्द्रात्सप्तमगोऽपिवा ।।
सद्योनिहन्तिदम्पत्योरेकंनास्त्यत्रसंशयः ।।

टीका––यदि लग्नसे सप्तमस्थानमें पापग्रह हों और चन्द्रमासे सप्तम स्थानमें भी पापग्रह हों तो विवाहसे अल्पकालमें स्त्री विधवा हो ।

रविसुतोयदिकर्कमुपागतो हिमकरोमकरोपगतोभवेत् ।।
किलजलोदरसंजनिता तदानिधनतावनितासुतकीर्तिता ।।

टीका––यदि शनैश्चर कर्कराशिमें हो और चन्द्रमा मकरराशिमें हो तो जलोदररोगसे स्त्रीका नाश जानिये ।

निशाकरःपापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युंकुजभेकरोति ।।
पापः स्मरस्थेन्यखगे च धर्मे किलांगना प्रव्रजितत्वमेति ।।

टीका––यदि चद्रमा पापग्रहके मध्यमें बैठा हो तो शस्त्रसे मृत्यु कहना और यदि चन्द्रमा मंगलकी राशिमें बैठा हो तो अग्निसे जलकर नाश कहना और यदि पापग्रह सप्तम स्थानमें अथवा नवमस्थानमें अन्य शुभ ग्रह हों तो स्त्री काषायवस्त्रधारी वेदांती होती है ।

सप्तमे दिनपतौपतिमुक्ताक्षोणिजे च विधवाखलुबाल्ये ।।
पापखेचरविलोकनयाते मंदगे च युवतिर्जरतीस्यात् ।।

टीका––यदि स्त्रीके जन्मलग्नमें सप्तम स्थानमें सूर्य हो तो पतित्यागी कहना और यदि मंगल सप्तम हो तो बाला अवस्थामें वैधव्य प्राप्त हो और यदि सप्तम पापग्रह देखता हो तो यौवन अवस्थामें विधवा हो और सप्तमस्थानमें शनैश्चर हो तो वृद्ध अवस्थामें वैधव्य प्राप्ति हो ऐसा जानिये ।

लग्नेसितेन्दु च तथाकुजमंदभस्थौकूरेक्षितौसान्यरता च बाला ।।
स्मरेकुजांशेर्कसुतेनदृष्टेविनष्टयोनिश्च शुभाशुभांशे ।।

टीका––यदि लग्नमें शुक्र चन्द्रमा हो और मंगल शनि ये दशम स्थानमें पड़े हों और उनको पापग्रह देखते हों तो वह स्त्री परपुरुषसे संग करे और यदि सप्तम स्थानमें मंगलका अंश हो और शनैश्चर सप्तम स्थानको देखता हो तो नष्टयोनी जानिये. सप्तम स्थानमें शुभ ग्रहका अंश हो तो शुभ कहना ।

सूर्यारौखचलाश्रितौहिमवतः शैलाग्रपातान्मृतिभौमेन्द्वर्कसुताः खसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ।। सूर्याचन्द्रमसौखलेक्षितयुतौकन्यायुतौ बन्धुना तौचेद्वचंगविलग्नसंस्थितकरौ तोयेनिमग्नत्वतः ।।

टीका—यदि सूर्य मंगल ये दसवें वा चौथे स्थानमें हों तो पाषाणसे मृत्यु कहना, मंगल चन्द्र शनि ये अपने स्थानमें सप्तम वा चतुर्थ स्थानमें बैठे हों तो कूँवा बावडी तालाव आदिसे मृत्यु कहना और यदि सूर्य चन्द्रमाको पापग्रह देखते हों वा युक्त हों तो वह स्त्री बंधुयुक्त कहना, और सूर्य चन्द्र ये द्विस्वभावसे हों तो जलसे मृत्यु कहना चाहिये ।

समेविलग्नेयदिसंस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्र बुधेन्दुजीवाः ।।
स्यात्कामिनी ब्रह्मविचारचर्चापरागमज्ञानविराजमाना ।।

टीका—यदि समराशिका लग्न हो और उसमें शुक्र बुध चन्द्रगुरु ये बल युक्त हों तो वह स्त्री ब्रह्मविचार करे और उत्तम प्रकारकी ज्ञानी हो ।

सप्तमेभार्गवेजाताकुलदोषकराभवेत् ।।
कर्कराशिस्थिते भौमेस्वैराभ्रमतिवेश्मसु ।।

टीका—स्त्रीके सप्तम स्थानमें शुक्र हो तो कुलको दूषित करे और यदि कर्क राशिमें मंगल हो तो वंध्या और दूसरे के घरमें वास करे ।

पापयोरंतरे लग्ने चन्द्रे वा यदि कन्यका ।।
जायते च तदा हन्ति पितृश्वशुरयोः कुलम् ।।

टीका—जो लग्नमें पापग्रहकी कर्तरी हो अथवा चन्द्रमाके पापग्रहकी कर्तरी हो तो वह स्त्री दोनों वंशका घात करनेवाली होती है ।

।। तनुस्थानम् ।। मूर्तौकरोतिविधवांदिनकृत्कुजश्चराहुर्विनष्टतनयांरविजोदरिद्राम् ।। शुक्रः शशाङ्कतनयश्चगुरुश्चसाध्वीमायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ।। धनस्थानम् ।। कुर्वन्तिभास्करशनैश्चरराहुभौमादारिद्रच दुःखमतुलनियमं द्वितीये ।। वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्यां नारीं प्रभूततनयांकुरुतेशशाङ्कः ।। सहजस्थानम् ।। सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युः स्त्रियंबहुसुतांधन भागिनीं च ।। सत्यं दिवाकरसुतः कुरुतेधनाढ्यां लक्ष्मीं ददातिनियतं किलसैंहिकेयः ।। सुहृत्स्थानम् ।। स्वल्पंपयोभवतिसूर्यसुते चतुर्थेदौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुतेशशीच ।। राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोल्पबीजां सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्चकुर्युः ।। सुतस्थानम् ।। नष्टात्मजांरविकुजौखलु पञ्चमस्थौचन्द्रात्मजो बहुसुतांगुरुभार्गवौ च ।। राहुर्ददाति मरणंरविजस्तुरोगकन्याप्रसूतिनिरतां कुरुतेशशांकः ।। रिपुस्थानम् ।। षष्ठस्थिताः शनिदिवाकरराहुभौमाजीवस्तथाबहुसुतांधनभागिनीं च ।। चन्द्रः करोति विधवामुशनादरिद्रां वेश्यांशशांकतनयः कलहप्रियां च ।।जायास्थानम्।।सौरारजीवबुधराहुरवीन्द्रशुक्रादद्युः प्रसह्यमरणं खलुसप्तमस्थाः।। वैधव्यबंधनभयंक्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासमरणं नियतं क्रमेण ।। मृत्युस्थानम्।। स्थानेष्टमे गुरुबुधौ नियतंवियोगंमृत्युंशशीभृगुसुतश्चतथैव राहुः ।। सूर्यः करोतिविधवां धनिनींकुजश्चसूर्यात्मजोबहुसुतां पतिवल्लभां च ।। धर्मस्थानम् ।। धर्म-

स्थिताभृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतांशशिजः सुभोगाम् ।। राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवंध्यांनारींप्रसूतितनयांकुरुतेशशांकः ।। कर्मस्थानम् ।। राहुर्नभःस्थलगतो विधवांकरोतिपापेपरां दिनकरश्चशनैश्चरश्च । मृत्यंकुजोर्थरहितांकुटिलां च चन्द्रः शेषाग्रहाधनवतीं बहुवल्लभां च ।। आयस्थानम् ।। आयेरविर्बहुसुतां धनिनीं शशांकः पुत्रान्वितांक्षितिसुतो रविजोधनाढ्याम् ।। आयुष्मतीं सुरगुरुभृगुजः सुपुत्रींराहुः करोतिसुभगांसुखिनींबुधश्च ।। व्ययस्थानम् ।। अन्त्येधनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रांवन्ध्यांकुजः पररतां कुटिलां च राहुः ।। साध्वींसितेज्यशशिजाबहुपुत्रपौत्रयुक्ता विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनान्धाम् ।।

[illegible]	[illegible]	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु केतु
१	तनु	विधवा	आयुष्कानाश	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाशक
२	धन	दरिद्रदुःख	बहुपुत्रवती	दरिद्रदुःख	सौभाग्यसंपत्ति	सौभाग्यसंपत्ति	सौभाग्यसंपत्ति	दरिद्रदुःख	दरिद्रदुःख
३	सहज	पुत्रवती धनाढ्या	पुत्रवतीधनाढ्या	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	पुत्रवती धनाढ्य	लक्ष्मीवती	लक्ष्मीवती
४	सुहृद	दरिद्रता	दुर्भगा	अल्पसंतानं	अतिसुखिनी	अतिसुखिनी	अतिसुखिनी	[illegible]	पुत्रनाश
५	सुत	शिशुनाश	कन्याअधिक	शिशुनाशवती	बहुफलप्राप्ति	बहुफलप्राप्ति	बहुफलप्राप्ति	रोगिणी	[illegible]
६	रिपु	धनवती	विधवा	धनवती	[illegible]	धनवती	वैरिणी वेश्या	धनवती	पुत्रवती
७	जाया	रोगिणी	प्रवासिनी	विधवा	क्षय	[illegible]	मृत्यु	वैधव्य मरण	वित्तनाश
८	मृत्यु	विधवा	मरणात वियोगी	धनवती	स्वजनवियोग	[illegible] योग	[illegible] वियोग	[illegible] संताप	मरणांतवियोग
९	धर्म	धर्मपुष्कल करै	पुत्रवती	धर्मकार्य कर्त्री	उत्तमशीलवती	धर्मवृद्धि	धर्मवृद्धि	वांझ	वांझ
१०	कर्म	पापकारिणी	दरिद्रव्यभिचारिणी	मृत्यु	धनवती	[illegible]	[illegible]	पापकारिणी	विधवा
११	लाभ	अतिपुत्रप्राप्ति	लक्ष्मीवती	बहुपुत्रवती	सुखिनी	आयुष्मती	पुत्रवती	धनवती	सौभाग्यवती
१२	व्यय	सर्वस्वव्ययकर्तृ	विनाश	वांछव्यभिचारिणी	सुपुत्रा	सुशीला	पतिव्रता	[illegible] वाणी	व्यभिचारिणी

अष्टोत्तरीदशाक्रमः

आर्द्रापुनर्वसुपुष्य आश्लेषातुरवेर्दशा ।। मघापूर्वोत्तराचैव चन्द्रस्य च दशातथा ।। हस्तोविशाखोचित्राचस्वाती भौमदशास्मृता ।। ज्येष्ठानुराधामूले च सौम्यस्यचदशाबुधै ।। अभिजिच्छ्रवणः पूषा ऊषाचैवशनेर्दशा ।। धनिष्ठा

शततारा च पूर्वाभाद्रपदा गुरोः ।। ऊभापूषाविश्वनी कालेराहोश्चैव दशास्मृता ।। कृत्तिकारोहिणीचोक्तामृगः शुक्रदशाबुधैः ।। एषांभानांक्रमेणैवज्ञेयाः सूर्यादिका-दशाः ।। क्रूरजा अशुभाप्रोक्ता शुभास्यात्सौम्यखेटजाः ।।

महादशाकी संख्याका क्रम

सूर्यस्यरसवर्षाणि इन्दीः पञ्चदशैवच ।। भौमस्यवसुवर्षाणि ऋषिचन्द्र बुधस्यच ।। मन्दस्यदशवर्षाणि गुरोश्चैकोर्नाविंशतिः ।। राहोर्द्वादशवर्षाणिशुक्रस्यै-कोर्नाविंशतिः ।।

टीका—आर्द्रासेमृगशिरपर्यंत २८ नक्षत्र और सूर्यचन्द्र भौम बुधशनि-गुरुराहुशुक्र इस क्रमसे आठ ग्रहोंके पृथक् दो कोष्ठक लिखे हैं, इनमें महादशाकी वर्ष संख्या इस प्रकार है पाप ग्रहके नक्षत्र ४ और शुभ ग्रहके ३ नक्षत्र जानिये. आद्रासे रविदशा गिनिये और दशाकी संख्या नक्षत्रके विभागसे जाने जो विभागके अंतमें हो तो इस क्रमसे भोग्य दशा जाने और जन्मकालमें जो दशा हो वही प्रथम जानिये ।। सूर्यकी दशा ६ वर्ष, चन्द्रकी १५, मंगलकी ८, बुधकी १७, शनिकी १०, गुरुकी १९, राहुकी १२, शुक्रकी १९ वर्षभोग्य दशा जानिये ।

अंतर्दशा लानेका क्रम

महादशाः स्वस्वदशाब्दनिघ्ना भक्ताः स्वबाहू शशिभिः समाद्याः ।।
अन्तर्दशाः स्युर्गगनेचराणांतदेक भावोहिमहादशा स्यात् ।।

टीका—यदि ग्रहोंकी अंतर्दशा जाननी हो तो जन्मदशाकी वर्षसंख्याको दूसरी दशाकी वर्ष संख्यासे गुणा करे और १०८ का भागदे जो लब्धि आये वह वर्षसंख्या जानिये, फिर १२ से गुणा करके १०८ का भाग देनेसे जो लब्धि आये वह मास जानिये, फिर ३० से गुणा करके दिन और ६० से गुणा करके घटी और ६० से गुणा करके पल इत्यादि निकाल लीजिये और इसी क्रमसे १२० का भाग विंशोत्तरी दशामें दिया जाता है ।

विंशोत्तरी महादशा और अंतर्दशा

जन्मनोनजनुर्भमंकहृत् क्रमशोर्केन्दुकुजागुसूरयः ।।
शनिचन्द्रजकेतुभार्गवाः परिशेषात्तुदशाधिपास्तथा ।।

टीका—जन्मनक्षत्रमें २ घटाकर ९का भाग दे शेष १ रहे तो सूर्यकी दशा, २ शेष रहे तो चन्द्रकी दशा, ३ शेष बचे तो भौमकी, ४ शेष बचे तो राहुकी, ५ शेष रहे तो गुरुकी, ६ बचें तो शनिकी, ७ शेष बचे तो बुधकी, ८ शेष बचें तो केतुकी, ९ का पूरा भाग लगजाय तो शुक्रकी दशा जानिये ।

दशाओंके वर्ष भोग्याभोग्य निकालनेकी रीति

ऋतुदिग्गिरयो धृतिर्नृपतिधृतिर्मेघहयो नखाः समाः ।। क्रमतो हिमता अथादिमा जनिभस्था घटिकाः समाहताः ।। भभोगेन भक्ताः फलंभुक्तपाकस्तदूना दशा सा भवेद्भोग्यसंज्ञा ।।

सूर्यकी महादशाके वर्ष ६
आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा

अंतर्दशाक्रम

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
सूर्य	०	४	०	०	अशुभ
चंद्र	०	१०	०	०	शुभ
भौम	०	५	१०	०	अशुभ
बुध	०	११	१०	०	शुभ
शनि	०	६	२०	०	अशुभ
गुरु	१	०	२०	०	शुभ
राहु	०	८	०	०	अशुभ
शुक्र	१	२	०	०	शुभ
संख्या	६	०	०	०	

चंद्रकी महादशाके वर्ष १७
मघा पूर्वाफा० उत्तराफा०

अंतर्दशाक्रम

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
चंद्र	२	१	०	०	शुभ
भौम	१	१	१०	०	अशुभ
बुध	२	४	१०	०	शुभ
शनि	१	४	२०	०	अशुभ
गुरु	२	७	२०	०	शुभ
राहु	१	८	०	०	अशुभ
शुक्र	२	११	०	०	शुभ
रवि	०	१०	०	०	अशुभ
संख्या	१५	०	०	०	

भौमकी महादशाके वर्ष ८
हस्त चित्रा स्वाती विशाखा

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
भौम	०	७	३	२०	अशुभ
बुध	१	३	३	२०	शुभ
शनि	०	८	२६	४०	अशुभ
गुरु	१	४	२६	४०	शुभ
राहु	०	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	१	६	२०	०	शुभ
रवि	०	५	१०	०	अशुभ
चंद्र	१	१	१०	०	शुभ
संख्या	८	०	०	०	०

बुधकी महादशाके वर्ष १५
अनुराधा ज्येष्ठा मूल

अंतर्दशा

ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
बुध	२	८	३	२०	शुभ
शनि	१	६	२६	४०	अशुभ
गुरु	२	११	२६	४०	शुभ
राहु	१	१०	२०	०	अशुभ
शुक्र	३	३	२०	०	शुभ
रवि	०	११	१०	०	अशुभ
चंद्र	२	४	१०	०	शुभ
भौम	१	३	३	२०	अशुभ
संख्या	१७	०	०	०	०

शनिकी महादशाके वर्ष १९ पूर्वाषाढा उत्तराषाढा अभिजित् श्र०					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शनि	०	११	३	२०	अशुभ
गुरु	१	९	३	२०	शुभ
राहु	१	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	१	११	१०	०	शुभ
रवि	०	६	२०	०	अशुभ
चंद्र	१	४	२०	०	शुभ
भौम	०	८	२६	४०	अशुभ
बुध	१	६	२६	४०	शुभ
संख्या	१०	०	०	०	

गुरुकी महादशाके वर्ष १९ धनिष्ठा शततारका पूर्वाभाद्रपदा					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
गुरु	३	४	३	२०	शुभ
राहु	२	१	१०	०	अशुभ
शुक्र	३	८	१०	०	शुभ
रवि	१	०	२०	०	अशुभ
चंद्र	२	७	२०	०	शुभ
भौम	१	४	२६	४०	अशुभ
बुध	२	११	२६	४०	शुभ
शनि	१	९	३	२०	अशुभ
संख्या	१९	०	०	०	

राहुकीमहादशाके वर्ष १२ उत्तराभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
राहु	१	४	०	०	अशुभ
शुक्र	२	४	०	०	शुभ
रवि	०	८	०	०	अशुभ
चंद्र	१	८	०	०	शुभ
भौम	०	१०	२०	०	अशुभ
बुध	१	१०	२०	०	शुभ
शनि	१	१	१०	०	अशुभ
गुरु	२	१	१०	०	शुभ
संख्या	१२	०	०	०	

शुक्रकी महादशाके वर्ष कृत्तिका रोहिणी मृगशिर					
अंतर्दशा					
ग्रह	वर्ष	मास	दिन	घटी	फल
शुक्र	४	१	०	०	शुभ
रवि	१	२	०	०	अशुभ
चंद्र	२	११	०	०	शुभ
भौम	१	६	२०	०	अशुभ
बुध	३	३	२०	०	शुभ
शनि	१	११	१०	०	अशुभ
गुरु	३	८	१०	०	शुभ
राहु	२	४	०	०	अशुभ
संख्या	२१	०	०	०	

टीका——ऋतु अर्थात् ६, दिक् अर्थात् १०, गिरि अर्थात् ७, धृति अर्थात् १८, नृप १६, अतिधृति १९, मेघ १७, हय ७, नख २० यह वर्षसंख्या सूर्यसे शुक्रपर्यंत लिखी है। जन्म-समय जिस ग्रहके जितने वर्ष हों उन वर्षोंसे जन्मके गत नक्षत्रको गुणा करे फिर भभोगसे भाग दे जो लब्धि मिले वह वर्ष फिर १२ से भागके दिवस और शेष घटी पल फिर इनमें भुक्तवर्ष मासादि घटाये तो शेष भोग्य वर्षादिक निकल आते हैं।

विंशोत्तरीक्रम कोष्ठक

कृत्तिकादिक्रमेणैवज्ञेयाविंशोत्तरीदशा ॥
अन्तर्दशायुतावर्षमासवासरवर्तिता ॥

टीका——कृत्तिकासे लेकर भरणीपर्यंत २७ नक्षत्र और दशा व अंतर्दशा और उनके पतियोंके नाम और उनके वर्षादि संख्याका कोष्ठक।

अन्यमते

स्वदशारामगुणितातद्दशागुणितापुनः ॥
खगुणेनहरेल्लब्धंवर्षमासदिनं भवेत् ॥

टीका——अपनी प्राप्तदशाको तीनसे गुणा देना जिसकी अंतर्दशा लानी हो उसको वर्ष से गुना देना अनंतर ३० से भाग देनेसे अंतर्दशावर्षमास दिन प्राप्त होता है।

महादशा और अंतर्दशाओंके फल

रविकी दशा

देशांतरंचनिजबंधुवियोगदुःखमुद्वेगरोगभय चौरभवाच पीडा ॥ पूर्वस्थित-स्यनिखिलस्य धनस्यनाशोभानोर्दशा जननकालदशा भवंति ॥

टीका——देशांतर वास भ्राताका वियोग दुःख मनको उद्वेग रोग भय चोर पीडा और संचित धनका नाश करे, यह रविदशाका फल है।

चन्द्रान्तर्दशा

हेमादिभूतिवरवाहनयानलाभः शत्रुप्रतापबलवृद्धिपरम्परा च ॥
इष्टान्नदानशयनासन भोजनानिनूनंसदा शशिदशागमने भवन्ति ॥

टीका——सुर्वण आदिक ऐश्वर्यका और अश्व गज पालकी इत्यादि वाहनोंका लाभ शत्रुका पराजय बलकी वृद्धि और नाना प्रकारके सुरस अन्नदान शयन स्थान उत्तम आसन भोजन ये सब चन्द्रमाकी दशामें प्राप्त होते हैं।

भौमकी अंतर्दशा

भूपालचौर भयवह्निकृताच पीडासर्वांगरोगभय दुःखसुदुःखिता च ॥
चिंताज्वरश्चबहुकष्टदरिद्रयुक्तः स्यात्सर्वदा कुजदशाजनने भवन्ति ॥

टीका——राजा और चोरोंसे भय और अग्निसे पीड़ा सर्व अंगरोग सदा दुःखी और नाना प्रकारकी चिंता ज्वर अत्यंत कष्ट ये सब भौमकी दशामें मनुष्य भोगते हैं।

सूर्य के महादशावर्ष ६
कृत्तिका उत्तराफा० उत्तरापा०
अन्तर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
रवि	०	३	१८	
चंद्र	०	६	०	
भौम	०	४	६	
राहु	०	१०	२४	
गुरु	०	९	१८	
शनि	०	११	१२	
बुध	०	१०	६	
केतु	०	४	६	
शुक्र	१	०	०	

चन्द्रके महादशावर्ष १४
रोहिणी हस्त श्रवण
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
चन्द्र	०	१०	०	
भौम	०	७	०	
राहु	१	६	०	
गुरु	१	४	०	
शनि	१	७	०	
बुध	१	५	०	
केतु	०	७	०	
शुक्र	१	८	०	
रवि	०	६	०	

भौमके महादशावर्ष ७
मृगशिर चित्रा धनिष्ठा
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
भौम	०	४	२७	
राहु	१	०	१८	
गुरु	०	११	६	
शनि	१	१	९	
बुध	०	११	२७	
केतु	०	४	२७	
शुक्र	१	२	०	
रवि	०	४	६	
चन्द्र	०	७	०	

राहुके महादशावर्ष १८
आर्द्रा स्वाती शततारका
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दि०	घ०
राहु	२	८	१२	
गुरु	२	४	२४	
शनि	२	१०	६	
बुध	२	६	१८	
केतु	१	०	१८	
शुक्र	३	०	०	
रवि	०	१०	२४	
चन्द्र	१	६	०	
भौम	१	०	१८	

गुरुके महादशावर्ष १६
पुनर्वसु विशाखापूर्वभाद्रपदा
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
गुरु	२	१	१८	
शनि	२	६	१२	
बुध	२	३	६	
केतु	०	११	६	
शुक्र	२	८	०	
रवि	०	९	१८	
चन्द्र	१	४	०	
भौम	०	११	६	
राहु	२	४	२४	

श० महादशावर्ष १९
उत्तराभाद्रपदा पुष्य अनुराधा
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
शनि	३	०	३	०
बुध	२	८	९	०
केतु	१	१	९	०
शुक्र	३	२	०	०
रवि	०	११	१२	०
चन्द्र	१	७	०	०
भौम	१	१	९	०
राहु	२	१०	६	०
गुरु	२	६	१२	

बुधकी महादशावर्ष १७
आश्लेषा ज्येष्ठा रेवती
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
बुध	२	४	२७	
केतु	०	११	२७	
शुक्र	२	१०	०	
सूर्य	०	१०	६	
चन्द्र	१	५	०	
भौम	०	११	२७	
राहु	२	६	१८	
गुरु	२	३	६	
शनि	२	८	९	

केतुके महादशावर्ष ७
मघा मूल अश्विनी
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
केतु	०	४	२७	
शुक्र	१	२	०	
सूर्य	०	४	६	
चन्द्र	०	७	०	
भौम	०	४	२७	
राहु	१	०	१८	
गुरु	०	११	६	
शनि	१	१	९	
बुध	०	११	२७	

शुक्रकी महादशावर्ष २०
पूर्वाफाल्गुनीपूर्वाषाढाभरणी
अंतर्दशा

नाम	वर्ष	मास	दिव.	घ०
शुक्र	३	४	०	
सूर्य	१	०	०	
चन्द्र	१	८	०	
भौम	१	२	०	
राहु	३	०	०	
गुरु	२	८	०	
शनि	३	२	०	
बुध	२	१०	०	
केतु	१	२	०	

राहुकी अंतर्दशा

दीनो नरो भवति बुद्धिविहीनश्चिंतासर्वाङ्गरोगभय दुःखसुदुःखिताच
पापानिबन्धुबहुकष्ट दरिद्रयुक्तं राहोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥

टीका—मनुष्य बुद्धिहीन और दीन हो चितायुक्त और सर्व शरीरको अत्यंत रोग भय रहे और दुःख बंधन कष्ट बहुत दरिद्रता यह राहुकी अंतर्दशाका फल जानिये ।

गुरुकी अंतर्दशा

राज्याधिकारपरिवर्द्धितचित्तवृत्तिर्धर्माधिकार-
परिपालनसिद्धिबुद्धिः ॥ सद्विग्रहोपिधनधान्य-
समृद्धिता च स्याद्देवतागुरुदशागमने भवंति ॥

टीका—राज्याधिकार और चित्त वृत्तिकी धर्ममें निष्ठा, शरीरकी आरोग्यता, निश्चय करके धन धान्यकी वृद्धि यह गुरुकी दशाका फल जानिये ।

शनिकी अंतर्दशा

मिथ्यापवादवधबंधनमर्थहानिर्मित्रेचबंधुवचनेषु च युद्ध बुद्धिः ॥
सिद्धंच कार्यमपियत्रसदाविनष्टंस्यात्सर्वदा शनिदशागमने भवन्ति ॥

टीका—मिथ्यापवाद, दूसरेका हनन, बंधन, द्रव्यका नाश, मित्र तथा बांधवोंसें कलहकी बुद्धि और सिद्ध हुआ कार्य भी नष्ट हो जाय, यह शनिकी अंतर्दशाका फल जानिये ।

बुधकी अंतर्दशा

दिव्यांगनामदनसंगम केलिसौख्यं नानाविलास-
मभिरागमनोभिरामम् ॥ हेमादिरत्नविभवागमके-
शध्यानं स्यात्सर्वदा बुधदशागमनेभवन्ति ॥

टीका—सुंदर स्त्री, सुख और सर्व प्रकारके भोग विलास, सुवर्ण और रत्न आदिकी प्राप्ति धनसंग्रह, ईश्वर स्मरण इत्यादि बुधकी अंतर्दशामें फल जानिये ।

केतुकी अंतर्दशा

भार्यावियोगजनितंचक्षरीर दुःखं द्रव्यस्यहानिर-
तिकष्टपरम्पराच ॥ रोगाश्चबंधुकलहश्चविदेश-
ताचकेतोर्दशाजननकालदशा भवन्ति ॥

टीका—स्त्रीवियोगसे शरीरको दुःख द्रव्यकी हानि, कष्ट, रोग और बंधु कलह, देशांतर गमन, यह केतुकी दशाका अशुभ फल है ।

शुक्रदशाका फल

आरामवृद्धिपरिसर्वशरीरवृद्धिः श्वेतातपत्रधन-
धान्यसमाकुलं च ॥ आयुः शरीरसुतपौत्रसुखं
नराणां द्रव्यं चभार्गवदशागमने भवन्ति ॥

टीका—बाग आदिकस्थानकी प्राप्ति और शरीर पुष्ट, श्वेत छत्रकी प्राप्ति, धन-धान्यकी वृद्धि, आयुकी और पुत्र पौत्रकी वृद्धि, द्रव्यकी प्राप्ति, यह शुक्रदशा का फल जानिये। ऐसेही सर्व ग्रहोंकी महादशाओंके फल जानिये ।

योगिनीदशाके स्वामी

अथासामधीशाः क्रमान्मंगलायाः शशीतीक्ष्णभानुर्गुरुर्भूमिसूनुः ।।
बुधः सूर्यसूनुर्भृगुः सिंहिकायाः सुतः संकटायास्तथांतेचकेतुः ।।

टीका—मंगलादिदशाके स्वामी चन्द्र, सूर्य, गुरु, मंगल, बुध, शनि, शुक्र, राहु, केतु, संकटा दशाके स्वामी ये मंगलादिक दशाके स्वामी क्रमसे जानिये ।

योगिनीदशाक्रम

स्वर्क्षपिनाकिनयनैः संयोज्यं वसुभिर्भजेत् ।।
योगिन्यष्टौसमाख्याताशून्यपाते नसंकटा ।।

टीका—जन्म नक्षत्रमें तीन अंक मिलाये और आठका भाग दे शेष अंक को मंगलादिक दशा क्रमसे जानिये इनका क्रम कोष्ठकमें लिखा है ।

योगिनीदशाके नाम

मंगलापिंगला धन्या भ्रामरी भद्रिकापि च ।।
उल्कासिद्धासंकटाचयोगिन्यष्टौदशाः स्मृताः ।।

टीका—मंगला, पिंगला, धन्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा, संकटा इन आठों योगिनी दशाओंको क्रमसे जानिये ।

वर्षसंख्या

एकद्वित्रीणिवेदाश्च पंचषट्सप्तमानिच ।।
अष्टवर्षाणिहि भवेन्मंगलादावनुक्रमात् ।।

टीका—मंगलादि दशाओंके नाम पृथक् २ और वर्षसंख्याके दिवस कर उनमें अन्तदशा लानेका क्रम, प्रथम दशा वर्ष एक जिसके दिवस ३६० दिन, जिनमें ३६ का भाग दे, लब्धिको अन्तर्दशा स्पष्ट जाने और इसी रीतिके अनुसार दशा और अन्तर्दशा निकाल लीजिये

अंतर्दशा

अथान्तर्दशायाः प्रकारंप्रवच्मिदशावार्षिकं स्वस्ववर्षेणगुण्यम् ।।
ततः षट्त्रिभिर्लब्धवर्षादिकासासदाखेटविद्भिर्विधेयाफलार्थम् ।।

टीका—प्राप्त दशासे जिस दशाका अंतर करना हो उसके वर्षसंख्याके प्राप्त दशाको गुणाकर देना, उसमें ३६ का भाग देनेसे अंतर्दशा होती है, आगे चक्रसे स्पष्ट प्रतीत होगा ।

मंगलकेवर्ष १ जिसके दिन ३६०		पिंगलाके वर्ष २ दि ०७२०		धान्याके वर्ष ३ दि १०८०		भ्रामरी वर्ष ४ दि १४४०		भद्रिका वर्ष ५ दि १८००		उल्का वर्ष ६ दि २१६०		सिद्धा वर्ष ७ दि २५२०		संकटा वर्ष ८ दि २८८०	
मंगला	१०	पि	४०	धा	९०	भ्रा	१६०	भ	२५०	उ	३६०	सि	४९०	सं	६४०
पिंगला	२०	धा	६०	भ्रा	१२०	भ	२००	उ	३००	सि	४२०	सं	५६०	मं	८०
धान्या	३०	भ्रा	८०	भ	१५०	उ	२४०	सि	३५०	सं	४८०	मं	७०	पिं	१६०
भ्रामरी	४०	भ	१००	उ	१८०	सि	२८०	सं	४००	मं	६०	पिं	१४०	धा	२४०
भद्रिका	५०	उ	१२०	सि	२१०	सं	३२०	मं	५०	पिं	१२०	धा	२१०	भ्रा	३२०
उल्का	६०	सि	१४०	सं	२४०	मं	४०	पिं	१००	धा	१८०	भ्रा	२८०	भ	४००
सिद्धा	७०	सं	१६०	मं	३०	पिं	८०	धा	१५०	भ्रा	२४०	भ	३५०	उ	४८०
संकटा	८०	मं	२०	पिं	६०	धा	१२०	भ्रा	२००	भ	३००	उ	४२०	सि	५६०
जोड़	३६०	०	७२०	०	१०८०	०	१४४०	०	१८००	०	२१६०	०	२५२०	०	२८८०

३६ वर्षमें ८ योगिनीकी दशा बीत जाती है और बारंबार इसी क्रमानुसार जानिये ।

दशाका फल

वैरिणांतुविपदाविनाशिका वाहनादिवसुरत्नलाभदा ।।
कामिनांसुतगृहादिलाभदा मंगला सकलमंगलोदया ।।

टीका---शत्रुके उपद्रवका नाश और घोड़ा हाथी स्वर्ग रत्न आदिका लाभ और स्त्री पुत्र ग्रहादिकका लाभ और मंगलादि कार्यका उदय होना यह मंगला दशामें फल जानिये ।

दुःखशोककुलरोगवर्धिता व्यग्रताचकलहः स्वजनैश्च ।।
अंशभागकथिता फलदासौ पिंगलाचविदुषासुखदादौ ।।

टीका---दुःख, शोक, कुलमें रोग वृद्धि, चित्तमें व्याकुलता, बंधुओंमें वैर पिंगला आदिमें सुख देती है उसके अनंतर उपर लिखा फल पिंगलाका जानिये ।

धनंधान्यवृद्धिं धरानाथमान्यं सदायुद्धभूमौजयंधैर्यवंतः ।।
कलत्रांगनानांसुखं चित्रवस्त्रैर्युतं धन्यकाधान्यवृद्धिं करोति ।।

टीका---धनवृद्धि, धान्यवृद्धि, राज्यपूजनीय, सर्वकाल युद्ध भूमिमें जय, धैर्य युक्त स्त्री पुत्रका सुख और चित्रवस्त्रयुक्त धन्या दशाका यह फल जानिये ।

विदेशेभ्रमंहानियुद्धेगताश्च कलत्रांगपीडासुखैर्वर्जितत्वम् ।।
ऋणंव्याधिवृद्धिर्जनानां प्रकोपं दशाभ्रामरीभ्रामयेत्सर्वदेशम् ।।

टीका---विदेशमें भ्रमण, युद्धमें हानि, स्त्रीको पीड़ा, सुखहीन,ऋणयुक्त, रोग वृद्धि, जनका प्रकोप, सर्वदेशमें, भ्रमण, यह भ्रामरीदशामें फल जानिये ।

धनानंदवृद्धिर्गुणानांप्रकाशं समीचीनवस्त्रागमंराजमान्यम् ।।
अलंकारदिव्यांगना भोगसौख्यं सदा भद्रिकाभद्रकार्यं करोति ।।

टीका——धनकी वृद्धि, आनंदकी वृद्धि, गुणका प्रकाश, उत्तम वस्त्र प्राप्त, राज्य-मान्य, भूषणकी प्राप्ति, स्त्री भोगादिकका सौख्य और कल्याण यह भद्रिका दशामें फल जानिये ।

भ्रमंव्याधिकष्टंज्वराणांप्रकोपं धनादेशदारादिकानांवियोगम् ।।
स्वगोत्रैर्विवादंसुहृद्बंधुवैरं दशाचोल्ककानर्थकारी सदैव ।।

टीका——भ्रमण रोग दुःख ज्वरका कोप धनवियोग देश वियोग स्त्री वियोग गोत्रमें कलह मित्र, बंधु इनसे वैर और नाना प्रकारके अनर्थ यह उल्का दशामें फल जानिये ।

राज्याभिमानं स्वजनादिसौख्यं धान्यादिलाभं गुणकीर्तिसिद्धिम् ।।
राज्यादिलाभंसुतवृद्धिसौख्यं सिद्धं च सिद्धा प्रकरोति पुंसाम् ।।

टीका——राज्यप्राप्ति, अभिमान, अपने गोत्रमें सुख देखना, धान्य आदिलाभ गुण सिद्धि कीर्तिसिद्धि राज आदिक लाभ, पुत्रवृद्धि, सुख और सर्व कार्यसिद्धि यह सिद्धि दशामें फल जानिये ।

जनानांविवादंज्वराणांप्रकोपं कलत्रादिकष्टंपशूनांहिनाशम् ।
गृहेस्वल्पवासंप्रवासाभिलाषं दशासंकटा संकटं राजपक्षात् ।।

टीका——जनोंमें कलह, ज्वरकी पीड़ा, स्त्री आदिकका कष्ट और पशुओंका नाश, घरमें थोड़ा वास, प्रवास अभिलाष, राजपक्षसे संकट, यह संकटादशाका फल जानना चाहिये ।

मंगलामंगलानंदयशोद्रविणदायिनी ।। पिंगलातनुतेव्याधिं मनसोदुःखसंभ्रमौ ।। धन्याधनसुहृद्बंधुरूपसीमन्तिनीकरी ।। भ्रामरीजन्मभूमिघ्नी भ्रामयेत्सर्वतोदिशम्।। भद्रिकासुखसंपत्तिविलासवशदायिनी ।। उल्काराज्यधनारोग्यहारिणी दुःख-कारिणी ।। सिद्धा साधयते कार्यं नृणां वै सुखदा भवेत् ।। संकटा संकट-व्याधिमरणक्लेशकारिणी ।।

टीका——मंगलादशाका फल, शुभ कार्य आनंद यश और द्रव्यप्राप्ति और पिंगलाका, शरीरको व्याधि और मनको दुःख तथा भ्रम, धान्याका फल, धन मित्र बंधुमिलाप आरो-ग्यता और सुंदरता, भ्रामरीका फल, स्थाननाशदिशा भ्रमण, भद्रिकाका सुख संपत्ति विलास यश इत्यादि, उल्काका राजभय धन नाश रोगग्रस्तता और पीड़ा, सिद्धा में कार्य सिद्धि और सुख प्राप्ति, संकटाका फल व्याधि मरण क्लेश है ।

रविदिननखसंख्याचन्द्रमाव्योमबाणैः क्षितितनयगजाश्वीचंद्रजःषट्शराश्च । शनिरसगुणसंख्या वाक्पतिर्नागबाणैर्नयनयुगकराहुः सप्ततिः शक्रसंख्या ।। जन्मनां विंशतिःसूर्ये तृतीये दशचन्द्रमाः ।। चतुर्थे भौमश्चाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थकम् ।। सप्तमं दशसौरिःस्यान्नवमे चाष्टमेगुरोः ।। दशमेराहुर्विंशत्या तदूर्ध्वंतु भृगोर्दश ।। फल ।। पंथाभोगोनुतापश्च सौख्यंपीडाधनं क्रमात् ।। नाशशोकश्चसौख्यंच जन्म-सूर्य दशाफलम् ।।

टीका—वर्ष दशाका आरंभ और क्रम जिस मासमें जिसके जन्मराशिके सूर्य हों वे द्वादश स्थान भोगते हैं और सब दशाका क्रम इसी रीतिपर है ।

२० दिवस सूर्यकी दशा जन्मस्थान जानिये, उसका फल मार्ग चलना ।

५० दिवस चंद्रमाकी दशा तीसरे स्थानके १० दिवस रवि भोगते हैं, उसका फल नाना प्रकारके उत्तम भोग ।

२८ दिवस मंगलकी दशा चौथे स्थान आठ दिवस रवि भोगत हैं, उसका फल रोग और तृप्तता हो ।

५६ दिवस बुधकी दशा छठे स्थान ४ दिवस रवि भोगते हैं, उसका फल सुखकारक हो ।

३६ दिवस शनिकी दशा सप्तम स्थान ४ दिवस रवि भोगते हैं, उसका फल पीड़ाजनक जानिये ।

५८ दिवस गुरुकी दशा नवमस्थान ८ दिवस रवि भोगते हैं, उसका फल धनप्राप्ति ।

४२ दिवस राहुकी दशा दशमस्थान २७ दिन रवि भोगते हैं, उसका फल नाना प्रकारका सोच ।

७० दिवस शुक्रकी दशा द्वादशस्थानमें रवि सम्पूर्ण भोगते हैं, उसका फल सर्व सुखकारक जानिये ।

ग्रहोंकीनित्यादशाओंका प्रकार

तिथिवारंचनक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् ।। नवभिश्चहरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ।। रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुमंदज्ञकेसिताः ।। क्रमेणेकादशज्ञेयाः फलंपूर्वोक्तमेवहि ।।

टीका—गततिथि और वार नक्षत्र और अपने नामके अक्षर सबको इकट्ठे करके ९ का भाग दे शेष १ रहे तो रविकी दशा, २ बचें तो चंद्रमाकी, ३ शेष बचें तो भौमकी दशा, ४ शेष रहें तो राहुकी, ५ बचें तो गुरुकी, ६ शेष रहें तो शनिकी, ७ शेष बचें तो बुधकी, आठ शेष रहें तो केतुकी और पूरा भाग लग जाय तो शुक्रकी दशा जानिये, इसी प्रकार नित्यदशा क्रमसे जानिये और फल वर्षदशाके तुल्य जानिये ।

दूसरा मत

जन्मताराचतुर्गुण्यं तिथिवारसमन्वितम् ।। नवभिस्तुहरेद्भागंशेषंदिनदशोच्यते ।। रविणाशोकसंतापौ शशांकेक्षेमलाभकौ ।। भूमिपुत्रेतु मृत्युः स्याद्बुधेप्रज्ञाविवर्द्धनम्।। गुरौवित्तं भृगौसौख्यं शनौ पीडा न संशयः ।। राहुणाघातपातौच केतौ मृत्युर्दशाफलम् ।।

टीका—जन्मनत्रक्षको चतुर्गुण करे उसमें गत तिथि और वार मिलाकर नव ९ का भाग दे १ शेष रहे तो एक दिनकी रविकी दशा जानिये, फल शोक संतापकारक; २ शेष रहें तो चंद्रमाकी दशा, फल कल्याण व लाभदायक और ३ शेष रहें तो मंगलकी दशा फल मृत्युकारक, ४ शेष रहें तो बुधकी दशा फल बुद्धिवृद्धि, ५ शेष रहें तो गुरुकी दशा फल

वित्तप्राप्ति; ६ बचें तो शुक्रकी दशा फल सुखकारक, ७ शेष रहें तो शनिकी दशा पीडाकारक; ८ शेष रहें तो राहुकी दशा फल घातक और जो भाग पूरा लगजाय तो केतुकी दशा फल मृत्यु इस प्रकारसे जानिये ।

गोचर प्रकरण

ग्रह कितने मास एक एक राशिको भोगता है

मासंशुक्रबुधादित्याः सार्धमासंतुमंगलः ।। त्रयोदशगुरुश्चैव सपादद्वेदिने-शशी ।। राहुरष्टादशान्मासान् त्रिशन्मासान् शनैश्चरः ।। राहुवत्केतुरुक्तस्तु राशिभोगः प्रकीर्तितः ।। फल ।। सूर्यः पंचदिनं शशीत्रिघटिका भौमोष्टवैवासरं सप्ताहंह्युशनाबुधस्त्रयदिनं मासद्वयंवैगुरु ।। षण्मासं रविजस्तथैवसततं स्वर्भानुमासद्वये केतोश्चैवतथाबलं परिमितं ज्ञेयंग्रहाणां फलम् ।। राशिप्रवेशे-सूर्यारौ मध्येशुक्रबृहस्पती ।। राहुश्चन्द्रः शनिश्चांते सौम्यश्चैव सदाशुभः ।।

टीका—उनके दिनोंकी संख्याका क्रम अनुक्रमसे लिखते हैं ।

सूर्य—एक मास एक राशि भोगते हैं उसमें प्रथम पांच दिन फल देते हैं ।

चंद्रमा—सवा दो दिन एक राशि भोगते हैं और अंतकी ३ घटिका फल देते हैं ।

मंगल—डेढ़ मास एक राशि भोगते हैं और प्रथम ८ दिवस फल देते हैं ।

बुध—एक मास एक राशिको भोगते हैं और सर्व दिवस फल देते हैं ।

गुरु—त्रयोदश १३ मास एक राशि भोगते हैं उसका फल मध्यम भागमें दो मास जानिये ।

शुक्र—एक मास एक राशि भोगते हैं और मध्यम भागमें सात दिवस फल देते हैं ।

शनि—तीस मास एक राशि भोगते हैं और अंतके ६ महीने फल देते हैं । राहु और केतु—अठारह मास एक राशि भोगते हैं और अंतके दो मास फल देते हैं ।

द्वादश भवनके स्थानोंके शुभाशुभ फल द्वादश स्थानोंके नाम

**तत्रादौतनुधनसहजसुहृत्सुतरिपवश्च ।।
जायामृत्युर्धर्मव्ययाख्यानि द्वादश भवनानि ।।**

स्थानानुसार फल

सूर्यः स्थानविनाशं भयंश्रियंमानहानिमथदैन्यम् ।। विजयं मार्ग पीडां-सुकृतंहंति सिद्धिमायुरथहानिम् ।। चन्द्रोऽन्नंच धनप्राप्ति रोगं कार्यक्षतिश्रियम् ।। स्त्रियंमृत्युंनृपभयं सुखमायव्ययंक्रमात् । भौमोऽरिभीतिं ।। धननाशमर्थं भयंत-थार्थक्षतिमर्थलाभम् ।। धनात्ययं शत्रुभयंचपीडां शोकंधनंहानिमनुक्रमेण ।। बुधस्तु बंधं धनमन्यभीतिंधनंरुजं स्थानमथोचपीडाम् ।। अर्थेरुजं सौख्यमथात्मसौख्यमर्थ-क्षतिं जन्मगृहात्करोति ।। गुरुर्भयं धनं क्लेशं धननाशंसुखंशुचम् ।। मानंरोगं सुखंदैन्यं लाभंपीडांच जन्मभात् ।। कविः शत्रुनाशं धनसौख्यमर्थं सुताप्ति रिपोः साध्यसंशोकमर्थम् ।। बृहद्वस्त्रलाभं विपत्तिधनाप्ति धनाप्तित-

नोत्यात्मनोजन्मराशेः ।। शनिः सर्वनाशं तथा वित्तनाशं धनं शत्रुवृद्धि सुतादेः प्रवृद्धिम् ।। श्रियंदोषसंधि रिपुं द्रव्यनाशं तथा दौर्मनस्यं तथा बह्वनर्थम् ।। राहुर्हानिं तथानैः स्वं धनंवैरं शुचं श्रियम् ।। कलिवसुंचदुरितं वैरं सौख्यं शुचं क्रमात् ।। केतुःक्रमाद्रुजं वैरं सुखं भीतिंशुचं धनम् ।। गतिगदं दुष्कृतं च शोकं कीर्तिं च शत्रुताम् ।।

टीका—इसका अर्थ आगे चक्रमें स्पष्ट देख लेना।

गोचरचक्रम्

नाम	रवि	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	नाश	अन्नप्रा०	शत्रुभय	बंधन	भय	शत्रुनाश	सर्वनाश	हानि	रोग
धन	भय	धनप्रा०	धनना०	धनप्रा०	धनप्रा०	धनप्रा०	वित्तना०	धनलाभ	वैर
सहज	धन	सुख	धनप्रा०	भीति	क्लेश	सौख्य	धनला०	धनप्रा०	सुख
सुहृत्	मानहा	रोग	भय	धनप्रा०	धनना०	धनप्रा०	शत्रुवृ०	वैर	भय
सुत	दैन्य	कार्यक्षय	अर्थःना	रोग	सुख	पुत्रप्रा०	सुतप्रा०	[illegible]	शोच
रिपु	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानला	शोक	रिपुभय	धनप्रा०	लक्ष्मी	धनप्रा०
जाया	मार्गक्र०	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	शोक	दोष	[illegible]	मार्गक्रम
मृत्यु	पीडा	मृत्यु	शत्रुभय	अर्थप्रा०	रोग	धनप्रा०	रिपु	धनला०	रोग
धर्म	पुण्यना०	राजभय	पीडा	रोग	सुख	वस्त्रला०	धनना०	पापकर्म	दुष्टकर्म
कर्म	सिद्धी	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	विपत्ति	अस्वा०	वैर	शोक
आय	लाभ	आय	धनप्रा०	सौख्य	लाभ	धनप्रा०	धनप्रा०	सौख्य	कीर्ति
व्यय	हानी	खर्च	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा०	धनना०	शुचि	शत्रुनाश

वेधचक्रमाह

सूर्योरसांत्ये खयुगानिनंदे शिवाक्षयोर्भौमशनीनभश्च ।। रसांकयोर्लभिशरेगुणान्त्ये चन्द्रोवराब्दौ गुणनंदयोश्च ।। लाभाष्टमे चाद्यशरे रसांत्ये नगद्वयेज्ञोद्विशराब्धिरामे ।। रसांकयोर्नागविधौखनागे लाभव्यये देवगुरुः शराब्धौ ।। द्व्यंत्येनवांशेद्रिगुणे शिवाद्यौ शुक्रः कुनागे द्विनगेग्निरूपे ।। वेदांबरपंचनिधौगजेशौ नंदेशयोर्भानुरसे शिवाग्नौ ।। क्रमाच्छुभौविद्धइति ग्रहः स्यात् पितुः सुतः स्यान्नतुवेधमाहुः ।। दुष्टोपिखेटो विपरीतवेधाच्छुभोद्विकोणे शुभदः सितेब्जे ।। स्वजन्मराशेरिनवेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितःस्युः ।। हिमाद्रिविन्ध्यन्तरएववेधो नसर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तिः ।।

टीका—जन्म राशिसे और ग्रहकी गतिसे गोचरका शुभाशुभ फल लिखे और नवांशक से ज्ञात करे जैसा सूर्यजन्म स्थानसे षष्ठस्थानसे शुभा, यदि द्वादश स्थानमें शुभग्रह हों तो शुभ और यदि अशुभ ग्रह हों तो ऐसा सर्व ग्रह वेध जानना। परंतु पितापुत्र सूर्य शनिचन्द्र

बुध इनका परस्पर वेध नहीं हो तो अशुभ जन्मस्थानसे द्वादश स्थानमें सूर्य हो और शनि षष्ठ स्थानमें हो अथवा अन्यग्रह हो तो विपरीत वेध शुभ जानना । हिमाद्रि और विंध्य के मध्य में यह वेध है अन्य देशोंमें नहीं, ऐसा कश्यपऋषि का कथन है ।

वेधचक्रम्

रवेः				मं.	श.	रा.	चंद्रस्य					बुधस्य			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६
१२	४	९	५	२	५	१२	४	९	८	५	१२	२	५	३	९

			गुरोः					शुक्रस्य								
८	१०	११	५	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	५	११	६	३

जन्मके चंद्रमामें पांचकर्म वर्जनीय

जन्मर्क्षस्थे शशांकेतु पञ्चकर्माणि वर्जयेत् ।।
यात्रां युद्धं विवाहं च क्षौरं च गृहवेशनम् ।।

टीका—यात्रा और युद्धको जाना, और क्षौरकर्म करना तथा गृह प्रवेश ये पांच कर्म जन्मके चंद्रमामें वर्जित हैं ।

नेष्टस्थानके अनुसार चंद्रमाका उक्तबल

द्विपञ्चनवमेशुक्ले श्रेष्ठचन्द्रोहि उच्यते ।। अष्टमेद्वादशे कृष्णे चतुर्थे श्रेष्ठउच्यते ।। शुक्लेपक्षे बलीचन्द्रः कृष्णेतारा बलीयसी ।।

टीका—दूसरे पांचवें अथवा नवम स्थानमें चंद्रमा हो तो शुक्लपक्षमें श्रेष्ठ जानिये, वैसेही कृष्णपक्षमें आठवें बारहवें तथा चौथे स्थानका श्रेष्ठ परंतु शुक्लपक्षमें चंद्रमा बल और कृष्णपक्षमें तारावल ऐसे श्रेष्ठ जानिये ।

ग्रहोंके नेष्टस्थान

ये खेचरा गोचरतोष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाप्यशुभाभवंति ।।
दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ।।

टीका—गोचरके अथवा अष्टवर्गके किंवा दशाक्रमके जो ग्रह नेष्टस्थानी हों वे दानादि से प्रसन्न होते हैं, अतः अव दानकी विधि को कहते हैं ।

वारोंके अनुसार दान

भानुस्ताम्बूलदानादपहरति नृणां वैकृतं वासरोत्थं सोमः श्रीखण्डदानादवनिवरसुतो भोजनात्पुष्पदानात् ।। सौम्यः शास्त्रस्य मन्त्राद्गुरुहरभजनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्मनत्यापरे च ।।

टीका—सूर्य तांबूलदानसे, चंद्रमा चंदनके दानसे, मंगल भोजन और पुष्पदानसे, बुध शास्त्रोक्त मंत्रके जपसे, गुरु शिवकी आराधना और भोजनसे शुक्र श्वेत वस्त्रसे और शनि प्रात:काल तैलस्नान और विप्रसन्मानसे अपने अपने अशुभ फलोंको दूर कर शुभ फलदायक होते हैं ।

ग्रहोंके दान और जप

रवि ।। माणिक्यगोधूमसवत्सधेनु: कौसुम्भवासोगुडहेमताम्रम् ।। आरक्तकंचन्दनमम्बुजंचवदन्तिदानंहि विरोचनाय ।। चन्द्रमा ।। सद्वंशपात्रस्थिततन्दुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् ।। युगोपयुक्तंवृषभंचरौप्यं चन्द्राय दद्यात् घृतपूर्णकुम्भम् ।। भौम ।। प्रवालगोधूममसूरिकाश्च बृषोरुणश्चापिगुड: सुवर्णम् ।। आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रंचभौमायवदंतिदानम् ।। बुध ।। वृषंचनीलंकलधौतकांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम् ।। दासी चदन्तोद्विरदश्चनूनं वदन्तिदानंविधुनन्दनाय ।। गुरु ।। शर्कराचरजनीतुरंगम: पीतधान्यमपिपीतमम्बरम् ।। पुष्परागलवणंसकाञ्चनंप्रीतयेसुरगुरो–प्रदीयते ।। शुक्र ।। चित्राम्बरं शुभ्रतुरंगमं च धेनुश्च वज्रं रजतंसुवर्णम् ।। सतन्दुलानुत्तमगन्धयुक्तंवदन्ति दानंभृगुनन्दनाय ।। शनि ।। माषाश्चतैलंविमलेन्द्रनीलंतिला: कुलत्थामहिषीचलोहम् ।। कृष्णाचधेनु: प्रवदंतिनूनं तुष्टयैच दानंरविनन्दनाय।। राहु ।।गोमेदरत्नंचतुरंगमश्चसुनीलचैलामलकम्बलंच ।। तिलाश्चतैलंखलु लोहमिश्रंस्वर्भानवेदानमिदंवदन्ति ।। केतु ।। वडूर्यरत्नंसतिलंचतैलंसुकम्बलाश्चापि मदोमृगस्य ।। शस्त्रंचकेतो:परितोष हेतोश्छागस्यदानंकथितंमुनीन्द्रै: ।। ग्रहोंका जप ।। रके:सप्तसहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैवतु ।। भौमेदशसहस्राणि बुधेचाष्टसहस्रकम् ।। एकोनविंशतिर्जीवेशुक्रएकादशैवतु ।। त्रयोविंशतिमन्देचराहोरष्टादशैवतु ।। केतो: सप्तसहस्राणि जपसंख्याप्रकीर्तिता ।।

नाम	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
दान	माणिक	वेणुपात्र युक्ततंदुल	मूंगा	कालाबै,	शर्करा	चित्रवस्त्र	उडद	गोमेद	वैडूर्य्य
	गेहूं	कर्पूर	गेहूं	सोना	हलद	श्वेताश्व	तेल	घोडा	रत्न
	गोवत्स	मोति	मसूर	कांस्यपा	घोडा	गाय	नील	नीलव०	तिल
	रक्तवस्त्र	श्वेतवस्त्र	रक्तबैल	मूंग	पीतअन्न	हीरा	तिल	कंबल	तैल
	गुड	श्वेतबैल	गुड	घृत	पीतव०	रूपा	कुलथी	तिल	तैल
	सोना	रौप्य	सोना	गारुत्मत	पुष्परा.	सोना	भैंस	तेल	कम्बल
	तांबा	रूपा	लालवस्त्र	सर्वपुष्प	नोन	तांबूल	लोहा	लोहा	कस्तूरी
	रक्तचंद	घृतकुंभ	कनेरपु.	दासी	सोना	चंदन	कृष्णगौ	का०पू०	शास्त्र
	कमल	०	तांबा	हस्तिदंत	०	०	०	०	०
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००

ग्रहपीडानिवारणार्थ

देवब्राह्मण वन्दनाद्गुरुवचः सम्पादनात्प्रत्यहं साधूनामभिभाषणोच्छ्रुतिरव-
श्रेयः कथाकारणात् ।। होमादध्वरदर्शनात् शुचिमनो भावाज्जपाद्दा-
नतोनोकुर्वन्ति कदाचिदेवपुरुषस्यैवं ग्रहाः पीडनम् ।।

टीका––देव और ब्राह्मणको सादर नमस्कार करे और प्रतिदिन गुरु तथा साधुओंसे भाषण तथा उत्तम उत्तम कथा श्रवण करे, होम तथा यज्ञके दर्शन करे और शुद्ध मनके भावसे जप दान करे। यदि ग्रहोंके निमित्त ऐसे उपाय करे तो पीड़ा निवृत्त हो और शुभफल मिले।

जातकर्म

जातेपुत्रेपिताकुर्यान्नान्दि श्राद्धंविधानतः ।।
जातकर्मततः कुर्यादन्यैरालम्भनात्पुरा ।।

टीका––पुत्र उत्पन्न होनेपर पिता तत्काल नांदिश्राद्ध विधिपूर्वक करे, उसके बाद जबतक कोई अन्य जाति बालकका स्पर्श न करे उससे प्रथम जातकर्म करे ।

नामकरण

पुष्यार्कत्रयमैत्रभेतुमृगभेज्येष्ठाधनिष्ठोत्तरा
दित्याख्येषुचनामकर्म शुभदंयोगेप्रशस्तेतिथौ ।।
अह्निद्वादशके तथान्यदिवसे शस्ते तथैकादशे
गोसिंहालिघटेषुह्यर्कबुधयोर्जीवेशशांकेपिच ।।

टीका––नामकरण के लिये पुष्य हस्त चित्रा स्वाती अनुराधा मृग ज्येष्ठा धनिष्ठा उत्तरात्रय पुनर्वसु ये नक्षत्र शुभ हैं। जन्मसे ११ अथवा १२ दिवस शुभ हैं और दूसरे मतके अनुसार १६ । २० । २२ । १०० । ये दिवस शुभ हैं । वृष सिंह कुंभ वृश्चिक ये लग्न शुभ हैं और रवि बुध गुरु शुक्र शशांक अर्थात् चंद्रवार शुभ हैं, रिक्ता तिथि और दुष्ट योगादिक नामकरणमें वर्जित हैं ।

नामका अवकहडाचक्र

चूचेचोलाऽश्विनीप्रोक्ता लीलूलेलो भरण्यथ ।। आईऊएकृत्तिकास्याद्वोवा-
वीवूतु रोहिणी ।। वेवो काकी मृगशिरःकूघंगच्छतथार्द्रका ।। केकोहाहीपुनर्वसुर्हू-
हेहोडातुपुष्यभम् ।। डी डूडेडोतु आश्लेषामामीमूमेमघास्मृता ।। मोटाटीटूपूर्वफल्गु
टेटोपाप्युत्तरंतथा ।। पूषणाढाहस्ततारापेपोरारीतुचित्रका ।। रूरेरोतास्मृतास्वाती
तीतूतेतो विशाखिका ।। नानीनूनेनु राधर्क्षज्येष्ठानोयायियूस्मृता ।। येयोभाभी
मूलतारापूर्वाषाढा बुधाफडा ।। भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोराभिजिद्भवेत् ।।
खीखूखेखो श्रवणभं गागीगूगेधनिष्ठिका ।। गोसासीसूशतभिषक्सेसोदादीतुपूर्व-
भाक् ।। दुथाझञयथाज्ञेयो देदो चाचीतु रेवती ।।

हांडाचक्रम्

चू चे चो ला	अश्विनी ।	हु हे हो डा	पुष्य ।	रु रे रो ता	स्वाती ।	जू जे जो खा	अभिजित ।
ली लू ले लो	भरणी ।	डी डू डे डो	आश्लेषा ।	ती तू ते तो	विशाखा ।	खी खू खे खो	श्रवण ।
आ ई ऊ ए	कृत्तिका ।	मा मी मू मे	मघा ।	ना नी नू ने	अनुराधा ।	गा गी गू गे	धनिष्ठा ।
ओ वा वी वु	रोहिणी ।	मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी ।	नो या यी यु	ज्येष्ठा ।	गो सा सी सू	शतभिषा ।
वे वो का की	मृगशिर ।	टे टो पा पी	उत्तराफाल्गुनी ।	ये यो भा भी	मूल	से सो दा दी	पूर्वाभाद्रपदा ।
कू घ ङ छ	आर्द्रा ।	पू ष ण ठ	हस्त ।	भू धा फा ढा	पूर्वाषाढा	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपदा ।
के को हा ही	पुनर्वसु ।	पे पो रा री	चित्रा ।	भे भो जा जी	उत्तराषाढा	दे दो चा ची	रेवती ।

मञ्चकारोहण

शशितुरगधनिष्ठारेवती पुष्यचित्रा शतभिषगनुराधात्र्युत्तरा स्वातिहस्ताः ।।
बुधगुरुभृगुवारे सौम्यलग्नेर्भकस्य निगदितमिहपूर्वैर्मञ्चकारोहणंतु ।।

टीका—मृगशिर अश्विनी धनिष्ठा रेवती पुष्य चित्रा शतभिषा अनुराधा तीनों उत्तरा स्वाती हस्त इन नक्षत्रोंमें और बुध शुक्र गुरु ये वार और तुला वृश्चिक कुंभ इन लग्नोंमें शिशुको पूर्वदिशाको शिर करके प्रथम मंचकारोहण कराये तो शुभ हो ।

पालनेका मुहूर्त

आन्दोलशयनंपुंसो द्वादशेदिवसेशुभम् ।।
त्रयोदशेतु कन्याया न नक्षत्रविचारणा ।।

टीका––जन्म होने उपरांत पुत्रको बारहवें और कन्याको तेरहवें दिवस पालनेमें शयन कराये, नक्षत्र आदिके विचारकी कुछ आवश्यकता नहीं है ।

बृहस्पति मतानुसार दुग्धपानमुहूर्त

एकत्रिंशद्दिनेचैव पयः शंखेनपाययेत् ।।
अन्नप्राशननक्षत्रदिवसोदयराशिषु ।।

टीका–जन्म होनेके पश्चात् ३१ वें दिन, अन्न प्राशन के लिये जो नक्षत्र आगे कहे जायंगे उनमें शंखमें दूध भरकर बालकको पिलाये ।

ताम्बूलभक्षणम्

सार्द्धमासद्वयेदद्यात्ताम्बूलं प्रथमं शिशोः ।। कर्पूरादिकसंमिश्रं विलासाय हिताय च ।। मूलेचत्वाष्ट्रकरतिष्यहरीन्द्रभेषु पौष्णे तथा मृगशिरोदितवासरेषु।। अर्केन्दुजीवभृगुबोधनवासरेषु ताम्बूलभक्षणविधिर्मुनिभिः प्रदिष्टः।।

टीका––जन्मके उपरांत ढाई मासमें कपूर आदि पदार्थ मिश्रित कर तांबूल खिलावे, मूल चित्रा हस्त पुष्य श्रवण ज्येष्ठा रेवती मृगशिर पुनर्वसु धनिष्ठा इन नक्षत्रों में तथा रवि सोम गुरु बुध इन वारोंमें मुनीश्वरोंने तांबूल भक्षण शुभ कहा है ।

सूर्यावलोकन

हस्तः पुष्य पुनर्वसहरियुगं मैत्रत्रयंरोहिणी रेवत्युत्तरफाल्गुनी मृगयुताषाढोत्तरस्वातिभे ।। मासौतुर्यतृतीयकौशनिकुजौत्यक्त्वा च रिक्तातिथिं सिंहादित्रयकुम्भराशिसहितं निष्कासनंशस्यते।।

टीका––हस्त पुष्य पुनर्वसु श्रवण धनिष्ठा अनुराधा ज्येष्ठा मूल रोहिणी रेवती उत्तराफाल्गुनी मृगशिर उत्तराषाढा स्वाती और चौथा व तीसरा मास शुभ, शनि भौम रिक्ता तिथि वर्जनीय हैं और सिंह कन्या तुला कुंभ ये लग्न उत्तम हैं ऐसे शुभ दिन विचारकर प्रथम बालकको बाहर निकालकर सूर्यावलोकन करवाना उत्तम है ।

कर्णवेध

रोहिण्युत्तरमूलमैत्रमृगभे विष्णुत्रयेर्कत्रये रेवत्यांचपुनर्वसुद्वय युगेकर्णस्यवेधः शुभः।। मीनेस्त्रीधनुमन्मथेषुचघटे वर्षेचयुग्मे तिथौसौम्येचेन्दुगुरौरवौचशयनं त्यक्त्वाचविष्णोर्बुधः ।।

टीका––रोहिणी तीनों उत्तरा मूल अनुराधा मृगशिर श्रवण धनिष्ठा शततारका हस्त चित्रा ये नक्षत्र और युग्मतिथि और युग्मवर्ष तथा चंद्र गुरु रवि ये वार विष्णुशयनको छोड़कर पंडितोंने कर्णवेधके लिये शुभ कहे हैं ।

शिशुको पृथ्वीमें बैठाना

पञ्चमेचतथामासि भूमौतमुपवेशयेत् ।। तत्रसर्वेग्रहाः शस्ता भौमोऽप्यत्रविशेषतः ।। उत्तरात्रितयंसौम्यं पुष्यर्क्षंशक्रदैवतम् ।। प्राजापत्यंचहस्तश्च शतमाश्विनमित्रभम् ।।

टीका—पांचवें मासमें रविवार आदि समस्तवार शुभ दिनमें भौमवार विशेष करके और तीनों उत्तरा मृगशिरपुष्य ज्येष्ठा रोहिणी हस्त अश्विनी अनुराधा ये नक्षत्र शुभ, ऐसे दिवसमें शिशुको भूमि पर बैठाना शुभ कहा है।

अन्नप्राशन

पूर्वार्द्राभरणीभुजङ्गवरुणं त्यक्त्वाकुजार्कौ तथा नन्दापर्वचसप्तमीमपितथा-रिक्तामपिद्वादशीम् ।। षष्ठेमास्यथवान्नभक्षणविधिः स्त्रीणामयुक्पञ्चमे गोकन्याझषमन्मथे बुधबलेपक्षेचयोगेशुभे ।।

टीका—तीनों पूर्वा आर्द्रा भरणी आश्लेषा और भौम शनि ये अशुभ वार नंदा पर्व रिक्ता और सप्तमी द्वादशी इन सबको त्यागकर छठे अथवा आठवें महीनेमें लड़केको और कन्याको पांचवें मासमें अन्नप्रासन शुभ कहा है, वृषमिथुन मकर कन्या इन लग्नोंका बल पाकर शुक्लपक्ष तथाशुभयोगमें बालकको अन्नप्रासन करावे।

चौलकर्म

रेवत्याद्यकरत्रयादितिमृगज्येष्ठासुविष्णुत्रये पुष्ये चोत्तरगेरवौगुरुकवीन्दुज्ञेषु-पक्षेसिते ।। गोस्त्रीमन्मथचापकुम्भमकरे हित्वा च रिक्तातिथिं षष्ठीं पर्वतथाष्टमीमपिसिनीवालीं च चूडाशुभा।। जन्मतस्तु तृतीयेऽब्दे श्रेष्ठमि-च्छन्ति पण्डिताः ।। पञ्चमे सप्तमे वापि जन्मतोमध्यमं भवेत्।।

टीका—रेवती अश्विनी हस्तचित्रा स्वाती पुर्नवसु मृगशिर ज्येष्ठाश्रवण धनिष्ठा शतभिषा पुष्य ये नक्षत्र और उत्तरायण गुरु शुक्र सोम बुधवार और शुक्ल पक्ष मुंडनमें शुभ हैं और वृष कन्या मिथुन धन मकर कुंभ, इन लग्नोंको त्यागकर शेष शुभ जानिये और रिक्ता छठ आठें अमावास्यादिक दुष्ट तिथि वर्जित हैं और जन्म होनेसे तीसरे वर्षमें पंडितोंने श्रेष्ठ और पांचवें सातवें वर्षमें मध्यम कहा है।

विद्यारंभका मुहूर्त

रेवत्यांमृगपञ्चकेहरियुगे पूर्वासुहस्तत्रये मूलेश्वेअभिजिच्च भानुभृगुजे सौम्येधनुर्जीवयोः ।। अब्देपञ्चमकेविहायनिखिलानध्यायषष्ठीयुतान् रिक्ता-सौम्यदिने तथैव विबुधैः प्रोक्तोमुहूर्तः शुभः ।।

टीका—रेवती मृगशिर आर्द्रा पुर्नवसु पुष्य आश्लेषा श्रवणधनिष्ठापूर्वा हस्त चित्रा स्वाती मूल अश्विनी अभिजित् और रवि शुक्र बुध सोम ये वार और जन्मसे पांचवा वर्ष शुभ कहा है और अनध्याय षष्ठी रिक्तापर्व आदि दुष्ट योगादिक तिथि वर्जनीय हैं, उत्तरायण शुक्ल पक्ष और शुभ लग्नोंमें प्रथम विद्याभ्यास कराये।

यज्ञोपवीतका मुहूर्त

पूर्वाषाढहरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रयेरेवतीज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षेसिते ।। गोमीनप्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रेऽर्कजीवेतिथौ पञ्चम्यांदशमीत्रये-व्रतमहश्चैवादिजन्मद्वये ।।

टीका––पूर्वाषाढा श्रवण धनिष्ठाशतभिशा अश्विनी मृगशिरहस्तचित्रा स्वाती रेवती ज्येष्ठापुष्य पूर्वाफाल्गुनी और उदगयन अर्थात् उत्तरायण शुक्ल पक्ष वृष मीन कन्या धन सिंह ये लग्न और शुक्ल रविवार सोम ये वार और पंचमी दशमी आदि तीन दिन अर्थात १० । ११ । १२ । में यज्ञोपवीत करना शुभ है ।

मासादिमुहूर्त

**विप्रंवसन्ते क्षितिपंनिदाघे वैश्यंघनान्ते व्रतिनंविदध्यात्।। माघादि-
शुक्रान्तिकपञ्चमासाः साधारणावा सकलद्विजानाम्**

टीका––ब्राह्मणोंका वसंतमें, क्षत्रियोंका ग्रीष्ममें, वैश्योंका शिशिर ऋतुमें यज्ञोपवीत करावे, ऐसे वर्णोंके अनुसार व्रतबंधमें ऋतु कहा है। माघसे ज्ष्ठे पर्यंत ५ मास समस्त द्विजोंको साधारण कहे हैं ।

वर्षसंख्या

**गर्भाष्टमेष्टमेवाब्दे पञ्चमेसप्तमेपिवा।।
द्विजत्वंप्राप्नुयाद्विप्रो वर्षेत्वेकादशे नृपः।।**

टीका––गर्भसे अथवा जन्मसे आठवें अथवा ५ । ७ वर्षमें ब्राह्मणका और ग्यारहवें में क्षत्रियोंका यज्ञोपवीत करना उचित है ।

गुरुबल

**वर्णाधिपेबलोपेते उपनीतिक्रियाहिता।।
सर्वेषांचगुरौसूर्ये चन्द्रे च बलशालिनि।।**

टीका––वर्णके अधिपति अनुसार वल देखिये और सबोंको गुरु सूर्य चद्रमाका बल चाहिये ।

**त्रयोदश्यादिचत्वारि सप्तम्यादितिथित्रयम्।।
चतुर्थ्येकाकिनीप्रोक्ता अष्टावेवगलग्रहाः ।।**

टीका––त्रयोदशीसे प्रतिपदातक चार तिथि सप्तमी नवमी चतुर्थी ये आठ तिथि गलग्रह वर्णनीय हैं ।

शूद्रादिकोंके संस्कारका मुहूर्त्त

मूलार्द्राश्रवणद्विदैववसुभे पुष्येतथाचाश्विभे रेवत्यामृगरोहिणी दितिकरे मैत्रेतथावारुणे ।। चित्रास्वातिमथोत्तराभृगुसुते भौमे तथा चान्द्रजे शूद्राणांतुबुधैः शुभंहिकथितं संस्कारकर्मोत्तमम् ।।

टीका––मूल आर्द्रा श्रवण विशाखा धनिष्ठा पुष्य अश्विनी रेवती मृगशिर रोहिणी पुनर्वसु हस्त अनुराधा शतभिषा चित्रा स्वाती तीनों उत्तरा ये नक्षत्र और शुक्र भौम बुध ये वार शूद्रादिक संकर अंत्यजातिके संस्कारमें शुभ जानिये ।

विवाहप्रकरण

तत्रादौदैवज्ञपूजनम्।। दैवज्ञंपूजयेदादौ फलताम्बूलपूर्वके।।
निवेदयेत्सुमनसास्वकन्योद्वाहनादिकम्।।

टीका––प्रथम ज्योतिषीकी यथाशक्ति फल तांबूलपूर्वक पूजा करना उसके बाद कन्याका पिता कन्याके विवाहका शुभाशुभ प्रश्न करे ।

विवाहसमये प्रश्नमाह

विषमभांशगतौ शशिभार्गवौ तनुगृहेबलिनौ यदिपश्यतः ।।
रचयतोवरलाभमिमौयदा युगलभांशगतौ युवतिप्रदौ।।

टीका––यदि प्रश्नकालमें चंद्रशुक्र विषम राशिमें हों अथवा अंशमें हों और दोनों बली होकर लग्नको देखते हों तो कन्याको पति प्राप्त जानना और समराशिमें अथवा अंशमें चंद्र शुक्र हों तो वरको स्त्रीप्राप्ति कहना शुभ है ।

प्रष्टुर्विलग्नात्प्रबलः शशांकः शत्रुस्थितो मृत्युगृहस्थितोवा।
यद्यष्टमाब्दात्परतो विवाहात्करोति मृत्युं वरकन्ययोश्च।।

टीका––यदि प्रश्नलग्नसे बलवान् चन्द्रमा षष्ठ अथवा अष्टम स्थानमें बैठा हो तो विवाहसे अष्टम वर्षमें स्त्री पुरुष दोनोंको अरिष्ट जानिये ।

यद्युदयस्थश्चन्द्रस्तस्माद्यदिसप्तमौभवेद्भौमः।।
समाष्टकं स जीवति विवाहकालात्परं पुरुषः।।

टीका––यदि प्रश्नलग्नमें चंद्रमा हो और चंद्रमासे सप्तम स्थानमें मंगल हो तो विवाह से अष्टम वर्षमें पतिको अरिष्ट जानिये ।

स्वनीचगः शत्रुदृष्टः पापः पञ्चमगोयदा।।
मृगपुत्रां करोत्येवं कुलटां वा न संशयः।।

टीका––यदि प्रश्नकालमें पापग्रह अपने नीचस्थानमें हों अथवा शत्रु ग्रह देखते हों अथवा पापग्रह पंचमस्थानमें बैठा हो तो संतानका नाश और स्त्री वेश्या हो ऐसा जानिये ।

भिद्यति यद्युदकुम्भः शयनासनपादुकासुभङ्गोवा
प्रश्नसमयेपि यस्यास्तस्यावैधव्यमादेश्यम्।।

टीका––यदि विवाह प्रश्न कालमें अकस्मात् जलकुंभका भंग हो अथवा निद्रानाश, आसनभंग पादुकाभंग ऐसा जिस कन्याके विवाहप्रश्न समयमें हो तो उसको विधवायोग जानिये ।

अज्येष्ठाकन्यकायत्र ज्येष्ठपुत्रोवरोयदि।।
व्यत्ययोवातयोस्तत्र ज्येष्ठोमासः शुभप्रदः।।

टीका––यदि कन्या ज्येष्ठ न हो और पुरुष ज्येष्ठ हो, ऐसा दोनोंका भेद हो तो ज्येष्ठ मासमें विवाह करना शुभ है ।

वर्षप्रमाणमाह

षडब्दमध्येनोद्वाह्याकन्यावर्षद्वयं ततः।।
सोमोभुंक्तेततस्तद्वद्गन्धर्वश्चतथानलः ।।

टीका--प्रथम ६ वर्षतक कन्याका विवाह नहीं करना, कारण यह है कि प्रथम दो वर्ष चंद्रमा भोग करता है, अनंतर दो वर्ष गंधर्व भोग करते हैं, अनंतर दो वर्ष अग्निदेव भोग करता है, तदनंतर विवाहको शुद्ध जानिये ।

अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षातुरोहिणी।। दशवर्षाभवेत्कन्या द्वादशेवृषलीमता।। गौरीदानान्नागलोकं वैकुण्ठंरोहिणींददत् ।। कन्यादानाद्ब्रह्मलोकं रौरवंतुरजस्वला ।।

टीका--आठ वर्षकी कन्या हो तब उसका नाम गौरी, नववर्षकी कन्या रोहिणी संज्ञा, दश वर्षकी हो तो उसका नाम कन्या, यदि बारहवर्षकी हो तो उसे शूद्री नाम जानना। इसका फल गौरीदानसे नागलोक प्राप्ति रोहिणीदानसे वैकुंठप्राप्ति, कन्यादानसे ब्रह्मलोकप्राप्ति, शूद्रीदानसे घोरनरक प्राप्ति हो ।

विवाहोजन्मतः स्त्रीणां युग्मेब्देपुत्रपौत्रदः ।।
अयुग्मेश्रीप्रदंपुंसां विपरीतेतुमृत्युदः ।।

टीका--स्त्रीका विवाह काल जन्मसे सम वर्षमें करना तो पुत्रपौत्रप्राप्ति और पुरुष का जन्मसे विषम वर्षमें विवाह हो तो लक्ष्मी प्राप्ति इससे विपरीत हो तो मृत्युप्राप्ति जानिये ।

कन्याद्वादशवर्षाणि याप्रदत्तावसेद्गृहे।।
ब्रह्महत्यापितुस्तस्याः साकन्यावरयेत् स्वयम् ।।

टीका--कन्या १२ वर्षकी हो और पिताके घरमें रहे तो पिताको ब्रह्महत्या प्राप्त हो, अनंतर कन्या अपनी इच्छासे पति करे ऐसा आचार्य कहते हैं ।

मंगलविचार

लग्नेव्ययेचपाताले यामित्रेचाष्टमेकुजे ।।
पत्नीहंतिस्वभर्तारं भर्ताभार्याविनाशयेत् ।।

टीका--स्त्रीको और पुरुषको मंगल रहता है उसका प्रकार १।१२।४।७।८ इतने स्थानमें मंगल हों तो स्त्री तो स्त्रीमंगली कहना और मंगलीसे मंगलीको विवाह करना अथवा पुरुषके ग्रह बलवान् हों तो भी करना ।

भौमपरिहार

यामित्रेचयदासौरिर्लग्नेवाहिबुकेऽथवा ।।
नवमेद्वादशेचैव भौमदोषोनविद्यते ।।

टीका--स्त्रीको अथवा पुरुषको ७।१।४।९।१२ इतने स्थानोंमें शनि हों तो मंगलका दोष नहीं जानना ।

ज्येष्ठविचार

द्विज्येष्ठौमध्यमौप्रोक्तावेकज्येष्ठः शुभावहः ।।
ज्येष्ठत्रयंनकुर्वीत विवाहेसर्वसम्मतः ।।

टीका---पुरुष ज्येष्ठ अथवा कन्या ज्येष्ठ हो अथवा ज्येष्ठ मास हो ऐसा कोई ज्येष्ठ में करना मध्यम समझते हैं और एक ज्येष्ठमें करना शुभ है और पुरुष ज्येष्ठ, स्त्री ज्येष्ठ, मास ज्येष्ठ जो तीनों ज्येष्ठ हों तो विवाह नहीं करना चाहिये ।

ज्येष्ठायाः कन्यकायाश्च ज्येष्ठपुत्रस्यवैमिथः ।।
विवाहोनैवकर्त्तव्यो यदिस्यान्निधनंतयोः ।।

टीका---प्रथम गर्भमें जो स्त्री हो उसको ज्येष्ठ कहना, जो पुरुष ज्येष्ठ हो और कन्या भी ज्येष्ठ हो तो विवाह नहीं करना यह दुखदायक होता है ।

दशवर्षव्यतिक्रान्ता कन्याशुद्धिविवर्जिता ।।
तस्यास्तारेन्दुलग्नानां शुद्धौपाणिग्रहोमतः ।।

टीका---दशवर्षके अनंतर कन्याशुद्धिसे रहित होती है तो ताराशुद्धि चंद्रशुद्धि लग्न-शुद्धि देखकर विवाह करना शुभ है ।

कन्यालक्षणमाह

हंसस्वरांमेघवर्णां मधुपिङ्गललोचनाम् ।।
तादृशींवरयेत्कन्यां गृहस्थः सुखमेधते ।।

टीका---हंसके समान मीठे स्वर वाली, मेघ के सदृश वर्णवाली तथा शहदके तुल्य वर्ण अथवा पिङ्गल वर्ण नेत्रों वाली कन्यासे विवाह करे तो गृहस्थ सुख प्राप्त होता है ।

वरलक्षणमाह

जातिविद्यावयःशीलमारोग्यंबहुपक्षता ।।
अर्थित्वंवित्तसंपत्तिरष्टावेतेवरगुणाः ।।

टीका---उत्तम, श्रेष्ठ विद्या, योग्यवय, सुशीलता, स्वस्थशरीर, बहुत से वन्धुबान्धव, स्त्री की चाहना, तथा धन सम्पत्ति इन आठ लक्षणोंसे युक्त वरको कन्या देनी चाहिये ।

वरदोषमाह

दूरस्थानामविद्यानां मोक्षधर्मानुवर्तिनाम् ।।
शूराणांनिर्धनानांच नदेयाकन्यकाबुधैः ।।

टीका---दूर रहनेवाले, मूर्ख, मोक्षधर्म योगाभ्यासादिकमें लीन, योद्धा तथा दरिद्री असमर्थ पुरुष को कन्या नहीं देनी चाहिये, ऐसा पंडितोंने कहा है ।

अस्तोदय

प्रागुद्गतः शिशुरहस्त्रितयं सितः स्यात् पश्चाद्दशाहमिहपञ्च दिनानिवृद्धः ।।
प्राक्पक्षमेवगदितोऽत्र वसिष्ठमुख्यैर्जीवस्तुपक्षमपिवृद्धशिशुर्विवर्ज्यः ।।

टीका---पूर्वमें शुक्रका उदय हो, तो तीन दिन शिशुत्व और अस्त हो, तो १० दिन वृद्धत्व तथा पश्चिममें उदय हो, तो १० दिन शिशुत्व और ५ दिन वृद्धत्व वर्जित हैं । गुरुके उदय अस्तमें १५ दिन वर्जनीय हैं ।

अस्त और उदयका लक्षण

यमशरभुजवासरवज्रिणोदिशिद्विसप्तसितास्तमनंतथा ।।
गगनबाणयमैर्दिशिपश्चिमेनवदिनास्तमनंत भगोर्बुधैः ।।

टीका--शुक्रका उदय पूर्व दिशामें २५२ दिन रहता है और अस्त ७२ दिन रहता है, तथा पश्चिम दिशामें उदय २५० दिन और अस्त ९ दिन रहता है, ऐसा पंडितोंने कहा है। (यह विवेचन स्थूल है, सूक्ष्म गणित द्वारा ज्ञातव्य है)

अस्तमें वर्जनीय कर्म

वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरंप्रतिष्ठाव्रतं, विद्यामन्दिरकर्णवेधनमहादानं गुरोः सेवनम् ।। तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मन्त्रोपदेशं शुभंदूरेणैवजिजीविषुः परिहरेदस्तेगुरौ भार्गवे ।।

टीका--बावड़ी, कूप, तड़ाग अर्थात् तालाब, यज्ञ और यात्रा करना चौल अर्थात् मुण्डन, देवप्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, विद्यारंभ, नूतन गृहप्रवेश, बालकका कर्णवेध, महादान, गुरुसेवा, तीर्थस्नान, विवाह, उत्तम कर्म, मंत्रोपदेश ये कर्म जीनेकी इच्छा रखनेवाला पुरुष गुरु शुक्रके अस्तमें दूरसे ही वर्जित करे।

विवाहे वर्जनीयम्

नाषाढप्रभृतिचतुष्टये विवाहो नोपौषेनचमधुसंज्ञकेविधेयः ।। नैवास्तंगतवति भार्गवेचजीवेवृद्धत्वेनखलुतयोर्नबालभावे ।। गीर्वाणमन्त्रिणिमृगेन्द्रमधिष्ठितेनमासेधिकेत्रिदिनसंस्पृशिनामभेच ।।

टीका--आषाढ आदि लेकर ४ मास और पौष, चैत्र मास और गुरु शुक्रका अस्त और इन दोनोंका वृद्धत्व और बालत्व और सिंहका बृहस्पति अधिक मास तथा क्षयमास ये सब विवाहमें वर्जित हैं।

मूलादिजन्मनक्षत्रका दोष

मूलजाचगुणंहन्ति व्यालजाकुलटाङ्गना ।।
विशाखजा देवरघ्नीज्येष्ठाजाज्येष्ठनाशिका ।।

टीका--मूलनक्षत्रमें कन्याका जन्म हो तो गुणोंका नाश करे, आश्लेषामें व्यभिचारिणी, विशाखामें देवरकी मृत्युकारक और ज्येष्ठामें ज्येष्ठ बंधुको मृत्युदायक होती है।

जन्मनक्षत्रादिवर्ज्य

जन्मर्क्षेजन्मदिवसेजन्ममासे शुभंत्यजेत् ।। ज्येष्ठेमासाद्यगर्भस्य शुभ्रवस्त्रं स्त्रियायथा। अज्येष्ठाकन्यकायत्रज्येष्ठपुत्रोवरोयदि। व्यत्ययोवातयोस्तत्रज्येष्ठोमासः शुभप्रदः ।।

टीका--जन्मके नक्षत्र, दिवस और मासमें बालकोंका शुभ कर्म वर्जित है तथा प्रथम गर्भोत्पन्न शिशुका शुभकर्म ज्येष्ठमासमें भी वर्जित है, जैसे स्त्रियोंके श्वेतवस्त्र धारण करना। यदि कन्या कनिष्ठ हो तथा वर ज्येष्ठ हो अथवा इससे विपरीत हो तो ज्येष्ठ मासमें विवाह शुभ है।

अथ वर्षसारणीयम् ॥

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	३	[illegible]
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	८	२१	३७	५२	८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१३	४६	१८	४९	२१	५२	२४
ऽक्ष	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	१	३०	०	३०	०	३०	०
तिथि	११	२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२७	१	१२	२३	३	१५	२७
नक्षत्र	८	१८	१	११	२१	४	१४	२४	७	२०	३	१०	६०	४	[illegible]	[illegible]
वर्ष	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
वार	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	४	[illegible]
घटी	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४६	५९	१४	३०	४५	१६	[illegible]
पल	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	[illegible]	४८
ऽक्ष	३०	०	३	०	३०	०	३०	०	३०	०	३	०	३०	०	३०	०
तिथि	८	१९	०	११	२२	३	१४	२५	६	१७	२८	९	२०	१	१२	२४
नक्षत्र	६	१६	२३	९	२९	२	१२	२२	५	१५	२५	८	१८	११	[illegible]	[illegible]
वर्ष	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	[illegible]
घटी	३२	४७	३	१९	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५
पल	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३७	३	३४	६	३७	९	४०	१२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	३	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	५	१६	२७	८	१९	०	११	२२	३	१५	२५	६	१७	२९	१०	२१
लग्न	४	१४	२४	७	१७	०	१०	२०	३	१३	२३	०	१६	२६	९	९
अंश	६	९	३	१३	६	९	०	४	७	१०	१	४	७	१०	१	४
वर्ष	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४
वार	५	६	१	२	४	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	[illegible]
घटी	२४	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	५१	४७	२	१८	[illegible]
पल	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	३७	५८	३०	१	३३	४	[illegible]
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	२	१३	२४	५	१६	२७	८	२९	१	११	२२	४	१५	३६	७	१८
लग्न	२	१२	२२	५	१५	२५	२	१८	०	११	२१	४	४	१४	७	१७
अंश	७	११	२	५	०	११	१२	५	८	११	२	६	९	०	०	[illegible]
वर्ष	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	७	३९	१०	४२	५३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	५
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०
नक्षत्र	३९	१०	३१	२	१३	२४	५	१६	२७	९	२०	१	१२	२३	४	१५
लग्न	०	१०	२०	३	१३	२३	६	१६	२६	९	१९	२	१२	२२	५	१५
अंश	९	२	३	६	१०	१	४	५	१०	०	४	७	१०	१	५	८

वर्षप्रमाण

जन्मतोगर्भधानाद्वा पञ्चमाब्दात्परंशुभम् ।।
कुमारीवरणंदानं मेखलाबन्धनंतथा ।।

टीका––जन्म होनेसे अथवा गर्भ धारणसे पंचम वर्ष उपरांत कन्याका वरना अथवा दान और व्रतबंध उत्तम जानिये ।

गुरुचन्द्रबल

स्त्रीणांगुरुबलंश्रेष्ठं पुरुषाणांरवेर्बलम् ।।
तयोश्चन्द्रबलंश्रेष्ठमिति गर्गेणभाषितम् ।।

टीका––स्त्रियोंको गुरुका बल और पुरुषको रविका और दोनोंको चंद्रमाका बल गर्गमुनिने श्रेष्ठ कहा है ।

गुरुका बल

नष्टात्मजाधनवती विधवाकुशीलापुत्रान्विता हतधवासुभगा विपुत्रा ।।
स्वामिप्रियाविगतपुत्रधवाधनाढ्यावंध्याभवेत् सुरगुरौक्रमशोभिजन्म ।।

टीका––यदि कन्याके जन्मस्थानमें बृहस्पति हो तो विवाहके अनंतर बालकोंकी मृत्यु हो, द्वितीयमें धनवती, तृतीयमें विधवा, चतुर्थमें व्यभिचारिणी, पंचममें पुत्रवती, षष्ठमें पतिनाश, सप्तममें सौभाग्यवती, अष्टममें पुत्रहीन, नवममें पतिप्रिया, दशममें पति तथा बालकनाश, एकादशमें धनाढ्य और द्वादशमें बांझ ऐसे क्रमसे फल जानिये ।

गुरु अनुकूल करनेका विचार

जन्मत्रिदशमारिस्थः पूजयाशुभदोगुरुः ।।
विवाहेच चतुर्थाष्टद्वादशस्थोमृतिप्रदः ।।

टीका–जन्मस्थ तृतीय षष्ठ और दशमस्थानी गुरु नेष्ट है परंतु पूजा करनेसे शुभ फलदायक होता है और चौथा अष्टम द्वादशस्थ मृत्यु करता है यह विचार विवाहमें देखना उचित है ।

अष्टमैत्रीज्ञानम्

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिर्ग्रहगणौ तथा ।।
भकूटंनाडिमैत्रीचइत्येताश्चात्रमैत्रिकाः ।।

टीका––वर्ण वश्य तारा योनि ग्रहगणभकूट नाडी और मैत्री आदि आठोंको शुद्ध विवाहमें विचार लेना योग्य है ।

वर्णादिकोंका ज्ञान

मीनालिकर्कटाविप्रा नृपाः सिंहा जघन्विनः । कन्यानक्रवृषा वश्याः शूद्रायुग्मतुलाघटाः ।। वश्योंका ज्ञान ।। द्वंद्वचापघटकन्यकातुलामानवा अज-वृषौचतुष्पदौ ।। कर्कमीनमकराजलोद्भवाः केसरीवनचरालिकीटिकाः ।।

वश्यावश्यज्ञानमाह

हित्वामृगेन्द्रनरराशिगते च वश्याः सर्वे तथैषां जलजाश्चभक्ष्याः ।।
सर्वेपिसिंहस्यवशेविनालिज्ञेयं नराणांव्यवहारतोन्यत् ।।

इन तीनों श्लोकोंकी टीका चक्रसे यथाक्रमसे समझ लेना ।

ताराबलम्

कन्यर्क्षाद्वरभंयावत्कन्याभंवरभादपि ॥
गणयेन्नवभिः शेषेत्रिश्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥

टीका––वधूनक्षत्रसे वरनक्षत्रतक जो नक्षत्र संख्यामें हो उसमें नौके अंकका भाग देवे यदि शेषतीन आवे तो अथवा पांच सात रहें तो अशुभ और सब शुभ होते हैं । ऐसे ही वरनक्षत्रसे वधूनक्षत्रतक गिनकरपूर्व लिखे अनुसार जानिये ।

योनि

अश्वोगजश्छागसर्पौसर्पश्वानबिडालकाः ॥ मेषोबिडालकश्चैवमूषकोमूषकश्चगौः ॥ महिषीचततोव्याघ्रोमहिषोव्याघ्रकं क्रमात् ॥ मृगोमृगस्तथाश्वाचकपिर्नकुलएवच ॥ नकुलावानरसिंहस्तुरगामृगराट्पशुः ॥ अधोरेणक्रमेणैव अश्विन्यादिभयोनयः ॥ वैरयोनि ॥ गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषौश्वैणंच बभ्रूरगंवैरंवानरमेषयोश्च सुमहत्तद्वद्बिडालोन्दुरुः ॥ लोकानां व्यवहारतोन्यदपितज्ज्ञात्वाप्रयत्नादिदं दम्पत्योनृपभृत्ययोरपि सदावर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः ॥ राश्यधिपः ॥ मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रोवृषतुलाधिपः ॥ कन्यामिथुनयो–सौम्योगुरुस्तुधनमीनयोः ॥ शनिर्नक्रस्यकुम्भस्यकर्कस्यैवतुचन्द्रमाः सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणके क्रमात् ॥ गणः ॥ अनुराधामृगोश्विस्तु श्रवणोदितिपुष्यके ॥ स्वाती हस्तो रेवती च नवदेवगणाः स्मृताः॥ पूर्वात्रयंरोहिणी च उत्तरात्रयमेवच ॥ आर्द्रा तुभरणीचैवनवैते मानुषागणाः ॥ आश्लेषाशतभिष्मूलविशाखा कृत्तिकामघा ॥ चित्राज्येष्ठाधनिष्ठाचनवैतेराक्षसागणाः ॥

अंत्यनाडी

कृत्तिकारोहिणी स्वाती मघाश्लेषाचरेवती ॥
श्रवणश्चोत्तराषाढा विशाखा त्वंत्यनाडिका ॥

मध्यनाडी

पूर्वाफाल्गुनिका चित्रा धनिष्ठा भरणीमृगाः ॥
पूर्वाषाढानुराधाच पुष्योहिर्बुध्न्यमेवच ॥

आद्यनाडी

पूर्वाभाद्रपदामूलं ज्येष्ठाहस्तः पुनर्वसुः ॥ अश्विन्यार्द्राशतभिषाचोत्तरात्वेकनाडिका ॥ अश्विनीभरणी कृत्तिकापादं मेषः ॥ कृत्तिकात्रयोरोहिणी मृगशिरार्द्धंवृषभः ॥ मृगशिरार्द्धमार्द्रापुनर्वसुत्रयंमिथुनः पुनर्वसोः पादं पुष्य आश्लेषान्तं कर्काटकः ॥ मघापूर्वा उत्तरापादं सिंहः ॥ उत्तरात्रयं हस्त चित्रार्द्धं कन्या॥ चित्रार्द्धंस्वातीविशाखात्रयस्तुला ॥ विशाखापाद अनुराधाज्येष्ठान्तं वृश्चिकः ॥ मूलपूर्वाषाढा उत्तराषाढापादं धनुः ॥ उत्तराषाढात्रयं श्रवणधनिष्ठार्धं मकरः ॥

धनिष्ठार्द्धं शततारका पूर्वाभाद्रपदात्रयः कुम्भः । पूर्वाभाद्रपदापाद उत्तराभाद्रपदा रेवत्यन्तं मीनः ।।

टीका—सवा दो नक्षत्र एक राशि भोगते हैं इस प्रमाणसे द्वादशराशिमें भोगका क्रम और अंत्यमध्य आदि नाडीका क्रम चक्रसे प्रतीत होगा ।

राशिअनुसार घटितमान

राशि	वर्ण	वश्य	स्वामी
मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	भौम
वृषभ	वैश्य	चतुष्पद	शुक्र
मिथुन	शूद्र	मानव	बुध
कर्क	विप्र	जलचर	चंद्र
सिंह	क्षत्रिय	वनचर	रवि
कन्या	वैश्य	मानव	बुध
तुला	शूद्र	मानव	शुक्र
वृश्चिक	विप्र	कीटक	भौम
धन	क्षत्रिय	मानव	गुरु
मकर	वैश्य	जलचर	शनि
कुंभ	शूद्र	मानव	शनि
मीन	ब्राह्मण	जलचर	गुरु

नक्षत्रअनुसार घटितमान

नक्षत्र	योनि	वैरयोनि	गणः	नाडी
अश्विनी	अश्व	भैंस	देव	आद्य
भरणी	गज	सिंह	मनुष्य	मध्य
कृत्तिका	मेंढा	वानर	राक्षस	अंत्य
रोहिणी	सर्प	नौला	मनुष्य	अंत्य
मृगशिर	सर्प	नौला	देव	मध्य
आर्द्रा	श्वान	हरिण	मनुष्य	आद्य
पुनर्वसु	मार्जार	मूसा	देव	आद्य
पुष्य	मेंढा	वानर	देव	मध्य
आश्लेषा	मार्जार	मूसा	राक्षस	अंत्य
मघा	मूसा	मार्जार	राक्षस	अंत्य
पूर्वा	मूसा	मार्जार	मनुष्य	मध्य
उत्तरा	गौ	व्याघ्र	मनुष्य	आद्य
हस्त	भैंस	अश्व	देव	आद्य
चित्रा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	मध्य
स्वाती	भैंस	अश्व	देव	अंत्य
विशाखा	व्याघ्र	गाय	राक्षस	अंत्य
अनुराधा	हरण	श्वान	देव	मध्य
ज्येष्ठा	मृग	श्वान	राक्षस	आद्य
मूल	श्वान	हरिण	राक्षस	आद्य
पूर्वाषाढा	वानर	मेंढा	मनुष्य	मध्य
उत्तराषा	नकुल	सर्प	मनुष्य	अंत्य
अभिजित्	नकुल	सर्प	मनुष्य	अंत्य
श्रवण	वानर	मेंढा	देव	अंत्य
धनिष्ठा	सिंह	गज	राक्षस	मध्य
शततारका	अश्व	भैंस	राक्षस	आद्य
पूर्वाभाद्रप	सिंह	गज	मनुष्य	आद्य
उत्त.भाद्र	गाय	व्याघ्र	मनुष्य	मध्य
रेवती	गज	सिंह	देव	अंत्य

नवपंचक

मीनालिभ्यांयुते कीटे कुम्भे मिथुनसंयुते ।।
मकरेकन्यकायुक्ते नकुर्य्यान्नवपञ्चके ।।

टीका--मीनसे नवके अंतर पर वृश्चिक राशि है, और वृश्चिकस मीन पांचवीं इसी प्रकार कर्क मीनका और वृश्चिकका कुम्भ मिथुन मकर कन्या इन दो राशियोंको नवपंचक होते हैं वे वर्जित हैं ।

मृत्युषडष्टक

मेषकन्यकयोरेव तुलामीनकयोस्तथा ।। युग्माल्योस्तुबुधैर्ज्ञेयो मृत्युर्वैन-क्रसिंहयोः ।। कुम्भकर्कटयोश्चैव वृषकोदण्डयोस्तथा ।।

टीका--मेष और कन्या ये परस्पर छठे और आठवें हों इसी रीतिसे तुला और मीन मिथुन, वृश्चिक, मकर, सिंह, कुंभ, कर्क, वृषभ धन इन दो दो राशियोंका मृत्युषडष्टक कहलाता है सो वर्जित है ।

प्रीतिषडष्टक

सिंहोमीनयुतश्चैव तुलावृषयुतातथा ।। धनुः कर्कयुतश्चैव कुम्भ कन्य-कयोस्तथा ।। नक्रस्यमिथुनेप्रीतिरजाल्योः प्रीतिरुत्तमा ।।

टीका--सिंह मीन, तुला वृष, कुम्भ कन्या, मकर मिथुन, मेष वृश्चिक, धनु कर्क इन दो दो राशियोंका प्रीतिषडष्टक होता है शुभ है ।

द्विर्द्वादश

मेषझषौवृषमिथुनौ कर्कहरीतुलकन्यके ।।
अलिधनुषीमकरकुम्भावेतौ द्विर्द्वादशेराशी ।।

टीका--मेष मीन, वृष मिथुन, कर्क सिंह, तुला कन्या, वृश्चिक धनु, मकर कुंभ ये दो दो राशि द्विर्द्वादश हैं सो वर्जनीय हैं ।

चतुर्थदशमतृतीयएकादशउभयसप्तम

चतुर्थदशमश्चैव तृतीयैकादशः शुभः ।।
उभयः सप्तमः साम्यमेकर्क्षंशुभमुच्यते ।।

टीका--वधू और वरकी परस्पर राशि चतुर्थ दशम अथवा तृतीय एकादश हो तो शुभ और दोनों सप्तम सम हों अथवा एक नक्षत्र हो तो शुभ जानिये ।

वश्यावश्ययोजना

सिंहंविनानृणांसर्ववश्या भक्ष्याश्चतोयजाः ।।
सिंहस्यवश्यास्त्यक्त्वालिं सर्वेणव्यवहारिकः ।।

टीका--सिंहके विना समस्त चतुष्पद मनुष्योंके वशमें हैं और जलजंतु भक्ष्य हैं और वृश्चिकको छोडकर सिंहके सब वश होते हैं शेष राशियोंमें भक्ष्याभक्ष्यको वर्जित कर वश्या-वश्य व्यवहारसे जानिये ।

ग्रहोंका शत्रुत्वसमत्वमित्रत्व

शत्रूमन्दसितौ समश्चशशिजो मित्राणिशेषारवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च

सुहृदौशेषाः समाः शीतगोः ।। जीवेन्दूष्णकराः कुजस्यसुहृदोज्ञोरिः सितार्कौ समौमित्रेसूर्यसितौ बुधस्यहिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ।। गुरोः सौम्यासितावरी रविसुतोमध्योपरेत्वन्यथासौम्यार्कौसुहृदौ समौकुजगुरूशुक्रस्यशेषावरी ।। शुक्रज्ञौसुहृदौसमः सुरगुरुः सौरस्यत्वन्येरवेर्ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेमीमया-कीर्तिता ।।

नाम	रवि	चन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शत्रु	शनि शुक्र	०	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	सूर्य चन्द्र	रवि चंद्र भौम
सम	बुध	शुक्र गुरु भौम श.	शुक्र शनि	भौम गुरु शनि	शनि	गुरु मंगल	गुरु
मित्र	चंद्र गुरु मंगल	रवि बुध	चंद्र गुरु सूर्य	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शुक्र	बुध शक्र

मार्तंडमतसे गुणोंका मिलाना

वर्णकेगुण

दोनोंका एक वर्ण अथवा वरकाउच हो तो शुभ

		वरोंकावर्ण			
		ब्रा.	क्ष०	वैश्य	शूद्र
कन्याकावर्ण	ब्राह्मण	१	०	०	०
	क्षत्रिय	१	१	०	०
	वैश्य	१	१	१	०
	शूद्र	१	१	१	१

वश्यकागुण

वैरभक्ष्येगुणाभावोद्वयोः सौम्येगुण द्वयं ॥ वश्यवैरेगुणश्चैको वशभक्ष्ये गुणार्द्धकम् ॥ १ ॥

टी० शत्रु और भक्ष्यमें गुण शून्य० एकजातिमें गुण २ वश्य और वैरमेंगुण १ वश्य और भक्ष्यमें गुणअर्द्ध ॥ १ ॥

चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

तारोके गुण–एकतोलभ्यते ताराशुभा चैवाशुभान्यतः ।। तदा सार्द्धो गुणश्चैकस्ताराशुद्धोमिथस्त्रयः।। उभयोर्नशुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत्।।

टीका––एककी शुभ और एककी अशुभ हो तो गुण डेढ १।। और दोनोंकी एक तारा अथवा शुभतारा हो तो गुण ३ और यदि दोनोंकी अशुभ हो तो गुण शून्य जानिये ।

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनिके गुण– महावैरेच वैरेच स्वस्वभावेयथाक्रमात् । मैत्र्ये चैवातिमैत्र्येच खेन्दुद्वित्रिचतुर्गुणाः ।।

टीका–महावैरका गुण शून्य० दोनोंकी शत्रुताका गुण १ स्वभावके गुण २ दोंनोंकी मित्रताकेगुण ३ अति मित्रताके गुण ४ जानिये

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गौ.	म.	व्या	ह.	वा.	न.	सिं
अश्वि	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गाय	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिषी	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	२	२	२	२	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	०	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	२	१	१	१	३	२	२	२	२	४

ग्रहोंके गुण

दोनोंका स्वामी १ और मैत्रीके गुण ५ सम शत्रुत्व गुण ०॥० सम शत्रुत्व मित्रत्व गुण ४ शत्रुत्व मित्रत्व गुण १ समत्व गुण २ शत्रुत्व गुण ॥०॥ इस प्रकार जानिये ॥

गणोंके गुण

दोनोंका गण १ हो उसके गुण ६ वर देवगण और वधू मनुष्यगण उसके गुण ६ इससे विपरीत हो तो ५ वर राक्षसगण और वधू देवगण उसका गुण १ अन्यथा शून्य जानिये ।

वधूकेगुण

वरके गुण	र	चं	मं	बु	गु	शु	श
र	५	५	५	३	५	०	०
चं	५	५	४	१	४	॥	॥
मं	५	४	५	॥	५	३	॥
बु	३	१	॥	५	॥	५	४
गु	५	४	५	॥	५	॥	३
शु	५	॥	३	५	॥	५	५
श	०	॥	॥	४	३	५	५

वधूकेगण

वरके गण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	१	०	६

नाडीकेगुण ८

भिन्ननाडीकेगुण८एकनाडीकेगुण.

वधूकी नाडी

वरके नाडी	आदि	मध्य	अंत्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

सत्कूटके गुण

टीका--राशि एक भिन्नचरण वा भिन्न नक्षत्र इनके गुण ७ तृतीय एकादश इनके भिन्न राशी नक्षत्र एक इनके गुण ५ प्रीति षडष्टक अथवा द्विर्द्वादश वा नव पंचम इनमें वर दूरत्व योनिशत्रुता होनेपर भी भकूटके गुण ६ होते हैं ।

असत्कूटके लक्षण

टीका--वरयोनि मैत्र व स्त्रीदूरत्व हो तो षडष्टक द्विर्द्वादश नवपंचमादि दुष्ट कूटोंके गुण ४ जानिये ।

योनि मैत्र व स्त्री दूरत्व इनमेंसे एक हो तो दुष्टकूट एक गुण जानिये और एक नक्षत्र वा एकचरण ॥

भकूटगुणा:

	मेष	वृष	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	७	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

टीका—इसप्रकार गुणोंका मिलाना १८ गुण अधिक शुभ, शून्य अशुभ ।

वर्णका फल

या स्याद्वर्णाधिकाकन्या भर्ता तस्या न जीवति ।।
यदि जीवति भर्त्ता तु ज्येष्ठपुत्रोविनश्यति ।।

टीका—कन्याका वर्ण वरसेश्रेष्ठ हो तो उसका पति अथवा ज्येष्ठ पुत्रका नाश हो ।

वैरियोनिका फल

टीका—जैसे अश्व और भैंसकी वैरयोनि है, इसी प्रकार वधू और वरकी वैरयोनि विचारनी चाहिये और राजा सेवक इत्यादि भी विचारिये इसमें शुभकी इच्छा वर्जित है ।

गणोंके फल

स्वगणेचोत्क्रमाप्रीतिर्मध्यमानरदेवयोः ।।
कलहो देवदैत्यानां मृत्युर्मानवरक्षसाम् ।।

टीका---दोनोंका एक गण हो तो उत्तम प्रीति, मनुष्य और देवमें मध्यम, देव दैत्यमें कलह, मनुष्य राक्षस गण मृत्यु देता है ।

कूटफल

षडष्टकेऽपमृत्युः पञ्चमनवमेऽनपत्यता ज्ञेया ।।
द्विर्द्वादशे निधनता शेषेषु मध्यमताज्ञेया ।।

टीका---दोनोंका षडष्टक मृत्युकारक और नवपंचम अनपत्यकारक और द्विर्द्वादश निर्धनताकारक शेष मध्यम जानिये ।

नाडीफल

अग्रनाडीव्यधेद्भर्तामध्यनाडी व्यधेद्द्वयम् ।।
पृष्ठनाडीव्यधेत्कन्या म्रियते नात्रसंशयः ।।

टीका---दोनोंकी अग्रनाडी हो तो भर्त्ताको बुरा, मध्यनाडी दोनोंको अशुभ और अंत्यनाडी कन्याको मृत्युदायक होती है ।

मध्यनाडी

जठरे निर्द्धनत्वं च गर्भमरणमेवच ।।
पृष्ठेदौर्भाग्यमाप्नोति तस्मात्तांपरिवर्जयेत् ।।

टीका---दोनोंकी मध्यनाडी निर्धनताका कारण औ[illegible]ाश और अंत्यनाडी दुर्भाग्य-कारक जाननी चाहिये ।

ज्योतिःप्रकाशे पार्श्वनाडी

निधनं मध्यनाड्यां तु दम्पत्योर्नैव पार्श्वयोः ।।
करग्रहेपृष्ठनाड्यौ न निंद्ये इति तद्वचः ।।

टीका---दोनोंकी मध्यनाडी मृत्युप्रद वैसेही पार्श्वनाडी, परंतु विवाहमें पार्श्वनाडी निंदित नहीं, अन्य मतमें क्षत्रियादिकोंको कही है ।

असत्कूटविचार

स्त्री नक्षत्रसे वर नक्षत्र निकट हो तो अशुभ और वरनक्षत्रसे स्त्रीनक्षत्र दूर हो तो शुभ, यदि नक्षत्र एक अथवा स्वामी एक हो तो शुभ जानिये ।

राजमार्तण्ड मतसे दुष्टकूटोंका दान

षडष्टकेगोमिथुनंप्रदद्यात्कांस्यंसरूप्यंनवपञ्चमे च ।।
नाडयांसुधेन्वन्नसुवर्णवस्त्रंद्विर्द्वादशेब्राह्मणतर्पणं च ।।

टीका—अति आवश्यक विवाहमें वधू और वरके दुष्ट कूटादिकोंके दान षडष्टक में दो गौ, नव पंचममें रूपासहित कांसेका पात्र, एक नाडीमें नौ और द्विर्द्वाशमें अन्न सुवर्ण वस्त्र तथा ब्राह्मणोंका तर्पण इत्यादि करानेसे दुष्ट कूटादिक दोष दूर होते हैं ।

फक्किका—यस्यवर्णस्ययोनिज्ञानं नोक्तंतस्यजात-
कावलोकनप्रकारो वास्तुप्रकरणे उक्तः ।।

टीका—जिस वर्णकी योनिका जानना उक्त नहीं है उसके जातक देखनेका प्रकार वास्तुप्रकरणमें कहा है ।

विवाहके उक्तनक्षत्र

मूलमैत्रकरस्वातीमघापौष्णध्रुवेन्दवैः ।।
एतैर्निर्दोषभेः स्त्रीणां विवाहः शुभदः स्मृतः ।।

टीका—मूल अनुराधा हस्त स्वाती मघा रेवती रोहिणी तीनों उत्तरा मृगशिर य नक्षत्र स्त्रियोंके विवाहमें निर्दोष और शुभ हैं ।

एकविंशतिमहादोष

पञ्चांगशुद्धिरहितोदोषस्त्वाद्यः प्रकीर्त्तितः ।। उदयास्तशुद्धिरहितोद्वितीयः सूर्यसंक्रमः ।। तृतीयः पापषड्वर्गोभृगुः षष्ठः कुजोष्टमः ।। गण्डान्तंकर्तरीरिःफषडष्टेन्दुश्चसंग्रहः ।। दम्पत्योरष्टमं लग्नंराशौविषघटीतथा ।। दुर्मुहूर्तोवारदोषः खार्जूरीकंसमांघ्रिगम् ।। ग्रहणोत्पातभंक्रूरविद्धर्क्षक्रूरसयुंतम् ।। कुनवांशो महापातो वैधृतिश्चैकविंशतिः ।।

टीका—प्रथमपंचांग शुद्धिरहित दोष १ उदयास्तशुद्धिरहित २ संक्रांति दिवस ३ पापग्रहका वर्ग ४ लग्नसे छठा शुक्र ५ लग्नसे अष्टम मंगल ६ लग्नसे ६ । ८ । १२ चंद्र ७ त्रिविध गंडांत समय कर्त्तरी ९ लग्नमें चंद्र और पापग्रह १० वधू वरकी राशिसे अष्टम लग्न वर्जनीय ११ विषघटिका १२ दुष्ट मुहूर्त १३ यामार्द्ध आदि १४ लत्ता १५ ग्रहण नक्षत्र १६ उत्पात नक्षत्र १७ पापग्रहोंद्वारा विद्धनक्षत्र १८ पापग्रहयुक्त १९ पापांश २० संक्रांति साम्य २१ ।

		रा	मे	मे	मे	वृ	वृ	वृ	मि	मि	मि	क	क	क	सिं	सिं	सिं	क	क
		भा	१	१	।	।।।	१	॥	॥	१	।।।	।	१	१	१	१	[illegible]	।।।	१
राशि	भा	नक्ष.	अ	भ	कृ	कृ	रो	मृ	मृ	आ	पुन	पुन	पुष्य	आ	म	पू	उ	उ	ह
मेष	१	अ	३६	३३	३२	२४	२१	३२	२७	२८	१९	२३॥	३१॥	२८	२७॥	२१॥	३२	११	१२
मेष	१	भ	३४	३६	३४	३१	२२॥	१४॥	१९	३६	२७	३१॥	३३॥	२५॥	३२॥	२४॥	३२॥	२१॥	२०
मेष	।	कृ	३२॥	३२	३६	३३	१०	१६॥	२०	२२	२१	२५	२२॥	२३॥	२३	२६॥	२६॥	१५॥	१५॥
वृषभ	।।।	कृ	१८॥	१८॥	३६	३६	३४	३२॥	२५॥	२५॥	२५॥	२३	२४	२०	१८	२१॥	३१॥	२८	२८
वृषभ	१	रो	२३॥	२४॥	१३	१४	३६	३४॥	३५॥	३२	२९	२५॥	२८	१२	१०	२४	२७॥	३४	३४
वृषभ	॥	मृ	२४	११	११॥	३२॥	३६	३६	३५	३३	२९	२६	२०	२२	१८	२५	२५	३१	३४
मिथुन	॥	मृ	२८	२९	२३॥	२७॥	३५	३६	३५	३४	३१	१०॥	१३॥	१४॥	२२॥	१८	२९॥	३१॥	३२॥
मिथुन	१	आ	२०	१८	२३	३३॥	३२॥	३४	३३	३४	३४	२३	२३॥	१५॥	२३॥	१९	२१	२४	२४
मिथुन	।।।	पुन	३०	२७	२३	२७॥	३०॥	३१॥	३०॥	३४	३४	३४	२३	१६॥	२१॥	१५॥	२०॥	२३	२४॥
कर्क	।	पुन	२३॥	२९॥	२५॥	२२	२५	२६	३०॥	१६	३३	३४	३४	३२॥	२२	२६	२२	१८॥	१८॥
कर्क	१	पुष्य	३०॥	२४	२७	२४	२०	१९	१३॥	२४	२३	३४	३६	३४	२५	३१	२०	१६॥	२६॥
कर्क	१	आ	२६	२६	२२॥	१३	१२	२०	३४॥	१५॥	१५॥	३२	३४	३४	२०॥	२१	१४	२१॥	[illegible]
सिंह	१	म	२२	२८॥	३१	१७	१०	१८	२७॥	२२॥	२०॥	२२	२५	२२॥	३६	३६	३२	२८॥	१५॥
सिंह	१	पू	२६	२४॥	२२॥	२०	२४	१६	१९॥	२८	२६॥	२१	३३	१९	३६	३६	३४	३०	२१॥
सिंह	।	उ	१७	३२	३२	२०	२६	२५	२८	२०॥	२०॥	२३॥	३१	३१	३२	३४	३६	३३	१५
कन्या	।।।	उ	१३	२२	१६	३४	३४	३२॥	३१॥	२३॥	२३॥	२०	२८	२२॥	२३	३१	३४	३५	३५
कन्या	१	ह	१३	२०	२७॥	२८	३३	३४	३३	२२॥	२३॥	२०॥	२८॥	२३॥	२४॥	२८॥	२०	३५	३६
कन्य.	॥	चि	१४	७	२०	३१	२८	२०	१९	२६	१४॥	२१॥	१३॥	२७॥	२९॥	२५॥	१४॥	३०॥	३३
तुला	॥	चि	२३॥	१६	१९॥	२४॥	२१	१३	२०	२७	३५॥	२२	१३	३१	२५	११॥	१७॥	१०॥	३४
तुला	१	स्वा	३०॥	१९॥	१७॥	१२॥	१५॥	२७	३४	३३	३४॥	२२॥	२८	१५	१२॥	२४॥	२५॥	२६॥	३४
तुला	।।।	वि	२२॥	२४॥	२१॥	१६॥	११॥	९॥	३५॥	३०॥	२१	२३॥	२२॥	२९॥	१७॥	१९॥	१७॥	१८॥	२५॥
वृश्चिक	।	वि	१७॥	२५॥	१५॥	२०	१५	२३	१३	१३॥	१३॥	२०	२०	११॥	११॥	२३	११॥	१८॥	१९
वृश्चिक	१	अ	२४॥	१९॥	११॥	२४॥	२८॥	२१॥	१८	१६	२०॥	१७	११	२१	२४	२०	२८	२५	२०
वृश्चिक	१	ज्ये	१२	१९॥	२४॥	२१॥	२३॥	१३॥	१३	३	५	११॥	२१	२६	२३	२०॥	१५॥	१२	१२
धन	१	मू.	२८	२८	३३	२०	१४	१४	२१	१३	१३	१०॥	१९॥	२६॥	३२॥	२६॥	१७	१६॥	१३
धन	१	पू.	३४	२६	३४॥	१५	२०	१२	१९	२७	२७	२४॥	१६॥	२८॥	३२॥	३४॥	३२	३२॥	२०
धन	।	उ	३२	३३	३४	१६	११॥	१८	२४	२७	२७	२४॥	२४॥	२४॥	१०॥	२३	३२॥	१२	१८
मकर	।।।	उ	२८	२८॥	१५॥	२६	१३	२९॥	२१॥	१३॥	२३॥	२८	२८	१४	१६	२०	२०	२७	२७
मकर	१	श्र	२८	२७	२५	२१	२१	३४	२५	२२॥	२३॥	२८	२८	१५	१३	१८	१९॥	२६	२७
मकर	॥	ध	२१	१२	२६	३१	२८	२०	११	१८	१६॥	२०	१२	२६	२६	१५	१२	१०॥	२०
कुंभ	॥	ध	३१	१२	२६	३१॥	२८	२०	१२	१९॥	१३॥	१४	१६	२०	२५	११॥	१८॥	१४॥	२९
कुंभ	१	श	१६	२२	२८	२२॥	२६॥	२८	२०	१२	१२	८॥	१५	२१[illegible]	२५॥	१९॥	११॥	७॥	१०॥
कुंभ	।।।	पू	१९	२६	२०	३४	३२॥	३२॥	२४॥	१७	१७	१३॥	२१॥	१४	१९॥	२१॥	२६॥	१२॥	१५
मीन	।	पू	२१॥	२९॥	२३॥	२३॥	२७	२७	२७	२७	१८	१७	२६	७॥	३०	२३	१४	१८॥	१८
मीन	१	उ	३१॥	२३॥	३१॥	३१॥	२७	११	११	२७	२८	२६	११	२०	२०	२५॥	२५॥	१९	२८
मीन	१	रे	३२	३०	१८॥	१८॥	१८	२७	२७	२६	२६॥	१४॥	१३	१३	१०॥	२२	२२	२६	०

कृ	तु	तु	तु	वृ	वृ	वृ	ध	ध	ध	म	म	म	कुं	कुं	कुं	मी	मी	मी	०
॥	॥	१	॥।	।	१	१	१	१	।	॥।	१	॥	॥	१	॥।	।	१	१	०
चि	चि	स्वा	वि	वि	अ	ज्ये	मू	पू	उ	उ	श्र	ध	ध	श	पू	पू	उ	रे	०
२४	२२॥	२२	२३॥	१९॥	२४	१५	२१	३२	३१	३६	२७	२१	२१	१६	१०	२२	३१	३४	१
५	१३॥	१९॥	२२॥	१८॥	३५॥	१९॥	३४	२६	३४	२८॥	२७॥	११	११	२७	२५	३०॥	२४	३२	२
१९॥	२७॥	१५॥	१९॥	१६॥	१८	२५॥	३३	३८॥	२०	१४॥	२४	२५	२६	२७	२०	२५॥	२६॥	१०॥	३
२८	२०	७॥	१२॥	२०॥	१६॥	३०॥	२२॥	२३॥	१॥	१४	२०॥	३१॥	३०॥	३१॥	२४॥	२१॥	२१॥	१४	४
३४	१७	१३॥	६॥	१४	२९॥	२४॥	१५	३१	१२॥	१८	२६	३४॥	२३	३१॥	३१	२८	२८	३०	५
२७	१०	३०	१५॥	२३॥	२१॥	२५॥	१६	१२	१८	२३॥	३४	२१	२०	२८	२०॥	२७	२१	२८	६
२१	२१	३४	३४॥	२४	११	१५॥	२३	११	१८	२१॥	२६	१३	१४	२९	२४॥	२७	२९	२८	७
३४	३४	३४	३४	२१॥	१७	४	१४	२८	२८	२४॥	२९	१९	२०	१३	८	२०॥	२८	२८	८
२७॥	२७॥	३४	२१	१६॥	२१॥	७	१५	२७	२७	२३॥	२४॥	१८	११॥	१४	१०	१९	२८	२८	९
२२॥	२२	२८	२३	२१	१६	११॥	१०॥	२३॥	२६	२६	२७	२१	१४	८॥	११॥	२०	२६	२५	१०
१२॥	१२	२७	२२॥	२१	१८	११	१९॥	१७॥	२२॥	२६	२७	२३	६	१५	१०॥	८	२८	२७	११
२७॥	२७	६	१०	१६॥	२०	२६	२५	१७॥	९॥	२३॥	२३	२६	९	२०	१३	२४	३१	१३	१२
२८॥	२४॥	१०	१९	३२॥	२४॥	३२	३२॥	१६॥	१७	४	४	१९	२४॥	२४॥	१८	१८	१८	११॥	१३
१४	१६॥	२४॥	१८॥	२४॥	२२॥	३३॥	३२॥	३४॥	३२॥	१९	१८	५	९	११॥	२४॥	२४॥	१६	२४	१४
१९॥	१५॥	२५॥	१५	२१॥	३०॥	२२॥	२३	३२॥	३२॥	१९॥	१९	१२	१६॥	१०॥	१०॥	१५	२६	२४	१५
३०	२०॥	३०॥	२२॥	१८	१७	१३	२४	११॥	१९॥	२६	२६	१८	१६	१९॥	११	१८	३०	२८	१६
३३	२६	२२॥	२४॥	२०	२७	१४	१५	२७	२६॥	२५	२६	२१	१७	१०॥	१३	१८	३०	२८	१७
३४	३३	२६	३०॥	२७	११	१५	२६	१२	२२	१८॥	१९	१८	१९	२२॥	१७	२८	१२	१२	१८
३४	३४	३२॥	३२॥	२२॥	७॥	११॥	२१	१२	१२	२६॥	२६	२४	२४	२८॥	२४	२४	५	५	१९
२८	३६	३३	३३	२३	२०॥	२७॥	२३	२७	१८	२३॥	२४	२७	२७	१८	३४	२०	२१	१३	२०
३२॥	३२॥	३३	३४	२६	१७॥	२१॥	२६	२०	१४	१८॥	१६	३०	३०	३१	२०	१५॥	१४॥	७	२१
२६	१९॥	२६॥	२६	३२	३३	३५॥	२०॥	२३	१७॥	१३	१५॥	२४॥	२४॥	२५॥	११॥	२५	१५	१९॥	२२
१२	८	३२	१८	३३	३४	३४	२४	३२॥	३०॥	२६	३१	२६	११	२१	२४॥	३१	२५	२४	२३
२५	२१॥	१६॥	२१॥	२१॥	३६	३६	२१	२५	२५	२१॥	२५॥	१९॥	२४॥	२६	१०॥	१६॥	२८	२८	२४
२७	२७	२६	२७	३१॥	१६॥	२४	३४	३५	३२॥	२२॥	२२॥	३०॥	२७	२०॥	१३॥	१६	२६	२८	२५
१२	१८	१९	२६	३१॥	१४॥	३२॥	३४	२६	३४	२४	३४	१६॥	१३	२३॥	२७	३०	१७	३२॥	२६
२१	१७	१९	१९	२३॥	३२	३२॥	३२॥	२४	३६	३५	२६	३२	३३	२२॥	२९॥	३२॥	३२॥	२४	२७
१७	३१॥	३१॥	२३॥	१९॥	२७	२२	२८	२५	३३	२६	३४	३२	२१	१८॥	३१॥	३०	३०	२२	२८
२०	२७	२२॥	१७॥	१४	२७	२३	१९॥	२८	२७	३४	३६	३४	३६	१९॥	२१॥	२७	२९॥	२२॥	२९
१७	२४	२९	३०॥	२७	१३	२७	२४॥	९॥	१८	३२	२७	३४	३२	२५	२५	३४	१४	२२॥	३०
१७	२५	२७	३१॥	२६	१२	२६	२२॥	१५॥	२४॥	२६॥	१९	३१	३४	३३	३२॥	१७॥	८	१५॥	३१
२५	३३	२८	२३	२७	३१	१९	३२॥	२४	२४	२६	१०	१५	३३॥	२६	३१	१८	१०॥	२०॥	३२
१७।	३१	३३	३३	२७॥	१७॥	३४	१६॥	१९॥	३०॥	३२॥	२१॥	१८॥	३२	३३	३४	३४	३४	२१॥	३३
२०	१३	२०॥	१८॥	२७	२६	२३	२३॥	३०॥	३१	२९॥	३०॥	३१॥	१३॥	१०	१७॥	३४	३३	३०॥	३४
११	५	२१	१३॥	२६	१९	३४	३१॥	२३॥	३१॥	२१॥	२३॥	२२	८॥	१७	२०	३३	३६	३५	३५
२२	१८	१२	८	१८॥	२७	२९	२८	२०	३२॥	२०॥	२३	२९॥	१५॥	१७॥	२०॥	३०॥	३४	३६	३६

कर्त्तरीदोषलक्षण

लग्नाच्चंद्राद्व्ययद्विस्थौ पापखेटौ यदातदा ।। कर्त्तरीवर्जनीयासाविवाहोपनयादिषु ।। नहि कर्त्तरिजोदोषः सौम्ययोर्यदिजायते ।। शुभग्रहयुतंलग्नंक्रूरयोर्नास्तिकर्त्तरी ।।

टीका—लग्न अथवा चन्द्रसे बारहवें और दूसरे स्थानोंमें पापग्रह पड़े तो कर्तरी दोष होता है इसमें विवाह और यज्ञोपवीत वर्जित है, कर्त्तरी दोषभंग यदि इन्हीं उक्त स्थानोंमें सौम्य ग्रह हों तो अथवा शुभग्रहयुक्त लग्न हो तो शुभ और क्रूर ग्रह हों तो कर्त्तरी दोष नहीं होता है ।।

वधूवरकी राशिसे अष्टमलग्न

वरवध्वोर्वटोश्चापि जन्मराशेश्चलग्नतः ।।
त्याज्यमष्टमलग्नस्याद्विवाहव्रतबन्धयोः ।।

टीका—वर वधू और वटु इन सबको जन्मराशि और लग्नसे आठवां लग्न विवाह और यज्ञोपवीतमें वर्जित हैं ।

दुष्टमुहूर्त्त

तिथ्यंशोदिनमानस्य रात्रिमानस्यचैवहि ।।
मुहूर्तः कथितस्तेषुदुर्मूहूर्त्तंशुभेत्यजेत् ।।

टीका—दिनमान और रात्रिमान उनका पंद्रहवां अंश दुर्मुहूर्त होता है जो शुभकार्यमें वर्जित है ।

यामार्द्धादिककथन

सूर्याद्यामदलं दिवैवनिगमाद्यश्वीषु नामत्रिषट्संख्याकंकुलिकंदिवेंद्ररविदिङना-गर्तुवेदद्विकम् ।। व्यंकंतंनिशिषोडशांशमपरेतिथ्यंशमुज्झन्तितैः कालंकण्टकमैनि-घण्टममरेज्यज्ञास्फुजिद्भूचः क्रमात् ।।

टीका—रविवारसे अर्द्धयामार्द्ध कोष्ठकके अंततक प्रवृत्ति निवृत्तिके अंक होते हैं क्रमशःजानिये और शुभ कर्ममें वर्जित हैं दिनमें दिनमानका सोलहवां भाग रविवारसे कुलिक कोष्ठकके अंततक अंक होते हैं उनकी कुलिक संज्ञा है और शुभ कर्ममें वर्जित हैं रात्रिमें एक दो घटाइये, किसीके मतमें दिनमानका पंचदशांश वर्जित करके गुरुवारसे कालदोष बुधवारसे कंटक और शुक्रवारसे ऐनिघंट ये सब यथाक्रम कुलिकके समान वर्जित हैं ।

वार	* यामार्द्धघटिका ४			कुलिक	काल	कंटक	ऐनिर्घंट
	संख्या	प्रवृत्ति	निवृत्ति	घ० २	घ० २	घ० २	घ० २
रवि	४ था	१२	१६	१४ वा	८ वा	६ वा	१० वा
चंद्र	७ वा	२४	२८	१२ वा	६ वा	४ था	८ वा
मंगल	२ रा	४	८	१० वा	४ था	२ रा	६ वा
बुध	५ वा	१६	२०	८ वा	२ रा	१४ वा	४ था
गुरु	८ वा	२८	३२	६ वा	१४ वा	१२ वा	२ रा
शुक्र	३ रा	८	१२	४ था	१२ वा	१० वा	१४ वा
शनि	६ वा	२०	२४	२ रा	१० वा	८ वा	१२ वा

लत्तादोष––भौमात्त्र्याकृतिषट्जिनाष्टनखभंहन्त्यग्रतोलत्तया ।। खेटोऽर्कोऽर्कमितंशशीमुनिमितं पूर्णोनसन्मालवे ।।

टीका––भौम जिस नक्षत्रका हो उससे तीसरे नक्षत्रमें लत्तादोष और बुध जिस नक्षत्रका हो उससे बाइसवें नक्षत्रमें, गुरुसे छठे नक्षत्रमें, शुक्रसे २४ वें नक्षत्रमें और शनिके नक्षत्रसे ८ वेंनक्षत्रमें, राहुके नक्षत्रसे २० वें नक्षत्रमें, रविके नक्षत्रसे १२ वें नक्षत्रमें, और चंद्रमा पूर्ण हो तो सातवें नक्षत्रमें, लत्तादोश होता है, यह दोष मालवदेशमें अशुभ और अन्य देशोंमें शुभ होता है।

ग्रहणतथाउत्पातनक्षत्रदोष–यस्मिन्धिष्ण्ये महोत्पातो ग्रहणं वा भवेद्यदि ।। तस्मिन्धिष्ण्येशुभंकर्मषण्मासंवर्जयेद्बुधः ।।

टीका––जिस नक्षत्रमें उत्पात अथवा ग्रहण हो उस नक्षत्रमें षट्मासतक शुभ कम वर्जित है ।

पापग्रहयुक्त और वेधनक्षत्र

श्रुत्यग्निभेभिजिद्ब्राह्म्ये वैश्वेन्द्वर्क्षेतुरुद्रभे ।। मूलादित्ये च पुष्यैन्द्रे मैत्राश्लेषेमघान्तके ।। दस्त्रभागार्यमान्त्ये च हस्ताहिर्बुध्न्यभेतथा ।। चित्राजचरणेस्वातीवारुणे च परस्परम् ।। वासवेन्द्राग्निभेतद्वद्वेधः सप्तशलाकजः ।। त्याज्यः पापोद्भवो यत्नाद्व्रतबन्धादिकर्मसु ।।

टीका––पंच सप्त शलाकाचक्रमें जिस रेखापर जो नक्षत्र हो और उसीमें पापग्रह हो तो शुभ नक्षत्र विद्ध जानिये ।

* एक दिनका यामार्द्ध ८ कुलिकादि १६ वारानुसार जाने, उनमेंसे जिस वारकी जो वर्जित हैं वह कोष्ठक में लिखा है

नक्षत्रचरणवेध

सप्तपञ्चशलाकाभ्यां विद्धमेकार्गलेनयेत् ।। लत्तोपग्रहणं धिष्ण्यं पादमात्रं शुभेत्यजेत् ।। वेधमाद्यंतयोरंध्योरन्योन्यं द्वितृतीययोः ।। क्रूरैरपित्यजेत्पादंकेचिद्वचुर्महर्षयः ।।

टीका—विद्ध नक्षत्र एकार्गल और लत्ता उत्पात नक्षत्र इनके चरणमें शुभ ग्रह हो तो वह चरण शुभकर्ममें वर्जित है प्रथम चतुर्थ द्वितीय तृतीय नक्षत्रके चरण परस्पर विद्ध होते हैं, किसीके मतमें पापग्रह विद्धनक्षत्रोंके चरण वर्जित हैं 'एकार्गलदोषोमार्तंडमते' विष्कभादि दुष्ट योगरहित दिन नक्षत्रसे अभिजित् सहित गणनासे विषमनक्षत्र में सूर्य हो तो एकार्गल दोष होता है ।

चण्डायुध—शूलगण्डांतपापानां साध्यहर्षणयोस्तथा ।।
अन्त्यंयच्चन्द्रभंतस्मिन्नेतच्चण्डायुधं न सत् ।।

टीका—शूल गंड व्यतीपात साध्य वैधृति हर्षण योगोंके अंतमें जो नक्षत्र हो उसे चंडायुध दोष कहते हैं ।।

पंचशलाकाचक्र

कृ रो मृ आ पु पु आ

सप्तशलाकाचक्रम् ।

कृ रो मृ आ पु पु आ

भ म
अ पू
रे उ
उ ह
पू चि
श स्वा
ध वि

सप्त श ला का चक्र म्

अ अ उ पू मू ज्ये अ

क्रांतिसाम्य

युग्मधेनुः र्ककिरलौ च युक्ते कन्या च मीनेवृषनक्रयुक्ते ।।
मेषे च सिंहे च घटेतुलायां क्रान्ते च साम्यंशशिसूर्ययोगे ।।

टीका—धन मिथुन लग्नोंके सूर्य और चंद्रमा हों तो क्रांतिसाम्य हो इसी प्रकारसे कर्क वृश्चिक आदि दो दो राशियोंके क्रांतिसाम्य दोष जानिये ।

चक्रकाक्रम—ऊर्ध्वरेखात्रयं चैवतिर्यग्रेखात्रयं तथा ।।
क्रान्तिसाम्यंबुधैर्ज्ञेयंमध्ये मीनंतुयोजयेत् ।।



टीका—तीन उर्ध्व और तीन आड़ी रेखा खींचे मध्य भागकी रेखाओंमें तीन तीन लग्नक्रमसे लिखे द्वादशलग्नोंमें-से दो दो का क्रांतिसाम्य होता है ।

यामित्रदोष

लग्नेन्दोर्नास्तगः पापस्तत्तुल्यांशेयदिस्थितः ।। तदायामित्रदोषः स्यान्न-हिन्यूनाधिकांशके ।। क्रूरोवार्यदिवासौम्यो लग्नाच्चन्द्राच्चखेचरः ।। एकोपियदि-यामित्रे समांशेचतदाभवेत् ।। यामित्रंनप्रशंसन्ति गर्गकश्यपदेवलाः ।। आयषष्ठ तृतीयेषु धनधान्यप्रदोरविः ।।

टीका—लग्न चंद्र मध्य सप्तमस्थानका पापग्रहशून्य करनेसे उनके तुल्यांश आये तो यामित्र दोष हो, अधिक वा न्यून हो तो दोष नहीं है ।। दूसरा पक्ष ।। लग्न चंद्रसे सप्तमस्थानी शुभग्रह अथवा पापग्रह सम अंश हो तो यामित्र दोष हो, गर्ग कश्यप देवल इन ऋषियोंके मतके अनुसार यामित्र दोष विवाहमें वर्जित है यदि लग्नसे एकादश षष्ठ तृतीय इन स्थानोंमें सूर्य हो तो यामित्र दोष शुभ और सुखदायक जानिये ।

चरत्रयदोष—कर्कलग्नेथवामेषे घटांशोयदिदीयते ।।
तुलायांमकरेचन्द्रे वैधव्यं जायतेध्रुवम् ।।

टीका—कर्क और मेष लग्नमें तुलाका अंश और मकर अथवा तुलाका चंद्रमा ऐसे योगोंका दोष वैधव्य करता है ।

तिथिअनुसारवर्जित लग्न

प्रतिपदितुलामकरौ सिंहमकरौतृतीयायाम् ।। कन्यामिथुने पञ्चम्यां सप्तम्यांचैव धनुःकर्कौ ।। नवम्यांकर्कसिंहौ एकदश्यांधनुर्मीनौ ।। त्रयोदश्यां वृषमीनौशून्यलग्नानितिथियोगात् ।।

टीका—प्रतिपदाको तुला और मकर, तृतीयाको सिंह मकर, पंचमीको कन्या मिथुन, सप्तमीको धन कर्क, नवमीको कर्क सिह, एकादशीको धन मीन, त्रयोदशीको वृष मीन इन तिथियोंमें ये लग्न शून्य वर्जनीय हैं ।

दोषनिवारण—द्यूनंविनाकेन्द्रगतोमरेज्यस्त्रिकोणगोवापिहिलक्षमेकम् ।। निहंतिदोषंत्रिशतंभृगुश्च शतंबुधोवापिहिदृश्यमूर्तिः ।।

टीका—गुरु शुक्र अथवा बुध ये १ । ४ । ९ । १० । ५ इन स्थानोंमें हो तो एक लक्ष गुरु, तीन सौ शुक्र, १ सौ बुध दोनोंका नाश करते हैं ।

लग्नप्रमाण वा राश्युदय—गजाग्निदस्रागिरिषट्कदस्रा व्योमेन्दुरामा रसरामरामाः ।। कुरामरामा गजचन्द्ररामा नागेन्दुलोका कुगुणानलाश्च ।। षड्रामरामा खशशांकरामाः सप्ताङ्गपक्षाश्चगजाग्निदस्राः ।।

टीका—राशि उदय अर्थात् मेषादि बारह राशियोंके १२ लग्न होते हैं जिस राशिके सूर्य हों वही उदयकालका प्रथम लग्न जानिये, उसकी पल संख्याका क्रम कोष्ठकमें है ।

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
पल	२३८	२६७	३१०	३३६	३३१	३१८	३१८	३३१	३३६	३१०	२६७	२३८

लग्नकी घटिकाओंकी संख्या—मीनेमेषेत्र्यष्टपञ्चक्रमान्नाड्यः पलानिच ।। वृषेकुम्भेऽब्धिसप्तद्विपञ्चदिङमिथुनेमृगे ।। धनुःकर्केशरेषट् त्रिसिंहाल्योः शरभूत्रयम् ।। बाणाष्टदशतूलांगे लग्ननाड्यः पलानिच ।

टीका—मेषादि लग्नोंकी घटी और पलोंका क्रम ।

लग्न	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क	तुला	वृश्चि	धन	मक	कुंभ	मीन
घटी	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३
पल	५८	२७	१०	३५	३१	१८	१८	३१	३५	१०	२७	५८

प्रतिदिवस भुक्तपल जाननेका क्रम

मीनाजेसप्तषट्पञ्च पलानिविपलानितु ।। गोकुम्भेष्टौयुगशरादिग्विशतिर्नृयुङमृगे ।। कर्कचापेभवाः सूर्याः सिंहाल्योरुद्रदृङमिताः ।। तुलाङ्गेदिक्चषट्त्रीणि लग्नेष्वेकांशसम्मितिः ।।

टीका—जो लग्नउदय कालमें हो उसकी प्रतिदिन भोग्यपल विपल संख्या ।

लग्न	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुंभ	मी
पल	७	८	१०	११	११	१०	१०	११	११	१०	८	७
विपल	५६	५४	२०	१२	२	३६	३६	२	१२	२०	५४	५६

उदयास्तलग्नकथन–यस्मिन्राशौयदासूर्यस्तलग्नमुदयोभवेत् ॥
तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नंतदुच्यते ॥

टीका––जिस राशिके सूर्य हों वह लग्न सूर्योदयमें होता है और उससे सप्तम लग्न सूर्यास्तमें होता है उसीको अस्तलग्न जानिये ।

लग्नकेउक्त अंशदेनेकाक्रम–वृषश्चमिथुनंकन्या तुलाधन्वीझषस्तथा
एतेशुभवनांशास्तुततोन्येकुनवांशकाः ॥

टीका–वृष मिथुन कन्या तुला धन मीन ये अंश द्वादश लग्नोंके शुभ होते हैं शेष अशुभ, मेषादि १२ लग्न वा अंश ७ कोष्ठकमें हैं, उनमेंसे जिसके अंशकी वर्ग शुद्धि हो उनका कोष्टकमें लग्न लिखे और उस अंश घडीका अयनांश देखकर भुक्त काल लाइये ।

लग्न	वृ	मि	क	कं	तु	धन	मीन
मेष	० ३ २०	० ६ ४०	० १० ०	० १६ ४०	० २० ०	० २६ ४०	० ० ०
वृष	१ १३ २०	१ १६ ४०	१ २० ०	१ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
मिथुन	२ २३ २०	२ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	२ ० ०	२ ६ ४०	२ १६ ४०
कर्क	० ० ०	० ० ०	३ ० ०	३ ६ ४०	३ १० ०	३ १६ ४०	३ २६ ४०
सिंह	४ ३ २०	४ ६ ४०	४ १० ०	४ १६ ४०	४ २० ०	४ २६ ४०	० ० ०
कन्या	५ १३ २०	५ ६ ४०	५ २० ०	५ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
तुला	६ २३ २०	६ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	६ ० ०	६ ६ ४०	६ १६ ४०
वृश्चिक	० ० ०	० ० ०	७ ० ०	७ ६ ४०	७ १० ०	७ १६ ४०	७ २६ ४०
धन	८ ३ २०	८ ६ ४०	८ १० ०	८ १६ ४०	८ २० ०	८ २६ ४०	० ० ०
मकर	९ १३ २०	९ १६ ४०	९ ०	९ २६ ४०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
कुंभ	१० २३ २०	१० २६ ४०	० ० ०	० ० ०	१० ० ०	१० ६ ४०	१० १६ ४०
मीन	० ० ०	० ० ०	११ ० ०	११ ६ ४०	११ १० ०	११ १६ ४०	११ २६ ४०

टीका––प्रत्येक कोष्ठकमें ४ अंक हैं उनके नाम राशि अंश कला विकला जानिये राशिकी संज्ञा शून्यका नाम मेष और वृषके नाम १ इस प्रकार १२ राशि होती हैं ।

तात्कालिकस्पष्टसूर्य लानेका साधन

गतगम्यदिनाहतद्युभुक्तः खरसप्तांशवियुग्युतोग्रहः स्यात् ॥

टीका––पंचांगस्थ ग्रहोंके कोष्ठकमें पूर्णिमासे अमावस्यापर्यंत और अमावस्यासे पूर्णिमापर्यंत सूर्य स्पष्ट है,परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जिस दिनका सूर्य स्पष्ट करना हो उस दिनको लेकर और दिनोंके अंतरका वर्तमानदिनको सूर्यगतिसे कोष्ठांतमें गुणे और ६० का भाग देनेसे जो अंक आवें वे अंश घटी पल जानिये परंतु पूर्णिमाके सूर्यसे जो पीछेका स्पष्ट करना हो

तो पंचांगसूर्यसे अंश घटी पल जो कोष्ठकमें हैं उनमेंसे उन अंकोंको हीन करे जो आगे काल न हो तो उनमें जोड़ दे इस प्रकारसे तात्कालिक सूर्य स्पष्ट होजाता है यह जानिये ।

भुक्त दिवसोंका उदाहरण

शक: १७६९ कार्तिकशुक्ल ९ भौमका स्पष्ट सूर्य कहो ।।

सूर्यकी गति. स्पष्ट रविका उत्तर

प.	वि.		रा.	अं.	क.	वि.
६०	४७ गति	पंचांगस्थरवि	७	७	२१	५७
	६ दिन ९ से १५ तक	गति		६	४	४२

अंतरकोगुणे

३६०	२८२ गुणा	शेष संख्या	७	१	१७	१५

भाग ६०) २८२ (४ अंश यह स्पष्ट सूर्य जानिये.

२४०

४२ शेषफल.

३६०

४ ४२ मिलावे

३६४ ४२ अं. प. वि.

६४ ४२ भाग ६०) ३६४ (६।४।४२

अभुक्त दिवसोंका उदाहरण

शक: १७६९ कार्तिक कृष्ण ६ को सूर्य स्पष्ट लानेका क्रम पूर्णिमाका स्पष्ट रवि राशि ७ अंश ७ घडी २१ पल ५७ अभुक्त दिवस ६ सूर्यकी गति ६० । ४७ इन अंकोंको ६ से गुणा तो हुए ३६४।४२ इनमें ६० का भाग देनेसे शेष रहे वे अंश ६ घंटी ४ पल ४ इन अंकोंको सूर्यके अंश घटीका और पलोंमें मिलावेतो ७ राशि १३ अंश २६ घटी ३९ पल इस प्रकार होते हैं ।

अयनांश लानेका क्रम

शाकोवेदाब्धिवेदोनः षष्ठिभक्तोऽयनांशकाः ।।
देयास्तेतुरवौस्पष्टे चरलग्नादिसिद्धये ।।

टीका––वर्तमान शकमें ४४४ घटानेसे जो शेष बचे उसमें ६० का भाग दे । चर स्थिर द्विस्वभाव लग्नोंकी सिद्धिके लिये उन अयनांशोंको स्पष्ट सूर्यके अंश और घटिकाओंमें मिलाने से सायन सूर्य हो जाता है ।

उदाहरण ।

शके १७६९	भा.६०)१३२५(२२अंश	७ १ १७ १५ स्पष्टरवि
इनसे ४४४	१२०	२२ ५ अयनांश मिलावे.
घटाना	१२५	७ २३ २२ १५
१३२५	१२०	यह सायनसूर्य जानिये.
	५	
	६० गुणक	
	भाग ६०) ३०० (५कला	
	३००	
	०००	

लग्न से इष्टकाल लानेका क्रम

स्फुटसायनभागार्क भोग्यांशफलसंमितः ।। सायनांशतनोश्चापि भुक्तांश-फलसंयुता ।। मध्यलग्नोदयैर्युक्ताषष्टचाप्तानाडिकास्तनोः ।

टीका—सायन सूर्यसे भोग्य और सायन लग्नसे भुक्त वनानेकी रीति । दोनोंका योग करके सूर्यके मध्यका उदय लेकर युक्त करे फिर उसमें ६० का भाग देनेसे लग्न परसे सूर्यका भोग्यकाल स्पष्ट हो जाता है । **उदाहरण** ।। शकः १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारको स्पष्ट सूर्यकी राशि आदि ७ । १ । १७ । १५ और अयनांश २२ । ५ को सूर्यके अंश और घडियोंमें मिलावे तो सायन सूर्य राश्यादि ७ । २३ । २२ । १५ यह वृश्चिक राशिका सूर्य २३ अंश २२ घटिका १५ पल हुए इनको ३० में घटाया तो भोग्यांश ६ । ३७ । ४५ सूर्य वृश्चिक राशिका है तो वृश्चिकका उदय कहिये ३३१ से भोग्यांश गुणनेसे हुए अंक २१९४ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ७३ । ८ यह सूर्यका भोग्य काल जानिये ।

लग्नसे भुक्त लानेका प्रकार ।। मकर लग्न वृषकी उसको कोष्ठकमें देखकर वह स्पष्ट लग्न लेवे वे राश्यादि ९ । १३ । २० कहिये मकर राशिकी लग्न १३ अंश २० घटिका होती है, इस लग्नके अंश घडीमें अयनांश २२ । ५ मिलानेसे सायन लग्न १० । ५ । २५ हुई कुंभराशिको लग्न अंश ५ घटी २५ सायन लग्न होती, लग्नके भुक्तांश ५ । २५ कुंभराशिका उदय २६७ इनको गुणनेसे अंक हुए १६४६ इनमें ३० का भाग देनेसे आये ४८ । १२ यही अंक लग्नका भुक्त होता है ।

भोग्य भुक्तसे इष्टकाल लानेका प्रकार

भोग्य भुक्त योग १२१।२० सूर्य अथवा लग्न जिस राशिके मध्यांतरके उदय २ धन ३१६ मकर ३१० उनका योग ६६४ भोग्य भुक्त योग १२१ इसमें मिलाये तो अंक हुए ७६७ इस युक्त अंकमें ६० का भाग दिया तो वह इष्टकालकी घड़ी १२ पल ४७ हुए इन पलोंमें वृत्तिके ५ पल जोडनेसे स्पष्ट इष्टकाल १२ । ५२ आ जाता है ।

उदाहरण—सायन सूर्यसे भोग्यलानेका क्रम

अंश	घटी	पल
३०	०	०
२३	२२	२९
६	३७	४९
		३३१ गुणक
१९८६	२३१७	१६९९
२०८	९९३	१३२४
२१९४	१२२४७ २४८	भाग ६०) १४८९९ (घटिका २४८ १२०

भाग ६०) १२४९९ (अं २०८

१२०

४९९

४८०

१९ शेष

२८९

२४०

४९९

४८०

१९ शेष विकला।

रविके भोग्य काल लानेका प्रकार

अंश घटी

भाग ३०) २१९४ (८ । ७३ १९

२१०

९४

९०

४

६० गुणक

२४०

१९ शेषघटी

भ ग ३०) २९९ (८ शेष

२४०

१९ शे

लग्नसे भुक्तकाल लानेका क्रम

रा. अं. क.
९ ११। २० मकरलग्न
०२। ५ अयनांशमिलावे
१० ५ २५ सायनलग्नभुक्त
२६७ लग्नकाउदय
१३३५ १७५
१३३५ १७५
१११
१४४६
६०) ६६७५ (१११
६०
६७
६०
७५
६०
१५

अनुपात.
भाग ३०) १४४६ (४८.१२
१२०
२४६
२४०
६
६० गुणक
भाग ३०) ३६० (१२
३६०

इष्टकाल.
धन ३३६
मकर ३१० मिलावे
६४६
१२१ यह भुक्त मिलावे
भाग ६०) ७६७ (१२ ७
६०
१६७
१२०
४७
६० गुणक
भाग ६०) २८२० (४७ पल
२४०
४२०
४२०

भुक्तभोग्यभाग.
४८ १२ भुक्त
७३ ८ भोग्या.
१२१ २० सूर्य व लग्न इनराशिके मध्यन्तरका उदय.
उत्तर इष्टघटिका
घ. प.
१२ ४७
५ प्रवृत्तिकाफल.
१२ ५२ उत्तर इष्ट घटी.

इष्टकालसमयका तत्कालसूर्यसाधन

तत्कालभवस्तथा घटिघ्न्याः खरसैर्लब्धकलोनसंयुतः स्यात् ॥

टीका—इष्ट घडीमें सूर्य लाना हो तो उसको और उससे सूर्यकी घटियोंको गुणाकर ६० का भाग दे जो लब्धि हो उसमें जो सूर्य गत होतो हीन करे और जो भोग हो उसमें युक्त करनेसे तत्काल सूर्य आजाता है ।

उदाहरण

टीका—शक: १७६९ कार्तिक शुदी ९ भौमवारके दिन प्रातःकालका सूर्य । ७ । १ । १७ । १५ है तो कहो कि सायन सूर्य कितना होगा ।

इष्ट घडीकी गतिका गुणाकार

१२ ५२ इष्टघटी
ग. ६० ७२० ३१२०
४७ ५६४ २४४४
७२० ३६८४ २४४४
इनका भाग ६०) ७८२ (१३।२
६०
१८२
१८०
२
६० गुणक
भाग २०) १२०
१२०

घटीपलोंका भागाकार

७२० ३६८४ ६०) २४४४
६२ ४० २४
७८२ ३७२४ ८६२
३६०
१२४
१२०
४
७ १ १७ १५ प्रातःकालका रवि
१३ २ गम्यघटि
७ १ ३० ३८
२२ ९ अयनांश
७ २३ ३५ १७ सायनतत्कालसूर्य

इष्टघटीसे लग्नका क्रम

तत्कालार्कःसायनोस्योदयघ्ना भोग्यांशा खत्र्युद्धृता भोग्यकालः ।
एवंयातांशैर्भवेद्यातिकालो भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडीपलेभ्यः ॥
तदनुविहीनगृहोदयांश्चशेषंगगनगुणघ्नमशुद्धहृल्लवाद्यम् सहितमजादि-
गृहैरशुद्धपूर्वैर्भवति विलग्नमदोयनांशहीनम् ॥

टीका—पीछे सायन सूर्य जिस राशिमें हो उसका उदय लेना चाहिये और सायन सूर्यके अंशादिकोंको ३० अंशोंमेंहीन करे वे भोग्यांश जानिये और उदयको भोग्यांशसे गुणकर ३० का भोग दे तो सूर्यका भोग्यकाल निकल आवे । सूर्यका गतकाल लानेका क्रम । सायन सूर्य के उदयमें उसीके अंशादिकोंको गुणकर ३० का भागदे तो भुक्तकाल आ जायगा । इष्ट घटियोंके पल करके उसमें भोग्यकाल हीन करे शेष जिस राशिमें सूर्य उदय होगा वह राशि आगे जितनी राशि उदय राशिमें कम होगी उनको घटादे जो उदय न घटे तो अशुद्ध जानिये और शेष अंकोंको ३० से गुणकर अशुद्ध उदयसे भाग दे तो अंशादिक आवेंगे उसमें शेष राशिसे

अशुद्ध राशिको पूर्व राशितक युक्त करना चाहिये और उसमें अयनांश हीन करे तो लग्न स्पष्ट हो जाता है ।

उदाहरण––पीछे जो सायनसूर्य आया है वह ७।२३।३५।१७ उसका उदय ३३१ सूर्यके अंश २३।३५।१७ । ये ३० अंशमें हीन करे शेष बचे वह भोग्यांश ६ । २४ । ४३ इनको उदयसे गुणे वे अंक २१२२ इनमें ३० का भाग दे तो भोग्यकाल निकल आवे । उसके हिसाबका क्रम ।

३० ३५ १७ सायन सूर्यके अंश घटावे
२३
६ २४ ४३ शेष भोग्य
३३१ उदय

अंश कला विकला
१९८६ १३।२४ ४३
१३६ ६६२
१२९
३०) २१२२ (७० ७९४४
२१० २३७
भाग ६०) १४२३३ (२३७ कला
२२ ६०) ८१८१ (१३६ अं
१२०
६० गुणक ६०
२२३
३०) १३२० (४४ २१८
१८०
१२० १८०
४३३
१२० ३८१
४२०
१२० ३६०
१३
० २१

उत्तर ७० पल ४४ विपल इस प्रकार भोग्य काल जानिये ।। इस घटीमें १२ । ५२ इसके पल ७७२ इस अंकमें भोग्यकाल घटाया तो शेष अंक ७० । १ ।१६ धनराशिका उदय ३३६ वा मकर राशिका उदय ३१० इन दोनोंका योग ६६४ शेष अंक न्यून किया तो रहे ५५ । ३६ इन अंकोंमें कुंभ राशिका उदय २६७ घटा नहीं सकसे इसलिये अशुद्ध उदय जानिये ।

इष्ट घटी १२ । ५२
गुणक ६०
७२०
५२
७७२
भोग्यकाल ७० ४४
३३६ धनराशिका उदय ७०१ १६
३१० मकरराशिका उदय ६४६ इन अंकोंमें कुम्भका उदय नहीं घट १६
६४६ ५५ १६ सकता इसलिये अशुद्ध उदय कहते हैं.

अंशादि ५५ । १६ इनको ३० से गुणे वे अंक १७ । ५८ हुए इनका अशुद्ध उदयमें भाग दे जितने भाग आवें वे अंक और शेष अंक ५६ को ६० से गुणा तो हुए ३३६० फिर इनके उदयमें भाग दिया तो घटी १२ और शेष १५६ को ६० से गुणा तो हुए ९२६० फिर उनके उदयमें भाग दिया तो पल ३५ मेष राशिसे अशुद्धकी पूर्व राशितक राशि १० और पहिलीके अंशादिक ६ । १२ । १५ उनके राशिके अंशोंके लिखनेसे स्पष्ट सायन लग्न १० । ३६ । १२ ३५ अयनांश ११५ सायनलग्नके अंश घटियोंमें घटानेसे स्पष्ट लग्न ९ । १४ । ७ । ३५। मकर लग्न १४ अंश ७ घटिका ३५ पल जानिये ।

शेषांक १६ ५६ १५६
१६५० ३० गुणक ६० गुणक ६० गुणक
८ ६०) ४८० (८ २६७) ३३६० (१२ घ २६७) ९३६० (३५ प
२६७) १६५८ (६ अं. ४८० २६७ ८०१
१६०२ ६९० १३५०
५६ ५३४ १३३५
१५६ १५

राशि	अंश	घटी	पल	
१०	३६	१२ ३५		
	१२	५		अयनांश घटावे
	१४	७	३५	

इस प्रकार मकर लग्नका प्रमाण १४ अंश ७ घटी ३५ पल जानिये ।

सूर्य और लग्न राशिके हों तो इष्ट लानेका क्रम

यदितनुदिननाथावेकराशौतदंशान्तरहत उदयःस्यात्खाग्निहृत्विष्टकालः ।।

टीका—सूर्य और लग्न एक राशिको हों तो दोनोंका अंतर निकाले और उसको राशिके उदयसे गुणे तीसका भाग दे जो लब्धि हो वही इष्टकाल जाने और रात्रिमें लग्न अथवा इष्टकाल निकालना हो तो सूर्यकी राशि ६ उसमें मिलावे ।

लग्नके शुभाशुभ ग्रहोंका विचार

लग्ने चन्द्रखलारिपौशशिसितौसर्वेद्युनेखेबुधोऽब्जोऽन्त्येगुः सुखगोष्टमाः कुजशुभाः शुक्रस्तृतीयः शुचे ।। लाभे सर्वखगा—शुभा अखिलगात्र्यष्टारिगाः स्युः खला श्चन्द्रस्त्र्यम्बुधने श्रियेंशभदृकेट्स्यान्मृत्यवेष्टारिगः ।।

टीका—लग्नमें चंद्रमा और पापग्रह अथवा लग्नसे षष्ठस्थानी शुक्र और चंद्र और सप्तम स्थानमें कोई ग्रह हों, दशम स्थानमें बुध द्वादशमें चन्द्र, चतुर्थ स्थानी राहु, अष्टम स्थानी मंगल वा शुभग्रह और तृतीयस्थानमें शुक्र ऐसे लग्नके ग्रह हों तो अनिष्ट शोककारक अशुभस्थानीग्रह जानिये । लग्नसे एकादशस्थानमें संपूर्णग्रह और निंद्यस्थान वर्जित करके और शेष स्थानमें शुभग्रह हों और तृतीय अष्टम तथा षष्ठ स्थानमें और २ । ३ चतुर्थ स्थानमें

चंद्रमा होतो शुभ लक्ष्मीकारकजाने, लग्नकास्वामी अथवा अंशका स्वामी अथवा द्रेष्काणका स्वामी ये षष्ठ वा अष्टम स्थानमें हो तो मृत्युदायक जानिये ।

पञ्चभिरिष्टैरिष्टं पुष्टमनिष्टैररिष्टमादेश्यम् ॥
स्थानादिफलसमृद्धिश्चतुर्भिरपि कथ्यते यवनैः ॥

टीका––लग्नोंके पांचग्रह शुभस्थानी हों तो पुष्टिकारक होते हैं और अशुभ हों तो अनिष्टकारक होते हैं और यवनादि मतसे चार ग्रह भी इष्टकारक जानिये ।

षड्वर्गशुद्धि जाननेका क्रम

गृहंहोरा च द्रेष्काणोनवांशो द्वादशांशकः ॥
त्रिंशांशश्चेति षट्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥

टीका––प्रथम जाननेमें लग्न १ होरा २ द्रेष्काण ३ नवांश ४ द्वादशांश ५ त्रिंशांश ६ ये छः वर्ग शुभग्रहोंके वर्ग इनमें शुभ होते हैं ।

त्रिंशांशादिकथनम्

त्रिंशद्भागात्मकंलग्नंहोरातस्यार्द्धमुच्यते ॥ लग्नात्त्रिभागोद्रेष्काणो नवांशोनवमांशकः ॥ द्वादशांशोद्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः ॥

टीका––लग्नके अंश ३० होते हैं उनका अर्द्ध १५ अंश होरा कहाता है और लग्नहीका तीसरा भाग १० ऐसे ३ तीन द्रेष्काण होते हैं और नवम भाग नवांश और उसका बारहवां भाग द्वादशांश और तीसवां भाग त्रिंशांश इस रीतिसे एक लग्नके ३० अंश होते हैं और उन्हीं तीस अशोंके छः वर्ग होते हैं ।

आदौगृहज्ञानम्

यस्य यस्य तु यौ राशिस्तस्य तद्गृहमुच्यते ॥

टीका––जिस ग्रहकी जो राशि वह गृह उसीका कहा जाता है ।

ग्रह	भौ	शुक्र	बुध	चन्द्र	सूर्य	बुध	शुक्र	भौम	गुरु	शनि	शनि	गुरु
राशि	मेष	वृष	मिथु	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्चि	धन	मक.	कुंभ	मीन

होराकथनं–सूर्येन्द्वोर्विषमे लग्नेहोराचन्द्रार्कयोः समे ॥

टीका––विषमलग्नमें १५ अंशतक सूर्यका होरा तदनन्तर चद्रमाका होरा जानिये सम लग्नमें १५ अंशके अन्त लग्न होवे तो चंद्रमाका होरा उसके बाद सूर्यका जानिये होरा चंद्रमाका शुभ और सूर्यका अशुभ ।

लग्न	मेष	वृष	मि०	कर्क	सिंह	क०	तुल	वृश्चि	धन	मकर	कुंभ	मीन
१ अं १०	मं०	शु०	बु०	चं०	र०	बु०	शु०	मं०	गु०	श०	श०	गु०
२ अं १०	र०	बु०	शु०	मं०	गु०	श०	श०	गु०	मं०	शु०	बु०	चं०
३ अं १०	गु०	श०	श०	गु०	मं०	शु०	बु०	चं०	र०	बु०	शु०	मं०

द्रेष्काणकथनम्

द्रेष्काणआद्योलग्नस्य द्वितीयः पञ्चमस्य च ॥
द्रेष्काणश्चतृतीयस्तु लग्नान्नवमराशिपः ॥

टीका––प्रथम द्रेष्काण कहिये लग्नके ३० अंश उनमेंसे १० अंशका एक द्रेष्काण ऐसे २० अंश ३० अंश तीन द्रेष्काण होते हैं प्रथम द्रेष्काणका स्वामी लग्नका स्वामी होता है द्वितीयद्रेष्काणका पंचमस्थानका स्वामी होता है और तृतीय द्रेष्काणका नवम स्थानका स्वामी होता है शनि मंगल सूर्यका द्रेष्काण अशुभ जानिये ।

लग्न	मे ०	वृ १	मि २	क ३	सिं ४	क ५	तु ६	वृ ७	ध ८	म ९	कुं १०	मी ११
अंश १५	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं
अंश ३०	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू

	मेष ०	वृषभ १	मि० २	कर्क ३	सिंह ४	क० ५	तूळ ६	वृ० ७	धन ८	मकर ९	कुंभ १०	मीन ११
[illegible]	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६
[illegible]	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७
[illegible]	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८
[illegible]	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९
[illegible]	५	१२	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०
[illegible]	६	१	८	३	१०	५	१२	७	२	९	४	११
[illegible]	७	२	९	४	११	६	१	८	३	१०	५	१२

लग्नका नवांश

मेषसिंहधनुर्लग्नेनवांशामेषतः स्मृताः ॥ वृषकन्यामृगे लग्ने मकरान्नवमांशकाः ॥ कर्कालिमीनलग्नेषु नवांशाः कर्कतः स्मृताः ॥ नृयुग्मतौलिकुम्भेषु तौलितः स्युर्नवांशकाः ॥

टीका––मेष सिंह धन इन लग्नोंका नवांशक क्रम मेषसे जानिये और वृष कन्या मकर इनका मकरसे क्रम और मिथुन तुला कुंभका तुलासे क्रम, कर्क वृश्चिक मीन इन लग्नोंका नवांश कर्कराशिमें जानना चाहिये नवांश सूर्यमंगल शनिका अशुभ होता है ।

		मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तू	वृ	ध	म	कुं	मी
३	२०	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं
६	४०	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र
१०	०	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु
१३	२०	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु
१६	४०	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं
२०	०	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु	गु
२३	२०	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श	शु	चं	मं	श
२६	४०	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श	मं	र	शु	श
३०	०	गु	बु	बु	गु	बु	बु	बु	गु	गु	बु	बु	गु

द्वादशांशकथन ।। लग्नस्य द्वादशांशास्तु स्वराशेरेवकीर्त्तिताः

टीका––लग्नके अंश ३० उनके भाग १२ द्वादश कहाते हैं उनका क्रम चलते लग्नसे जो पर्यन्त लग्नके अंश हो उसके स्थानसे जो द्वादशांश पति जानिये उनमें मंगल शनि रवि इनके अशुभ होते हैं ।

ल.	मे	वृ	मि	कर्क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
२ ३०	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु
५ ०	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं
७ ३०	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु
१०	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु
१२ ३०	र	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं
१५ ०	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र
१७ ३०	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	श	चं	र	बु
२० ०	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु
२२ ३०	गु	श	शु	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं
२५ ०	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु
२७ ३०	श	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	बु	श
३० ०	गु	मं	शु	बु	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	श

विषमत्रिंशांश ।। कुजार्किगुरुविच्छुक्रास्त्रिंशांशपतयः क्रमात् ।। पंचपंचाष्ट-शैलेषु भागानां विषमेगृहे ।।

टीका––विषमलग्नमें पंचमांश लग्न पर्यन्त हो तो भौमके आगे ५ अंश शनिके गुरु ८ अंश उसके आगे ७ अंश बुधके और ५ अंश शुक्रके इस क्रमसे विषम लग्नमें त्रिंशांशपति जानों इनमें मंगल शनि अशुभ जानिये ।

अं.	वृ	क	क	वृ	म	मी
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
५	श	श	श	श	श	श
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं

समत्रिंशांश ।। शुक्रज्ञेज्यार्किभूपुत्रास्त्रिंशांशपतयः समे ।।
पञ्चाङ्गेष्वेषु पञ्चानां भागानां कथिता बुधैः ।।

टीका––सम लग्नमें प्रथम ५ अंश पर्यन्त शुक्र उसके आगे ७ अंश बुध उसके आगे ८ अंश गुरु उसके आगे ५ अंश शनि उसके आगे ५ अंश मंगल ये सम लग्नमें त्रिंशांशपति जानिये उनमें मंगल शनि अशुभ हैं ।

अं.	मे	मि	सिं	तु	ध	कुं
५	मं	मं	मं	मं	मं	मं
५	श	श	श	श	श	श
८	गु	गु	गु	गु	गु	गु
७	बु	बु	बु	बु	बु	बु
५	शु	शु	शु	शु	शु	शु

षड्वर्ग जाननेका क्रम

कार्तिक शुक्ल ९ मंगलवार लग्न मकर अंश १४ घटी ११ पल ५ । स्वामी शनि सो गृहेश ।। ये षड्वर्ग जिसमें शनि अशुभ शेष ५ वर्ग शुभ जानिये ।

गृहेश	होरा	द्रेष्काण	नवमां	द्वादशां	त्रिंशां
शनि	चंद्र	शुक्र	शुक्र	बुध	गुरु

उक्तांश

मेषे षष्ठघटो वृषो त्रिदृगिनाद्वन्द्वेद्रिगोर्काग्नयः कीटेऽब्ध्यङ्गगवाद्रयोर्कं भवनेऽङ्गाश्वाः स्त्रियांत्र्यर्कषट् ।। जूकेऽर्काद्रिखगा अलौगवगषट् चापे त्रिषट् गोद्रयोनक्रेशास्त्र्यरुणाधटेज्ञषवृषामानीन्द्रिगोषट्शुभाः ।।

रा. उ.	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
अंश	६	३	७	४	६	३	१९	९	३	३	१२	७
	७	२	९		७	१२	७	७	६	१२	२	९
		१२	१२	९		६	९	६	९			६
			३	७					७			

षड्वर्गं पञ्चवर्गंवा चतुर्वर्गमथापिवा ॥
कैश्चित्त्रिवर्गंसत्प्रोक्तंद्वयेकवर्गं तनुंत्यजेत् ॥

टीका––६ अथवा ५ किंवा ४ वर्ग लग्नके हों तो लग्न बलिष्ठ हो और किसी २ के मतसे ३ वर्ग शुभ होते हैं और दो एक हो तो लग्न वर्जनीय है ।

लग्नांशफल

लग्नेचतुर्दशो भागो वृषस्यमकरस्य च ॥
कन्याकर्कटमीनानामष्टमेद्वादशोऽलिनः ॥

टीका––वृष मकर इनके १४ अंश कन्या कर्क मीनके ८ अंश आवे वृश्चिकके १२ अंश ये शुभ फल देते हैं ।

कुम्भस्यांशेचषड्विंशे चतुर्विंशे च तौलिनः ॥
नृयुक्कार्मुकयोर्लग्नं शुभंसप्तदशांशके ॥

टीका––कुंभके २६ अंश तुलाके ३४ मिथुनके ७ और धनुके १० शुभ हैं इस प्रकारसे जानिये ।

एकविंशतिमेभागेमेषस्याष्टादशेहरेः ॥
संपूर्णफलदंचादौ मध्येमध्यफलप्रदम् ॥

टीका––मेषके २१ अंश सिंहके १८ ऐसे लग्नोंके आदिमें संपूर्ण और मध्यम फल अंश अनुसार जानिये ।

लग्नवर्गोत्तमलक्षण ॥ अन्तेतुच्छंफलंलग्नंयदिवर्गो–
त्तमंनचेत् ॥ लग्नस्यस्वनवांशोयेः सवर्गोत्तमउच्यते ॥

टीका––लग्नके अंतभागमें वर्गोत्तम न हो तो लग्न अनिष्ट फल देता है । और लग्न अपने नवांशमें हो तो वर्गोत्तम कहिये ।

गोधूललग्नका कथन

गोधूलंपदजादिके शुभकरंपञ्चाङ्शुद्धौरवेरेर्धास्तात्परपूर्वतोऽर्घघटिकंतत्रेन्दुमष्टारिगम् ॥ सोग्राङ्गंकुजमष्टमंगुरुयमाहःपातमर्कक्रमंजह्याद्विप्रमुखेतिसंकटइदंसद्यौवनाढयौक्वचित् ॥

टीका––शूद्रादिकोंको पचांग शुद्ध देख करके सूर्यके अर्द्धास्त समय प्रथम और पश्चात् १५ पल गोधूलिकाल शुभ और गोधूललग्नसे षष्ठ और अष्टम स्थानी चंद्रमा और पापग्रह भोम अष्टमस्थानी और गुरु शनि ये वार और क्रांति दिन इत्यादिक दुष्टयोग वर्जकर शुभ और किसीके मतमें विप्रादिकके अति संकटमें वर और कन्या हो तो गोरज शुभ हो।

वधूप्रवेश ।। विवाहमारभ्य वधूप्रवेशो युग्मेथवाषोडशवासरान्तात् ।।
तदूर्ध्वमध्येयुजिपञ्चमान्तादतः परस्तान्नियमोनचास्ति ।।

टीका––विवाह से सम १६ दिवस पर्यन्त वधूप्रवेश कहा है आगे पांच वर्ष पर्यन्त विषममासादिक कहे हैं आगे स्वेच्छा।

उक्तमासादि ।। माघफाल्गुनवैशाखेशुक्लपक्षेशुभेदिने ।।
गुर्वाद्यस्तविशुद्धौस्यात् नित्यंपत्नीद्विरागमः ।।

टीका––माघ फाल्गुन और वैशाख शुक्लपक्षमें शुभदिवसमें गुरु आदि अस्त वर्जित द्विरागमन उक्त है।

नीहारांशुयुगुत्तरादितिगुरुब्राह्मानुराधाश्विनौशाक्रेभास्करवायुविष्णुवरुणत्वाष्ट्रेप्रशस्तेतिथौ ।। कुम्भाजालिगतेरवौशुभकरप्राप्तोदये भार्गवेजीवज्ञस्फुजितां दिनेनववधूवेश्मप्रवेशः शुभः ।।

टीका––मृग तीनों उत्तरा पुनर्वसु पुष्य रोहिणी अनुराधा अश्विनी ज्येष्ठा हस्त स्वाती श्रवण शततारका चित्रा ये नक्षत्र, कुंभ मेष वृश्चिक के सूर्य शुक्रादिक उदय गुरु बुध चंद्र ये शुभ दिवसमें प्रवेश करावे।

नूतनपल्लवधारणका मुहूर्त

हस्तादिपञ्चमृगपूषभदस्रभेषु विष्णुद्वयेबुधदिने गुरुशुक्रवारे ।।
स्त्रीणांशुभं प्रथमपल्लधारणंस्यात्पाणिग्रहोक्तसमये खलुपीतवस्त्रैः ।।

टीका––हस्तसे पांच और मृगशिर पुनर्वसु अश्विनी श्रवण धनिष्ठा ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार और वे ग्रह हों जो विवाहकालमें कथित हैं ऐसे दिवसमें नूतन पीतवस्त्र द्वारा स्त्रियोंको प्रथम पल्लव धारण करावे।

गन्धर्वविवाहमुहूर्त

शूद्रान्त्येषुपुनर्भवापरिणयप्रोक्तोविवाहोक्तभैर्नालोक्यं तिथिमासवेधभृगुजेज्यास्तादितत्रार्कभात् ।। त्रित्र्यर्क्षेषुमृतिर्धनंमृतिमृती पुत्रोमृतिर्दुर्भगं श्रीरौन्नत्यमथोधृतीशकृततत्वर्क्षेत्यः साभिजित् ।।

टीका––शूद्र आदि और रजक और अन्यजाति जिनकी स्त्रियोंका पुर्नविवाह हो जाता है उनके धरेजेका मुहूर्त विवाह नक्षत्र अवस्य देखे मास तिथि वार गुरु उनके उदय अस्तका कुछ दोष नहीं और सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत नक्षत्र गिने क्रमसे प्रथम ३ मरण द्वितीय ३ धनतृतीय ३ मरण चतुर्थ ३ मरण पंचम ३ मरण पुत्रलाभ षष्ठ ३ मरण सप्तम ३ दुर्भगा

अष्टम ३ लक्ष्मी नवम औन्नत्य और सूर्यनक्षत्रसे चौथे ग्यारहवें पच्चीसवें इन चार स्थानोंके नक्षत्र शुभ और शेष नक्षत्र सब अशुभ होते हैं।

दूसरे मत अनुसार

इन्द्रादितिशिवाश्लेषा आग्नेयंवारुणंतथा ।।
अश्विनीवसुदैवत्यंपट्टकालेशुभंस्मृतम् ।।

टीका——ज्येष्ठा पुनर्वसु आर्द्रा आश्लेषा कृत्तिका शततारका अश्विनी धनिष्ठा ये नक्षत्र धरेजा करनेमें शुभ जानिये।

दत्तक पुत्र लेनेका मुहूर्त

हस्तादिपञ्चकभिषग्वसुपुष्यभेषुसूर्यक्षमाजगुरुभार्गववासवेषु ।।
रिक्ताविवर्जिततिथौ अलिकुम्भलग्ने सिंहे वृषेभवतिदत्तपरिग्रहोऽयम् ।।

टीका——हस्त चित्रा स्वाती विशाखा अनुराधा अश्विनी धनिष्ठा पुष्य और रविवार मंगलवार गुरुवार शुक्रवार ये उक्त हैं और चतुर्थी नवमीचतुर्दशी वृश्चिक कुंभ ये वर्जित और सिंह वृष ये लग्न शुभ हैं।

वास्तुप्रकरण

ग्रामादि अनुकूल

ग्रामादेरनुकूलत्वंदिशोभूतग्रहस्यच ।।
मासधिष्ण्यादिशुद्धि च वीक्ष्यायव्ययभांशकान् ।।

टीका——ग्राम दिशा और भूत ग्रह इनके अनुकूल देखकर मास व नक्षत्र शुद्धि और आय व्यय लग्न अंश शुद्धि शुभ देख लीजिये।

ग्रहबल

गुरुशुक्रार्कचन्द्रेषु स्वोच्चादिबलशालिषु ।।
गुर्वर्केन्दुबलं लब्ध्वा गृहारम्भः प्रशस्यते ।।

टीका——गुरु, शुक्र सूर्य चंद्र इनको अपने उच्चादिक स्थानोंमें बलयुक्त देखकर और सूर्य चंद्र गुरु इनका बल पाकर गृहका आरंभ करना शुभ है।

वर्ज्य ।। विवाहोक्तान्महादोषानृतेजामित्रशुद्धितः ।।
रिक्ताकुजार्कवारौच चरलग्नंचरांशकम् ।।

टीका——जामित्र शुद्धि बचाकर विवाहके जो दोष कहे हैं वे सब वर्जित हैं और रिक्ता तिथि भौमवार रविवार वा चरलग्न और लग्नोंके अंश वर्जित हैं।

त्यक्त्वाकुजार्कयोश्चांशंपृष्ठेचाग्रोस्थितंविधुम् ।।
बुधेज्यराशिगं चार्ककुर्याद्गेहंशुभाप्तये ।।

टीका——रवि भौमके अंश और पीछे वा आगे स्थित चंद्र वर्जित हैं। मिथुन कन्या धन और मीन इन राशियोंका सूर्य गृहारंभ करनेमें शुभ है।

द्वारशुद्धि

द्वारशुद्धिनिरीक्ष्यादौभशुद्धिंवृषचक्रतः ।।
निष्पञ्चकेस्थिरेलग्नेद्वचङ्गेवाऽऽलयमारभेत् ।।

टीका—प्रथम द्वारशुद्धि और वृषचक्रसे नक्षत्रशुद्धि देखकर पंचकरहित स्थिर वा द्विस्वभाव लग्नमें गृह प्रारंभ कीजिये।

ग्रामअनुकूल

स्वनामराशेर्यद्राशिर्द्विशरांकेशदिङ मितः ।।
सग्रामःशुभदः प्रोक्तस्त्वशुभः स्यात्ततोन्यथा ।।

टीका—अपनी राशिसे २।५। ९। ११ । १० जिस ग्रामकी राशि हो वह शुभ और अन्यथा अशुभ जानिये।

एकभेसप्तमेव्योमगृहहानिस्त्रिषष्ठगे ।।
तुर्याष्टिद्वादशेरोगाः शेषस्थाने भवेत्सुखम् ।।

टीका—एक राशि अथवा सप्तम हो तो शून्य तीसरी अथवा सप्तम हो तो गृहकी हानि, चौथी आठवीं बारहवीं अथवा जन्मकी हो तो रोगकारक जानिये और शेष स्थान शुभ हैं।

जातक जाननेका क्रम

अकचटतपयशवर्गा अष्टौक्रमतः स्मृताः ।। एकोनखेषुवर्णानां स्वरशास्त्र-विशारदैः ।। अवर्गेषोडशज्ञेयाः स्वराः कादिषुपञ्चसु ।। पञ्चपञ्चैववर्णाः-स्युर्यशौतुचतुरक्षरौ ।।

टीका—अवर्गादि सवर्गपर्यंत ४९ अक्षर हैं जिनमें अवर्गके स्वर १६ और कवर्गसे पवर्ग पर्यंत ५ जिनके अक्षर २५ और य श इन दोनों वर्गोंके अक्षर चार चार होते हैं यह स्वर शास्त्रके ज्ञाता कहे जाते हैं।

वर्गोंके स्वामी

तार्क्ष्यमार्जारसिंहश्वसर्पाखुगजसूकराः ।।
वर्गेशाः क्रमतोज्ञेयाः स्ववर्गात्पञ्चमोरिपुः ।।

टीका—अवर्गका स्वामी गरुड १ कवर्गका मार्जार २ चवर्गका सिंह ३ टवर्गका श्वान ४ तवर्गका सर्प ५ पवर्गका मूषक ६ यवर्गका गज ७ शवर्ग का सूकर ८ इस क्रमसे वर्गोंके स्वामी जानिये और जिस वर्गका अक्षर अपने नामका हो उससे पांचवें वर्गका स्वामी उसका रिपु जानिये और चौथा मित्र और तृतीय उदासीन जानिये।

काकिणी ।। स्ववर्गंद्विगुणंकृत्वापरवर्गेणयोजयेत् ।।
अष्टभिश्चहरेद्भागंयोधिकः सऋणी भवेत् ।।

टीका—अपने नामके वर्गको द्विगुणा करे उसमें ग्रामादिकका वर्ग मिलावे और

आठका भाग दे, फिर ग्रामादिकका वर्ग द्विगुण करके अपने नामका वर्ग मिलावे पूर्ववत् आठका भाग दे इन दोनोंमें से जिसके शेष अधिक बचें सो उसका अर्थात् न्यूनवाले ऋणी जानिये ।

चंद्रमाके मुख जाननेका विचार

वाह्नान्मैत्रान्नगर्क्षस्थे चन्द्रेयाम्योत्तराननम् ।।
पित्र्याद्वासवतस्तद्वत्प्राक्परास्याद्गृहंशुभम् ।।

टीका––कृत्तिकासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा हो तो गृहोंका सुख दक्षिणको और अनुराधासे ७ नक्षत्रोंका चंद्र हो तो गृहोंका सुख उत्तरको और मघासे ७ नक्षत्रोंका चंद्रमा हो तो गृहका सुख पूर्वको और धनिष्ठासे ६ नक्षत्रोंका चन्द्रमा हो तो गृहोंका सुख पश्चिमको शुभ जानिये ।

आयादिसाधन ।। गृहेशकरमानेनगृहस्यायादिसाधयेत् ।।
करैश्चेन्नेष्टमायादि साध्यमंगुलितस्तथा ।।

टीका––गृहस्वामीके हस्तमात्रसे अथवा अंगुलीमानकरके इष्ट आयादि साधन करे ।

क्षेत्रफल

विस्तारगुणितंदैर्घ्यंगृहक्षेत्रफलंलभेत् ।।
तत्पृथग्वसुभिर्भक्तंशेषेणायोध्वजादिकः ।।

टीका––ध्वज आदि साधनका प्रकार ।। चौड़ाई लंबाई अथवा लंबाई चौड़ाईका आपसमें गुणनेसे क्षेत्रफल जानिये और उसीमें आठका भाग देनेसे जो शेष बचे सो ध्वज आदि आय जानिये ।

आयोंके नाम ।। ध्वजाधूमोर्थासिंहश्वासौरभेयः खरोगजः ।।
ध्वाङ्क्षश्चैवक्रमेणैतदायाष्टकमुदीरितम् ।।

टीका––ध्वजा १ धूम २ सिंह ३ श्वान ४ बैल ५ गर्दभ ६ हस्ती ७ काक ८ इस क्रमसे आयाष्टक जानिये ।

वर्णानुसार उक्त आय ।। ब्राह्मणस्यध्वजोज्ञेयः सिंहोवैक्षत्रियस्य च ।।
वृषभश्चैववैश्यस्यसर्वेषांतु गजः स्मृतः ।।

टीका––ब्राह्मणको ध्वजा आय, क्षत्रीको सिंह, वैश्यको वृषभ और सब वर्णोंको गज आय उक्त हैं ।

मतान्तर से आयोंका फल

ध्वजे कृतार्थो मरणंचधूमे सिंहेजयश्चाथशुनिप्रकोपः ।।
वृषेच राज्यंच खरेचदुःखंध्वांक्षेमृतिश्चैवगजेसुखंस्यात् ।।

टीका––ध्वज आयका फल कृतार्थ, धूमायका मरण, सिंहायका जय, श्वान आयका कोप, वृष आयका राज्य, खर आयका दुःख, ध्वांक्ष आय का मृत्यु और गज आयका फल सुख प्राप्ति होती है ।

नक्षत्रअनुसार व्ययसाधन ।। पूर्वद्वारेवृषः श्रेयान् गजः प्राग्यमदिङमुखः ।। क्षेत्रमष्टहतंधिष्ण्यैर्विभक्तंस्याद्गृहस्यभम् ।। भेष्टभक्तेव्ययः शेषमायादल्पो-व्ययः शुभः ।।

टीका—पूर्वाभिमुख गृहोंका वृषाय और गजाय श्रेयस्कर होता है और पूर्व दक्षिणाभिमुख गृहोंका गजाय कहा है, पूर्वमेंके क्षेत्रफलको आठसे गुणा करे और २७ का भाग दे शेष बचें सो घरके नक्षत्र जाने उन नक्षत्रोंमें ८ का भाग दे शेष रहे सो उस ग्रहका व्यय और आयकी अपेक्षा व्यय अल्प हो तो शुभ ।

गृहोंकी राशि

अश्विन्यादित्रयेमेषो मघादित्रितयेहरिः ।।
मूलादित्रितयेधन्वी भद्वयंशेषराशिषु ।।

टीका—गृहोंके अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंकी राशि मेष १ रोहिणी और मृगशिरकी वृष २ आर्द्रा पुनवसुकी मिथुन ३ पुष्य आश्लेषाकी कर्क ४ मघा पूर्वा और उत्तराकी सिंह ५ हस्त चित्राकी कन्या ६ स्वाती विशाखाकी तुला ७ अनुराधा ज्येष्ठाकी वृश्चिक ८ मूल पूर्वाषाढाकी धन ९ श्रवण धनिष्ठ की मकर १० शतभिषा पूर्वाषाढाकी कुंभ ११ उत्तराभाद्रपदा रेवतीकी मीन १२ इस क्रमसे राशि जानिये ।

गृहोंके नाम लानेका प्रकार

गृहस्यपूर्वतोदिक्षुक्रमात्कक्ष्याब्धिदन्तिनः ।।
संस्थाप्यालीन्दजानंकास्तन्मित्याषोडशगृहाः ।।

टीका—गृहोंके पूर्व दिशा क्रमसे अंक स्थापित करे वे ऐसे पूर्वको १ दक्षिणको २ पश्चिमको ४ उत्तरको ८ ऐसे चारों दिशाके अंकमें सालकी संख्या अधिक एक करके मिलावे जो अंक हो वही नाम गृहका जानिये ।

गृहोंके नाम ।। ध्रुवं धान्यंजयंनंदंस्वरंकांतंमनोरमम् ।। सुमुखंदुर्मुखंक्रूरं रिपुदं धनदंक्षयम् ।। आक्रंदंविपुलंज्ञेयं विजयंचेतिषोडश ।। गृहं ध्रुवादिकंज्ञेयंनाम तुल्यफलप्रदम् ।।

टीका—और इन गृहोंके ध्रुव धान्य जय इत्यादि सोलह नाम हैं, इनका शुभाशुभ नामानुसार जानिये ।

अंश लानेका प्रकार ।। व्ययेन संयुतेक्षेत्रेगृहनामाक्षरान्विते ।।
त्रिभिर्भक्तांशकास्तेषांद्वितीयांशोनशोभनः ।।

टीका—पीछेका जो व्यय हो उसे क्षेत्रफलमें मिलावे और गृहोंको नामके अक्षरसे संयुक्त करके तीनका भाग दे शेष दो बचें तो अशुभ और एक अथवा पूर्ण भाग लग जानेसे शुभ फल होता है ।

गृहोंके भाग ।। नवभागंगृहंकुर्यात्पञ्चभागंतुदक्षिणे ।।
त्रिभागंवामतःकुर्याच्छेषंद्वारप्रकल्पयेत् ।।

टीका—गृह क्षेत्रके नव भागकर उनमेंसे पांच भाग दक्षिणको तीन भाग उत्तरको और एक भाग मध्यमें उसमें द्वारकी कल्पना करे ।

गृहोंके द्वार ।। द्वारस्योपरियद्द्वारंद्वारंस्यान्यच्चसंमुखम् ।।
व्ययदं तु यदातच्च न कर्त्तव्यं शुभेप्सुभिः ।।

टीका—द्वारके ऊपर द्वार और सामने सामनेके द्वार व्ययदायक होते हैं शुभाभिलाषी पुरुषोंको ऐसे द्वार नहीं करने चाहिये ।

गृहों के स्थानों की योजनाका प्रकार

स्नानागारं दिशिप्राच्यामाग्नेय्यांपचनालयम् ।। याम्यायांशयनागारं नैर्ऋत्यांशस्त्रमंदिरम् ।। प्रतीच्यां भोजनागारं वायव्यांपशुमन्दिरम् ।। भाण्डकोशंचोत्तरस्यामीशान्यांदेवमन्दिरम् ।।

टीका—पूर्वमें स्नानका घर १ अग्निकोणमें रसोईका स्थान २ दक्षिणमें सोनेका स्थान ३ नैर्ऋत्यमें शस्त्रालय ४ पश्चिममें भोजनस्थान ५ वायव्यमें पशुमंदिर ६ उत्तरमें भंडारकोश ७ ईशान्यमें देवमंदिर ८ इस प्रकारसे स्थानोंकी योजना कराये ।

अल्पदोष ।। अल्पदोषं गुणश्रेष्ठं दोषाय न भवेद्गृहम् ।।
आयव्ययौप्रयत्नेन विरुद्धं भं च वर्जयेत् ।।

टीका—जिस गृहमें दोष तो अल्प हों परंतु वह बहुत गुणों करके श्रेष्ठ हों तो दोष नहीं होता और आय व्यय अथवा नक्षत्र विरुद्ध हो तो यत्न करके वर्जित करे ।

गृहारंभचक्र ।। आरम्भे वृषभं चक्रं स्तम्भे ज्ञेयं तु कूर्मकम् ।।
प्रवेशेकालशंचक्रंवास्तुचक्रंबुधैः शुभम् ।।

टीका—गृहारंभमेंवृषभचक्र और स्तंभस्थापनमें कूर्मचक्र गृहप्रवेश में कलशचक्र यह वास्तुचक्रमें देख लीजिये ।

गृहारंभके मास ।। सौम्यफाल्गुनवैशाखभाद्रश्रावणकार्तिकाः ।।
मासाः स्युर्गृहनिर्माणेपुत्रारोग्यधनप्रदाः ।।

टीका—पौष १ फाल्गुन २ वैशाख ३ भाद्रपद ४ श्रावण ५ कार्तिक ६ इन महीनोंमें गृहारंभ और शिलान्यास और स्तंभप्रतिष्ठा शुभ जानिये, पुत्र लाभ आरोग्यता आयुकी वृद्धि और धनकी प्राप्ति हो ।

गृहारंभके मासोंका फल

शोकोधान्यंपञ्चतानिःपशुत्वंस्वाप्तिनैः स्व्यं सङ्गरंभृत्यनाशम् ।।
सच्छ्रीप्राप्तिर्वह्निभीतिचलक्ष्मींकुर्युश्चैत्राद्यागृहारम्भकाले ।।

टीका—चैतमासमें शोकप्राप्ति १ और वैशाखमें धान्यप्राप्ति २ ज्येष्ठमें मृत्यु ३ आषाढ में पशुहीनता ४ श्रावणमें द्रव्यप्राप्ति ५ भाद्रपदमें दरिद्र ६ और आश्विनमें कलह ७

और कार्तिकमें भृत्योंका नाश ८ मार्गशीर्षमें धन प्राप्ति ९ पौषमें लक्ष्मी १० माघमें अग्निभय ११ फाल्गुनमें लक्ष्मी १२ इस प्रकार शुभाशुभ फल जानिये । अथ मासप्रवेशसारणीयम् ।

अं.		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मे. १	वार	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	घटी	२१	२२	२४	२५	२६	२७	२८	३०	३१	३२	३३	३४	३६	३७	३८	३९	४०	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५६
	पल	३४	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१८	२६	३५	४२	५३	२
वृ. २	वार	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	घटी	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०	२१	२२	२३	२६	२४
	पल	११	१९	२४	२९	३४	३८	४१	४५	४८	५१	५१	५४	५३	५३	५१	४८	४५	४२	३७	३१	२४	१७	९	०	५०	३९	२७	१३	५९	४३
मि. ३	वार	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	घटी	२५	२६	२८	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३१	३१	३२	३२	३३	३३	३३	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७
	पल	३८	५	[illegible]	३६	६	४५	२३	५९	३३	५	३५	५	३३	२	२८	५३	१७	३९	०	१०	१७	५२	६	१८	३०	४१	५२	२	८	१३
क. ४	वार	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३
	घटी	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३६	३६	३६	३६	३५	३५	३५	३५	३४	३४	३३	३३	३३	३२	३२	३१	३१	३०	३०	२९	२९
	पल	१७	१८	२०	२१	१७	१२	८	३	५७	४८	३७	२५	११	५६	४०	२३	४	४४	२१	५८	३५	११	४४	१६	४८	१६	४३	९	३५	०
सिं. ५	वार	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	२	३	३	३	३	३	३	३
	घटी	२८	२७	२७	२६	२५	२५	२४	२३	२२	२१	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३
	पल	२३	४६	६	२७	४६	३	१७	३०	४४	५७	९	२०	३०	३९	४७	५४	०	३	८	१२	१४	१५	१६	१६	१५	१३	१२	१०	८	४
क. ६	वार	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	घटी	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५१	५०	४९	४८	४७	४५	४४	४३	४२	४१	३९	३८	३७	३६	३५	३३	३२	३१	३०	२९	२७
	पल	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५०	३८	२७	१६	६	५५	५४	३३	२२	१०	५९	४७	३४	२२	९	५६	४३	३०	१६	४	५३
तु. ७	वार	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१
	घटी	२६	२५	२४	२३	२१	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५६	५५	५४	५३
	पल	४२	२९	१६	३	५१	४०	२९	१७	४	५३	४३	३०	२२	१२	२	५२	४२	३२	२८	२५	२२	१७	१२	८	४	०	५७	१४	५२	५०
वृ. ८	वार	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	घटी	५२	५२	५०	४९	४८	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३६	३५	३४	३३	३३	३२	३१	३१	३०	२९	२९
	पल	४९	५०	५१	५३	५६	०	२	४	१०	१६	२३	३१	४०	५१	२	१३	२४	३५	४९	३	१७	३१	४८	७	२७	४६	९	३१	५४	१८
ध. ९	वार	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	घटी	२८	२८	२७	२७	२६	२६	२५	२४	२४	२४	२३	२३	२३	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	१९	१९	१९	१९
	पल	४३	९	३६	५	३५	५	३६	८	३९	१३	५०	२८	६	४४	२३	३	४५	२९	१४	५९	४४	३१	२१	१९	१७	११	५२	४४	४०	३८
म. १०	वार	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	घटी	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२४	२५	२५	२६
	पल	३३	३२	३२	३२	३४	३७	४२	४८	५४	१	१०	२०	३१	४४	५७	११	२६	४१	५८	१६	३८	५८	१९	४०	१	२३	५२	२२	५२	२२
कुं. ११	वार	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	घटी	२६	२७	२७	२८	२९	२९	३०	३०	३१	३२	३२	३३	३४	३४	३५	३६	३७	३७	३८	३९	४०	४१	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८
	पल	५०	२१	५३	२७	१	३६	११	४७	२४	४	४८	२७	९	५१	३८	२०	३	४७	३२	२०	११	२	५४	४६	३८	३०	२१	१३	७	३
मी. १२	वार	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
	घटी	४९	५०	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५७	५८	५९	०	१	२	३	४	५	६	७	८	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१८	१९	२०
	पल	२	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	५५	५७	५८	२	३	५	८	१२	१६	२१	२७	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	१२	१९	[illegible]	[illegible]	४६	५८	[illegible]	२०	२९

दिशानुसार गृहोंका मुख करना

कर्कनक्रहरिकुम्भगतेर्केपूर्वपश्चिममुखानिगृहाणि ।।
तौलिमेषवृषवृश्चिकयातेदक्षिणोत्तरमुखानिवदन्ति ।।

टीका——कर्क मकर सिंह कुंभ इन राशियोंका सूर्य हो तो घरका द्वार पूर्व अथवा पश्चिमको करे, तुला मेष वृश्चिक इन राशियोंका सूर्य हो तो गृहोंका मुख दक्षिण अथवा उत्तरको करे, इस प्रकार रत्नमालाग्रन्थमें कहा है।

गृहारंभके नक्षत्र

त्र्युत्तरामृगरोहिण्यां पुष्यमैत्रकरत्रये ।। धनिष्ठाद्वितयेपौष्णेगृहारम्भः प्रशस्यते ।। आदित्यभौमवर्ज्जंतुसर्ववाराः शुभावहाः ।। चन्द्रादित्यबलंलब्ध्वा लग्नेशुभनिरीक्षिते ।। स्तम्भोच्छ्रायस्तुकर्त्तव्योह्यन्यत्तु परिवर्जयेत् ।। प्रासादेष्वेव-मेवस्यात्कूपवापीषुचैवहि ।।

टीका——तीनों उत्तरा मृग रोहिणी पुष्य अनुराधा हस्त चित्रा स्वाती धनिष्ठा शतभिषा रेवती ये नक्षत्र शुभ, रवि भौमवार छोड़कर शेष वार शुभ और स्थिर लग्नमें शुभ-ग्रहकी दृष्टि देखे और स्तंभरोपण कराये, अन्य कर्मोंको उक्त नहीं देवालय कूप तडाग वापी इन कृत्योंको शुभ जानिये।

वृषचक्र

त्रिवेदाब्धित्रिवेदाब्धिद्वित्रयेष्वर्कतः शशी ।। कुर्याल्लक्ष्मीं समुद्वासंस्थैर्यं-लक्ष्मीं दरिद्रताम् ।। धनं हानिक्रमान्मृत्युमारम्भे वृषचक्रकम् ।।

टीका——सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रके जितने नक्षत्र हों उनमें प्रथम भाग ३ नक्षत्र लक्ष्मी-दायक दूसरा भाग ४ उद्वास तृतीया भाग ४ स्थिरताकारक चतुर्थ भाग ३लक्ष्मी पंचम भाग ४ दरिद्रता षष्ठ ४ धनदायक सप्तम भाग २ नक्षत्र हानिकारक अष्टम ३ नक्षत्र मृत्यु इस क्रमसे जिस दिनका नक्षत्र शुभफलदायक हो उसीमें गृहारंभ कराये ।

शिलान्यास ।। दक्षिणपूर्वकोणेकृत्वापूजांशिलां न्यसेत् प्रथमाम् ।।
शेषाः प्रदक्षिणेनस्तम्भाश्चैवं प्रतिष्ठाप्याः ।।

टीका——पूजन करके आग्नेय कोणमें प्रथमशिला स्थापन करे, शेष शिला प्रदक्षिणमें स्थापित कराये इसी प्रकार स्तंभस्थापन भी करे।

शिलान्यास नक्षत्र ।। शिलान्यासः प्रकर्त्तव्योगृहाणांश्रवणेमृगे ।।
पौष्णेहस्तेचरोहिण्यांपुष्याश्विन्युत्तरायणे ।।

टीका——श्रवण मृगशिर रेवती हस्त रोहिणी पुष्य अश्विनी तीनों उत्तरा इनमें शिला-न्यास कर्त्तव्य है।

शेषोंके मुख

कन्यासिंहेतुलायांभुजगपतिमुखं शम्भुकोणेऽग्निखातं । वायव्ये स्यात्तदा-

स्यंत्वलिधनमकरे ईशखातंवदन्ति ।। कुम्भे मीने च मेषेनिर्ऋतिदिशि मुखंखात-वायव्यकोणे । चाग्न्ये कोणे मुखं वै वृषमिथुनगते कर्कटे रक्षखातम् ।।

टीका—कन्या तुला सिंह इन लग्नोंमें शेषके मुख ईशान्यकोणको जानो तो अग्नि-कोणमें खात कराये । वृश्चिक धन मकर इन लग्नोंमें शेषके मुख वायव्यकी दिनमें ईशान्य को खात कराये । कुंभ मीन मेष इन लग्नों में शेषके मुख नैर्ऋत्यको दिनमें वायव्यकोणमें खात कराये । वृष मिथुन कर्क इनमें शेषके मुख आग्नेयको दिनमें नैर्ऋत्यको खात कराये ।

दुष्टयोग ।। वज्रव्याघातशूलश्चव्यतीपातश्चगण्डकः ।।
विष्कम्भपरिघौवर्ज्यौवारौमंगलभास्करौ ।।

टीका—वज्र व्याघात शूल व्यतीपात गंड विष्कंभ परिघ और भौम रविवार ये वर्जित हैं ।

कूर्मचक्र

तिथिस्तु पञ्चगुणिता कृत्तिकाद्यृक्षसंयुता ।। तथाद्वादश मिश्राचनव-भागेनभाजिता ।। फल।। जले वेदामुनिश्चन्द्रस्थलेपंचद्वयंवसुः ।। त्रिषट्कनवचा-काशं त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ।। जलेलाभस्तथाप्रोक्तः स्थले हानिस्तथैवच ।। आका-शेमरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम् ।।

टीका—गृहारंभकी तिथियोंको पांचसे गुणा करे और कृत्तिका नक्षत्र से और दिवस-नक्षत्रतककी नक्षत्रसंख्याको उस गुणन फलमें मिलावे फिर १२ और उसीमें मिलावे नवका भाग दे जो ४। ७ । १ शेष रहें तो कूर्म जलस्थानमें जानिये, उसका फल लाभ और ५ ।२ । ८ बचें तो कूर्म स्थलमें जानिये उसका फल हानि और ३ । ६। ९। शेष बचें तो कूर्म आकाशमें जानिये उसका फल मरण ये तीनों प्रकारका कूर्म कहा है ।

स्तंभचक्र ।। सूर्याधिष्ठितभद्वयंप्रथमतो मध्येतथाविंशतिः स्तम्भाग्रे रस-संख्ययामुनिवरैरुक्तंमुहूर्तंशुभम् ।। फल ।। स्तम्भाग्रेमरणं भवेद्गृहपतेर्मूले धना-र्थक्षयोमध्येचैवतुसर्वसौख्यमतुलंप्राप्नोतिकर्त्तासदा ।।

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम उसमें प्रथम दो २ नक्षत्र स्तंभ-मूल जिनका फल धन क्षय और द्वितीय २० नक्षत्र स्तंभके मध्यमें जिनका फल लक्ष्मी और कीर्ति प्राप्ति तृतीय ६ नक्षत्र स्तंभके अग्रभागमें जिसका फल मृत्यु जानिये ऐसे शुभफल देखकर स्तंभारोपण कराये ।

देहलीका मुहूर्त्त ।। मूले भौमे त्रिऋक्षं गृहपतिमरणं पञ्चगर्भे सुखंस्यात् मध्येदयाष्टऋक्षंधनसुखसुखदं पुच्छदेशेष्टहानिः ।। पश्चाद्देयंत्रिऋक्षंगृहपतिसुखदं भाग्यपुत्रार्थदेयं सूर्यर्क्षाच्चन्द्रऋक्षंप्रतिदिनगणयेद्भौमचक्रंविलोक्य ।।

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतककी नक्षत्रसंख्या और फल ऐसे क्रमसे जाने प्रथम तीन नक्षत्र मूलमें जिसमें स्तंभारोपण करे तो मृत्यु द्वितीय ५ नक्षत्र गर्भमें फल सुख तीसरे

८ नक्षत्र मध्यमें फल धन सुत सुख चतुर्थ ८ नक्षत्र पुच्छभाग फल मित्रहानि पञ्चम ३ नक्षत्र अग्रभागमें फल सुखभोग पुत्रलाभ ऐसे शुभ फल हैं।

द्वारचक्र ।। अर्काच्चत्वारिऋक्षाणिऊर्ध्वेचैवप्रदापयेत् ।। द्वौ द्वौकोणेषु दद्या-द्वैशाखायां च चतुश्चतुः ।। अधश्चत्वारिदेयानि मध्येत्रीणि प्रदापयेत् ।। ऊर्ध्वेतुः लभते राजमुद्वासं कोणकेषुच ।। शखायांलभतेलक्ष्मींमध्येराज्यप्रदंतथा ।। अधःस्थे मरणं प्रोक्तंद्वारचक्रंप्रकीर्तितम् ।।

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यंत लिखनेका क्रम, जिसमें प्रथम ४ नक्षत्र ऊर्ध्व उनका फल राज्यप्राप्ति, द्वारकोण चार जिनमें प्रतिकोणमेंनक्षत्र उनका फल उद्वासना, वाजू दो जिनमें नक्षत्र चार उनका फल लक्ष्मी और नीचे नक्षत्र ४ फल राज्य, मध्यमें नक्षत्र ३ उनका फल मरण जानिये।

शांतिका अग्निचक्र

सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ता शेषे गुणेभ्रेभुविवह्निवासः।
सौख्यायहोमे शशियुग्मशेषे प्राणार्थनाशोदिविभूतलेच ।।

टीका—जिस तिथिको शांति करनी हो उसमें एक मिलाये और जो वार हो वह अंक मिलाये ४ का भाग दे शेष रहे उनका फल तीन अथवा शून्य बचे तो अग्नि मृत्युलोकमें जानिये जिसका फल सुखप्राप्ति और उसमें शांति करनी भी शुभ है और एक शेष रहे तो अग्नि स्वर्गमें उसका फल प्राणनाश और दो बचें तो पातालमें जिसका फल धननाश हो।

ग्रहके मुखमें आहुतिका विचार

तरणिविद्भृगुभास्करिचन्द्रमःकुजसुरेज्यविधुंतुदकेतवः ।।
रविभतोदिनभंगणयेत्क्रमात्प्रतिखगंत्रितयंत्रितयंन्यसेत् ।।

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र जितने नक्षत्र हों उनका इस क्रमसे फल जानिये, प्रथम तीन नक्षत्र सूर्य फल अशुभ, द्वितीय भाग ३ न० बुध शुभ, तृतीय भाग ३ न० शनि फल अशुभ राहूके थिर ६ न० चन्द्रके फिर ३ न० भौमके फिर ३ न० गुरुके उसके बाद ३ न० राहुके फिर ३ न० केतुके इसमें शुभ ग्रहके शुभ पाप ग्रहके अशुभ जानिये।

गृहप्रवेशका मुहूर्त

अथप्रवेशेनवमन्दिरस्ययात्रानिवृत्तावथभूपतीनाम् ।।
सौम्यायने पूर्वदिनेविधेयं वास्त्वर्चनंभूतबलिश्चसम्यक् ।।

टीका—यात्रा और राजदर्शनके मुहूर्त्तमें उत्तरायण सूर्य हो और प्रवेश के प्रथम दिवसमें वास्तुपूजा और भूत बलि करके गृह प्रवेश योग्य है।

चित्रानुराधामृगपौष्णपुष्यस्वातीधनिष्ठाश्रवणंचमूलम् ।।
वारेष्वसूर्यक्षितिजेष्वरिक्तातिथौप्रशस्तोभवनप्रवेशः।

टीका—चित्रा अनुराधा रेवती पुष्य स्वाती धनिष्ठा श्रवण मूल ये नक्षत्र और रवि भौम ये वार तथा रिक्ता तिथिको त्यागकर गृहप्रवेश कीजिये।

कलशचक्र ।। प्रवेशः कलशेऽर्कर्क्षात्पञ्चनागाष्टषट्क्रमात्
अशुभंचशुभं ज्ञेयमशुभंचशुभंतथा ।।

टीका—सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रतक जो नक्षत्र हो उसमें प्रथम ५ नक्षत्र अशुभ और आठ नक्षत्र शुभ आगे ८ नक्षत्र अशुभ और शेष ६ नक्षत्र शुभ ऐसे कलशचक्र जानिये ।

वामार्कलक्षण ।। रन्ध्रात्पुत्राद्धनादायात्पञ्चस्वर्केस्थितेक्रमात् ।।
पूर्वाशादिमुखं गेहंविशेद्वामोभवेदतः ।।

टीका—घरमें प्रवेश करनेके समय वामार्क हो उसको जाननेका क्रम प्रवेश लग्नोंमें अष्टमस्थानमें पंचमस्थानमें सूर्य हों और घरका द्वार पूर्व तथा दक्षिणकी ओरको हो उसका स्थान ० या ० पंचमस्थान पर्यन्त और घरका मुख पश्चिमको हो २ स्थान ० या ० पंचमस्थान पर्यंत ३ अथवा गृहोंका मुख उत्तरको हो तो सूर्य ११ स्थान ५ स्थानोंतक आये प्रवेशमें वामार्कयुक्त है ।

शुभाशुभग्रह और लग्न ।। त्रिकोणकेंद्रगैः शुभैस्त्रिषष्ठ लाभसंस्थितैः ।।
असद्ग्रहैः स्थिरोदयेगृहंविशेद्बलेविधौ ।।

टीका—त्रिकोण और केंद्रस्थानमें शुभग्रह हो ऐसा स्थिर लग्न देखकर और तीसरे छठे तथा लाभस्थानमें पापग्रह हो तो बली चंद्रमामें गृहप्रवेश करना शुभ जानिये ।

गृहारम्भकी लग्नशुद्धि ।। त्रिषडायगतैः पापैरष्टान्त्येन्तरगैः शुभैः ।।
चन्द्रेलग्नेऽरिरन्ध्रान्त्यवर्जितेस्याच्छुभंगृहम् ।।

टीका—३ । ६ । ११ स्थानमें पापग्रह शुभ और ८ । १२ स्थानमें इतरस्थानोंमें शुभग्रह हो तो शुभ जानिये परंतु चंद्रमा लग्न तथा षष्ठद्वादश अष्टमस्थानमें न हो ।

अशुभ योगोंके लग्न ।। धनकेन्द्रत्रिकोणस्थःक्षीणश्चन्द्रो न शोभनः ।।
शत्रोर्नवांशगः खेटः खास्तसंस्थोपिनोशुभः ।।

टीका—लग्नके २ । १ । ४ ।७ ।१० । ५ ।८ स्थानोंमें क्षीणचंद्र स्थित हो तो अशुभ है और स्वराशिकाशत्रुनवांशमें हो तोभी अशुभ है, क्षीण चंद्र कृष्णपक्षकी पंचमीसे जानिये ।

आयुष्यप्रमाण ।। लग्नेजीवः सुखेशुक्रोबुधः कर्मण्यरौरविः ।।
रविजः सहजेनूनंशतायुः स्यात्तदागृहम् ।।

टीका—लग्नमें बृहस्पति ४ शुक्र ६ बुध १० सूर्य ६ शनि ३ ऐसे लग्नमें गृहारंभ करनेसे उस गृहकी १०० वर्षकी आयु निश्चय कर जानियें ।

दूसरा प्रकार ।। भृगुर्लग्नेबुधोव्योम्निलाभेऽर्कः केन्द्रगो गुरुः ।।
यस्यारम्भेचतस्यायुर्वत्सराणांशतद्वयम् ।।

टीका—शुक्र लग्नमें और बुध १० स्थानमें ११ रवि और १ । ४। ७ ।१० ऐसे लग्नमें गृह आरंभ कराये तो २०० वर्षकी आयु कहिये ।

अन्यच्च ।। जीवोबुधोभृगुर्व्योम्नि लाभगोभानुभूमिजौ ।।
प्रारम्भेयस्यतस्यायुः समाशीतिः सहश्रिया ।।

टीका---गुरु बुध शुक्र ये १० स्थानमें ११ रवि भौम हो तो लक्ष्मीयुत घरकी ८० वर्षकी आयु जानिये ।

सोच्चवर्तिनिभृगौविलग्नगेदेवमन्त्रिणिरसातलेऽथवा ।।
स्वोच्चगेरविसुतेऽथवाऽयगेस्यात्स्थितिश्चसुचिरेसहश्रिया ।।

टीका---लग्नमें उच्चकाशुक्र होकर बैठा हो गुरु ४ हो उच्चका वा स्वक्षेत्री होकर ११ स्थान में हो तो लक्ष्मीयुक्त चिरकाल घरकी आयु कहिये ।

स्वर्क्षगेहिमगौलाभेसुरेज्येकेन्द्रसंस्थिते ।।
धनधान्यसुतारोग्ययुक्तंधामचिरंभवेत् ।।

टीका---कर्कका चन्द्रमा ११ स्थानमें और गुरुकेंद्रमें १ । ४ । ७ । १० हो तो वह गृह धनयुक्त और सुत आरोग्यसहित चिरकाल रहे ।

दूसरे मतसे पृथ्वी शोधनेका प्रकार

कुण्डार्थपृथ्वीपरिशोधहेतवे प्रष्टुर्मुखाद्यः प्रथमंस्फुटीभवेत् । वर्गादिवर्णः किलतद्दिशिस्मृतंशस्यंमुनीन्द्रैर्हपयास्तुमध्यतः ।। स्मृत्वेष्टदेवतांप्रष्टुवचनस्याद्यमक्षरम् ।। गृहीत्वा तु ततः शल्याशल्यंसम्यग्विचार्यते ।।

टीका---कुंडके निमित्त अर्थात् नूतन गृहके बनानेको प्रथम शोधनेका प्रकार-पृच्छक इष्टदेवता स्मरण करके ब्राह्मणसे प्रश्न करे उसके मुखसे आदि अक्षर जिस वर्गका निकले उसके उत्तर अक चट तप यह वर्ग पूर्वादि अष्टदिशाओंमें मध्यभागी हपय वर्गोंके आदि अक्षर जहां हों इस स्थानमें अमुक शल्य है उसका प्रकार नीच लिखा है जिसमेंसे उन २ स्थानोंका फल जानिये ।

प्रश्नअक्षरफल

पूर्व ।। पृच्छायां यदि अः प्राच्यां नरशल्यं तदा भवेत् ।। सार्धहस्तप्रमाणेनतच्चमानुष्यमृत्युकृत् ।। आग्नेय ।। आग्नेयांदिशिकः प्रश्नेखरशल्येकरद्वयम् ।। राजदण्डोभवेत्तत्रभयंनैवनिवर्त्तते ।। दक्षि० ।। याम्यायांदिशिचः प्रश्नेतदास्यात्कटिसंस्थितम् ।। नरशल्यंगृहेतस्यमरणंचिररोगतः ।। नै० ।। नैर्ऋत्यांदिशि टः प्रश्नेसार्धहस्तादधःस्थले शुनोस्थिजायतेतत्रबालानां जायते मृतिः ।। प०।। तः प्रश्नेपश्चिमायांतुशिशोः शल्यंप्रजायते ।। सार्धहस्ते गृहस्वामीनतिष्ठतिसदागृहे ।। वाय० ।। वायव्यांदिशिषः प्रश्नेतुषङ्गाराश्चतुष्करे ।। कुर्वन्तिमित्रनाशंच दुस्वप्नदर्शनंसदा ।। उत्तर ।। उदीच्यांदिशियः प्रश्नेविप्रशल्यं करादधः ।। तच्छीघ्रंनिर्धनत्वायकुबरेसदृशस्यहि ।। ई ।। ईशान्यांदिशःप्रश्नेगोशल्यंसार्द्धहस्ततः ।। तद्गोधनस्यनाशाय जायतेगृहमेधिनः ।। मध्यभाग ।। हपयामध्यकोष्ठेचवृक्षोमात्र भवेदधः।। नृकपालमथोभस्मलोहंतत्कुलनाशकृत् ।।

टीका––पृच्छकके मुखसे आदि अक्षर अवर्गका निकले तो पूर्वका डेढ़ हाथ गहरा खोदे तो मनुष्यकी हड्डी निकले वह मृत्युकारक जानिये १ (क) निकले तो २ हाथके गहरावमें गदहेकी हड्डी निकले उससे राजदंडका भय कभी निवृत्त न हो २ (च) अक्षरका उच्चारण हो तो दक्षिणकी ओर कटि बराबर खोदनेसे नरकी अस्थि निकले उसका फल चिरकालके रोगसे मरण ३ (ट)का उच्चारण हो तो नैर्ऋत्य दिशामें डेढ़ हाथ गहरा खोदनेसे कुत्तेकी अस्थि निकले उसका फल बालक न जीवे ४ (त) का उच्चारण करे तो पश्चिम दिशामें डेढ़ हाथके गहरावमें बालककी अस्थि निकले उसका फल गृहका स्वामी सदा घरमें न रहे ५ (प) हो तो वायव्य दिशामें ४ हाथपर जली हुई धातुकी भूसी वा कोयले निकलें उसका फल मित्रनाश दु:स्वप्नदर्शन (य) वर्ग हो तो एक हाथपर उत्तर कोणमें ब्राह्मणके हाड़ निकलें उसका फल कुबेर समानभी धनाढ्य दरिद्री हो ७ (श) हो तो ईशान दिशामें डेढ़ हाथपर गौकी अस्थि निकलें उसका फल गोधनकानाश ८ (हपय) हो तो मध्य भागमें छाती बराबर गहरे में मनुष्यका कपाल वा भस्म वा लोह निकले उसका फल कुलका नाश ९ जिस वर्गका नाम प्रश्नकर्ताके मुखसे उच्चारण हो उसी दिशाको देखें।

यात्राप्रकरणम्

शुक्रसंमुख ।। एकग्रामेपुरेवापिदुर्भिक्षेराष्ट्र विप्लवे ।।
विवाहेतीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो नविद्यते ।।

टीका––गांवके गांवमें शहरमें अथवा शहरके शहरमें दुर्भिक्षकालमें तथा देशोपद्रवमें विवाह समयमें और तीर्थयात्रामें और सन्मुख शुक्र हो तो दोष।

पौष्णादा वाग्निपादान्तं यावत्तिष्ठतिचन्द्रमाः ।।
तावच्छुक्रोभवेदन्धः सन्मुखंगमनंशुभम् ।।

टीका––रेवती अश्विनी भरणी कृत्तिका इन नक्षत्रोंके प्रथम चरणमें चन्द्रमा होनेसे शुक्र अंध होता है इसके सन्मुख गमनमें दोष नहीं है।

शुभाशुभफलम् ।। दक्षिणेदु:खदःशुक्रः संमुखोहन्ति मङ्गलम् ।।
वामेपृष्ठेशुभोनित्यं रोधयेदस्तगः शुभः ।।

टीका––गमन (यात्रा) में दाहिना शुक्र हो तो दु:खदायक सन्मुख कार्य नाशक और वाम भागमें पीछेका शुक्र मंगलदायक और पूर्वमें अस्त हो तो पश्चिमको गमन शुभ और पश्चिममें अस्त हो तो पूर्वमें शुभ गमन जानिये।

घातचंद्रनिर्णयः ।। प्रयाणकालेयुद्धेचकृषौ वाणिज्यसंग्रहे ।।
वादेचैवगृहारम्भेवर्जितोघातचन्द्रमाः ।।

टीका––यात्रा युद्ध खेतकर्ममें व्यापार अन्न आदि भरनेमें विवाद गृहके आरंभमें घात चन्द्रमा वर्जित है।

घातप्रकरणम् ।। घाततिथिघातवारंघातनक्षत्रमेवच ।।
यात्रायांवर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसुशोभनम् ।।

टीका—घाततिथि घातवार घातनक्षत्र यात्रामें वर्जित हैं और कार्यों में शुभ हैं।

मेषेरविर्मघाप्रोक्ताषष्ठीप्रथमचन्द्रमाः ।। वृषभेपञ्चमोहस्तश्चतुर्थीशनिरेवच ।। मिथुनेनवमः स्वातीअष्टमीचंद्र वासरः ।। कर्केद्विरनुराधाचबुधः षष्ठी प्रकीर्तिता ।। सिंहेषष्ठश्चन्द्रमाश्चदशमीशनिमूलके ।। कन्यायादशमश्चन्द्रः श्रवणः शनिरष्टमी ।।तुलेगुरु द्वादशीस्याच्छतंतृतीयचन्द्रमाः।। वृश्चिकेरेवतीसप्त दशमी-भार्गवस्तथा ।। धनेचतुर्थीभरणी द्वितीयाभार्गव स्तथा ।। मकरेष्टमीरोहणीद्वादशी भौमवासराः ।। कुम्भेएकादशश्चार्द्रा चतुर्थीगुरुवावसरः ।। मीनेचद्वादशः सार्पद्वि-तीयाभार्गवस्तथा ।।

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	क.	तुला	वृश्चि	ध.	मक.	कुंभ	मीन
चंद्र	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	शनि	चं.	बु.	श.	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	गु.	शु.
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वा.	अनु	मू.	श्र.	श.	रे	भ.	रो.	आ.	आश्ले
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

मेषादि १२ राशिघात चंद्रादि चतुष्टय बचाकर यात्रामें शुभनक्षत्र आदि देखे ।

कालचंद्र ।। मेषेवेदावृषेऽष्टौचमिथुनेचतृतीयकः ।। दशकर्के रविः सिंहे कन्याअङ्कप्रकीर्तितः ।। षट्तुलेवृश्चिकेखेन्दुर्धनेरुद्राः प्रकीर्तिताः ।। मकरेत्रृषयः प्रोक्ताः कुम्भेबाणाउदाहृताः ।। मीनेत्वङ्घ्रि कालचन्द्रः शौनक चैदमब्रवीत् ।।

टीका—मेषराशिको ४ वृषको ८ मिथुनको १ कर्कको १० सिंहको १२ कन्याको ९ तुलाको ६ वृश्चिकको १० धनको ११ मकरको ७ कुंभको ५ मीनको ४ चौथा चन्द्रमा कालचन्द्र जानिये कालचन्द्र शौनक ऋषि प्रोक्त सर्व कर्मोंमें वर्जित है।

तिथिपरत्वसे वर्जित लग्न

नन्दायामलिहर्योस्तुतुलामकरयोस्तथा ।। भद्रायांमीनधनुषोः कालस्ति-ष्ठतिसर्वदा ।। जयायांस्त्रीमिथुनयोरिक्तायां मेषकर्कयोः ।। पूर्णायांकुम्भवृषयो-र्मनुष्यमरणंध्रुवम् ।।

टीका—नंदातिथिको वृश्चिक सिंह तुला मकर और भद्रातिथिको मीन धन और जया तिथिको कन्या मिथुन और रिक्ता तिथिको मेष कर्क पूर्णा तिथिको कुंभ वृष इन तिथियों में लग्न वर्जित हैं।

यात्राके नक्षत्र

हस्तेन्दुमैत्रश्रवणाश्विनितिष्यपौष्णश्रविष्ठाचपुनर्वसुश्च ।।
प्रोक्तानिधिष्ण्यानिनवप्रयाणेत्यक्त्वात्रिपञ्चादिमसप्ततारा: ।।

टीका—हस्त मृगशीर्ष अनुराधा श्रवण अश्विनी पुष्य रेवती धनिष्ठा पुनर्वसु ये नक्षत्र प्रयाणमें उक्त हैं, परंतु ३ ।५ । १ । ७ ये तारा गमन में वर्जित हैं ।

मध्यनक्षत्र ।। रोहिणीउत्तराचित्रामूलमार्द्रातथैवच ।।
षाढोत्तरभाद्रविश्वे प्रयाणेमध्यमा: स्मृता: ।।

टीका—रोहिणी उत्तरा चित्रा मूल आर्द्रा पूर्वाषाढा उत्तराभाद्रपदा उत्तराषाढा ये नक्षत्र यात्रामें मध्यम हैं ।

वर्ज्यनक्षत्र

त्रीणिपूर्वामघाज्येष्ठाभरणीजन्मकृत्तिका ।। सर्पस्वातीविशाखाचनित्यंगमनर्वाजता ।। कृत्तिकाएकविंशत्या भरण्यासप्तनाडिका: ।। एकादश मघायाश्चत्रिपूर्वाणांचषोडश ।। विशाखासार्पचित्रासुस्वातीरौद्रचतुर्दश ।। आद्यास्तुघटिकास्त्याज्या: शेषांशे गमनंशुभम् ।।

टीका—इन नक्षत्रोंको प्रयाणकालमें वर्जित करे परंतु यदि आवश्यक काम व संकट आपड़े तो तीनों पूर्वाकी १६ घटिका मघाकी ११ ज्येष्ठा संपूर्ण भरणीकी ७ घटिका कृतिकाकी २१ जन्मनक्षत्र संपूर्ण आश्लेषा विशाखा चित्रा स्वाती आर्द्रा इन नक्षत्रोंकी आद्य १४ घटिका छोड़कर प्रयाण करे ।

प्रयाणमें शुभाशुभ विचार ।। अर्केक्लेशमनर्थकंचगमने सोमे च बन्धुप्रियं चाङ्गारेऽनलतस्करज्वरभयंप्राप्नोतिचार्थंबुधे ।। क्षेमारोग्य सुखंकरोतिचगुरौ ।। लाभश्चशुक्रेशुभो मन्देबन्धन हानि रोगमरणान्युक्तानिगर्गादिभि: ।।

टीका—रविवारको गमन करे तो मार्गमें क्लेश और अर्थकी हानि हो सोमवारको गमन करे तो बंधु और प्रियदर्शन मंगलमें अग्नि चोर भय और ज्वरप्राप्ति बुधवारमें द्रव्य और सुख प्राप्ति गुरुवारमें आरोग्य और सुख शुक्रवारमें लाभ और शुभ फलप्राप्ति शनिवारमें बन्धनरोग और मरण प्राप्ति हो ।।

होराकथन व शकुन

वारात्षष्ठस्यषष्ठस्य होरासार्द्धद्विनाडिका ।। अर्कशुक्रोबुधश्चन्द्रोमन्दोजीवोधरासुत: ।। गुर्वविवाहेगमनेचशुक्रौबोधेसौम्य:सर्वकार्येषुचन्द्र: ।। कुजेचयुद्धंरविराजसेवामन्देचवित्तंइतिहोरयोगा: ।। यस्य ग्रहस्यवारेपिकर्मकिंचित्प्रकीर्तितम् ।। तस्य ग्रहस्यहोरायांसर्वकर्मविधीयते ।।

टीका—जिस वारका होरा हो उसीमें प्रथम २ घटिका होरा उसके छठे वारको दूसरा होरा इस क्रमसे दिवसके वार होरा जानिये २ रविवारका होरा राजसेवाको शुभ द्वितीय २

शुक्रका गमनको तृतीय बुधकाज्ञानप्राप्ति चतुर्थ चंद्रका सर्वकार्यको, पञ्चम शनिका द्रव्य-संग्रहको योग्य छठा गुरुकाविवाहको सातवां मंगलका युद्धको जानिये इस प्रमाण होरा का क्रम जानिये ।। और जिस-जिस ग्रहका जो जो वार उसमें कथित कृत्य उसके होरामें कराये ।

सूर्यका होरा ।। सूर्यस्यहोरेरजकीसुवस्त्रंकुमारिकाविप्रचतुष्टयं च ।। काकत्रयंद्वौनकुलौ तथैव चाषस्तथैकोवृषभश्चगौश्च ।

टीका––रविके होरामें गमन करे तो आगे जो शकुन हो उसको कहते हैं, रजकी, वस्त्र, कुमारी, ४ ब्राह्मण, ३ काक, २ न्योला, दो चाष, एक बैल और गायके शकुन मिलें ।

चंद्रका होरा

चन्द्रस्यहोरोद्विजयुग्मकाकभेरीमृदङ्गानकुला खरोष्ट्रौ ।।
हयश्चगोमेषशुनस्तथैवपुष्पाणिवारीद्वयमेवमार्गे ।।

टीका–चन्द्रमाके होरामें गमन करे तो मार्गमें दो ब्राह्मण और काक नगारे मृदंग और न्योला गर्दभ ऊँट घोड़ा गाय मेंढा कुत्ता और पुष्प दो स्त्रियाँ ये शकुन मिलें ।

मंगलका होरा

मार्जारयुद्धंकलहः कुटुंबेरजस्वलास्त्री भवनस्यदाहः ।।
नपुंसकश्चत्रितयंद्विजश्चनग्नोविमुक्ताधरणीसुतस्य ।।

टीका––मंगलके होरामें गमन करे तो मार्जारयुद्ध अथवा स्त्रीपुरुषों का कलह अथवा रजस्वला स्त्री अथवा जलता हुआ घर किंवा नपुंसक तीन कुत्ता किंवा नग्न ब्राह्मण भेंटे ।

बुधका होरा

बुधस्यहोरेशकुनस्यसर्वःस्त्रीपुत्रयुक्तकलशस्तुपूर्णः ।।
सुचातकश्चाषगजौकुमारः पुष्पाणिनारीखलुदर्पणश्च ।।

टीका––बुधके होरामें सर्व शकुन स्त्रीपुरुषयुत, पानी भरा हुआ कलश, चातकपक्षी वा चाषपक्षी, गज किंवा बाल, पुष्प, स्त्री दर्पण ये मार्गमें मिलें ।

गुरुका होरा

गुरोर्द्विजातिर्गणिकाचधेनुः स्त्रीबालयुक्तासजलोघटस्तु ।।
ऊर्णाचकाकोनकुलोबकश्चहंसस्यराजाबहवस्तु वैश्याः ।।

टीका––गुरुके होरामें ब्राह्मण गणिका अथवा गाय पुत्रसहित स्त्री जलपूर्ण घट शाल अर्थात् ऊनवस्त्र काक न्योला बगला हंसका राजा किंवा बहुत वैश्य मिलें ।

शुक्रका होरा

शुक्रस्यहोरेगणिकाद्विजेन्द्रः काकत्रिपञ्चाथनपुंसकोवा ।।
मद्यंहिमांसंगणिकाचधेनुर्धान्यं चशूद्रत्रितयंचवैश्यः ।।

टीका––शुक्रके होरामें ब्राह्मण गणिका ३ या ५ काक नपुंसक मद्य मांस ज्योतिषी धान्य तीन शूद्र वैश्य ये मिलें ।

शनिका होरा

पतंगसूनोर्यवनश्चनग्नोरजस्वलास्त्रीमृतकस्तथैव ।।
पिशाचगृध्रौविधवाचवह्निर्नपुंसकश्चाथयुवाप्रचण्डः ।।

टीका—शनिके होरामें नग्न मुसलमान, रजास्वलास्त्री, प्रेत पिशाच, गृध्र पक्षी, विधवा स्त्री, अग्नि, नपुंसक तथा प्रचंड तरुण पुरुष ये शकुन मिलें

उत्तम प्रश्न न हो तो

मनुका वाक्य ।। गमनंप्रतिराजंस्तु सन्मुखादर्शनेन च ।।
प्रशस्तांश्चैव संभाषेत्सर्वानेतांश्चकीर्तयेत् ।।

टीका—गमनकालमें पूर्वोक्त शकुनोंका कीर्तन अर्थात उत्तम भाषण वा इनका श्रवण दर्शन न हो तो मनमें स्मरण करके गमन करे तो शुभ हो ।

वारानुसार वस्त्रधारण

रवौ नीलं बुधे पीतं कृष्णवर्णं शनैश्चरे ।।
श्वेतं गुरौभृगौ भौमेरक्तंसोमेतुचित्रकम् ।।

टीका—रविवारको नीले वस्त्र धारण करे, बुधवारको पीत, शनिवारको काले, गुरु व शुक्रको श्वेत, मंगलवारको रक्त, सोमवारमें चित्र, इस प्रकार वस्त्र, धारण करके गमन करे ।

नक्षत्रतिथिवार अनुसार दिक्शूलवर्ज्य पूर्वदिशा

मूलश्रवणशाक्रेषुप्रतिपन्नवमीषुच ।।
शनौसोमेबुधे चैव पूर्वस्यांगमनं त्यजेत् ।।

टीका—मूल श्रवण ज्येष्ठा ये नक्षत्र प्रतिपदा नवमी तिथि और शनि बुधवार इनमें पूर्व दिशाको गमन न कीजिये ।

दक्षिणदिशा ।। पूर्वाभाद्रपदाश्विन्यौपञ्चमीचत्रयोदशी ।।
गुरुर्धनिष्ठार्द्राचैवयाम्येसप्तविवर्जयेत् ।।

टीका—पूर्वाभाद्रपद अश्विनी नक्षत्र और पंचमी त्रयोदशी तिथि गुरुवार धनिष्ठा इनमें दक्षिण दिशाको गमन न कीजिये ।

पश्चिम ।। रोहिण्यांचतथापुष्येषष्ठीचैवचतुर्दशी ।।
भौमार्कगुरुवारेषुनगच्छेत्पश्चिमांदिशम् ।।

टीका—रोहिणी पुष्यनक्षत्र षष्ठी चतुर्दशी तिथि रवि गुरु,वार इनमें पश्चिम दिशाको गमन न कीजिये ।

उत्तर ।। करेचोत्तरफाल्गुन्यांद्वितीयां दशमीं तथा ।।
बुधेरवौ भौमवारे न गच्छेदुत्तरांदिशम् ।।

टीका—हस्त उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र २ ।१० । तिथि बुध रवि भौम इनमें उत्तरदिशाको गमन न कीजिये ।

विदिक्शूल ।। ईशान्यांज्ञेशनौशूलआग्नेय्यांगुरुसोमयोः ।।
वायव्यांभूमिपुत्रेतुनैर्ऋत्यांशुक्रसूर्ययोः ।।

टीका––वारानुसार विदिशाओंका शूल होता है उसमें गमन न कीजिये, बुध और शनिवारमें ईशान्य दिशाको, गुरु और सोमवारमें आग्नेयको और मंगलमें वायव्यको, शुक्र और रविवारमें नैर्ऋत्यको गमन वर्जित है।

शूलदोषनिवारणार्थ भक्षण

सूर्यवारेघृतंपीत्वा गच्छेत्सोमेपयस्तथा ।। गुडमङ्गारवारे तु बुधवारेतिलानपि ।। गुरुवारेदधिज्ञेयं शुक्रवारेयवानपि ।। माषान्भुक्त्वाशनेर्वारे शूलदोषोपशान्तये ।।

टीका––रविवारको घी, सोमवारको दूध पीवे, मंगलवारको गुड़, बुधको तिल गुरुको दधि, शुक्रको यव, शनिवारको उडदकी वस्तु भक्षण करके गमन करे।

कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जित कर्म

शय्यावितानप्रेताग्निक्रियाकाष्ठतृणाजिनम् ।।
याम्यदिग्गमनंकुर्यान्नचन्द्रेकुम्भमीनगे ।।

टीका––पलंग बुनवाना और प्रेताग्नि क्रिया और तृणकाष्ठा दिसंग्रह और दक्षिणको गमन ये सकल कर्म कुंभ और मीनके चंद्रमामें वर्जित हैं।

संमुखचंद्रविचार ।। करणभगणदोषंवारसंक्रान्तिदोषंकुतिथिकुलिकदोषंवामयामार्द्धदोषम् ।। कुजशनिरविदोषंराहुकेत्वादिदोषंहरतिसकलदोषंचन्द्रमाः संमुखस्थः ।।

टीका––करण नक्षत्र वार संक्रांति कुतिथि कुलिक यामार्द्ध मंगलशनि रवि राहु आदि दोषोंको सन्मुखस्थ चंद्रमा गमन करनेसे दूर करता है।

दिशानुसार संमुखचंद्रमा विचार

मेषेचसिंहेधनुपूर्वभागेवृषेचकन्यामकरेचयाम्ये ।। तुलेचकुम्भे मिथुनेप्रतीच्यांकर्कालिमीनेदिशिचोत्तरस्याम् ।। फल ।। संमुखश्चार्थलाभायदक्षिणेसुखसंसंपदः ।। पृष्ठतः प्राणनाशाय वामेचन्द्रेधनक्षयः ।।

टीका––मेष सिंह धन इन राशियोंका चंद्रमा पूर्वमें है और वृष कन्या मकरका दक्षिणमें, तुला कुंभ मिथुनका पश्चिममें, कर्क वृश्चिक मीनका उत्तरमें वास करता है ।। फल ।। दिशानुसार सम्मुख चंद्रमा होते गमन करे तो अर्थ लाभ हो और दाहिना हो तो धनसंपत्तिकी प्राप्ति हो और पृष्ठभागमें चंद्रमा हो तो प्राणनाश और वामभागी हो तो धनक्षय जानिये।

कालवेलाविचार ।। पूर्वाह्लेचोत्तरांगच्छेत्प्राच्यांमध्याह्नके तथा ।।
दक्षिणे अपराह्लेतुपश्चिमेअर्धरात्रके ।।

टीका––दिवसके प्रथम प्रहरमें उत्तरको, दूसरे प्रहरमें तथा मध्याह्नमें पूर्वको, तीसरे प्रहरमें दक्षिणको और अर्द्धरात्रिमें पश्चिमको गमन करे।

योगिनीवास ।। प्रतिपन्नवमीपूर्वेद्वितीयादशचोत्तरे ततीयैकादशीवह्नौचतुर्द्वादशिनैंऋते ।। पञ्चत्रयोदशीयाम्येषष्ठी भूतं च पश्चिमे । सप्तमीपूर्ववायव्ये अमावस्याष्टमीशिवे ।।फल।। पृष्ठेचशिवदाप्रोक्तावामेचैवविशेषतः ।। योगिनीसा भवेन्नित्यंप्रयाणेशुभदा नृणाम् ।।

टीका—प्रतिपदा और नवमीको पूर्वमें द्वितीया और दशमीको उत्तरमें तीज और एकादशीको आग्नेयमें चतुर्थी और द्वादशीको नैर्ऋत्यमें पंचमी और त्रयोदशीको दक्षिणमें और षष्ठी और चतुर्दशीको पश्चिममें सप्तमी और पूर्णिमाको वायव्यमें अमावस्या और अष्टमीको ईशान्यमें इस प्रकारसे योगिनी का वास जानिये ।। फल ।। पृष्ठभागी अथवा वामभागी हो तो शुभ जानिये ।

वारानुसार कालराहुका वास ।। अर्कोत्तरेवायुदिशाचसोमे भौमे प्रतीच्यां-बुधनैर्ऋतेच ।। याम्येगुरौवह्निदिशाचशुक्रेमन्देचपूर्वेप्रवदन्तिकालम् ।।

टीका—रविवारको उत्तरमें सोमवारको वायव्यमें मंगलको पश्चिममें बुधवारको नैर्ऋत्यमें गुरुवारको दक्षिणमें शुक्रवारको आग्नेयमें शनिवारको पूर्वमें इस प्रमाणसे कालराहु वार अनुसार जानिये ।

फलका श्लोक ।। रविदिनगुरुपूर्वेसोमशुक्रेचयाम्येवरुणदिशितु भौमेचोत्त-रेसौरिसंस्थे । प्रतिदिनमितिमत्वाकालराहुर्दिशानांसकलगमनकार्येवामपृष्ठेच-सिद्धिः।।

टीका—रवि अथवा गुरु इन वारोंमें पूर्वको गमन करे तो कालराहु वाम पृष्ठभागी जानिये उसमें गमन करे तो सर्वकी सिद्धि हो, सोम शुक्रमें दक्षिणको गमन करे, भौमवारमें पश्चिमको, शनिवारमें उत्तरको गमन करे तो कार्यसिद्धि हो ।

क्षुधितराहु ।। इन्द्रेवायौयमेरुद्रेतोयेग्नौशशिरक्षसोः ।। यामार्द्धं क्षुधितोराहु-र्भ्रमत्येवदिगष्टके ।। नतिथिर्नचनक्षत्रंनयोगोनच चन्द्रमाः ।। सिद्ध्यन्तिसर्वका-र्याणियात्रायांदक्षिणेरवौ ।।

टीका—प्रथम यामार्द्धमें क्षुधितराहु पूर्वका जानिये, द्वितीयमें वायव्यको, तृतीयमें दक्षिण को, चतुर्थमें ईशान्यको, पंचममें पश्चिमको, षष्ठमें आग्नेयको सप्तममें उत्तरको, अष्टम यामार्द्धमें नैर्ऋत्यको, इस प्रमाणसे अष्ट दिशाओंमें भ्रमण करता है परंतु दक्षिण भागमें स्थित रवि विचारकर गमन करे तो तिथि नक्षत्रादिकका दोष जाता रहे और समस्तकार्य सिद्धि हो ।

काल ज्ञान ।। कालः पलंपातकलोहपातवडवानलाः खड्गकचोलिका-न्तिकाः ।। नखाश्चतुर्विंशति षट्तथादिग्रुद्राधृतिर्वेदगुणाःक्रमेण ।। तिथ्यायुतंवै-वसुभाजितंचशेषश्चकालोमुनयो वदन्ति ।। फल ।। कालंच पृष्ठेकलसंमुखेनपातं-चलोहंवडवांचपृष्ठे ।। खड्गं चाग्रेकचंचवामेकान्तिश्चयोज्यादिशिदक्षिणस्याम्।।

टीका––कालोंके नाम ।। १ काल[२०] २ पल[२८] ३ पातक[१] ४ लोहपात[२२] ५ वडवानल[२९] खड्ग[१] ७ कवच[४] ८ कांति[३] ऐसे आठ नाम उनके ऊपर लिखे अंक है उनमें गमन कालकी जो तिथि है उसको एक अंकमें मिलावे आठकाभाग दो शेष अंक रहें उस दिशाको काल जानिये इस प्रकार पूर्वादि आठ दिशा क्रमसे जानिये पृष्ठ भागी काल शुभ सम्मुखका फल शुभ पृष्ठभागमें पातक लोह और वडवानलमें तीनों शुभ अग्रभागमें खड्गशुभ वाम भागमें कवच शुभ दक्षिण भागोंमें कांति शुभ ऐसे दिशानुसार शुभ विचारकर उस दिशाको युद्धमें अथवा यात्रामें गमन करे तो शुभ हो ।

पंथाराहुचक्र ।। स्युधर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थेयाम्याज्याङ्घ्रीन्द्रर्णादितिपितुपवनोडून्यथाभोनिकामे ।। वह्न्याद्राधन्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षोऽथरोहिण्यर्यम्णाब्जेन्दुविश्वन्तिमभदिनकरर्क्षाणिपन्थादिराहौ ।।

धर्म	अश्विनी	पुष्य	आश्लेषा	विशाखा	अनुराधा	धनिष्ठा	शततारका
अर्थ	भरणी	पुनर्वसु	मघा	स्वाती	ज्येष्ठा	श्रवण	पूर्वाभाद्रपदा
काम	कृत्तिका	आर्द्रा	पूर्वा	चित्रा	मूल	अभिजित्	उत्तराभाद्रपदा
मोक्ष	रोहिणी	मृग	उत्तरा	हस्त	पूर्वाषाढा	उत्तराषा.	रेवती

टीका––नक्षत्र २८ उनके भाग ४ उनके नाम, प्रथम धर्ममार्गके नक्षत्र ७ दूसरे अर्थ मार्गके नक्षत्र ७ तृतीय काम मार्गके नक्षत्र ७ चतुर्थ मोक्षमार्गके नक्षत्र७ इस प्रकार चार मार्गों के नक्षत्र जानिये उनमें मार्गके नक्षत्रमें सूर्य हो तो चंद्रमा चार वर्गोंके नक्षत्रमें फिरता है उनके फल कहते हैं ।

धर्ममार्गीके फल ।। धर्ममार्गगतेसूर्ये अर्थांशेचंद्रमा यदि ।।
तदाशत्रु भयंतस्यज्ञेयंतुविबुधैः शुभम् ।।

टीका––धर्ममार्गी नक्षत्रमें सूर्य और अर्थमार्गी नक्षत्रमें चंद्रमा हो तो गमन करनेसे मार्गमें शत्रुभय हो ।

धर्ममार्गगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ।।
संहारश्चभवेत्तत्र भङ्गोहानिः प्रजापते ।।

टीका––धर्ममार्गी नक्षत्रोंके सूर्य और चंद्रमा दोनों हों तो संसार भंग हानि प्राप्ति हो ।

धर्ममार्गगतेसूर्येकामांशेचन्द्रमायदि ।।
विग्रहोदारुणंचैवचौराकुलसमुद्भवम् ।।

टीका––धर्ममार्गीमें सूर्य और काममार्गी नक्षत्रोंका चंद्रमा हो तो निग्रह दारुण और चोरभय हो ।

धर्ममार्गे गतेसूर्येचन्द्रेमोक्षगतेयदि ।।
गृहलाभोभवेत्तस्य विज्ञेयो नात्रसंशयः ।।

टीका—धर्ममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल गृहलाभ व मार्गसुख हो ।

अर्थमार्गके फल

अर्थमार्गेगतेसूर्येचन्द्रे धर्मस्थितेयदि ।।
गजलाभो भवेत्तस्य तत्रश्रीः सर्वदासुखी ।।

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा ऐसे योगका फल लाभ और लक्ष्मीप्राप्ति और सर्वदा सुखी हो ।

अर्थमार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ।।
प्रथमंजायतेकार्यंतत्रभङ्गो भविष्यति ।।

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और चंद्रमा दोनों हों तो प्रथम कार्यसिद्धि हो और पीछे भंग हो ।

अर्थमार्गेगतेसूर्ये चन्द्र कामांशसंस्थिते ।।
सर्वसिद्धिर्भवेत्तस्य जानीयान्नात्रसंशयः ।।

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और काममार्गी चंद्रमा हो तो ऐसे योगका फल सर्व कार्यसिद्धि हो ।

अर्थमार्गगते सूर्येचन्द्रेमोक्षस्थितेयदि ।।
भूमिलाभो भवेत्तस्य हर्षयुक्तः सुखी भवेत् ।।

टीका—अर्थमार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा ऐसे योगोंका फल भूमिलाभ व हर्षयुक्त सुख मार्गमें स्थिरता पाये ।

काममार्गीके फल ।। काममार्गेगतेसूर्येचन्द्रे धर्मेचसंस्थिते ।।
गजाश्वाश्चापिलभ्यन्तेराजसन्मानसंभवात् ।।

टीका—काममार्गी सूर्य और धर्ममार्गी चंद्रमा हो तो हाथी घोड़ा भूमि इनका लाभ और राजसन्मान पावे ।

काममार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ।।
सकलंजायतेतस्यविघ्नभंगोविनिर्दिशेत् ।।

टीका—काममार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा ऐसा योग हो तो सब विघ्नोंका नाश हो ।

काममार्गेगतेसूर्येचन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ।।
विग्रहंदारुणंचैवकार्यनाशंविनिर्दिशेत् ।।

टीका—काममार्गी सूर्य और चन्द्रमा हो तो विग्रह और कार्यनाश हो ।

काममार्गगते सूर्येचन्द्रे मोक्षगतेऽपिवा ।।
राज्ञोलाभोभवेत्तस्य स्वर्णलाभंविनिर्दिशेत् ।।

टीका—काममार्गी सूर्य और मोक्षमार्गी चंद्रमा हो तो राजासे लाभ सुवर्णलाभ हो ।

मोक्षमार्गीके फल ।। मोक्षमार्गेगते सूर्ये चन्द्रेधर्मस्थितेयदि ।।
हेमलाभो भवेत्तस्य सर्वकार्यं प्रसिद्धयति ।।

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य व धर्ममार्गी चंद्रमा हो तो हेमलाभ और सर्वकार्य सिद्ध हो ।

मोक्षमार्गे गतेसूर्ये अर्थांशे चन्द्रमायदि ।।
विफलंतस्यकार्यंचचोरराजरिपोर्भयम् ।

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य और अर्थमार्गी चंद्रमा हो तो राजा और चोरसे तथा रिपुसे भय हो ।

मोक्षमार्गेगते सूर्येचन्द्रेकामस्थितेयदि ।।
सर्वसिद्धिमवाप्नोतिकार्येचजयमेवच ।।

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य काममार्गी चंद्रमा हो तो सर्व कार्यसिद्धि और जयप्राप्ति हो ।

मोक्षमार्गेगतेसूर्ये चन्द्रेतत्रैवसंस्थिते ।।
विग्रहंदारुणंचैवविघ्नस्तस्य भविष्यति ।।

टीका—मोक्षमार्गी सूर्य चंद्र हो तो दारुण विग्रह, विघ्न प्राप्ति हो ।

पन्थाराहु व कर्म करने योग्य ।। यात्रायुद्धेविवाहेच प्रवेशे नगरादिषु ।।
व्यापारेषुचसर्वेषुपन्थाराहुप्रशस्यते ।।

टीका—यात्रामें युद्धमें और विवाहमें और नगरादि प्रवेशमें और व्यापार अर्थात् सर्ववस्तुके लेनदेनमें शुभदायक होता है ।

गर्गादिकोंका मुहूर्त ।। उषः प्रशस्यतेगर्गः शकुनंचबृहस्पतिः ।।
अङ्गिरामनउत्साहोविप्रवाक्यं जनार्दनः ।।

टीका—गर्गजीके मतसे रात्रिकी पिछली ५ घटी उषःकाल गमनमें शुभ और वृहस्पतिके मतसे शकुन शुभ और अंगिराके मतसे मनका उत्साह शुभ और जनार्दनके मतसे ब्रह्मवाक्य शुभ जानिये ।

शुभाशुभवाहन ।। आत्मनोजन्मनक्षत्राद्दिननक्षत्रमेव च ।। एकीकृत्वाहरेद्भागंनन्दशेषेचवाहनम् ।। रासभोऽश्वोगजोमेषोजम्बुकः सिंहसंज्ञकः ।। काकश्चैवमयूरश्चहंसइत्येववाहनम् ।। फल ।। रासभेअर्थनाशश्चधनलाभश्चघोटके ।। लक्ष्मीप्राप्तिर्गजाख्ये हि मेषेचमरणंध्रुवम् ।। जम्बुकेस्वल्पलाभश्चसर्वासिद्धिश्चसिंहके ।। काकेचनिष्फलंकार्यंमयूरेचसुखावहम् ।। हंसे तुसर्वसिद्धिः स्याद्वाहनानांफलंस्मृतम् ।।

टीका—अपने जन्मनक्षत्रसे दिवसके नक्षत्रतक गिने नवका भाग दे शेष बचे सो वाहन जानिये १ रहे तो गर्दभ उसका फल अर्थनाश २ बचे तो घोड़ा धनलाभ हो ३ बचे तो हस्ती लक्ष्मी ४ बचे तो मेंढा मरण ५ बचे तो जंबुक स्वल्पलाभ ६ बचे तो सिंह सर्वकार्यसिद्धि ७ बचे तो काक निष्फल ८ बचे तो मोर सुख प्राप्ति ९ बचे तो हंस सर्वसिद्धि जानिये ।

अंकमुहूर्त

तिथयः पक्षगुणिताः सप्तभिर्भाजिताश्चताः ।।
वाराः स्युर्वह्निगुणिता वसुभिश्चैवभाजिताः ।।
चतुर्गुण्यानिभान्यङ्गभाजितानियथाक्रमम् ।।

टीका—जिस तिथिमें गमन करना चाहे उसे १५ से गुणा करके सातका भाग द और जो वार हो उसे तीन गुणाकरे आठका भाग दे और जो नक्षत्र हो उसे चार गुणा करके ६ का भाग दे जो शेष बचे उसका फल कहेंगे ।

फल ।। पीडास्यात्प्रथमेशून्येमध्यशून्ये महद्भयम् ।।
अन्त्यशून्येतुमरणं त्र्यङ्केचविजयीभवेत् ।।

टीका—प्रथमतिथिके भागका शून्य वचे तो पीडा और वारके भागमें शून्य बचे तो वहुत भय हो और नक्षत्रके भागमें शून्य हो तो मरण और तीनों जगह अंक बचे तो विजय हो ।

भ्रमणाडलमुहूर्त

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंसप्तभिर्भागमाहरेत् ।। त्रिषट्कभ्रमणंचैवद्विसप्तमहदाडलम् ।। प्रथमपञ्चचत्वारिआडलोनास्तिनिश्चितम् ।। आडलेताडनंप्रोक्तं भ्रमणेकार्यनाशनम् ।।

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिने सातका भाग दे ३ । ६ बचे तो भ्रमण और २ । ७ बचे तो महदाडल ये ताडनामें जानिये और १ । ४ । ५ बचे तो आडल नहीं होता ये गमनमें उक्त हैं ।

हैवरमुहूर्त

सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंपक्षादितिथिवारयुक् ।।
नवभिस्तु हरेद्भागंसप्तशेषंतुहैवरम् ।।

टीका—सूर्यनक्षत्रसे चंद्रके नक्षत्र तक गिनकरपक्ष तिथिवार मिलाकर नवका भाग देनेसे ७ बचे तो हैवर योग होता है जो यात्रामें शुभ है ।

घबाडमुहूर्त ।। सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रंत्रिगुणतिथिमिश्रितम् ।।
नवभिस्तुहरेद्भागंत्रीणिशेषंघबाडकम् ।।

टीका—सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रतक गिने तिगुना कर तिथि मिलाकर नवका भाग दे तीन शेष बचें तो घबाड मुहूर्त जानिये ।

वारानुसारस्वरशकुन

गुरौशनौरवौभौमेशुभोवैदक्षिणः स्वरः ।। अन्यवारेषुवामस्तु स्वरश्चैव शुभःस्मृतः ।। निर्गमेवामतः श्रेष्ठः प्रवेशेदक्षिणः शुभः ।। यः स्वरः सचनासाग्रेयोगिनांमतमीदृशम् ।।

टीका—गुरु शनि रवि भौम इन चारों वारोंमें दक्षिण स्वर चले तो प्रवेश करनेमें

शुभ हो और सोम बुध शुक्र वारोंमें वामस्वर चल तो गमनको श्रेष्ठ ऐसे स्वरविचार योगियों के मतसे कहा है ।

वारानुसार छायाशकुन

अष्टौपादाबुधेर्स्युनवधरणिसुतेसप्तजीवेपदानि । ज्ञेयंचैकादशार्केशनिशशिभृगुषुप्रोक्तमर्थेचतुष्कम् ।। तस्मिन्कालेमुहूर्तेसकलगुणयुतेकार्यसिद्धिः शुभोक्ता । नास्मिन्पञ्चाङ्गशुद्धिर्नखलुशशिबलंभाषितंगर्गमुख्यैः ।।

टीका—आठ पद अपनी छाया हो तो बुधवारमें गमन करे नवपद हो तो भौमवारको गमन कीजिये ७ पद हो तो गुरुको ११ पद हो तो सूर्यवारको गमन करे शनि सोम शुक्रमें चार २ पद हो तो गमन करे यह सर्व गुणयुक्त सिद्धि मुहूर्त है इसमें चंद्रमा आदि न देखे ।

काकशब्दशकुन ।। काकस्यवचनंश्रुत्वापादच्छायांतुकारयेत् ।। त्रयोदशयुतांकृत्वाषड्भिर्वैभागमाहरेत् ।। फल ।। लाभःखेदस्तथा सौख्यं भोजनंचतथागमः ।। अशुभंचक्रमेणैव गर्गस्यवचनं तथा ।।

टीका—काकका शब्द सुनकर अपने पैरोंकी छाया मापकर १३ और मिलाकर ६ का भाग दे शेष बचे उसका फल १ बचे लाभ २ खेद ३ सुख ४ भोजन ५ धनप्राप्ति पूरा भाग लग जाय तो अशुभ ये गर्ग मुनिके वचन हैं ।

पिंगलशब्दशकुन ।। उल्लासः किलिबलेचैर्वाचिलिपल्यांभोजनंतथा ।। बन्धनंखिट्टिखिट्टिस्यात्कुर्कुर्शब्दैर्महद्भयम् ।।

टीका—जो किल्बिल शब्द हो तो उल्लास हो और चिल्बिल शब्द हो तो भोजन प्राप्ति खिटखिट शब्द हो तो बंधन कुर्कुर्शब्द हो तो महाभय हो ।

छिक्कानुसार पादच्छायाशकुन

बुधश्छिक्कारवंश्रुत्वापादच्छायांचकारयेत् ।। त्रयोदशयुतांकृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ।। फल ।। लाभः सिद्धिर्हानिशोकौभयंश्रीर्दुःखनिष्फले ।। क्रमेणैवफलेज्ञेयंगर्गेणचयथोदितम् ।।

टीका—छींकका शब्द सुनकर अपने पैरकी छाया मापे १३ मिलावे ८ का भाग दे शेष रहे उसका फल १ रहे तो लाभ २ सिद्धि ३ हानि ४ शोक ५ भय ६ लक्ष्मी ७ दुःख ० निष्फल ऐसे गर्गमुनि कहते हैं ।

छींकशकुन

छिक्काप्रश्नंप्रवक्ष्यामिपूर्वस्यामशुभंफलम् ।। आग्नेय्यांशोकदुःखंस्यादरिष्टंदक्षिणेतथा ।। नैर्ऋत्यांचशुभंप्रोक्तंपश्चिमेमिष्टभक्षणम् ।। वायव्येधनलाभस्तु उत्तरेकलहस्तथा ।। ईशान्यांचशुभंज्ञेयमात्मछिक्कामहद्भयम् ।। ऊर्ध्वंचैवशुभंज्ञेयंमध्यंश्चैवमहद्भयम् ।। आसनेशयनेचैवदानेचैवतुभोजने ।। वामांगेपृष्ठतश्चैवषट्छिक्काश्च शुभावहा ।।

टीका--दिवसानुसार छींक फल । पूर्वकी छींक अशुभ आग्नेयकी शोक दुःख करे दक्षिणकी अरिष्ट करे नैर्ऋत्यकी शुभ पश्चिमकी मिष्टभक्षण वायव्यकी धनदायक उत्तर की कलहकृत् ईशान्यकी शुभदायक और अपनी छींक बहुत भय दे ऊपरकी छींक शुभ मध्यकीमें भी बड़ा भय आसनमें सोनेमें दानमें भोजनमेंबांई ओर अथवा पीछे हो तो ६ शुभ जानिये ।

पल्लीशब्दशकुन

वित्तंब्रह्मणिकार्यसिद्धिमतुलां शक्रेहुताशेभयंयाम्येमित्रवधःक्षयश्चनिर्ऋतेलाभः समुद्रालये ।। वायव्यांवरमिष्टमन्नमशनंसौम्येऽर्थलाभस्तथाईशान्यांग्रहगोधिकार्य-मतुलंसर्वत्रभूमौभयम् ।।

टीका--पूर्वमें पल्ली शब्द करे तो शकुन वित्त ब्रह्मसंबंधी कार्य विशेष धनप्राप्ति अग्निमें अग्निका भय हो दक्षिणमें मित्रवध हो नैर्ऋत्यमें क्षय पश्चिममें शब्द हो तो लाभ वायव्यमें सुंदर मीठा भोजन उत्तरमें धनप्राप्ति ईशान्यमें कार्यसिद्ध और भूमिमें हो तो भय करे ।

पल्लीपतन और सरठका आरोहण

राज्यंतुशिरसिज्ञेयं ललाटेबन्धुदर्शनम् ।। भ्रूमध्येराजसन्मानमुत्तरोष्ठेधन-क्षयम् ।। अधरोष्ठेधनैश्वर्यंनासान्तेव्याधिपीडनम् ।। आयुष्यं दक्षिणेकर्णेबहुलाभ-स्तुवामके ।। अक्षणोस्तुबन्धनंज्ञेयंभुजेभूपतितुल्यता ।। राजक्षोभंतथावामेकण्ठेशत्रु-विनाशनम् ।। स्तनद्वयेचदुर्भाग्यमुदरेमण्डनंशुभम् ।। प्रजानाशः पृष्ठदेशेजानुजंघे-शुभावहम् ।। करद्वयेवस्त्रलाभःस्कन्धयोर्विजयीभवेत् ।। नाभौबहुधनंप्रोक्तमूर्वो-श्चैव हयादिकम् ।। दक्षिणेमणिबन्धेचमनस्तापोधनक्षयः ।। मणिबंधेतथा वामे-कीर्तिवृद्धिधनप्रदम् ।। नखेषुधान्यलाभंचवक्त्रेमिष्टान्नभोजनम् ।। गुल्फयोर्बन्ध-नंज्ञेयंकेशांतेमरणंध्रुवम् ।। अध्वातुदक्षिणेपादेवामेबन्धुविनाशनम् ।। स्त्रीनाशः स्यात्पादमध्येपादान्तेमरणं भवेत् ।। पल्ल्याःप्रपतनेज्ञेयंसरठस्याधिरोहणे ।। यात्रो-द्युक्तमनुष्यस्यैतच्छुभाशुभसूचकम् ।। तिलमाषादिदानंचस्नात्वादेयंद्विजन्मने ।। पिनाकिनं नमस्कृत्यजपेन्मन्त्रंषडक्षरम् ।। शतंसहस्रमथवा सर्वदोषनिबर्हणम् ।। शिवालयेप्रदद्याद्वैदीपंदोषोपशांतये ।।

टीका--मनुष्यों के गमन समय में अंगपर पल्ली अर्थात् छिपकली गिरे अथवा गिरगिट चढ़े तो शुभाशुभसूचक फल स्थानानुसार कहा है ।

१ शिर राज्यप्राप्ति	११ वामबाहु राज्यभय	२१ ऊरुपर घोडावाहन
२ कपाल बंधुदर्शन	१२ कंठपर शत्रुनाश	२२ दाया पहुँचा धनक्षय
३ भ्रुकुटीराजसन्मान	१३ स्तनोंपर दुर्भाग्य	२३ वायां मणिबंध कीर्ति
४ उतरोष्ठ धनक्षय	१४ उदरपर शुभमंडन	२४ नख धनलाभ
५ अधरोष्ठ धनऐश्वर्य	१५ पृष्ठ बुद्धिनाश	२५ मुखपर मिष्टान्न भोजन
६ नासिकाव्याधिपीडा	१६ जानुओंपर शुभ	२६ टकनों पर बंधन

७ दा० कान आयुष्य	१७ जंघाओंपर शुभ	२७ केशोंपर मरण
८ वा० कान बहुतलाभ	१८ हाथोंपर वस्त्रलाभ	२८ दा० पांव मार्ग चलना
९ नेत्रोंपर बंधन	१९ कांधोंपर विजय	२९ वामपाद बंधुनाश
१० बाहु राजासम	२० नाभिपर बहुधन	३० मध्यपाद स्त्रीनाश

छिपकली अंगपर गिरे अथवा गिरगट चढ़े तो सचैल स्नान करके तिल उडद दान दे और ब्राह्मणको दक्षिणादान दे और शिवको नमस्कार करके एकसौ अथवा एक हजार बार षडक्षर शिवमंत्र जपे और शिवके मंदिरमें घृतका दीपक प्रज्वलित करे तो दोष निवृत हो ।

अंगस्फुरण—मनुः ।। ब्रूहिमेत्वंनिमित्तानिअशुभानिशुभानिच ।।
सर्वधर्मभृतांश्रेष्ठत्वंहिसर्वविबुद्धचसे ।।

टीका—मनु मत्स्यप्रति प्रश्न करते हैं, हे धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ ! शुभाशुभ फल वर्णन कीजिये ।

अंगस्यदक्षिणेभागे प्रशस्तंस्फुरणंभवेत् ।।
अप्रशस्तंतथावामे पृष्ठस्यहृदयस्य च ।।

टीका—अंगस्फुरण दक्षिणभागमें शुभ और वामभाग वा पृष्ठभाग वा हृदयमें अशुभ ।

अंगानांस्पदनंचैव शुभाशुभविचेष्टितम् ।। तन्मेविस्तरतोब्रूहि येनस्यात्तद्विधोभुवि।। मत्स्य उवाच ।। पृथ्वीलाभोभवेन्मूर्ध्निललाटेरविनन्दन ।। स्थानवृद्धिसमायाति भ्रूनसोः प्रियसंगमः।। भृत्यलब्धिश्चाक्षिदेशे दृगुपान्तेधनागमः।। उत्कण्ठोपगमेमध्ये दृष्टंराजन्विचक्षणैः दृग्बन्धनेसङ्गरेच जयंशीघ्रमवाप्नुयात् ।। योषिल्लाभोपाङ्गदेशे श्रवणान्तेप्रियश्रुतिः ।। नासिकायांप्रीतिसौख्यं प्रियाप्तिरधरोष्ठयोः ।। कण्ठेतु-भोगलाभः स्याद्भोगवृद्धिरथांसयोः ।। सुहृत्श्रेष्ठश्चबाहुभ्यां हस्तेचैवधना-गमः ।। पृष्ठेपराज्जयस्संधौ जयोवक्षस्थलेभवेत् ।। कुक्षिभ्यां प्रतिरुद्दिष्टा स्त्रियाः प्रजननंभगे ।। स्थानभ्रंशोनाभिदेशे अन्त्रे चैवधनागमः ।। जानु-संधौपरैःसंधिर्बलवद्भिर्भवेन्नृप ।। एकदेशे भवेत्स्वामी जंघाभ्यांरविनन्दनः ।। उत्तमस्थानमाप्नोति पद्भ्यांप्रस्फुरणेनृप ।। अलाभंचाध्वगमनं भवेत्पादतलेनृप ।।

टीका—मनु प्रश्न करते हैं कि अंगमेंस्थान स्फुरणका विचार शुभाशुभ फल विस्तार सहित वर्णन कीजिये ।

१ मस्तकस्फुरण पृथ्वीलाभ हो	१४ दोनोंबाहु मित्रका मिलाप
२ ललाटस्फुरण स्थानकी वृद्धि	१५ दोनों हाथ धनप्राप्ति
३ भ्रुकुटीके मध्यमें प्रियदर्शन	१६ पृष्ठमें दूसरेसे जयहो
४ नेत्रोंमें भृत्य मिले	१७ ऊरुमें जयप्राप्ति
५ नेत्रोंकी कोरोंमें जयप्राप्ति हो	१८ कुक्षिमें प्राप्ति हो
६ कंठमध्ये राज्यप्राप्ति हो	१९ शिश्नइंद्री स्त्रीप्राप्ति हो
७ दृग्बंधन युद्धमें जय	२० नाभिमें स्थानभ्रंश
८ अपांगदेशमें स्त्रीलाभ हो	२१ आँतोंमें धनप्राप्ति

९ कर्णांतमें प्रियमित्रकी सुधि
१० नासिकामें प्रीतिसुख हो
११ अधरोष्ठ प्रियवस्तुप्राप्ति
१२ कंठमें ऐश्वर्यप्राप्ति
१३ कंधोंमें भोगवृद्धिप्राप्ति
२२ जानुसंधिमें बलीशत्रुओंसे संधि
२३ जंघामें एकदेशके स्वामी
२४ पादोंमें उत्तमस्थानमें मान्यता
२५ तलुओंमें अलाभ और गमन

स्त्रियोंका अंगस्फुरण

लाञ्छनंपीठकंचैव ज्ञेयंस्फुरणवत्तथा ।। विपर्ययेणविहितः सर्वस्त्रीणांविपर्ययः ।। दक्षिणेपिप्रशस्तेऽङ्गं प्रशस्तंस्याद्विशेषतः ।।

टीका--स्त्रियोंका अंगस्फुरण भ्रू मध्यमें तो पुरुषोंहीके समान है परंतु और सब अंग पुरुषोंसे विपरीत अर्थात् वाम अंग स्त्रियोंका शुभ कहा है ।

अनन्यथासिद्धिरजन्मनस्य फलस्यशस्तस्यचनिन्दितस्य ।।
अनिष्टनिद्रोपगमेद्विजानां कार्यसुवर्णनतुतर्पणंस्यात् ।।

टीका--हे राजा ! अनिष्ट फलोंके निवारण हेतु ब्राह्मणोंसे तर्पण कराये सुर्वण दान करे तो अंगस्फुरणका दोष जाता रहे ।

नेत्रस्फुरण ।। स्नेत्रस्योर्ध्वंहरतिसकलं मानसंदुःखजालंनेत्रोपान्ते द्विशलिचधनं नासिकान्तेचमृत्युः नेत्रस्याधःस्फुरणमसकृत्सङ्गरेभद्रहेतुर्वामेचैतत्फलमविफलं दक्षिणेवैपरीत्यम् ।। स्त्रीणांविपर्ययः ।।

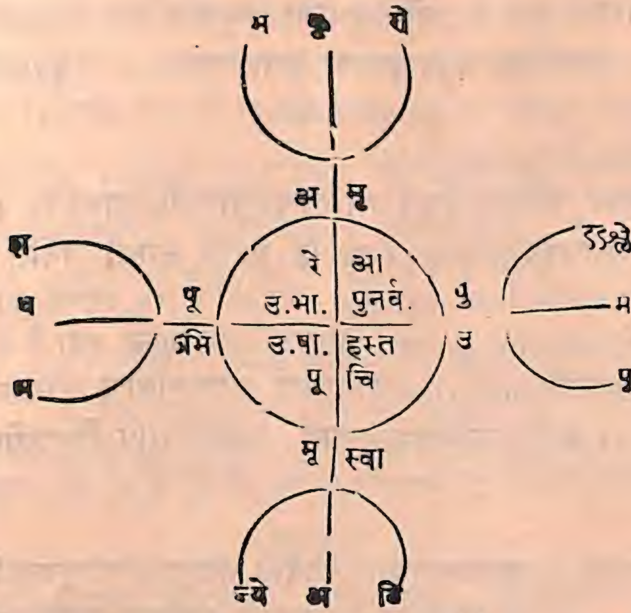
टीका--नेत्रोंके ऊर्ध्व प्रांत आदिक स्थानोंमें स्फुरण हो उसका फल कहते हैं। नेत्रके ऊपरका पलक स्फुरण हो तो मनका दुःख जाय और धनकी प्राप्ति हो और नासिकाके निकट स्फुरण हो तो मृत्यु नेत्रके नीचेकी पलकमें स्फुरण हो तो युद्धमें पराजय हो ये सर्व फल स्त्रियों के वामनेत्रके और पुरुषोंके दक्षिण नेत्रके जानो ।

त्रिशूलयंत्र ।। रोगिणश्चकुजाद्यर्क्षं दिनाद्यर्क्षंचयुद्धतः ।।
कृत्तिकागमनेदद्यादन्यत्ररविदीयते ।।

टीका--रोगीके प्रश्नका त्रिशूल मध्याग्रमें जिस नक्षत्रका मंगल हो उसका धरे और चंद्रमा जिस स्थानपर यंत्रमें हो तो फल देवे इस प्रमाणसे आगे फल जानो। युद्धमें जाना हो तो दिवसनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्र तक गिने और गमन करता हो तो कृत्तिकासे दिवस नक्षत्रतक गिने और दूसरे कर्मोंके लिये सूर्यनक्षत्रसे चंद्र नक्षत्रतक इस क्रमसे जाने ।

त्रिशूलाग्रे भवेन्मृत्युर्मध्यसंबहिरष्टकम् ।।
लाभंक्षेमं जयारोग्यं चन्द्रगर्भेषुसंमतम् ।।

टीका--त्रिशूलके अग्रभागमें दिवस नक्षत्र हो तो मृत्यु और बाहिरी अष्टकमें हो तो मध्यम मध्याष्टकमें हो तो लाभ क्षेम जय आरोग्य ये सर्व संमत जानिये ।



गमनकी लग्न ।। चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः ।।
लग्नेस्थिरेनगन्तव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ।।

टीका---चरलग्न अर्थात् मेष, कर्क, तुला, मकर ये चार और द्विस्वभाव, मिथुन कन्या धन मीनमें चार इन आठोंमें गमन करना शुभ फलदायक है और बाकी चार लग्न स्थिर हैं उनमें गमन न करे ।

लग्नका दूसरा प्रकार

लग्नेकार्मुकमेषतौलिगमने कार्यविलम्बान्नृणां पञ्चत्वंमकरे तथैव चघटे तद्वत्फलंवृश्चिके ।। सिंहेकर्कटके वृषेपरिगतः सर्वार्थसिद्धि लभेत्कन्यामीनगतस्तथैवमिथुने सौख्यं शुभान्नंवसु ।।

टीका---धन मेष तुला इन लग्नोंमें गमन करे तो कार्यमें विलंब हो और मकर कुंभ वृश्चिक ये तीन लग्न मृत्युकारक सिंह कर्क वृष इनमें कार्य सिद्ध हो कन्या मीन मिथुन ये लग्न शुभकारक अन्न और धनदायक जानिये ।

द्वादशस्थानोंके अनुसार गमनलग्नमें ग्रहबल

प्रथमस्थान ।। जन्मस्थंचाष्टमत्याज्यं लग्नंद्वादशमेवच ।।
ग्रहाणां च बलंवीक्ष्य गच्छेद्दिग्विजयं नृपः ।।

टीका---लग्न और अष्टम और द्वादशमें पापग्रह वर्जितकर ग्रहबल देखकर गमन करे तो दिग्विजय और कार्यसिद्धि हो ।

स्थानेयदास्युर्गुरुसौम्यशुक्राः सिद्धयन्तिकार्याणिचपञ्चमेऽह्नि ।।
राज्ञः पदवींसुखदेशलाभं मासस्यमध्ये ग्रहभावयुक्तम् ।।

टीका---लग्नमें गुरु अथवा बुध शुक्र हों तो पांच दिवसमें अथवा एक मासमें राज्यपद सुख अथवा देशलाभ हो ।

दूसरे स्थानके फल ।। जीवोबुधोवा भृगुनन्दनोवा स्थानेद्वितीये गमनस्यकाले ।। सुवस्त्रलाभंचतुरङ्गलाभं मासस्यमध्ये च चतुर्दशेऽह्नि ।।

टीका––दूसरे स्थानमें गुरु बुध अथवा शुक्र हों तो वस्त्र और तुरंग लाभ एक मासके मध्यमें अथवा चौदह दिवसमें हो ।

क्रूराधनस्था रविराहुभौमा सौरिश्चकेतुस्त्रिभिरेवमासैः ।।
वित्तस्यनाशंचददातिमृत्युं सत्यं हि वाक्यं मुनयो वदंति ।।

टीका––दूसरे स्थानमें रवि राहु मंगल शनि अथवा केतु इनमेंसे कोई क्रूर ग्रह हो तो ३ मासमें मृत्यु और वित्तनाश हो यह मुनीश्वरोंने सत्य वाक्य कहा है ।

तृतीय स्थानके फल ।। स्थानेतृतीये गुरुभार्गवौच सोमस्यसूनुश्च निशापतिश्च ।। करोतिकार्यसफलंचसर्वं पक्षद्वयेनापि दिनत्रयेण ।।

टीका––तृतीयस्थानमें गुरु शुक्र अथवा चंद्र बुध हो तो दो पक्ष अथवा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि हो ।

चतुर्थ स्थान ।। क्रूराश्चतुर्थेगमनेयदातु नस्युश्चशेषाशुभदाहिकार्ये ।।
तत्रापिदेवेन भवेच्चसिद्धिर्मासत्रयेणापिदशाहमध्ये ।।

टीका––क्रूर ग्रह जो कहे है उनमेंसे कोई ग्रह चतुर्थ स्थानमें हो उसे छोडकर शेष ग्रह शुभ हों तो दैवयोग से तीन मास अथवा दसवें दिवसके अंतमें कार्य सिद्ध हो ।

पंचमस्थान ।। गुरुर्भृगुश्चन्द्रबुधोयदास्याच्छुभेचलग्नेतुसुतेचयुक्ताः ।।
कुर्वन्तिकार्यस्यचसिद्धिमिष्टांमासद्वयेनापिवदन्तिसत्यम् ।।

टीका––गुरु शुक्र चंद्र अथवा बुध चारों ग्रह पंचमस्थानमें हों तो शुभ हो और दो मासमें इष्ट कार्यसिद्धि हो ।

षष्ठस्थान

जीवश्चशुक्रश्च बुधश्चषष्ठे करोतियात्रां सुफलांविलग्नात् ।।
पक्षद्वयेनापि वदन्ति सत्यं सौम्यर्क्षसंस्थः सबलश्चचन्द्रः ।।

टीका––शुक्र गुरु अथवा बुध ग्रह शुभस्थानमें हों तो यात्रा सफल और मृग नक्षत्रका चंद्रमा उस स्थानमें हो सकल कार्य एक मासमें सिद्ध हों ।

सप्तमस्थान

चेत्सप्तमस्थागुरुसोमसौम्याः कुर्वन्तियात्राविजयंनृपाणाम् ।।
सर्वेनृपास्तस्यभवन्तिवश्या मासद्वयेनापिचपञ्चभिर्दिनैः ।।

टीका––सप्तमस्थानमें गुरु अथवा सोम बुध हों तो यात्रामें विजय हो और सर्व राजा दो मास वा पांच दिवसमें वशीभूत हों ।

अष्टमस्थान

क्रूराश्चसर्वेयदिलग्नकाले मृत्युस्थितामृत्युकराभवन्ति ।।
सौम्योगुरुर्वा भृगुनन्दनश्च दीर्घायुषंमृत्युकराभवन्ति ।।

टीका––क्रूर अर्थात् शनि रवि भौम राहु केतु ये अष्टमस्थानमें हों तो मृत्युकारक और ये न हों सौम्य ग्रह हों तो आयुष्यकी वृद्धि परंतु चंद्र हो मृत्युकारक जानिये ।

नवमस्थान

धर्मस्थितायदि भवन्ति हिपापखेटाः प्रयाणकालेचतथैवचन्द्रमाः ।।
तदाजयंवैसबलेचचन्द्रे मासत्रयेणापि दिनैश्चतुर्भिः ।।

टीका––नवम स्थानमें पापग्रह तथा चंद्र हो और चंद्र सबल हो तो तीन मास अथवा चार दिवसमें कार्यसिद्धि हो ।

धर्मस्थान ।। धर्मस्थितौवायदिजीवशुक्रौ सोमस्यसूनुर्यदिलग्नकाले ।।
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा कार्यस्यसिद्धिश्चभवेच्चलाभः ।।

टीका––धर्म स्थानमें गुरु शुक्र अथवा सोम बुध ये ग्रह चर अथवा स्थिर लग्नमें स्थित हों तो कार्यसिद्धि और लाभ हो ।

कर्मस्थान

कर्मस्थिताः पापखगास्तुसौम्याः कुर्वन्तिकार्यंशनिर्वाजिताश्च ।।
लग्नेचरेवायदिवास्थिरेवा मासत्रयेणापिचचैकमासः ।।

टीका––दशमस्थानमें शनि आदि पापग्रहोंको छोड़कर सौम्य ग्रह चर अथवा लग्नमें हों तो उक्त तीन मासमें कार्यसिद्धि हो ।

लाभस्थान

लाभस्थितौगुरुबुधौभृगुनन्दनोवाक्रूराश्चसर्वेशशिनैवयुक्ताः ।।
सद्यः फलाप्तिश्चभवेद्धियात्रा पक्षैकमध्येदिवसत्रयेच ।।

टीका––एकादशस्थानमें रवि आदिपापग्रह चंद्रसहित अथवा गुरु आदि सौम्यग्रह हों तो एक पक्षमें अथवा तीन दिवसमें कार्यसिद्धि हो ।

व्ययस्थान

सर्वेशुभाद्वादशसंस्थिताश्च यात्राभवेत्तत्रविचित्रलाभः ।।
पापाश्चसर्वेव्ययदाभवन्ति यात्राफलंगर्गमुनिप्रणीतम् ।।

टीका––द्वादश स्थानमें सर्व ग्रह शुभ हों तो विचित्र लाभ हो और पापग्रह हों तो व्ययकारक जानिये यह यात्राफल गर्गमुनिने कहा है ।

प्रस्थान रखना

समुहूर्तेस्वयंगमनासंभवेप्रस्थानंकार्यम् ।। श्लोक ।। यज्ञोपवीतकंशस्त्रं मधु चस्थापयेत्फलम् ।। विप्रादिक्रमतः सर्वं स्वर्णधान्यांबरादिकम् ।।

टीका––मुहूर्तके समय किसी कार्यवश आप न जा सके तो प्रस्थान करना योग्य है उसकी विधि ब्राह्मणादिक अनुसार कहते हैं, ब्राह्मण यज्ञोपवीतका और क्षत्रिय शस्त्रका वैश्य मधुका और शूद्र फलका प्रस्थान करे इस क्रमसे जानिये और सुवर्ण वस्त्र सभीको युक्त है ।

प्रस्थान कितने दिवसतक उपयोगी हो

राजादशाहंपञ्चाहमन्योन्यप्रस्थितोवसेत् ।।
अङ्गप्रस्थानसंपूर्णं वस्तु प्रस्थानकेऽर्द्धकम् ।।

टीका––राजाओंको प्रस्थान करनेपर दश दिवस औरोंके पांच दिवसतक मुहूर्त उपयोगी रहता है परंतु वस्तुप्रस्थानमें आधा फल जानिये और अंगके प्रस्थानमें पूर्णफल जानिये ।

प्रस्थानके स्थानका विचार

गेहाद्गेहान्तरंगर्गः सीम्नः सीमान्तरंभृगुः ।। बाणक्षेपंभरद्वाजो वसिष्ठो नगराद्बहिः ।। प्रस्थानेपिकृतेनोयान्महादोषान्वितैर्दिने ।।

टीका––गर्गजीके मतसे दूसरेके घरमें, भृगुके मतसे सीमाके बाहर, भरद्वाजके मतसे बाणके पतनस्थानमें और वसिष्ठके मतसे नगरके बाहर प्रस्थान करे, उसपर भी महादोषयुक्त दिवसमें यात्रा न करे ।

प्रस्थानदिवसमें वर्ज्य पदार्थ

क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासवक्षाराभ्यङ्गभयासिताम्बरवमिस्तैलंकटू - ज्झेद्गमे ।। क्षारक्षौररतीः क्रमात्रिशरसप्ताहंपरंतद्दिनेरोगंस्त्र्यार्तं वर्कसितान्यतिलकं प्रस्थानकेपीति च ।।

टीका––कोप क्षौर स्त्रीसंग परिश्रम मांस गुड द्यूत रोदन दूध मद्य क्षार अभ्यंग अन्य विषयक भय श्वेत वस्त्र वमन तैल कटुपदार्थ इतनी वस्तुप्रस्थान दिन वर्जित हैं इनमें क्षार क्षौर स्त्रीसंग ये क्रमसे ३ । ५ । ७ दिवसप्रस्थान दिनसे पहिले वर्जित हैं । शेष और कही हुई वस्तु केवल प्रस्थान दिनमें वर्जित हैं और श्वेतसे भिन्न अर्थात् रक्त कृष्ण वर्ण आदि तिलक और रोग विषयक चिंताभी प्रस्थानके दिन वर्जित है ।

मात्स्योक्त दुष्टशकुन

औषध्याचनियुक्तोहि धान्यंकृष्णंतुयद्भवेत् ।।
कार्पासश्चतृणंशुष्कं शुष्कंगोमयमेव च ।।

टीका––औषधीयुक्त मनुष्य, काला, धान्य, कपास सूखा तृण भूसा इत्यादि वस्तु उपला ये प्रस्थान समय आगेसे आवें तो अशुभ जानिये ।

इन्धनंचतथाङ्गारं गुडंसर्पिस्तथाशुभम् ।।
अव्यक्तोमलिनोमन्दस्तथानग्नश्चमानवः ।।

टीका––ईंधन भष्म गुड घी दुष्ट पदार्थ तैल लगानेसे मलिन मंद नग्न मनुष्य ये अशुभ जानिये ।

मुक्तकेशोरुजार्तश्च काषायाम्बर धारिणः ।।
उन्मत्तः कंथितोसत्वो दीनोवाथ नपुंसकः ।।

टीका––खुले केशयुक्त मनुष्य, रोगी, गेरुआ वस्त्रपहिने मनुष्य, उन्मत्त कन्थायुक्त पुरुष, पापी पुरुष, दीन वा नपुंसक ये अशुभ शकुन जानिये ।

आयःपङ्कस्तथाचर्म केशबन्धनमेव च ।।
तथैवोद्धातसाराणि पिण्याकादितथैव च ।।

टीका--लोहेका खंड कीच चर्म केश बांधता हुआ मनुष्य, जिनके सार निकाल लिये गये हैं ऐसे पदार्थ और पिण्याक ये भी अशुभ जानिये ।

चाण्डालस्यशवंचैव राजबन्धनपालकाः ।।
वधकाः पापकर्माणो गर्भिणीस्त्रीतथैवच ।।

टीका--चंडाल प्रेत वधुओंके रक्षक वधकर्ता पापी पुरुष गर्भिणीस्त्री ये भी अशुभ जानिये ।

तुषंभस्मकपालास्थिभिन्नभाण्डानियानिच ।। रिक्तानिचैवभांडानिमृतसारंगएवच । एवमादीनिचान्यानिह्यप्रशस्तानिदर्शने ।।

टीका--तुष भस्मकपाल अस्थि रीते अथवा फूटे बर्तन, मरा हुआ सारंग पक्षी ये गमनकालमें हानिकारक हैं ।

क्वयासितिष्ठआगच्छ किंतेतत्रगतस्यतु ।।
अन्यशब्दाश्चयेऽनिष्टास्तेविपत्तिकरा अपि ।।

टीका--कहां जाते हो ठहरो आओ वहां जानेसे तुमको क्या होगा ये तथा और भी अनिष्ट शब्द विपत्तिकारक होते हैं ।

ध्वजादौवायसस्थानं क्रव्यादानंविगर्हितम् ।।
स्खलनंवाहनानांच वस्त्रसंगस्तथैवच ।।

टीका--ध्वजा व पताकाके ऊपर काक बैठे अथवा अग्निदान और वाहनोंका गिरना वस्त्र लपेटता हुआ पुरुष ये भी अशुभ जानिये ।

दुष्टशकुन दोषनिवारण

दुष्टेनिमित्तेप्रथमे अमंगल्यविनाशम् ।।
केशवंपूजयेद्विद्वान् स्तवनेमधुसूदनम् ।।

टीका--यात्रासमयमें जो प्रथम अमंगल दृष्टि आये तो इसके निवारणके लिये विष्णु की पूजा और मधुसूदनके स्तोत्र पाठ करावे ।

द्वितीयेचततोदृष्टे प्रतीपेप्रविशेद्गृहम् ।।
अथेष्टानिप्रवक्ष्यामि मंगलानितथानघ ।।

टीका--जो दूसरी वारभी अशुभ शकुन दृष्टि आवें तो घरमें प्रवेश करे इसके बाद मंगलकारक शकुन कहते हैं ।

गमनकालमें उत्तम शकुन

प्रशस्तोवाद्यशब्दश्च भिन्नभेरीरवास्तथा ।। पुरतः शब्दएहीति शस्यतेनतुपृष्ठतः ।। गच्छेतिचैवपश्चाद्यः पुरस्ताद्धु विगर्हितः ।।

टीका——गमनकालमें वाद्योंके शब्द भेरी नक्कारोंका शब्द और आओ यह आगेसे हो तो शुभ और पृष्ठ भागमें और जाओ यह शब्द पीठ पीछे हो तो शुभ और आगे हो तो अशुभ जानिये ।

श्वेताः पुष्या सुमनसः पूर्णकुम्भस्तथैवच ।।
जलजाः पक्षिणश्चैव मांसंमत्स्यस्यपार्थिव ।।

टीका——बड़े-बड़े श्वेतपुष्प पूर्ण जलके पक्षी मत्स्यमांस शुभ जानिये ।

गावस्तुरंगमोनागो वृद्धएकः पशुस्त्वजा ।।
त्रिदशासुहृदोविप्रा ज्वलितश्चहुताशनः ।।

टीका——गाय, तुरंग, हस्ती, वृद्ध, एक पशु, बकरी, देवता, मित्र, ब्राह्मण, जलती अग्नि ।

गणिकाचमहाभाग दूर्वाश्चार्द्राश्चगोमयम् ।।
रुक्मंरौप्यंचताम्रंच सर्वरत्नानिचाप्यथ ।।

टीका——गणिका हरीदूर्वा गोबर सोना रूपा तांबा सर्वरत्न ये शुभ जानिये ।

औषधानिचसर्वज्ञा यवाः सर्वार्थकास्तथा ।।
खड्गंपात्रंपताकाच मृत्तिकायुधपीठकम् ।।

टीका——औषधी सर्वज्ञ पुरुष यव सरसों खड्गपात्र पताका मृत्तिका आयुध आसन शुभ जानिये ।

राजलिङ्गानिसर्वाणि शवंरुदितवर्जितम् ।।
घृतंदधिपयश्चैव फलानि विविधानि च ।।

टीका——राजचिह्न रोदनरहित शव घृत दधि दूध नानाप्रकारके फल ।

स्वस्तिवृद्धिनिनादश्च नन्द्यावर्त सकौस्तुभः ।।
वादित्राणांशुभः शब्दो गम्भीरः सुमनोहरः ।।

टीका——आशीर्वाद शब्द और कौस्तुभमणिके साथ नंद्यावर्त मणिवाद्य तथा उत्तम मनोहर शब्द विघ्ननाशक हैं ।

गन्धाराषड्जऋषभा येगीताः सुस्वराः स्वराः ।।
वायुः सशर्करोत्युष्णः सर्वविघ्नविनाशकृत् ।।

टीका——गांधार षड्ज ऋषभ ये राग और अच्छे गाये स्वर सुंदर मीठा पवन अथवा उष्ण सर्व विघ्ननाशक जानिये ।

प्रतिलोमस्तथानीचो विज्ञेयोभयकृद्द्विजः ।।
अनुकूलोमृदुः स्निग्धः सुखस्पर्शः सुखावहः ।।

टीका—वर्णसंकरज नीच मुसलमानादिक ब्राह्मण ये भयंकर होते हैं और सुखस्पर्श अपने अनुकूल पदार्थ अच्छे मनुष्यादिक सुखकारी हैं ।

शस्तान्येतानिधर्मज्ञ यत्रस्यान्मनसः प्रियम् ।।
मनसस्तुष्टिरेवात्र परमं जयलक्षणम् ।।

टीका—हे धर्मज्ञ ! ऊपर कहे शकुन शुभ हैं जो मनको प्यारी वस्तु हो उसका दर्शन उत्तम तुष्टिकारक तथा जयदायक जानिये ।

चित्तोत्सवत्वं मनसः प्रहर्षः शुभस्यलाभो विजयप्रवादः ।।
मांगल्यलब्धिः श्रवणंचराज्ञां ज्ञेयानिनित्यं विजयावहानि ।।

टीका—यात्रासमयमें हर्ष शुभ तथा लाभदायक विजयवाद और मंगलप्राप्तिका श्रवण शुभ जानिये ।

क्षेमंकरानीलकण्ठाः श्वोलूकखरजम्बुकाः ।।
प्रस्थाने वामतः श्रेष्ठाः प्रवेशे दक्षिणाः शुभाः ।।

टीका—मयूर कुत्ता उलूक पक्षी गर्दभ जंबुक ये प्रस्थानसमय वामभागी हों तो गमनमें शुभ और प्रवेशसमयमें दक्षिण भागमें शुभ जानिये ।

अथ शिवद्विघटीमुहूर्ताः

देव्युवाच ।। श्रीशंभोप्राणनाथेश वदमेकरुणानिधे ।। त्रिपुरस्यवधेप्रोक्ता मुहूर्तायेशुभप्रदाः ।। भूतानामुपकारार्थं सर्वकालेष्टसिद्धिदम् ।। यातुरर्थप्रदंब्रूहि करुणाकरसुन्दर ।। ईश्वर उवाच ।। श्रृणुदेविप्रवक्ष्यामि ज्ञानंत्रैलोक्यदीपकम् ।। ज्योतिःसारस्ययत्सारं देवानामपिदुर्लभम् ।। नतिथिर्नचनक्षत्रं नयोगंकरणं तथा ।। कुलिकंयमयोगंच नभद्रानचचन्द्रमाः ।। नशूलयोगिनीराशिर्नहोरानतमोगुणः ।। व्यतीपाते च संक्रान्तौभद्रायामशुभेदिने ।। शिवालिखितमित्येवं सर्वविघ्नोपशान्तये ।। कदाचिच्चलतेमेरुः सागरश्चमहीधरः ।। सूर्यः पततिवाभूमौ वह्निर्वा यातिशीतताम् ।। निश्चलश्चभवेद्वायुर्नान्यथाममभाषितम् ।। तत्रादौकथयिष्यामि मुहूर्तानिचषोडश ।। गुणत्रयप्रयोगेन चलन्त्येवअहर्निशम् ।। अथषोडशमुहूर्त्तम् ।। रौद्रश्वेतंतथामैत्रं चार्वटंचचतुर्थकम् ।। पञ्चमोजयदेवश्च षष्ठवैरोचनंतथा ।।

तुरगादिकंसप्तमंच तथाष्टौचाऽभिजित्तथा ।। रावणंनवमंप्रोक्तं वालवंदशमंतथा ।। बिभीषणं रुद्रसंज्ञं द्वादशंचसुनन्दनम् ।। याम्यंत्रयोदशंज्ञेयं सौम्यंज्ञेयंचतुर्दशम् ।। भार्गवतिथिसंज्ञंच सविताषोडशंभवेत् ।। अथकार्यमुहूर्त्तम् ।। रौद्रेरौद्रतरंकार्यं श्वेतकुञ्जरबन्धकः ।। स्नानदानादिकंमैत्रे चार्वटेस्तम्भनं भवेत् ।। कार्यंजयदेव संज्ञेयं सर्वार्थकरमुच्यते ।। तद्वैरोचनसंज्ञकेप्रभवति पट्टाभिषेकंक्रमात् ।। ज्ञात्वैवंतर-देवतानिविदिते शस्त्रादिकंसाधयेत् ।। सत्कार्यमभिजिन्मुहूर्त्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ।। रावणे साधयद्वैरं युद्धकार्यंचबालवे ।। बिभीषणेशुभंकार्यं यन्त्रकार्यं सुन-न्दने ।। याम्येभवेन्मारणकार्यमप्यसौ सौम्येसभायांनृपवेशनंस्यात् ।। स्त्रीसेवनं भार्गवकेमुहूर्त्ते साविंत्रिनाम्निप्रपठेत्सुविद्याम् ।। अथमुहूर्तोदयंवारपरत्वेन ।। उदयेरौद्रमादित्ये मैत्रं सोमेप्रकीर्तितम् ।। जयदेवंकुजेवारे तुरदेवंबुधे तथा ।। रावणं चगुरौज्ञेयं भार्गवेचबिभीषणम् ।। शनौयाम्यंमुहूर्त्तंच दिवारात्रिप्रयोगतः । अथमुहूर्त्ताङ्गत्वेनगुणोदयम् ।। गुरुसोमदिनेसत्त्वं रजश्चाङ्गारकेभृगौ ।। रवौमन्दे-बुधेचैव तमो नाडीचतुष्टयम् ।। सत्त्वंगौरंरजश्यामं तामसंकृष्णमेवच ।। इमं वर्णविजानीयात्सत्त्वादीनांयथोदितम् ।। अथसत्त्वादिगुणानांफलम् ।। सत्त्वेनसा-धयेत्सिद्धिं रजसाधनसंपदाम् ।। तमसासाधयेन्मोक्षं इतिज्ञेयं सदाबुधैः ।। सत्त्वेर-जसिसत्कार्यमथवा शुभमेवच ।। तमसाछेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ।। अथ मुहूर्त्ताङ्गत्वेनरेखाज्ञानम् ।। शून्यंनभः खादिभिरेववर्णैर्विघ्नंधनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः । मृत्युंतथापादयमादिवर्णैः श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ।। अमृतश्चोर्ध्वरेखैका कालरेखात्रयं भवेत् ।। विघ्नमावर्त्तकंतत्र शून्येशून्यमितिक्रमात् ।। अथरेखा-फलम् ।। शून्येनैवभवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तकेभवेत् ।। कालरेखामृत्युकरी सर्वसिद्धिस्त-थामृते ।। धनुर्मीनकर्कटानां घातसत्वेविनिर्दिशेत् ।। तुलालिवृषमेषाणां घातोर-जसिनिश्चितम् ।। कन्यामिथुनसिंहानां कुम्भस्यमकरस्य च ।। घातस्तामसवे-लायां विपरीतंशुभावहम् ।। धनुःकर्कटमीनाख्यो गौरवर्णः क्रमोदितः ।। वृषेमेषे-तुलायांच वृश्चिकेश्यामवर्णता ।। मिथुनेमकरेकुम्भे कन्यासिंहेचकृष्णता ।। गौरश्च म्रियतेसत्त्वे श्यामवर्णे रजोगुणे ।। कृष्णंतामसवेलायां म्रियते नात्र-संशयः ।। यस्मिन्वर्षेभवेन्मासो गौणाधिक्यस्तथाक्षयः ।। मासेनगृह्यतेमासः सर्वकार्यार्थसाधने ।। माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखेश्रावणेतथा ।। नभस्ये मास-वाराणां मुहूर्त्तानियथाक्रमात् ।। रुद्रप्रोक्तमिदंज्ञानं शिवायैरुद्रयामले ।। गोपनीयं-प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ।।

रवौनभः केशवविघ्नराजौ गोविन्दनामानभ आखुगामी ॥ रात्रौ नृसिंहौयुगलं नभोयत्‌लक्ष्मीशलम्बोदररामसञ्ज्ञौ ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	b	b	b	b	66		66		b	b	b	b	66		66	

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
b	b	b	66		०	🦶	b	b	b	66		6	6	b	b	०

सोमेहरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यं च गौरीसुतविष्णुसञ्ज्ञौ ॥ एवंनिशायांस्वविष्णुशून्यंयुग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	b	b	66		66		b	b	b	०	66		66		b	b

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
🦶	०	०	b	b	०	66		b	b	b	b	66		66		०

भौमेयमौमारमणोऽथयुग्मंयुग्मेहरिश्चैव गजाननश्च ॥ नक्तं च विघ्नंद्विपदोःमुकुंदपदत्रयं श्रीपतिखंनभः श्रीः ॥

भौमे	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	🦶	🦶	b	b	b	b	66		66		b	b	66		66	

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
66		🦶	🦶	b	b	b	🦶	🦶	🦶	b	b	b	०	०	०	०

बुधेधनुः कृष्णयमौ च शौरिः सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः ॥ रात्रौसुपर्णध्वज एवयुग्मंनभोऽथदामोदरकुञ्जरास्यौ ॥

बुध	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	66		b	b	🦶	🦶	b	b	b	66		b	🦶	🦶	🦶	b

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुध
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
b	b	b	b	b	6	6	०	b	b	b	b	6	6	6	6	०

गुरोर्गोपिनाथस्तथाविघ्नराजौनभः केशवःकुंजरास्यस्तथैव ॥ निशायांपदंनंदजः सूर्यसूनुर्नभोमाधवश्चापमेकंहरिश्च ।२०२ ॥

गुरु	रा	बा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ		बा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र		त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
०	b	b	b	b	6	6	6	6	०	b	b	b	6	6	6	6		👣	b	b	b	👣	👣	👣	👣	०	b	b	b	6	6	b	b	०

शुक्रेकृष्णेस्या, शनौ खंमुरारिर्गौरीपुत्रः श्रीपतिःशून्यमेकम् ॥नक्तंकालःकेशहाखंच युग्मंपादद्वन्द्वोवामनः खंचपादौ २०३

शुक्र	वि	तु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा		सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त		स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
०	b	b	👣	👣	०	b	b	b	6	6	6	6	b	b	b	०		👣	👣	b	b	b	०	6	👣	👣	b	b	b	b	०	👣	👣	०

शनौपदःश्रीः खनभोनभःखंनारायणो हरिखंहरिश्च ॥ रात्रौचशून्यं यमयुग्ममाधवौखविघ्नराजौनृहरिश्चपादौ ॥ २०४ ॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु		सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स		र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	👣	b	०	०	०	०	b	b	b	b	०	b	b	०	b	b		०	👣	👣	b	b	b	०	6	6	6	6	b	b	b	👣	👣	०

तथाश्विने कार्तिकमार्गपौषे सूर्यादिवारेषु मुहूर्त्तयोगाः ॥ नामाक्षराणां प्रच यंप्रवृत्त्याविचारपूर्वंविबुधैर्विचिन्त्यम् ॥ २०५ ॥
सूर्येनृसिंहोद्विपदं च चापोहरिर्नभः खपदमच्युतोंऽघ्रिः ॥ रात्रौपदंचापखमच्युतं चयुग्मंयमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ २०६ ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	बा	वि	सु	या	सौ	भा	सा		श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	बा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स		र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
०	b	b	b	👣	👣	6	6	b	b	०	०	👣	b	b	b	👣		👣	6	6	०	b	b	b	6	6	(५)	👣	[illegible]	b	b	b	b	०

सोमेंऽग्निचापंस्वनभो मुकुन्दोनभश्चयुग्मंहरिखंहरिश्च ॥ पदंनिशायांखयुगंमुरारिविनायकौविष्णुनभश्वविष्णुः ।२०७।

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	मै	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	👣	६	६	०	०	ɓ	ɓ	ɓ	०	६	६	ɓ	ɓ	०	ɓ	ɓ

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
👣	०	६	०	ɓ	ɓ	ɓ	६	६	६	६	ɓ	ɓ	०	ɓ	ɓ	०

भौमेमहेभास्यनभोऽथ विष्णुंनभोयुगंगोपति खंगणेशः ॥ नक्तंगजेंद्रास्य खमच्युतंचयुग्मंचशून्यं नृहरिश्चयुग्मम् ।२०८।

भौम	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	६	६	६	६	०	ɓ	ɓ	०	६	६	ɓ	ɓ	ɓ	०	६	६

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	६	६	०	ɓ	ɓ	ɓ	६	६	०	ɓ	ɓ	ɓ	६	६	०

बुधेधनुःश्रीपतिपादयुग्मंनारायणःस्याद्गणनाथसिद्धिः॥रात्रौतुकालौहरि शून्यकालौगोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ।२०९।

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	६	६	ɓ	ɓ	ɓ	👣	👣	ɓ	ɓ	ɓ	०	६	६	६	ɓ	ɓ

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुधे
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
👣	👣	ɓ	ɓ	०	👣	👣	ɓ	ɓ	ɓ	६	६	६	६	०	ɓ	०

गुरौहरिःशून्ययुगंसुरेशः श्रीविघ्नराजोगगनंतथाश्रीः ॥ नि[illegible]ग्निदैत्यारिखकार्मुकंच पदेमुरारीखयुगंपुनःश्रीः ।२१०।

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	ɓ	ɓ	०	६	६	ɓ	ɓ	ɓ	ɓ	६	६	६	६	०	०	ɓ

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
👣	ɓ	ɓ	ɓ	०	६	६	👣	👣	ɓ	ɓ	ɓ	०	६	६	ɓ	०

शुक्रेऽमृतंचापमरिन्दमश्चलम्बोदरःकेशवशून्यपादम् ॥ नक्तंचयुग्मं नृहरिःखयुग्मं नृसिंहयुग्मं गगनंचयुग्मम् ॥२११॥

शुक्र	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	b	6	6	b	b	b	b	6	6	6	6	b	b	b	०	[foot]

सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
6	6	b	b	b	०	6	6	b	b	b	6	6	०	6	6	०

शनौपदंश्रीर्ननभोनकृष्णः खंश्रीपदंविष्णुनभोहरिःपदं ॥ रात्रौपदंखंपदनंदसूनुगजाननोगोपतिशून्यपादः १२२॥

शनि	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
b	[foot]	b	०	०	०	b	b	०	(b)	[foot]	b	b	6	b	b	[foot]

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
[foot]	०	[foot]	b	b	b	b	6	6	6	6	b	b	b	०	[foot]	०

३ चक्रं ॥ ज्येष्ठेमासेतथाषाढे तथैवचमलिम्लुचे ॥ सूर्यादिवारं संशोध्यमुहूर्त्तानिक्रमादिह ॥२१३॥

अर्के खाभ्र वकृष्णोयुगपदयुगलंखंहरिर्विष्णुचापं रात्रौ कृष्णशयुग्मंयुगलहरियुगंयुग्मकृष्ण त्रि शून्यम् ॥

रवि	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
दिने	त	त	स	स	र	र	स	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	०	०	b	b	6	6	[foot]	०	6	०	b	b	b	b	6	6

श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	रवि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
b	b	b	6	6	6	6	b	b	6	6	6	6	b	b	०	०

सोमेचापेद्वयंनो नृहरिखयुगलपीतवासश्च शून्यंचापद्वंद्वंनिशायामज खपद गजश्चापपद्मेशपादम् ॥२१४॥

सोम	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	6	6	6	6	०	b	b	b	०	6	6	b	b	b	b	०

चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	सोम
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
6	6	6	6	b	b	[foot]	b	b	b	6	6	[illegible]	[illegible]	b	[foot]	०

भौमेशून्येचक्रुष्णोयुगगगनहरिश्रीगिचापानिसिद्धिः नक्तंयुग्मंद्विशून्यंयुगलयुगपदंश्रीखचापंहरिश्च ॥

भौम	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	०	०	८	८	६	६	०	८	८	६	६	६	६	६	६	८

वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	भौम
स	स	र	र	त	त	स	स		र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	६	६	०	६	६	६	६	[illegible]	८	०	६	६	८	८	०

सौम्येश्रीविघ्ननाथोथहरिगणपतिःपद्मनाभश्चपादः दोषा वैसिद्धियुग्मंहरिखगजमुखाकृष्णशून्यंचक्रुष्णः ॥२१५॥

बुधे	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	६	६	[illegible]	८	६	६	६	६	८	८	८	८	[illegible]

अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	बुधे
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	६	६	६	६	८	८	०	०	८	८	०

जीवेविष्णुश्चचापोगगनभजितखमंघ्रियुग्मंनृसिंहः ॥ रात्रौनोखंमुरारिर्गगनयुग्म जोविष्णुचापोंघ्रियुग्मम् ॥

गुरु	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
दिने	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
०	८	८	६	६	६	८	८	८	८	[illegible]	०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	८	८

वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	गुरु
त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	रात्रौ
०	०	८	८	८	०	६	६	८	८	८	८	६	६	[illegible]	[illegible]	०

शुक्रेयुग्मेमुरारिर्गगनयुगलजोविष्णुचापांघ्रियुग्मम् ॥ तत्रादौयुग्मगोपीपतियुगगगनंश्रीवरः संपदश्रीः ॥२१६॥

शुक्र	वि	सु	वा	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
दिने	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
०	६	६	८	८	८	०	६	६	६	६	८	८	६	६	[illegible]	[illegible]

सु	वा	सौ	भा	सा	रा	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	शुक्र
स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	रात्रौ
६	६	८	८	८	८	६	६	०	८	८	८	०	[illegible]	[illegible]	८	०

मंदेश्रीयुग्मसिद्धि खहरिहरिनभःशौरिखंसिद्धिखंवा नक्तंश्रीयुग्मसिद्धिःखन युगलहरिर्व्योमगोविन्दशून्यम् ॥२१७॥

शनि	वा	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
दिने	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
०	८	६	६	८	८	०	८	८	८	८	०	८	८	०	८	०

सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	अ	शनि
र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	रात्रौ
८	६	६	८	८	०	०	६	६	८	८	०	८	८	८	०	०

अथ चौपहरा मुहूर्त श्रीमुछंदर गोरखनाथकृतयात्रानिमित्तारम्भः॥ तृतीया त्रयोदशीका फल १ चौथ चतुर्दशीकाफल १ पंचमी पूर्णिमाका फल १ अमावास्याकेदिन गमन न करे-मूल काम अच्छानकरे। कृष्ण वा शुक्लपक्षकी तिथिको फल १ जिस मासकी तिथिको जायतो अपने चित्तसे गमनकरे-चंद्रमाको बल भरणी भद्रा दिशा शूल योगिनी काल वास तिथिघात नक्षत्रघात चंद्रमाघात व्यतीपात कल्याणी संक्रांतिअनेक कुयोगके दोष नहोंगे यह गोरखनाथने कहा है जो तिथि साधकर यात्रा करैगा वह सुखपूर्वक अपने घर कार्यसिद्ध करके आवेगा॥ शुभम्॥

पौष	माघ	फा.	चैत्र	वैशा	ज्येष्ठ	आषा	श्राव	भाद्र	आ.	कार्ति	मार्ग	प्रथमप्रहर	द्वितीयप्र.	तृतीयप्रहर	चतुर्थप्रहर	तिथि	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	अर्थलाभ	सौख्य	अतिसुख	राजपद	१	सुख	क्लेश	शुभ	गमनार्थ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भलानहो.	क्लेश	विघ्नहोय	अतिसुख	२	दुःख	निष्ट	विघ्न	मध्यम
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	अर्थप्राप्ति	राजपद	अतिसुख	विघ्नहो	३	द्रव्यक्ले	दुःख	अर्थप्राप्त	धनप्राप्ति
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेशहोय	अशुभ	कार्यसिद्ध	अतिभय	४	लाभ	सुख	मंगल	धनलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	अर्थलाभ	मित्रलाभ	शत्रुभय	कार्यसिद्ध	५	लाभ	धनला	धनागम	सुखहोय
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	संकटहोय	क्लेश	सर्वसुख	कर्जदेना	६	शून्य	लाभ	मित्रलाभ	अर्थगव
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	विलंबहो	अर्थप्राप्ति	यमघंट	सर्वसुख	७	लाभ	कष्ट	द्रव्यलाभ	सुखप्राप्त
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	यमघंट	अशुभ	सर्वसुख	यमघंट	८	कष्ट	सुख	क्लेश	सौख्य
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	अर्थलाभ	अशुभ	सुखसेआ.	सर्वसुख	९	सुख	लाभ	कार्यसिद्ध	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	चिताव्या.	चिंताहोय	कार्यसिद्ध	सुखसेआ	१०	क्लेश	दुःख	अर्थगवन	धनप्राप्त
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	विग्रह	विघ्नहोय	सुखपावे	सुखप्राप्त	११	मृत्यु	लाभ	द्रव्यनाश	मृत्युप्रद
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	मृत्यु	मृत्यु	अशुभ	कार्यसिद्ध	१२	सुख	मृत्यु	अशुभ	कष्टप्रद

अथ गोरक्षकमतेन तिथिचक्रम् फलम्

मासेशुक्लादिकेपौषे तिथिः प्रतिपदादितः ।। द्वितीयाद्यास्तु माघेस्युस्तृतीयाद्यास्तुफाल्गुने ।। एवंचान्येषुमासेषु तिथ्योर्द्वादशसंज्ञकाः ।। लेख्याश्चक्रेत्रयोदश्यां संविहायतिथित्रयम् ।। तृतीयादित्रयेतत्र त्रयोदश्यादिकेफलम् ।। यानेप्राच्यादिकाष्टासु वक्ष्येद्वादशधाक्रमात् ।। सौख्यंशून्यंधनार्तिश्च लाभो लाभभयंधनम् ।। कष्टंसौख्यंकलिर्मृत्युः शून्यंप्राच्याफलंक्रमात् ।। क्लेशो नैःस्वयंव्यथासौख्यं द्रव्याप्तिर्लाभपीडनम् ।। सौख्यंलाभः कष्टसिद्धिर्लाभः सौख्यंतु दक्षिणे ।। भयंनैःस्वयंप्रियाप्तिश्च भयद्रव्यं मृतिर्धनम् ।। क्लेशाल्लाभोर्थसिद्धिःस्वं लाभोमृत्युश्चपश्चिमे ।। धनंमिश्रंधनंलाभः सौख्यंलाभः सुखंसुखम् ।। कष्टंद्रव्यत्वशून्यत्वं कष्टमुत्तरदिक्फलम् ।।

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा.	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्यं	क्लेश	भय	
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्यं	नैःस्वं	नैःस्व	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्ले	दुःख	प्रिया	अर्थ०
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभः	सौख्यं	भय	वित्तला
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभः	द्रव्यप्रा	धनप्रा	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भयभी.	लाभः	मृत्यु	अर्थला
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	धन	कष्टं	द्रव्यला	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्टं	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्यं	लाभः	कार्य	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लि	[illegible]	अर्थसि	धनं
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभः	द्रव्यला	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्यं	सौख्यं	मृत्यु	कष्ट

अथ आनन्दादिशुभाशुभयोग

सूर्येश्विभात्तुहिनरोचिषिचन्द्रधिष्ण्यात्सार्पाच्च भूमितनयेथबुधे चहस्तात् ।। मैत्राद्गुरौभृगुसुतेखलुवैश्वदेवाच्छायासुतेवरुणभात्क्रमशः स्युरेवम् ।। आनन्दः कालदण्डश्चधूम्राख्योथप्रजापतिः ।। सौम्योध्वांक्षो ध्वजोनामा श्रीवत्सोवज्रमुद्गरः ।। छत्रंमैत्रोमानसश्च पद्माख्योलम्बकस्तथा ।। उत्पातोमृत्युकाणाख्यः सिद्धिश्चैवशुभोमृतः ।। मुसलोथगदाख्यश्च मातङ्गोराक्षसश्चरः ।। स्थिरः प्रवर्द्धमानश्च योगाऽष्टाविंशतिः क्रमात् ।। फल ।। आनन्देलभतेसिद्धिं कालदण्डेमृतितथा ।। धूम्राख्येनसुखंप्रोक्तंसौभाग्यंचप्रजापतौ ।। सौम्येचैवमहत्सौख्यं ध्वांक्षेचैवधनक्षयम् ।। ध्वजनाम्निचसौभाग्यं श्रीवत्से सौख्यसंपदः ।।

वज्रेक्षयोमुद्गरेच श्रीनाशस्तुतथैवच ।। छत्रेचराजसन्मानं मैत्रेपुष्टिर्नसंशयः ।। मानसेचैवसौभाग्यं पद्माख्येचधनागमः ।। लम्बकेधनहानिश्च उत्पातेप्राणनाशनम् ।। मृत्युयोगे भवेन्मृत्युः काणेचक्लेशमादिशेत् ।। सिद्धियोगेभवेत्सिद्धिः शुभे-कल्याणमेवच । अमृतराजसन्मानो मुसलेचधनक्षयः ।। गदाख्येचाक्षयाविद्यामातङ्गे कुलवर्द्धनम् ।। राक्षसेतुमहत्कष्टं चरेकार्यंचसिद्ध्यति ।। स्थिरयोगेगृहारम्भः प्रवृद्धे पाणिपीडनम् ।।

	योगोंके नाम	रवि	चंद्र	मंग.	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल.
१	आनंद	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा.	शत	सिद्धि
२	कालदंड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वा	मृत्यु
३	धूम्र	कृत्ति	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती	मूल	श्रव.	उत्त	असुख
४	प्रजापति	रोहि.	पुष्य	उत्तरा	विशा	पू.	धनि.	रेवती	सौभाग्य
५	सौम्य	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा	शत	अश्वि	अधिकसौ.
६	ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	भरणी	धनक्षय
७	ध्वज	पुनर्व	पूर्वा	स्वाती	मूल	श्रव	उ.भा.	कृत्ति	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	पुष्य	उत्तरा	विशा	पू.षा.	धनि	रेवती	रोहि	सौख्य
९	वज्र	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा.	शत	अश्वि	मृग	क्षय
१०	मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	लक्ष्मीना.
११	छत्र	पर्वा	स्वाती	मूल	श्रव	उ.भा.	कृत्ति.	पुन	राजसन्मा
१२	मैत्र	उत्तरा	विशा	पूर्वाषा	धनि	रेवती	रोहि.	पुष्य	पुष्टि
१३	मानस	हस्त	अनु	उत्तरा	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	सौभाग्य
१४	पद्माख्य	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा.	मघा	धनप्राप्ति
१५	लंबक	स्वाती	मूल	श्रव.	उ.भा	कृत्ति	पुन	पूर्वा	धनहानि
१६	उत्पात	विशा	प.षा.	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उत्तरा	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अनुरा	उ.षा.	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	मृत्यु
१८	काणाख्य	ज्येष्ठा	अभि	पू.भा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश
१९	सिद्धि	मूल	श्रव	उ.भा	कृत्ति	पुन	पूर्वा.	स्वाती	कार्यसि.
२०	शुभ	पू.षा	धनि	रेवती	रोहि	पुष्य	उत्तरा	विशा	कल्याण.
२१	अमृत	उ.षा	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	अनु.	राजसन्मा.
२२	मुसल	अभि	पू.भा.	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	धनक्षय
२३	गदाख्य	श्रव.	उ.भा	कृत्ति	पुन	पूर्वा	स्वाती	मृ	अक्षयवि०
२४	मातंग	धनि.	रेवती	रोहि	पुष्य	उत्तरा	विशा	पू.षा.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	शत	अश्वि	मृग	आश्ले	हस्त	अनु	उ.षा	महाकष्ट
२६	चर	पूर्वाभा	भर	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि०	कार्यसि.
२७	स्थिर	उ.भा.	कृत्ति	पुन.	पूर्वा	स्वाती	मू	श्रवण	ग्रहारंभ
२८	प्रवर्धमान	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा	विशा	पूर्वा.	धनि	[illegible]

टीका--आनंदादियोग अट्ठाईस हैं जिनमें एक १ योगका ७ वार और ७ नक्षत्र उनका क्रम ऐसे जानिये, रविवारको अश्विनी, सोमवारको मृग, मंगलवारको आश्लेषा, बुधवारको हस्त, गुरुवारको अनुराधा, शुक्रवारको उत्तराषाढा, शनिवारको शततारका इन वारोंमें नक्षत्रोंका संयोग हो तो आनंदादिक योग जानिये ऐसे अट्ठाईस योगोंका क्रम पीछे लिखा है।

चर योग

रवौपूषागुरौपुष्यः शनौमूलंभृगौमघा ।। सौम्येब्राह्म्यं विशाभौमेचन्द्रेऽर्द्राचरयोगकः ।। ऋकचयोग ।। रवौतुद्वादशी प्रोक्ता भौमेचदशमीतथा ।। चन्द्रेचैकादशीप्रोक्ता ।। नवमीबुधवासरे ।। शुक्रेचसप्तमीज्ञेया शनौचैवतुषष्ठिका ।। गुरौचाष्टमिकाज्ञेयो योगस्तुक्रकचौबुधैः ।। दग्धयोग ।। बुधेतृतीया कुजपञ्चमीच षष्ठचांगुरावष्टमिशुक्रवारे ।। एकादशीसोमशनिर्नवम्यां द्वादश्यमर्कामितिदग्धयोगः ।। मृत्युदा ।। रवौभौमेभवेन्नंदा भद्रा जीवशशांङ्कयोः ।। जयाशुक्रेबुधेरिक्ता शनौपूर्णाचमृत्युदा ।। सिद्धियोग ।। शुक्रेनंदाबुधेभद्रा जयाभौमेप्रकीर्तिता ।। शनौ रिक्तागुरौपूर्णा सिद्धियोगाउदाहृताः ।। उत्पातादियोगाः ।। विशाखादिचतुष्कंतु भास्करादिक्रमेणतु ।। उत्पातमृत्युकालाख्यासिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ।। यमदंष्ट्रयोग ।। मघाधनिष्ठासूर्येतु चन्द्रेमूलविशाखके ।। कृत्तिकाभरणी भौमे सौम्येपूषापुनर्वसुः ।। गुरौपूषाश्विनीशुक्रे रोहिणीचानुराधिका ।। शनौ विष्णुः शतभिषग् यमदंष्ट्रः प्रकीर्तितः ।। यमघण्ट ।। रवौमघाबुधेमूलं गुरौ चैवच कृत्तिका ।। भौमेचार्द्राशनौहस्तः शुक्रे चैवतुरोहिणी ।। चन्द्रेविशाखायोगोऽयं यमघण्टःप्रकीर्तितः ।। मुसलवज्रयोग ।। चन्द्रेचित्राभृगौज्येष्ठा शनौचैवतुरेवती ।। चान्द्रजेतुधनिष्ठोक्ता रवौतुभरणी तथा ।। उषाश्चैवतुभौमेच गुरोचैवोत्तरातथा ।। अयंमुसलवज्राख्ययोगोवर्ज्यःशुभे बुधैः ।। अमृतसिद्धियोग ।। आदित्यहस्ते गुरुपुष्ययोगे बुधानुराधा शनिरोहिणीच ।। सोमेचविष्णुर्भृगुरेवतीच भौमाश्विनीचामृतसिद्धियोगः ।।

टीका--चरयोगादिक त्रयोदश योग और सात वार कोष्ठकमें लिखे हैं इनमें जिस वारमें नक्षत्र अथवा तिथि हों वह योग उस दिन जानिये ।

	योगोंकेनाम	रविवार	सोमवार	मंगळवा.	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
१	चरयोग	पूर्वाषाढा	आर्द्रा	विशाखा	रोहिणी	पुष्य	मघा	मूल
२	क्रकच	१२तिथि	११ तिथि	१०तिथि	९ तिथि	८ तिथि	७ तिथि	६ तिथि
३	दग्धयोग	१२तिथि	११ तिथि	५तिथि	३ तिथि	६ तिथि	८ तिथि	९ तिथि
४	मृत्युदा	६ तिथि ११	३ति. १२	६तिथि ११	८ तिथि	४ तिथि १४	२ तिथि १३	५ तिथि १५
५	सिद्धियो.	० ति ०	० ति ०	७तिथि १३	३ तिथि १२	५तिथि १५	६तिथि ११	४तिथि १४
६	उत्पात	विशाखा	पूर्वा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उत्तरा
७	मृत्युयोग	अनुराधा	उत्तरा	शततार	अश्विनी	मृग	आश्लेषा	हस्त
८	काल	ज्येष्ठा	अनु.	पूर्वा	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
९	सिद्धि	मूल	श्रवण	उत्तरा	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्वा	स्वाती
१०	यमदंष्ट्र	मघा धनि.	मूलविशा.	कृत्ति.	पू.षा.पुन.	उ.षा.अ.	रोहि.अ.	श्रव.श.
११	यमघंट	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
१२	मुसलवज्र	भरणी	चित्रा	उ.षाढा	धनिष्ठा	उत्तरा	ज्येष्ठा	रेवती
१३	अमृतासि.	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी

दासदासी लेनेका मुहूर्त

दासचक्र ।। नराकारंलिखेच्चक्रं सेवार्थं मृत्युसंग्रहे ।। शीर्षेत्रीण्यर्थलाभः स्यान्मुखेत्रीणिविनाशनम् ।। हृदिपञ्चधनंधान्यं पादे षट्कंदरिद्रता ।। पृष्ठेद्वे-प्राणसंदेहो नाभौवेदाः शुभावहम् ।। गुदेद्वेभयपीडाच दक्षहस्तैकमर्थकम् ।। एकं-वामेनाशकरं भृत्यभात्स्वामिभान्तकम् ।।

टीका—नराकारचक्रके अवयवस्थानोंमें स्थापित करे, शिरपर ३ नक्षत्र धरे उसका फल अर्थलाभ, मुखमें ३ नाश, हृदयमें ५ धनधान्यवृद्धि, पदोंपर ६ दरिद्र, दृष्टिपर २ मृत्यु, नाभिमें ४ शुभ, गुदापर २ भयपीडा, वामहाथपर १ अर्थप्राप्ति, दाहिने हाथपर १ नाश हो ।

दासीचक्र ।। दासीचक्रंप्रवक्ष्यामि दासीभात्स्वामिभान्तकम् ।। शीर्षे-त्रीणिमुखेत्रीणि स्कन्धयोश्चेद्द्वयंस्मृतम् ।। हृदयेपंच ऋक्षाणि नाभौपञ्च-भगैककम् ।।जानुद्वयेद्वयंज्ञेयं पादयोश्चत्रयंत्रयम् ।।फल।। शिरःस्थाने भवेल्लाभोमु-खेहानिः प्रजायते ।। स्कन्धेच स्वामिनोमृत्युर्हृदयेपुष्टिवर्द्धनम् ।। नाभौहानि-प्रदंप्रोक्तं भगेचैवपलायनम् ।। जानौसेवांलभेन्नित्यं पादयोस्तु धनक्षयः ।।

टीका—दासीके जन्मनक्षत्रसे स्वामीके जन्मनक्षत्रतक जितने नक्षत्र हों उनका क्रम शीशपर ३ फल लाभ, मुखमें ३ फल हानि, कंधापर २ फल स्वामीकीमृत्यु, हृदयमें ५ फल पुष्टि हो, नाभिमें ५ फल हानि, भगपर १ फल पलायन, जानुपर २ फल सेवा करे, पदपर ६ फल धनक्षयकारक इनमें शुभफल देखकर रखे ।

गवादि पशु लेनेका मुहूर्त

गोवृषमहिषीचक्र ।। शीर्षेत्रयंमुखेद्वेच पादेष्वष्टौविनिर्दिशेत् ।। हृदये-पञ्चऋक्षाणि स्तनेष्वष्टौभगैककम् ।। फल ।। शिरः स्थानेभवेल्लाभो मुखेहानिः प्रजायते ।। पादयोरर्थलाभःस्याद्धृदयेसौख्यवर्द्धनम् ।। स्तनयोस्तुमहालाभो गुह्य-स्थानेमहद्भयम् ।। अर्यमादिगवांज्ञेयं महिष्यांसूर्यभान्यसेत् ।। इदमेववृषे ज्ञेयं विशेषः पत्सुषोडश ।।

टीका--गाय अथवा वृषभ लेना हो तो उत्तराफाल्गुनीसे दिवस नक्षत्र तक गिने, उसमेंसे मस्तकपर ३ फल लाभदायक, मुखमें २ फल हानि, पदपर ६ फल अर्थलाभ, हृदयमें ५ फल सुख, स्तनमें ६ फल महालाभ, भगपर १ फल प्रजावृद्धि, गुह्यपर ४ फल भय जानिये और महिषी लेनी हो तो भी इस क्रमसे शुभाशुभ फल जानिये परंतु सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्र तक गिने और वृषभ लेना हो तो भी यही क्रम जानिये परंतु पदपर १६ नक्षत्र धरे शेषस्थानमें २ धरे और गायके समान शुभाशुभ फल जानिये ।

अश्व मोल लेनेका मुहूर्त

अश्वेतुसूर्यभाच्चैव साभिजिद्भानिविन्यसेत् ।। पञ्चस्कन्धेजन्मभांतं पृष्ठे तुदशकंन्यसेत् ।। पुच्छेज्ञेयंद्वयंप्राज्ञैश्चतुष्पादेचतुष्टयम् ।। उदरेपञ्चधिष्ण्यानि मुखेद्वे-चप्रकीर्तिते ।। फल ।। सौभाग्यमर्थलाभश्च स्त्रीनाशोरणभंगता ।। नाशश्चअर्थ-लाभश्चफलंप्रोक्तंमनीषिभिः ।।

टीका--सूर्यनक्षत्रसे अपने जन्म नक्षत्र तक अभिजित् सहित नक्षत्र स्थापित करे, इस क्रमसे स्थानोंका फल कंधेपर ५ फल सौभाग्य, पीठपर १० फल अर्थलाभ, पूंछपर २ फल स्त्रीनाश, पैरोंपर ४ फल रणभंगता, उदर पर ५ फल नाश, मुखमें २ फल अर्थलाभ, ऐसे फल पंडितोंने कहे हैं ।

हाथी मोल लेनेका मुहूर्त

गजाकारंलिखेच्चक्रं जन्मभान्तंचसूर्यभात् ।। कर्णेशीर्षेद्विजेपुच्छे द्वयंसर्वत्र योजयेत् ।। शुण्डायांतुद्वयं योज्यं वेदाः पृष्ठोदरे मुखे ।। षड्वैचतुर्षुपादेषु साभिजि द्भैन्यसेत्क्रमात् ।। फल ।। कर्णेचैवमहाँल्लाभो मस्तकेलाभएवच ।। दन्तेचैव-भवेल्लाभो पुच्छेहानिः प्रजायते ।। शुण्डायांतुशुभंज्ञेयं पृष्ठेतुसुखसंपदः ।। उदरे रोगसंभूतिर्मुखेतुमध्यमंस्मृतम् ।। पादयोश्चभवेल्लाभो गजेचैवंविनिर्दिशेत् ।।

टीका--प्रथम सूर्य नक्षत्रसे जन्म नक्षत्र तक स्थापित करनेका क्रम लिखा है, परंतु इसके स्थानों और फलों तथा नक्षत्रोंकी संख्या भिन्न है, प्रथम कानोंपर २फल लाभ मस्तकपर २ फल लाभ दांतोंपर २ फल लाभ पूंछपर २ हानि; सूंडपर २ शुभ, पीठपर ४ सुखसंपदा, पेटपर ४ रोग, मुखपर ४ मध्यम, पावोंपर ६ लाभ ऐसे फल जानिये ।

शिबिकारोहणचक्रमुहूर्त

सूर्यभाद्दिनभंयावत्पञ्चपञ्चचतुर्दिशि ।। मध्येतुसप्तदेयानिचक्रं ज्ञेयंसुखावहम् ।। फल ।। पूर्वभागेतुचारोग्यंदक्षिणेकष्टकारकम् ।। पश्चिमेकृशताचैव उत्तरेव्याधिसंभवः ।। मध्यमंचशुभं प्रोक्तमायुर्वृद्धिकरंपरम् ।। पालकारोपणंचैतद्-बालकस्यबुधैर्हितम् ।।

टीका––सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यन्त पालकी अथवा पालना इनमेंसे जिसपर आरोहण करना चाहे उसके चारों ओर और मध्य भागमें लिखनेका क्रम पूर्वभागमें ५ आरोग्य दक्षिणमें ५ कष्टकारक, पश्चिममें ५ कृशता, उत्तरमें ५ व्याधिनाश, मध्यमें ७ शुभ तथा आयुष्यवृद्धिकारक जानिये ।

छत्रक्रम

त्र्युत्तरारोहिणीरौद्रं पुष्यश्चशततारका ।। धनिष्ठाश्रवणं चैव शुभानिचछत्रधारणम् ।। फल ।। मूलेत्रीणिसप्तदण्डे कण्ठेचैव तुपञ्चकम् ।। मध्येवसुप्रदातव्यं शिखरेवेदएवच ।। मूलेचजायतेनाशो दण्डेहानिर्धनक्षयः ।। कण्ठेचराजसन्मानो मध्येछत्रपतिर्भवेत् ।। शिखरेकीर्तिवृद्धिश्च जन्मभात्सूर्यभान्तकम् ।।

टीका––तीनों उत्तरा रोहिणी आर्द्रा पुष्य शततारका धनिष्ठा श्रवण ये नक्षत्र छत्र धारणमें शुभ हैं परंतु अपने जन्मनक्षत्रसे सूर्यनक्षत्रतक लिखनेके क्रम से प्रथम मूलपर ३ फल जीवनाश, दंडपर ७ हानि धनक्षय, कंठपर ५ राजसन्मान, मध्यमें ८ छत्रपति, शिखरपर ४ कीर्तिवृद्धि जानिये ।

मञ्चकचक्रम् ।। सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रं पञ्चमूलेचतुश्चतुः ।। गात्रेषुत्वेक विन्ध्यासु मध्येसप्तविनिर्दिशेत् ।। फल ।। मूलेतुसुखसौभाग्यं यात्रे प्रोक्तं भयंमहत् । मध्ये सत्पुत्रलाभाय आयुर्वृद्धिकरंपरम् ।।

टीका––सूर्य नक्षत्रसे दिवसनक्षत्र मंचकचक्रमें अंक स्थापन करनेकी रीति पहिले मुखपर १६ फल सुखप्राप्ति, मध्यगात्रपर ४ भयप्राप्ति, आगे विंध्यापर १ भय, मध्यमें ७ पुत्रलाभ और आयुकी वृद्धि हो ।

शरसहितधनुषचक्र ।। सूर्यभाज्जन्मभान्तंच धनुष्येवंचयोजयेत् ।। चापाग्रे बाणसंख्याकं शराग्रेपञ्चयोजयेत् ।। शरमूलेतथापञ्च पञ्चसंधौप्रकीर्तयेत् ।। दण्डेचैवतुदद्याद्वै धनुषश्चक्रमुत्तमम् ।। फल ।। अग्रेहानिः शरेलाभः शरमूले जयस्तथा ।। चापसंधौ तुशौर्यस्याद्दण्डेभङ्ग प्रजायते ।।

टीका––सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रपर्यन्त धनुषपर अंक स्थापन करनेकी रीति प्रथम अग्रपर ५ हानि, शराग्रपर ५ लाभ, शरमूलपर ५ जय, संधिपर ५ शूरता, बीचके दंडपर ५ राज्यभंग शुभफल देख धनुष धारण करे ।

रथचक्र

रथाकारंलिखच्चक्रं सूर्यभाज्जनिभंन्यसेत् ।। रथाग्रेत्रीणिऋक्षाणि षट्चक्रेषुततोन्यसेत् ।। ऋक्षत्रयंमध्यदण्डे रथाग्रेभत्रयंतथा ।। युगेच भत्रयं ज्ञेयं षडृक्षाण्यन्तिमेऽध्वनि ।। शेषभृक्षत्रयं योज्यं चक्रज्ञैः सर्वतोमुखे ।। फल ।। शृङ्गेमृत्युर्जयश्चक्रे सिद्धिर्ज्ञेयाचदण्डके ।। रथाग्रेदण्डअध्वानं मध्येचैवसुखं शुभम् ।। बुधैरेवंफलंज्ञेयं जन्मभान्तंक्रमेणच ।। गर्गेणोक्तानि चक्राणि विज्ञेयानिसदाबुधैः ।।

टीका--रथके आकार चक्र खींचकर उसके स्थानोंपर सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक लिखनेका क्रम । प्रथम शृंगोंपर ३ मृत्यु, पहियोंपर ६ जय, मध्यदंडोंपर ३ सिद्धि, रथके अग्रपर ३ धनलाभ, जुआपर ३ भंग, अंतके मार्गपर ६ शुभ और सर्वत्र ३ सुख जानिये ।

तिलोंकी घानी करनेका मुहूर्त

घाणाचक्रंप्रवक्ष्यामि सूर्यभाच्चांद्रमेवच ।। त्रीणित्रीणित्रयंत्रीणि त्रीणित्रीणित्रयंतथा ।। त्रीणित्रीणितुभान्यत्र योजयेद्बाणके शुभम् ।। फल ।। हानिरैश्वर्यमारोग्यं विनाशोद्रव्यमेवच ।। स्वामिघातोनिर्धनता मृत्युरेवसुखंक्रमात् ।।

ऊखोंका रस निकालनेका मुहूर्त

वेदद्विनेत्रभूभूतबाणहस्तरसाः क्रमात् ।। फल ।। प्रथमंचभवेल्लक्ष्मीद्वितीयेहानिमेवच ।। तृतीयेसर्वलाभंच चतुर्थेचक्षयंतथा ।। पञ्चमेच भवेन्मृत्युः षष्ठस्थाने शुभंस्मृतम् । सप्तमेचैवपीडास्यादष्टमेधनधान्यदम् ।। सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमिक्षुयन्त्रेनियोजयेत् ।।

टीका--सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक घानी चक्रके भाग ९ और ऊखोंके रसके घानी केभाग ८ जिसके फल नीचे लिखे हैं ।

	घाना			**ऊखोंका रस**	
६	प्रथमभाग	हानि	४	प्रथमभाग	लक्ष्मी
३	भाग	ऐश्वर्य	२	भाग	हानि
३	भाग	आरोग्य	२	भाग	सर्वलाभ
३	भाग	नाश	१	भाग	क्षय
३	भाग	द्रव्य	५	भाग	मृत्यु
३	भाग	स्वामिघात	५	भाग	शुभ
३	भाग	निर्धन	२	भाग	पीडा
३	भाग	मृत्यु	६	भाग	धनक्षय
३	भाग सुख इनमें से जिस दिन शुभ फल आवे उस दिन निकाले				

कृषिकर्मका मुहूर्त

स्वातीब्राह्यमृगोत्तरादितियुगे राधाचतुष्कंमघा ।
रेवत्युत्तरविष्णुभंकृषिविधौ क्षेत्रादिवापेविधौ ।।
गोकन्याझषमन्मथाश्चशुभदा वाराः कुजार्कोतरं ।
षष्ठीद्वादशिरिक्तपर्वसु तथा वर्ज्यं द्वितीयाद्वयम् ।।

टीका––स्वाती रोहिणी मृग उत्तरा पुर्नवसु पुष्य अनुराधा ज्येष्ठा मूल पूर्वाषाढा मघा उत्तराफाल्गुनी श्रवण ये नक्षत्र और वृष कन्या मकर मिथुन ये लग्न शुभ हैं। मंगल शनि और षष्ठी द्वादशी तथा रिक्ता दोनों पर्वणी अर्थात् १५। ३० और दोनों द्वितीया इनको छोड़कर कृषिकर्मका आरंभ और बीजादिकोंका वपन कराये।

हलचक्र

त्रिकंत्रिकंत्रिकंपञ्च त्रिकंपञ्चत्रिकंत्रिकम्।।
सूर्यभाद्गणयेच्चान्द्रमशुभंचशुभंक्रमात्।।

टीका––प्रथम हल धारण करनेका मुहुर्त्त सूर्यनक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यन्त गिने उनके भाग ८ जिनका क्रम प्रथम ३ फल अशुभ द्वितीय भाग ३ शुभ तृतीय भाग ३ अशुभ चतुर्थ ५ शुभ पंचम ३ अशुभ षष्ठ ५ शुभ सप्तम ३ अशुभ अष्टम २ नक्षत्र शुभ जिस नक्षत्रके भाग में दिवसनक्षत्र आवे उस दिन धारण करे।

नौका बनाने वा जलमें उतारनेका मुहूर्त

पौष्णादितिस्तुरगवारुणमित्रचित्रशीतोष्णरश्मिवसुजीवकभान्यमूनि ।। वारे चजीवभृगुनंदन कौप्रशस्तौ नौकादिसंघटनवाहनमेषुकुर्यात् ।।

टीका––रेवती पुर्नवसु अश्विनी आश्लेषा शततारका अनुराधा चित्रा मृग हस्त धनिष्ठा पुष्य ये नक्षत्र और गुरु शुक्र ये वार शुभ हैं इनमें नौका बनवाना वा जलमें उतराना उत्तम है।

नौकाचक्र

रविभुक्तर्क्षमारभ्य कुर्यात्रीण्युदयेचषट् ।। नाल्यांत्रीणिहृदि त्रीणि-पृष्ठेभूः पार्श्वगंत्रयम् ।। शुक्काणेत्रीणिषणमध्ये नौकाचक्रेभसंस्थितिः ।। उपरि-स्थंचमध्यस्थं षट्श्रेष्ठंचपरंनसत् ।।

टीका––सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्र लिखनेका क्रम ऊपरके भागमें ६ नालीमें ३ हृदयपर ३ पीठपर १ पार्श्वमें २ शुक्काणमें ३ नौकाके मध्यभागमें ३ दीजिये उन उनमेंसे ऊपर और मध्यके नक्षत्र शुभ और अन्य स्थानोंके अशुभ जानिये।

लग्न और ग्रहबल

त्रिषडायगतःसूर्यश्चन्द्रोद्वित्र्यायगःशुभः ।। कुजार्कीत्रिषडायस्थौ त्रिषट् खेतरगोगुरुः ।। द्विसुतास्ताष्टरिः फार्यरिपुसंस्थो बुधस्मृतः ।। सुखान्त्यारिन्वि-नायत्र नौयानेशुभदः सितः ।।

टीका––नौकामें माल भरने अथवा चलानेके लग्नका ग्रह बलवान् तृतीय षष्ठ एकादश इन स्थानोंमें सूर्य अथवा चंद्रमा मंगल शनि ये हों तो शुभ और ३। ६। १० इन स्थानोंको छोड़कर अन्यस्थानोंमें गुरुशुभ २। ५। ७। ८। १२। ६ इन स्थानोंमें बुध होय तो शुभ ७। १२। ६ इन स्थानोंको छोड़ अन्यस्थानका बुध शुभ जानिये।

नौकास्थानके ग्रह

नाल्यांपापखगाः सौम्याः शुक्काणेशुभकारकाः ।। व्यस्तामृत्युकराः क्रूराः

पृष्ठेकूर्पेच भीतिकृत् ।। अन्तेबाह्येस्थितास्तेचह्यलाभायस्मृताबुधैः ।। एवंविचार्य-दैवज्ञो नौयानसमयंवदत् ।।

टीका––लग्नकुंडलीमें जो-जो ग्रह जिस-जिस स्थानमें पड़ा हो उसका फल नालिमें पाप ग्रह शुभ शुक्काणपर शुभ ग्रह शुभ ये विपरीत हों तो अशुभ क्रूर ग्रह पीठपर वा कूर्पपर आवे तो भयदायक और इन ग्रहोंमेंसे बाहर २ आवे तो लाभ हो यह विचारकर ज्योतिषी बतावे।

दीपिकाचक्र

दीपिकायांमुखेपञ्च राजसन्मानलाभदः ।। कण्ठेनवधनप्राप्तिर्मध्येऽष्टौस्वामि-मृत्युदाः ।। दण्डेपञ्चभवेद्राज्यं अग्निऋक्षाच्चदीपिकाम् ।।

टीका––कृत्तिकानक्षत्रसे दिवसनक्षत्रपर्यन्त लिखनेका क्रम मुखपर ५ लाभ राजसन्मान, कंठपर ९ धनप्राप्ति, मध्यमें ८ स्वामिमृत्यु, दंडपर ५ राजप्राप्ति इस रीतिसे नक्षत्रक्रम जानिये।

कूपचक्र

कूपवाप्योस्तुचक्रंवैविज्ञेयंविबुधैः शुभम् ।। रोहिणीगर्भमेतस्यत्रित्रिऋक्षणिद्रचंद्र-भम्।।मध्येपूर्वेतथाग्नेये याम्येचैवतुनैर्ऋते ।। पश्चिमेचैववायव्यां सौम्येशूलि दिशिक्रमात् ।। फल ।। शीघ्रं जलंनजलंमध्यमजलमजलंबहुजलं च ।। अमृतजलंबहु क्षारं सजलंमध्यजलेक्रमाज्ज्ञेयम् ।। मत्स्येकुलीरेमकरे बहुजलंतथैवचार्धं वृषभ-कुम्भयोश्च ।। अलौचतौलौचजलाल्पता मता शेषाश्चसर्वेऽजलदाः प्रकीर्तिताः ।।

टीका––नवीन कूप और वापी खोदनेका मुहूर्त रोहिणीसे वर्तमान दिवसके नक्षत्रपर्यंतका क्रम मीन कर्क मकर इन तीन राशियोंका चंद्रमा हो तो बहुत जल निकाले, वृष कुंभ इनका चंद्रमा हो तो उसका आधा जल रहे, वृश्चिक तुला इनका चंद्रमा हो तो अल्पजल रहे,शेष राशियोंके चंद्रमामें खोदे तो जल नहीं निकाले यह बात सिद्ध है।



बाग लगानेका मुहूर्त

गौरीसहालिगतेषुचान्तरगते भांनौबुधादित्रये चन्द्रार्केचशुभाबुधैरभिहितारा-मप्रतिष्ठाक्रियाः ।। आश्लेषाभरणीद्वयं शतभिषक् त्यक्त्वाविशाखांकुहुं रिक्ता-पक्षतिमष्टमींपरिहरेत्षष्ठीमपिद्वादशीम् ।।

टीका—उत्तरायणमें वृष अथवा सिंह वृश्चिक इन राशियोंके सूर्य और बुध गुरु शुक्र चंद्र रवि इनमें कोई वार हो ऐसा शुभ दिन देखकर नवीन बाग लगाये और आश्लेषा भरणी कृत्तिका शततारका विशाखा और अमावास्या रिक्ता तिथि द्वितीया अष्टमी षष्ठी द्वादशी इन सभीको छोड़कर अन्य दिनोंमें बाग लगाये ।

सिक्का ढालनेका मुहूर्त्त

मृदु ध्रुवक्षिप्रचरेषुभेषु योगेप्रशस्तेशनिचन्द्रवर्ज्यम् ।।
वारे तथापूर्णचलाह्वयेचमुद्राप्रशस्ताशुभदाहिराज्ञाम् ।।

टीका—मृदु ध्रुव क्षिप्र चर ये नक्षत्र शुभ और शनि चंद्र ये बारवर्जित हैं ।

अथ प्रश्नप्रकरण

तिथ्यादिप्रयुक्तप्रश्न

तिथिःप्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।। अग्निभिस्तुहरेद्भागं शेषंसत्त्वंर-जस्तमः ।। फल ।। सिद्धिःस्यात्कलिके सत्वे रजसातुविलम्बिता ।। तमसा-निष्फलंकार्यं ज्ञातव्यं प्रश्नकोविदैः ।।

टीका—जिस तिथि वार नक्षत्र और प्रहरमें प्रश्न करे उसका उत्तर नीचे लिखते हैं । उदाहरण–तिथि ५ वार ३ नक्षत्र ७ प्रहर २ इन सबको जोड़ा तो हुए १७ इसमें ३ का भाग दिया तो भोग्य १५ शेष २ जिसका नाम दूसरा रज उसका फल कार्यमें विलंव इस प्रमाणसे ३ बचे तो तम निष्फल १ बचा तो सत्त्व फल कार्यसिद्धि हो ।

अपनी छायासे प्रश्न

आत्मच्छायात्रिगुणितात्रयोदशसमन्विता ।। वसुभिश्चहरेद्भागं शेषचैव-शुभाशुभम् ।। फल ।। लाभश्चैकेत्रिकेसिद्धिर्वृद्धिः पंचमसप्तके । द्वयोर्हानिश्चतुः शोकं षष्ठाष्टे मरणंध्रुवम् ।।

टीका—अपनी छायाको तिगुनी करक उसमें १३ मिलावे फिर आठका भाग दे बचे वह फल जानिये ।।

शेष १	शेष २	शेष ३	शेष ४	शेष ५	शेष ६	शेष ७	शेष ८
लाभ	हानि	सिद्धि	शोक	वृद्धि	मरण	वृद्धि	मरण

अथ पन्थाप्रश्न

तिथिः प्रहरसंयुक्ता तारकावारमिश्रिता ।। सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषं तुफलमादिशेत् ।। वर्तमानंचनक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः ।। सप्तभिश्चहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ।। प्रश्नाक्षरंरुद्रयुक्तं सप्तभिर्भाजितंतथा ।। फलमेवंक्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषांहिशुभाशुभम् ।।

टीका––तिथि प्रहर वार नक्षत्र इन सबको इकट्ठा करके सातका भाग १ शेष बचे तो फल जानिये।। दूसरा प्रकार–कृत्तिकासे वर्तमान नक्षत्रतकगिनकर सातका भाग दे ।। तीसरा प्रकार–प्रश्नके अक्षरोंमें ११ मिलाकर सातका भाग दे शेष बचे तो फल जानिये ।

फल–एकशेषेतथास्थाने द्वितीयेपथिवर्तते तृतीयेप्यर्द्धमार्गेतु चतुर्थेग्राममादिशेत् ।। पञ्चमेपुनरावृत्तिः षष्ठेव्याधियुतं वदेत्।। शून्यंज्ञेयंसप्तमेवै चैतत्प्रश्नस्यलक्षणम्।।

टीका––१ शेष रहे तो स्थानहीमें जानिये, दो रहे तो मार्गमें, ३ बचे तो अर्धमार्गमें, ४ बचे तो ग्राममें आया जानिये, ५ बचे तो मार्गसे लौट गया कहिये, ६ बचे तो रोगग्रस्त, ७ बचे तो शून्य अर्थात् मरण जानिये ।

दूसरा प्रकार

धनसहजगतौसितामरेज्योकथयतआगमनंप्रवासिपुंसाम् ।।
तनुहिबुकगताविमौचतद्वज्झटितिनृणांकुरुतो गृहप्रवेशम् ।।

टीका––द्वितीयस्थानमें शुक्र तृतीयस्थानमें गुरु अथवा प्रश्नलग्नमें शुक्र चतुर्थ स्थानमें गुरु ऐसा योग हो तो परदेशी घरमें शीघ्रही आया जानिये ।

कार्याकार्यप्रश्न

दिशाप्रहरसयुंक्ता तारकावारमिश्रिता ।। अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषंप्रश्नस्यलक्षणम् ।। फल ।। पञ्चैकेत्वरितासिद्धिः षट्तुर्ये चदिनत्रयम् ।। त्रिसप्तकेविलम्बश्च द्वौचाष्टौनचसिद्धिद्वौ ।।

टीका––पृच्छकका मुख जिस दिशाको हो वह दिशा और प्रहर वार नक्षत्र इनको एकत्र करके आठका भाग दे शेष बचे उनसे फल जानिये १ अथवा ५ शेष बचें तो शीघ्र कार्यसिद्धि जानिये, ६ । ४ बचें तो ३ दिनमें कार्यसिद्धि ३ । ७ बचें तो विलंबसे २ । ८ बचें तो कार्य नहीं हो ।

अंकप्रश्न ।। अंकंद्विगुणितंकृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम् ।। त्रयोदशयुतंकृत्वा नवभिर्भागमाहरेत् ।। फल ।। एकेहिधनवृद्धिश्च द्वितीयेचधनक्षयः ।। तृतीयेक्षेममारोग्यं चतुर्थेव्याधिरेवहि ।। स्त्रीलाभः पञ्चशेषेस्यात्षष्ठे बन्धुविनाशनम् ।। सप्तमेईप्सितासिद्धिरष्टमेमरणंध्रुवम् ।। नवमेराज्यसंप्राप्तिर्गर्गस्यवचनंतथा ।।

टीका—जितने अंकका नाम हो उनको दूना कर फल और नामके अक्षरोंको मिलाये फिर १३ जोड़ ९ का भाग दे शेष बचे उसका फल १ धनवृद्धि, २ धनक्षय, ३ आरोग्य, ४ व्याधि, ५ स्त्रीलाभ, ६ बंधुनाश, ७ कार्यसिद्धि, ८ मरण, ९ राज्यप्राप्ति, यह गर्गमुनिका वचन है ।

नवग्रहात्मकंयन्त्रं कृत्वाप्रश्नंनिरीक्षयेत् ।।
फलंपूर्वोक्तमेवात्र द्रष्टव्यंप्रश्नकोविदैः ।।

४	३	८
९	५	१
२	७	६

टीका—नव ग्रहात्मक यंत्र बनाकर उसमें अवलोकन कर जो अंक आये उसका फल पूर्वोक्त प्रकारसे जानिये ।

दूसरामत ।। सप्तत्रयांकेकथयन्तिवार्ता नवैकपञ्चत्वरितंवदन्ति ।।
अष्टौद्वितीयेनहिकार्यसिद्धी रसाश्चवेदा घटिकात्रयंच ।।

टीका—पूर्व जो अंक कहे हैं उनके प्रमाणसे कृत्यकरे, परंतु फल भिन्न है शेष ७ । ३ रहे तो वार्त्ता करना जानिये ९ । १ । ५ बचें तो शीघ्रकार्य हो २ । ८ बचें तो कार्य नहीं हो ६ । ४ बचें तो तीन घडीमें कार्य हो ।

वारनक्षत्रयुक्त पन्था प्रश्न

बुधेचन्द्रेतथामार्गे समीपेगुरुशुक्रयोः ।। रवौभौमेतथादूरं शनौचपरिपीडयते ।। निर्जीवःसप्तऋक्षाणि सजीवोद्वादशेभवेत् ।। व्याधितोनवऋक्षाणि सूर्यधिष्ण्यात्तुचान्द्रभम् ।।

टीका—बुध अथवा सोमवारको प्रश्न करे तो मार्गमें चलता हुआ जानिये और गुरु तथा शुक्रको प्रश्न करे तो समीप आया जानिये रवि तथा भौमको दूर जानिये और शनिको पीडा युक्त जानिये; सूर्यनक्षत्रसे चंद्रनक्षत्रपर्यन्त लिखनेका क्रम प्रथम ७ नक्षत्रपर्यन्त चंद्रमा आवे तो निर्जीव, द्वितीय १२ नक्षत्र तक चंद्रमा आवे तो जीवित जानिये, तृतीय नव नक्षत्रपर्यंत-चंद्र आवे तो रोगकी उत्पत्ति जानिये इस भांति प्रश्न समझ लीजिये ।

नष्टवस्तु प्रश्न

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंवह्निविमिश्रितम् ।। पञ्चभिस्तुहरेद्भागं शेषं तत्वं-

विर्निर्दिशेत् ।। फल ।। पृथिव्यांतुस्थिरंज्ञेयं अप्सु व्योम्नि न लभ्यते।। तजस्तुराज-संज्ञेयं वायौशोकंविर्निर्दिशेत् ।।

टीका—प्रश्न तिथि वार नक्षत्र लग्न इनमें तीन मिलाकर ५ का भाग दे शेष १ बचे तो पृथ्वीमें, २ बचें तो जलमें पर मिले नहीं, ३ बचें तो आकाशमें यह भी मिले नहीं, ४ बचें तो तेजमें वह राजमें गई जानिये, ५ बचें तो वायु इसमें शोक जानिये ।

गर्भिणीप्रश्न

तत्पृच्छलग्नेरविजीव भौमे तृतीयसप्तेनवपञ्चमे च ।।
गर्भः पुमान्वैऋषिभिः प्रणीतश्चान्यग्रहेस्त्रीविबुधैः प्रणीता ।।

टीका—गर्भिणी जिस लग्नमें, प्रश्न कहे, उस लग्नसे प्रश्न कहे तृतीय अथवा नवम पंचम स्थानमें रवि भौम गुरु ये ग्रह स्थित हों तो पुत्र और इन्हीं स्थानोंमें अन्य ग्रह पड़े हों तो कन्या हो ।

मुष्टिप्रश्न ।। मेषेरक्तंवृषेपीतं मिथुनेनीलवर्णकम् ।। कर्केचपांण्डुरं ज्ञेयं सिंहेधूम्रंप्रकीर्तितम् ।। कन्यायांनीलमिश्रंतु तुलायांपीतमिश्रितम् ।। वृश्चिकेता-म्रमिश्रंच चापेपीतंविनिश्चितम् ।। नक्रे कुम्भे कृष्णवर्णं मीनेपीतंवदेत्सुधीः ।।

टीका—मेष लग्न हो तो प्रश्नकर्ताकी मुष्टिमें लालरंगकी वस्तु है और वृष हो तो पीत मिथुन हो तो नील, कर्क पांडुर, सिंह धूमिली, कन्या नील मिश्रित, वृश्चिक ताम्रमिश्रित, धन पीत मिश्रित, मकर और कुंभ लोहमय अर्थात् काली, मीनवर्ण पीतवर्ण वस्तु हो ।

लग्न से मनचिन्तित प्रश्न कहना

मेषेचद्विपदांचिन्ता वृषेचिन्ताचतुष्पदः ।। मिथुनेगर्भचिन्ता च व्यवसायस्य-कर्कटे ।। सिंहेच जीवचिन्तास्यात्कन्यायांचस्त्रियास्तथा।।तुलेचधनचिन्ताचव्याधि-चिंताचवृश्चिके ।। चापे चधनचिन्तास्यात्मकरे शत्रुचिन्तनम् ।। कुम्भेस्थानस्यचि-न्ता स्यान्मीने चिंताचदैविकी ।।

टीका—मेषलग्नमें प्रश्न करे तो मनुष्यकी चिंता, वृषमें गायभैसकी, मिथुन गर्भकी, कर्क में व्यापारकी, सिंहमें जीवकी, कन्यामें स्त्रीकी, तुलामें धनकी, वृश्चिकमें रोगकी, धनमें धनकी, मकरमें शत्रुकी, कुंभमें स्थानकी मीनमें भूत पिशाचादि बाहरी बाधाकी चिंता है ।

संज्ञाके अनुसार लग्नोंके नाम

धातुमुलंजीवश्चरस्थिरद्विस्वभावाश्च ।।
मेषादयः क्रमेणैवज्ञातव्याः प्रश्न कोविदैः ।।

टीका--मेषादिक्रमसे लग्नोंकी दो दो संज्ञा कहते हैं धातु चरसे मेषलग्नकी संज्ञा, मूल स्थिर वृषकी, जीव द्विस्वभाव मिथुनकी, धातु चर कर्ककी, मूल स्थिर सिंहकी, जीव द्विस्वभाव कन्याकी, धातु चर तुलाकी, मूलस्थिरवृश्चिककी, जीव द्विस्वभाव धनकी, धातु चर मकरकी, मूल स्थिरकुंभकी जीव द्विस्वभाव मीनकी इस प्रकार बारह लग्नोंकी संज्ञा जानिये।

अंकप्रश्न

अष्टोत्तरशताङ्केषु प्राश्निकोन्यूनमाचरेत् ।। शेषद्वादशभिर्भक्तं शेषंचैवशुभाशुभम् ।। फल ।। एवंदुर्गासप्तकेवैविलम्बश्चाङ्गतुर्योदिक्षुभूतेषुनाशः ।। रुद्रेसिद्धिर्युगलेवृद्धिरुक्ताशीघ्रं कार्यं स्यात्त्रिषट्द्वादशेषु ।।

टीका--पृच्छकके कहे एक सौ आठ अंकोंमेंसे एक अंकका नाम लिखकर और उसमें बारहका भाग दे शेष बचे उनसे फल जानिये, ३ । ७ । ९ बचे तो देरमें काम हो, ८। ४ । १० । ५ बचें तो नाश, ११ सिद्धि, २ वृद्धि ६ । ० बचे तो शीघ्र प्रश्नकार्य हो ऐसा जानिये।

रोगप्रश्न

तिथिवारंचनक्षत्रं लग्नंप्रहरएव च ।। अष्टभिस्तुहरेद्भागं शेषंतु फलमादिशेत् ।। फल ।। हयाग्नौदेवताबाधा पैत्रीवैनेत्रदन्तिषु ।। षट्चतुर्षुभूतबाधा नबाधाएकपञ्चके ।।

टीका--तिथिवार नक्षत्र और प्रहर लग्न इन सबको एकत्र करके ८ का भाग दे शेष बचे उनसे फल जानिये, ७ अथवा ३ बचें तो देवताकी बाधा २। ८ पितरोंकी ६ । ४ भूतकी १ । ५ बचें तो बाधा नहीं जानिये।

केवल लग्नसे प्रश्न

मेषेचदेवीदोषः स्याद्वृषेदोषश्चपैतृकः ।। मिथुनेशाकिनीदोषःकर्कटेभूतदोषकः ।। सिंहेसहोदराणांवै कन्यायांकुलमातृजः ।। तुले दोषश्चंडिकाया नाडीदोषोहिवृश्चिके ।। चापेचयक्षिणीपीडा मकरेग्रामदेवतात् ।। अपुत्रादृष्टिजःकुम्भेमीने आकाशगामिनः ।।

टीका--जिस लग्नमें रोगी प्रश्न करे उसका उत्तर मेषलग्नमें देवीका दोष, वृषमें पितृ दोष, मिथुनमें साकनी, कर्कमें भूत, सिंहमें भाइयोंका, कन्यामें कुलदेवता, तुलामें चंडिकाका, वृश्चिकमें नाडीदोष, धनमें यक्षिणी, मकरमें ग्राम देवताका, कुंभमें अपुत्रा स्त्रीकी दृष्टिका, मीनमें आकाशगामियोंका दोष ऐसे प्रश्न बतावे।

मेघका प्रश्न

आषाढस्यासितपक्षे दशम्यादिदिनत्रये ।। रोहिणीकालमाख्यातिसुखदुर्भि-

क्षलक्षणम् ।। रात्रावेवनिरभ्रंस्यात्प्रभाते मेघडम्बरम् ।। मध्याह्नेजलबिन्दुः स्यात्तदादुर्भिक्षकारणम् ।।

टीका—आषाढ़ कृष्णपक्षी दशमी अथवा एकादशी द्वादशी इन तीनों दिवसमें रोहिणी नक्षत्र आवे तो सुभिक्ष मध्यम दुर्भिक्ष ये तीन फलतिथि क्रमसे जानिये और रात्रि मेघरहित हो प्रातःकाल मेघ गर्जे मध्याह्नमें बूंद पड़े ऐसे लक्षण जिस संवत्सरके हों उसमें महर्घता जानिये ।

जललग्न

कुम्भःकर्कवृषौमीनमकरौवृश्चिकस्तुला ।। जललग्नानिचोक्तानि लग्नेष्वेतेषुसूर्यभम् ।। लभत्येवसदावृष्टिर्ज्ञातव्यागणकोत्तमैः ।।

टीका—कुंभ कर्क वृष मीन मकर वृश्चिक तुला ये ७ जललग्न हैं इनमें जो सूर्यनक्षत्र मिले तो वर्षा जानिये ।

मेघनक्षत्र

अश्विनीमृगपुष्येषु पूषाविष्णुमघासुच ।।
स्वात्यांप्रविशतेभानुर्वर्षतेनात्रसंशयः ।।

टीका—अश्विनी मृगशिर पुष्य रेवती श्रवण मघा स्वाती इन नक्षत्रोंमें सूर्य प्रवेश करे तो वृष्टि अधिक हो ।

स्त्रीनपुंसकपुरुषनक्षत्र

आर्द्रादिदशकंस्त्रीणां विशाखात्रिनपुंसकम् ।। मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ।। वायुर्नपुंसकेभेच स्त्रीणांभेचाभ्रदर्शनम् ।। स्त्रीणांपुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवतिनिश्चितम् ।।

टीका—आर्द्रा आदि स्वातिपर्यन्त १० नक्षत्र स्त्रीसंज्ञक हैं और विशाखादि ज्येष्ठांत ३ नपुंसक मूल आदि मृगपर्यन्त १४ पुरुषनक्षत्र हैं नपुंसक नक्षत्रमें स्त्रीनक्षत्र आवें तो वायु चले और दोनों स्त्री नक्षत्र आवें तो मेघदर्शन हो यदि पुरुष नक्षत्रोंका योग हो तो निश्चय वर्षा हो।

सूर्य तथा चंद्रनक्षत्रकी संज्ञा

अश्विन्यादित्रयंचैव आर्द्रादिःपञ्चकं तथा ।। पूर्वाषाढादिचत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम् ।। उक्तानिशशिभान्यत्र प्रोच्यन्तेसूर्यभान्यथ ।। रोहिणीचमृगश्चैव

पूर्वाफल्गुनिकातथा ।। सूर्येसूर्येभवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रेनवर्षति ।। चान्द्रसूर्योभवेद्योगस्त-दावर्षतिमेघराट् ।।

टीका––अश्विनी भरणी कृत्तिका आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा मघा पूर्वाषाढ़ा उत्तराषाढ़ा श्रवण धनिष्ठा उत्तरा रेवती ये चंद्रनक्षत्र और शेष सूर्यनक्षत्र जानिये ।। फल ।। दिवस-नक्षत्र और महानक्षत्र ये दोनों यदि सूर्यके हों तो वायु चले और दोनों चंद्रके हों तो मेघ नहीं वर्षे यदि चंद्र और सूर्यनक्षत्रका योग हो तो वर्षा अच्छी हो ।

धान्यप्रश्न

कापायेजयशर्मलाभकुगिरौ मित्राणिसर्वंशुभं गोरायेप्रियमुग्धनानिलपरे लाभारिनाशादिकम् ।। रय्याङ्केकलहःश्रियञ्चबलगे स्थानानिमित्रागमो रोरोरां-विपदः पराङ्ककलहःखालेय शोकावहः ।।

टीका––सत्ताईस दाने धान्यके लेकर एक राशि करें उसी राशिमें एक चुटकी भर निकालकर रखे ऐसे तीन राशि करें उसमेंसे तीन २ दाने पृथक्-पृथक् करता जाय यदि तीन राशियोंमेंसे एक २ वचे तो जय और लाभ हो १ का कहिये १ पा कहिये १ ये कहिये १ ऐसी तीन राशियोंसे पृथक् २ एक २ वचे उसका फल जय और लाभ ।

२ कु क० १ गी क०	३ रौ क० २ मित्रादिसर्वसिद्धि
३ गौ क० ३ रा २ ये	१ प्रियभोग धन प्राप्ति
४ ल ३ प १ रे ३	लाभ और पुत्रका नाश
५ र २ प १ ग ३	कलह हो
६ व ३ ल ३ ग ३	लक्ष्मी और मित्रलाभ
७ रो २ रो २ रां २	विपत्ति प्राप्ति
८ प १ रां २ ग ३	कलह
९ ख २ लां ३ य १	शोकप्राप्ति । ऐसे ३ वार करनेसे बुरा

भला फल जानिये और राशिकी गणनाके समय तीन २ दाने गिने ।

पशुके विषयमें प्रश्न

द्युमणिभान्नवमेषुवनेपशुस्तदनुषट् सुचवर्णपथेस्थितम् ।।
अचलभेषुगतं गृहमागतं द्वयगतं गतमेव मृतंत्रिषु ।।

टीका––यदि सूर्यनक्षत्रसे वर्तमान नक्षत्र नवम हो तो पशु वनमें जानिये और ६ नक्षत्रांत आवे तो मार्गमें जानिये उसके आगे ७ नक्षत्रांत आवे तो घरमें आया जानिये उसके

वाद २ नक्षत्रांत आवे तो आनेवाला नहीं उसके आगे ३ नक्षत्रांत आवे तो मृत्यु पावे ऐसा जानिये।

राज्यभंगादियोग

यदि भवतिकदाचिच्चाश्विनीनष्टचन्द्रा शशिरविकुजवारे स्वातिरायुष्मयोगे।। गगनचरपशूनां जङ्गमस्थावराणां नृपतिजनविनाशो राज्यभङ्गस्तुचोक्तः।।

टीका—कदाचित् शनि रवि भौम इनमें किसी वारसे युक्त अमावास्याको अश्विनी वा स्वाती नक्षत्र आयुष्मान् योग पड़े तो पक्षी जंगम स्थावर व राजा व जन इनका नाश और राज्यभंग हो।

सूर्य तथा चन्द्रके परिवेष अर्थात् मंडलका फल

रविशशिपरिवेषे पूर्वयामेचपीडा रविशशिपरिवेषे मध्ययामेच वृष्टिः।।
रविशशिपरिवेषे धान्यनाशस्तृतीये रविशशिपरिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे॥

टीका—रविका अथवा चंद्रका मंडल यदि प्रथम प्रहरमें हो तो जनोंको पीडा हो, दूसरे प्रहरमें हो तो मेघ वर्षे तीसरे प्रहरमें धान्यका नाश, चौथे प्रहरमें राज्यभंग हो।

उत्पातोंकाफल

रात्रौधनुर्दिनेउल्का तथाचैव दिनेतथा।। रात्रौतुधूमकेतुश्च भूकम्पश्चतथैवहि।। एतानिदुष्टचिह्नानि देशक्षयकराणिच।।

टीका—रात्रिमें धनुष दिनमें उल्का तथा नक्षत्रपात और रात्रिमें धूमकेतुका उदय तथा भूमिकंप ऐसे चिह्न हों तो देशक्षयकारक जानिये।

अथ छायाबलयात्रा

शनौसप्तपादःकवौषोडशस्यू रवौभौमके रुद्रसंख्याविधेया।। निशेशेबुधेष्टेश संख्याविधेया गुरावग्निभूसंख्यछायाविधेया।। न लत्तानपातं व्यतीपातघातं नभद्रानसंक्रान्तिशूलंतथाच।। नरो यातिसंशोध्य छायायदाहि तदाकार्य्यसिद्धिस्त्ववश्यंभवेत्तु।। स्वच्छायात्रिगुणाविश्वयुताभाज्याष्टभिः फलम्।। लाभोऽ१ र्थर२ हानी ३ रुग ४ वृद्धि ५ र्भयं ६ सिद्ध ७ र्मृतिः ८ क्रमात्।।

टीका—शनिवारको ७ पाँवकी छाया शुक्रवारको १६ पाँवकी छाया रविवार तथा मंगलमें ११ पाँवकी छाया विधान की है, चन्द्रमाको ८ और बुधवारको ११ संख्या विधान की है गुरुको १३ संख्या विधान की है इस छायाबलमें जो यात्रा करते हैं उनको लत्तापात

व्यतीपात भद्रावात संक्रांति दिशाशूल नहीं फल देता, अपनी छायाके साधना करनेमें मनुष्यको कार्यसिद्धि अवश्य होती है। पुनः अपनी छायाको तीन गुणा कर फिर १३ युक्त करे ८ का भाग दे यदि १ बचे तो लाभ, २ बचे तो लक्ष्मीप्राप्ति, ३ बचे तो हानि, ४ बचे तो रोग, ५ बचे तो वृद्धि, ६ बचे तो भय, ७ बचे तो सिद्धि, ८ बचे तो मृत्यु इस क्रम से यथावत् फल देती है सो यात्रामें विचार लेना चाहिये।

अथ वायुपरीक्षाकथनम्

आषाढमास्यचपूर्णमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवातिवातः ॥
पूर्वस्तदासस्ययुताचमेदिनी नन्दन्तिलोकाजलदायिनोघनाः ॥

टीका—यदि आषाढमासमें पूर्णिमाके दिन सूर्यास्त कालमें पवनपूर्वदिशाकी हो तो पृथ्वी धान्ययुक्त लोक सुखी मेघकी वृष्टि करे ऐसा फल जानिये।

कृशानुवातेमरणंप्रजानामन्नस्यनाशः खलुवृष्टिनाशः ॥
याम्येमहीसस्यविवर्जितास्यात्परस्परंयान्तिनृपाविनाशम् ॥

टीका—अग्निकोणकी वायु चले तो प्रजाका मरण अन्नका नाश और वर्षाका नाश हो, दक्षिण दिशाकी पवन हो तो पृथ्वी धान्य से वर्जित हो और परस्पर राजाओंका विनाश हो, फल दक्षिणदिशाका जानिये।

नैशाचरो वारि यदात्र वातो न वारिदोषक्षतिकारिसूरि ॥
तदामहीसस्यविवर्जितास्यात्क्रन्दन्तिलोकाः क्षुधयाप्रपीडिताः ॥

टीका—नैर्ऋत कोणकी यदि पवन हो तो थोड़ी वर्षा हो और पृथ्वी धान्यसे वर्जित, क्षुधा से रोगी और पीड़ित लोग रुदन करें।

आषाढमासेयदिपौर्णमास्यां सूर्यास्तकालेयदिवारुणेनिलः ॥
प्रवातिनित्यंसुखिनःप्रजाःस्युर्जलान्नयुक्तावसुधातदास्यात् ॥

टीका—आषाढमासमें पूर्णिमाके दिन यदि सूर्यास्त कालमें पश्चिम दिशाकी पवन हो तो प्रजा सुखी रहे और पृथ्वी जल अन्नसे पूरित हो ऐसा पश्चिम दिशाका फल जानिये।

वायव्यवातेजलदागमःस्यादन्नस्यनाशः पवनोद्धताद्यौः ॥
सौम्येऽनिलेधान्यजलाकुलाधरानन्दन्तिलोकाभयदुःखवर्जिताः ॥

टीका—जो वायव्य कोणकी पवन हो तो जलका आगमन अन्नका नाश और पृथ्वी प्रचंड पवनसे युक्त उत्तर दिशाकी पवन हो तो श्रेष्ठ वर्षा और धनधान्यसे पृथ्वी युक्त लोक सुखी भय दुःखसे वर्जित ऐसा कहना चाहिये।

ईशानवृद्धिर्बहुवारिपूरिता धराचगावोबहुदुग्धसंयुता ॥
भवन्ति वृक्षाः फलपुष्पदायिनोवातेभिनन्दन्तिनृपाः परस्परम् ॥

टीका--यदि ईशान कोणकी पवन चले तो पृथ्वी जलसे पूरित हो और गौएं दुग्धसे पूरित और वृक्ष फल पुष्पोंसे युक्त और राजाओंकी परस्पर मैत्री हो ऐसा ईशान कोणका फल जानना चाहिये ।

वर्ष निकालनेका प्रकार

गताब्दवृन्दैर्भुविखाभ्रचन्द्रैर्निघ्नेनभोव्योमगजैः सुभक्ता ।।
त्रिधाफलं वारघटीपलानि स्वजन्मवारादियुतानिइष्टम् ।।

टीका--वर्तमान संवत्में जन्म संवत् हीन करे तो गताब्द संज्ञा होगी गताब्दोंका भुवि १ ख० अभ्र० चंद्र १ अर्थात् १०० से गुणा किया नभ० व्योम० गज ८ अर्थात् ८०० का भाग दे ३ इसमें स्थापना करे जो फल प्राप्त हो वह वार इष्ट होगा इसमें जन्मका वार इष्ट जोड़ दे और ऊर्ध्वांकमें ७ का भाग दे तो वर्षका वार इष्ट सिद्ध होगा, उदाहरण--वर्तमान संवत् १९३६ जन्म संवत् १९३४ इनका अन्तर २ इसको १०० से गुणा किया तो २०१४ हुए और इसमें ८०० का भाग दिया तो २ प्राप्त हुए और शेष ४१४ रहे इनको ६० से गुणा तो २४८४० हुए हुए फिर इनमें ८०० का भाग दिया तो ३१ मिले और शेष ४० रहे इनको ६० गुणा तो २४०० हुए तो इनमें ८०० का भाग दिया तो ३ मिले इस कारण० २ वार ३१ घटी० ३ पल सिद्ध हुए इनमें जन्मवारादि ६।४५।०५ जोडे ०९।१६।८ ऊर्ध्वांक ९ में ७ के भागसे शेषांक ०२।१६।० ५ यह वर्षका इष्ट हुआ ।

अथ तिथि बनानेका क्रम

याताब्दवृन्दोगुणवेदरामै २४३ र्निघ्नःकुरामै ३१ र्विहृतोदिनाद्यम् ।।
घस्त्रे सहोत्थैः सहितंखरामै ३० र्भक्तंचशेषातिथिरत्रवर्षे ।।

टीका--गत वर्षों को २४३ से गुणा करे पुनः ३१ का भाग दे जो अंक प्राप्त हो वह तिथि जाने इसमें जन्मकी तिथि युक्त करे फिर ३० से जो शेष रहे वह वर्षकी तिथि होगी, परंतु तिथिमें १ न्यूनाधिक कहीं हो जाती है ।

अथ नक्षत्र लानेका क्रम

व्योमेन्दुभिः १० संगुणितागताब्दाः खशून्यवेदाश्वि २४० लवैर्विहीनाः ।। जन्मर्क्षयोगैः सहिताप्रवस्था नक्षत्रयोगौ भवतोभ २७ तष्टौ ।।

टीका--गत वर्षोंको १० गुणा कर फिर दो जगह रखे और एक जगह २४ का भाग दे जो फल प्राप्ति हो वह दूसरे में घटा दे और जन्मार्क्ष या योग जोड़ दे और उस नक्षत्रमें २७ का भाग देनेसे शेष नक्षत्र होगा ।

अथ ग्रहचालनकथनम्

स्वेष्टकालोयदाग्रेस्यात्पंक्तीचशोधयेद्धनम् ।।
पंक्तीश्चैवयदाग्रेस्यादिष्टंचशोधयेदृणम् ।।

टीका––इष्टकाल पञ्चांगस्थ पंक्तिसे आगे हो तो पंक्तिमें काल शोधन करना तो चालन धन होता है और जो पंक्ति इष्टकालसे आगे हो तो इष्टमें पंक्तिशोधन करना तो चालना ऋण होता है।

अथ ग्रहस्पष्टीकरणम्

गतैष्यदिवसाद्येन गतिर्निघ्नीखषड्हृता ॥
लब्धमंशादिकंशोध्यं योज्यंस्पष्टोभवेद्ग्रहः ॥

टीका––गत दिनसे अथवा आगत दिनसे सूर्यादि ग्रहोंकी गतिको गुणा देना और ६० से भाग देना लब्धि अंशादि आये वह गत दिनका हो तो ग्रहमें कम करना और आगत दिनका हो तो युक्त करना इससे ग्रह स्पष्ट होता है।

अथ भयातभभोग बनानेकी रीति

गतर्क्षनाड्यः खरसेषुशुद्धाः सूर्योदयादिष्टघटीषुयुक्ताः ॥
भभुक्तमेतच्चनिजर्क्षनाडिकाः शुद्धाः सयुक्ताश्चभभोगसंज्ञकाः ॥

टीका––गत नक्षत्रकी घड़ीको ६० में शुद्ध करना और वर्षमें सूर्योदयसे जो इष्ट घटी हो वह युक्त करना तो भयात होता है। ६० में शुद्ध किया जो नक्षत्र उसमें वर्तमान नक्षत्रकी घटी युक्त करना तो भभोग होता है।

अथ चंद्रस्पष्टक्रममाह

खषड्घ्नंभयातं भभोगोद्धृतंतत्खतर्कघ्नधिष्ण्येषुयुक्तंद्विनिघ्नम् ॥
नवाप्तं शशीभागपूर्वस्तुभुक्तिः खखाभ्रष्टवेदाभभोगेनभुक्ताः ॥

टीका––बीते हुए नक्षत्रका पिंड बांधकर ६० से गुणे और भभोगका पिंड बांधकर तीनबार भाग दे गत नक्षत्रको ६० से गुणे और जो भभोगके भागसे प्राप्त हुआ जो भयात है उसे इसमें जोड़ दे फिर इसे दुगुना करे और ९ का भाग दे तीन वार तो चन्द्रमा अंशपूर्वक होता है और अंशों में ३० का भागमें समीकरे और ४८००७ से गुणे और भभोगका भाग दे दो वार तो चन्द्रमाकी भुक्ति स्पष्ट हो जायगी।

अथ लग्नसाधनम्

समागणश्चन्द्रकृशानुनिघ्नः खचन्द्रभक्तोजनिलग्नयुक्तः ॥
तष्टोदिनेशः किलवर्षलग्नं सामान्यतोमान्यतरैर्निरुक्तम् ॥

टीका––गताब्दको ३१ से गुणा देना १० से भाग लेना उसमें जन्मलग्न युक्त करना १२ से उसे तष्टित करना जो शेष बचे तो सामान्य रीतिसे वर्ष लग्न जानना चाहिये।

अथमुंथा

सैकागताब्दाविरताः पतंगैस्तच्छेषभावे मुंथहाजनुर्भात् ।।

टीका—शताब्दमें १ युक्त करना १२ से भाग देना जो शेष रहे सो जन्म लग्नसे मुंथाका स्थान जानना चाहिये ।

अथपञ्चाधिकारी

मुन्थेशो वर्षलग्नेशस्तत्रैराशिकनायकः ।। दिवार्कराशिनाथश्च रात्रौचन्द्र-क्षनायकः ।। जन्मलग्नेश्वरश्चैव वर्षपञ्चाधिकारिणः ।।

टीका—वर्षमें पञ्चाधिकारी बनानेका क्रम । मुंथेश १ वर्षलग्नेश २ त्रि राशीश दिनमें वर्ष प्रवेश हो तो सूर्यके राशिका स्वामी रात्रिमें वर्ष प्रवेश हो तो चन्द्रके राशिका स्वामी ४ जन्मलग्नेश्वर ५ वर्षमें यह पञ्चाधिकारी शुभाशुभ फलके लिये ग्रह अधिकार देखना । जिसके दो तीन अधिकार आवें वह बलवान जानना चाहिये ।

त्रिराशिपाः सूर्यसितार्कशुक्रा दिनेनिशीज्येन्दुबुधक्षमाजा ।।
मेषाच्चतुर्णांहरिभाद्विलोमं नित्यंपरेष्वार्किकुजेज्यचन्द्राः ।।

टीका—त्रिराशिपति होते सूर्य शुक्र और शनि शुक्र दिनमें मेषसे आदि लेकर कर्क राशितक चक्रसे प्रतीत हो ।

राशयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
दिवास्वामी	सू.	शु.	श.	शु.	शु.	बु.	श.	शु.	सू.	सू.	श.	शु.
रात्रिस्वामी	बृ.	चं.	बु.	मं.	बृ.	चं.	बु.	मं.	बु.	चं.	बु.	मं.
हद्दास्वामी	श.	मं.	बृ.	मं.	श.	मं.	बृ.	मं.	श.	मं.	बृ.	मं.

दृष्टिक्रममाह

पादंत्रिरुद्रे १५ सदलंस्वतुर्ये ३० पादत्रयंस्यान्नरपञ्चमोपि ४५ ।।
पश्यन्तिपूर्णं समसप्तके च ग्रहानचान्यत्रविलोकयन्ति ।।

स्पष्टार्थचक्रं विलोकयन्ति

[illegible]	४	०५		भाव
११	१०	९	७	
१५	३०	४५	६०	कलादृष्टि

लग्नस्थमुन्थाप्रकरोतिसौख्यं नृपप्रसादं विजयं रिपूणाम् ।। हर्षोदयं बाहुब-लप्रतापं वृद्धि विलासं धनलाभमुग्रम् ।। मुन्थाधनस्थानगलाभमुग्रं करोति

मिष्टान्नसमागमं च ।। सर्वार्थसिद्धिनिजबाहुवीर्यात्सुखोदयंमित्रसुतोदयंच ।। लोकाज्जयंनिजजनाच्चसहोत्थसौख्यं देहार्त्तिकीर्त्तिशुभ कार्यसमृद्धिदात्री ।। सत्सङ्गतिश्चसबलातनुत्तेहमैत्री मुन्थाच प्राक्रमगतानृपतिप्रसादम् ।। वित्तक्षयंरिपुजनादय शस्यवृद्धि वैरोदयंस्वजनराजकुलेषुकुर्यात् ।। गुप्तार्तिकृद्धृदरुजस्यविवर्तितदात्री तुर्येन्थिहाविविधरोगभयानिपुंसाम् ।। प्रतापमाहात्म्यसुरार्चनंच सुबुद्धिवृद्धिर्यशसः प्रवृद्धिः ।। वित्तप्रलाभो जगतांप्रसादः पुत्राप्तिसौख्यं मुथनेन्थिहायाम् ।। नृपाद्भयं चौरभयं कृशत्वं निरुद्यमत्वं रिपुजंभयंच ।। कार्यार्थहानिः कुमतीष्टवैरं षष्ठेंथिहादुष्टरुजंविदध्यात् ।। सौख्यार्थनाशोबनितादिकष्टं चिंतामनोमोहनमलपरोगम् ।। क्लेशोदय स्वेष्टजनेषुवैरं यशोविनाशो मुथगेंथिहायाम् ।। दुष्टंभयार्ति धनधान्यनाशो विपक्षभीतिर्व्यसनानिमोहाः ।। कान्तेविनाशं स्वजनेषुपीडा नृपाद्भयंचाष्टमगेंथिहायाम् ।। धर्मार्थलाभं स्वजनेषुमैत्री नृपोद्यमैः प्रीतियशः प्रवृद्धिः।। प्रमोदभाग्योदयकार्यसिद्धि पुण्योपगेन्था प्रकरोति सौख्यम्।।मनोरथाप्ति स्वजनेषुसौख्यं निजेष्टमन्त्री स्वजनोपकारकः भूपात्प्रसादो दशमेंथिहायां पुण्योदयः स्याद्विपुलंयशश्च ।। सुखार्थलाभं शुभबुद्धिवृद्धिर्मनोरथाप्ति नृपतिप्रसादम्। निजेष्टसौख्यं मनसांप्रहर्षं करोतिमुन्था भवगेवशित्वम् ।। निरुद्यमत्वं निजमित्रकष्टं दुष्टातिरुक्कृन्नृपतेर्भयंच ।। धर्मार्थनाशो रिपुचौरभीतिः स्वाभीष्टपीडा व्ययगेंथिहायाम् ।।

अथ त्रिपताकीचक्रका प्रकार

रेखात्रयं तिर्यगधोर्ध्वसंस्थमन्योन्यविद्धाग्रकमीशकोणात् ।।
स्मृतंबुधैस्तत्त्रिपताकचक्रं प्राङ्मध्यरेखा ग्रहवर्षलग्नात् ।।

टीका—रेखा ३ टेढी ३ सीधी करे और परस्पर ईशान्य कोणसे रेखाका वेध करे इसको पंडितजन त्रिपताकी चक्र कहते हैं इसमें पूर्वके मध्य रेखापर वर्षलग्नका न्यास करना।

तत्र ग्रहन्यासमाह

न्यसेद्भचक्रं च विलग्नकार्या ताराब्दसंख्या विभजेन्नभोगैः ।। शेषोन्मिते जन्मगचारराशेस्तुल्येचराशो विलिखेच्छशाङ्कं ।। परे चतुर्भाजित शेषतुल्ये स्थाने खरांशेखचरास्तुलेख्याः ।।



टीका—त्रिपताकी चक्रपर १२ राशि न्यास करना और ग्रहन्यासका प्रकार गतवर्षमें १ युक्त करना ८ से भाग लेना जो शेष रहे वह जन्मकालमें चन्द्र राशिसे शेष स्थानमें चंद्रमा लिखना और ग्रहको ४ से भाग देकर जो शेष बचें उसे वहाँ अपने स्थानमें लिखना और राहु, केतु अपने स्थानसे लिखना तो त्रिपताकी चक्र स्पष्ट होता है ।

वेधविचार

स्वर्भानुविद्धे हिमगौत्वरिष्टं तापोर्कविद्धे रुगिनोर्ध्वविद्धे ।। महीजविद्धेतु शरीरपीडा शुभैश्चविद्धे जयसौख्यलाभाः ।। शुभाशुभव्योमगवीर्यगोत्रफलंतु-वेधस्य वदेत्सुधीमान् ।।

टीका—त्रिपताकी चक्रमें वेध देखनेका प्रकार सर्वग्रहोंका वेध चंद्रमासे देखना और राहुसे चंद्रसे वेध हो तो अरिष्ट जानना, सूर्यसे वेध हो तो ताप जानना, शनिसे वेध हो तो रोग जानना, मंगलसे वेध हो तो शरीर की पीडा जानना और शुभ ग्रहसे वेध हो तो जय-प्राप्ति सौख्यलाभ और शुभग्रहका वीर्य देखकर वेधमें फल कहना ।

मुद्दादशा

जन्मर्क्षसंख्या सहितागताब्दा दृगूनितानन्दहृतावशेषात् ।।
आजंकुराजी शबुकेषुपूर्व भवन्तिमुद्दादशिकाक्रमोयम् ।।

टीका—जन्मनक्षत्रकी जो संख्या उसमें गताब्दकी संख्या मिलाना और दोनोंकी जो संख्या हो उसमें से दो दो कमती करना और ९से भाग देना जो अंक शेष रहे सो दशा जानना, १ शेष रहे तो सूर्य की दशा, २ शेष रहें तो चंद्रमाकी दशा,३ शेष रहें तो मंगलकी दशा, ४ शेष रहे तो राहूकी दशा, ५ शेषरहें तो गुरुकी दशा, ६ शेष रहें तो शनिकी दशा, ७ शेष रहें तो बुधकी दशा, ८ शेष रहें तो केतुकी दशा, ० शेष रहे तो शुक्रकी दशा जानना । यह दशाका क्रम ज्योतिषशास्त्रके आचार्योंने कहा है ।

मुद्दादशाचक्रम्

सू.	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रहाः
०	१	०	१	१	१	१	०	०	मास
१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०	दिन

मास बनानेका क्रम

मासार्कस्यतदासन्नपक्त्यर्कणसहान्तरम् ।। कलीकृत्यार्कगत्याप्तदिनाद्येनयुतो-नितम् ।। तत्पंक्तिस्थंयातपूर्व मासार्केधिकहीनके ।। तद्वाराद्येमासवेशोद्युप्रवेशः कलासमः ।।

टीका—वर्ष सूर्यमासको जो सूर्य वह सूर्य वर्षके सूर्यसे अंशोंमें निकट हीन अथवा अधिक हो तो उसका अंतर करे राशि छोड फिर उसका पिंड़ बांधकर सूर्य पंक्तिके गतिका पिंड बांधके तीन दफे भाग दे तो उससे वार आदि प्राप्त होंगे फिर जिस पंक्तिके सूर्यका अंतर किया है उसे उसी मिश्रमानमें घटा दे अथवा जोड़ दे, जो सूर्य वर्षकी पंक्तिके सूर्यसे अधिक हो तो जोड़ दे और हीन हो तो घटा दे तब मास वारादि स्पष्ट होगा ।

अथ ग्रहचक्रप्रकरण

सूर्य ।। ऋक्षसंक्रमणंयत्र द्वेवक्रेविनियोजयेत् ।। चत्वारिदक्षिणे बाहौ त्रीणित्रीणिचपादयोः ।। चत्वारिवामबाहौच हृदयेपञ्च निर्दिशेत् ।। अक्ष्णोर्द्वयंद्वयंयोज्यं मूर्ध्निचैकैककंगुदे ।। फल ।। रोगोलाभस्तथाध्वाच बन्धनंलाभएवच ।। ऐश्वर्यंराजपूजाच अपमृत्युरितिक्रमात् ।। चन्द्र ।। चन्द्रचक्रंप्रवक्ष्यामि नराकारं सुशोभनम् ।। शीर्षेषट्कंमुखेत्वेकं त्रीणिदाक्षिणहस्तके ।। हृदि षट्कंप्रदातव्यं वामहस्ते त्रयंतथा ।। कुक्ष्योः षट्कंचदातव्यं पादैकैकं विनिर्दिशेत् ।। फल ।। शीर्षेलाभकरंज्ञेयं मुखेतु द्रव्यहारकम् ।। हानिदंदक्षिणेहस्ते हृदयेच सुखावहम् ।। वामहस्तेतुरोगाश्च कुक्ष्योः शोकस्थैवच ।। पादयोर्हानिरोगौच जन्मधिष्ण्यादिचन्द्रभम् ।। भौम ।। भौमचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मधिष्ण्यादिचन्द्रभम् ।। शीर्षे षट्कं

सूर्य.			चंद्र			मंगल		
सूर्य संक्राति जिस नक्षत्रमें होय उससे जन्म नक्षत्र पर्यंत गणनेसे जितने नक्षत्र आवे वे फल जानिये।			जन्म नक्षत्रसे जिस नक्षत्रमें चंद्रहोय तिस पर्यंत गिने जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये ॥			जन्मनक्षत्रसे जिस नक्षत्रमें मंगल होय तिनके गिननेसे जितने नक्षत्र आवैं वे फल जानिये		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मुखमें	३	रोगप्राप्ति	मस्तकमें	६	लाभ	शिरपर	६	बिजय
दाहिनेहा	४	लाभ	मुखमें	१	द्रव्यहरण	मुखमें	३	रोगप्राप्ति
पायोंमें	६	मार्गचलन	दाहिनेहा	३	हानिकर	दायाहाथ	३	लक्ष्मीप्रा.
बाईबाहु.	४	बंधन	हृदयमें	६	सुखप्राप्त	पायोंमें	६	मार्गचल.
हृदयमें	५	लाभ	बायेंहा.	३	रोगप्राप्ति	बायांहाथ	३	भय
नेत्रोंमें	४	लक्ष्मीप्रा	कुक्षिमें	६	शोक	गुदामें	१	मृत्यु.
मस्तकमें	१	राजसेपूजा	दाहिनेपा.	१	हानि	नेत्रोंमें	२	लाभ
गुदामें	१	अपमृत्यु	बायापाय.	१	रोगप्राप्ति	हृदयमें	३	सुख

मुखेत्रीणि त्रीणि वैदक्षिणेकरे ।। पादयोः षट्प्रदातव्यं वामहस्ते त्रयं तथा ।। गुह्ये चैकं नेत्रयोर्द्वे हृदये त्रयमेवच ।। फल ।। विजयश्चैव रोगश्च लक्ष्मीः पन्थाभयंतथा ।। मृत्युर्लाभः सुखंचापि फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ।। बुध ।। बुधचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मऋ-क्षादि सौम्यदम् ।। शिरसि त्रीणिराज्यंस्याद्वक्त्रैकं धनधान्यदम् ।। नेत्रेद्वेप्रीतिला-भौचनाभौ श्रीपञ्चकंतथा ।। पादयोः षट्प्रवासश्चवामेवेदा धनंतथा ।। चत्वारि दक्षिणेहस्ते धनलाभस्तथैवच ।। गुह्य स्थानेभद्वयंचबन्धनंमरणं फलम् ।। गुरु ।। गुरु चक्रंप्रवक्ष्यामिगुरुभाज्जन्मऋक्षकम् ।। दद्याच्छिरसिचत्वारिचत्वारि दक्षिणे करे।। एककण्ठे मुखेपञ्च पादयाः षट्प्रदापयेत् ।। करेवामेच चत्वारित्रीणिदद्याच्चनेत्रयोः ।। फल ।। राज्यंलक्ष्मीर्धन प्राप्तिः पीडामृत्युस्तथैवच ।। सुखं चैव क्रमेणैवं फलंज्ञेयं विचक्षणैः ।। शुक्र ।। शुक्रचक्रं प्रवक्ष्यामि शुक्रधिष्ण्यात्तुजन्मभम् ।। मुखे-त्रीणि महालाभः शीर्षे पञ्च शुभावहः ।। त्रिकंतु दक्षिणेपादे क्लेशहानिकरं सदा ।। तथैव वामपादेचत्रीणिभानितुयोजयेत् ।। हृदयेद्वे धनंसौख्यंभाष्टकं हस्तयोर्द्वयोः ।। मित्रसौख्यं धनप्राप्तिगृह्येत्रीणि तथैवच ।। स्त्री लाभश्चफलंप्रोक्तं भृगुपुत्रस्यसूरिभिः ।।

बुध ॥			गुरु ॥			शुक्र ॥		
जन्म नक्षत्रसे बुध जिस नक्षत्रमें होय तिस पर्यंत गिनै जिस स्थान बुध पडै उसका फलजानिये ॥			जिननक्षत्रमें गुरु होयउससे जन्मनक्षत्रतक गिन्नेसे जिसस्थानमें पडाहोय उसका फलजानिये ॥			शुक्रजिसनक्षत्रमेंहोय उस-से जन्मनक्षत्रपर्यंत गणनेसे जिसस्थानमें पडाहोय उस स्थानका फलजानिये—		
स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल	स्थान	नक्ष	फल
मस्तक	३	राज्यप्राप्ति	मस्तक	४	राज्यप्राप्ति	मुखमें	३	उत्तमला॰
मुखमें	१	धन	दाहिनेहा॰	४	लक्ष्मीप्राप्ति	मस्तकमें	५	शुभ
नेत्रोंमें	२	प्रीतलाभ	कंठमें	१	धनलाभ	दाहिनेपा.	३	क्लेशहानि
नाभिमें	५	लक्ष्मी	मुखमें	५	पीडा	बायेंपादमें	३	क्लेशहानि
पायोंमें	६	प्रवास	पायोंमें	६	मृत्यु	हृदयमें	२	धनसौख्य
बायेंहाथ	४	धनलाभ	बायेंहाथ	४	सुखप्राप्ति	हाथोंमें	८	मित्रसुख
दाहिनेहा॰	४	धनलाभ	नेत्रोंमें	३	सुखप्राप्ति	गुह्यमें	३	स्त्रीलाभ
गुदामें	२	बंधवमर.	०	०	०	०	०	०

शनि ।। सौरिचक्रं प्रवक्ष्यामि सौरिभाज्जन्मऋक्षभम् ।। मूर्ध्न्येकंच तथा-वक्त्रे करेचत्वारि दक्षिणे ।। विन्यसेत्पादयुग्मे षट् वामबाहौ चतुष्टयम् ।। हृदये पञ्चऋक्षाणि क्रमाच्चत्वारि नेत्रयोः।।हस्तेद्वये गुदे चैकं मन्दस्य पुरुषाकृते ।।फल ।। मूर्द्ध वक्त्रस्थभेरोगो लाभौ वै दक्षिणेकरे ।। स्वादध्वा चरणद्वन्द्वे बन्धौ वामकरे नृणाम् ।। हृदये पञ्चलाभोवै नेत्रेप्रीतिरुदाहृता ।। पूजामस्तं परानूनं गुदेमृत्युं विनिर्दिशेत् ।। राहू ।। राहुचक्रं प्रवक्ष्यामिजन्मभाद्राहुऋक्षभम् ।। मूर्ध्नित्रीणि तथाप्रोक्तं करे चत्वारि दक्षिणे ।। पादयोः षट्चऋक्षाणिवामहस्ते चतुष्टम् ।। हृदयेत्रीणि कण्ठेकं मुखे द्वौ नेत्रयोर्द्वयम् ।। गुह्येद्वयं क्रमेणैव राहुचक्रं स्वभावतः ।। फल ।। राज्यं रिपुक्षयः पन्था मृत्यर्लाभोऽथरोगकः ।।जयः सौख्यं तथा कष्टं क्रमाज्ज्ञेयंफलं बुधैः ।। केतु ।। केतुचक्रं प्रवक्ष्यामि जन्मभात्केतुऋक्षभम् ।। मूर्ध्नि-पञ्च जयश्चैव मुखेपञ्च महद्भयम् ।। हस्तयोर्भानिचत्वारि विजयश्च जय-स्तथा ।। पादयोः षट्चसौख्यंस्याद्धृदि द्वे शोककारके ।। कण्ठेचत्वारिचव्याधिर्गु-ह्येकंच महद्भयम् ।।

शनि			राहु			केतु.		
शनि जिसनक्षत्रमें होय उ-ससे जन्मनक्षत्र पर्यंत गिनै जिसस्थलमें नक्षत्रपडाहो-य वह फल जानिये			जन्मनक्षत्रसे राहुनक्षत्र पर्यंत गिनै जहां नक्षत्र पडाहोय वह फल जा-निये ॥			जन्मक्षत्रसे केतु जिस न-क्षत्रमें होय उसतक गिनै जितने नक्षत्र पडै वे फल जानिये ॥		
स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल	स्थान	न०	फल
मस्तक	१	रोग	मस्तक	३	राज्यप्राप्ति	मस्तक	५	जय
मुख	१	रोग	दायांहा.	४	रिपुक्षय	मुखमें	५	बडाभय
दक्षिणहा.	४	लाभ	पायोंमें	६	मार्गचलन	हाथोंमें	४	विजय
पायोंमें	६	मार्गचलन	बायंहाथ	४	मृत्यु	पायोंपर	६	सुख
बामबाहु	४	पूजा	हृदयमें	३	लाभ	हृदयमें	२	शोक
हृदयमें	५	लाभ	कंठमें	१	रोग	कंठमें	४	व्याधि
नेत्रोंमें	४	प्रीतिला.	मुखमें	२	जय	गुह्यपर	१	बडाभय
बायंहाथ	१	[illegible]	नेत्रोंमें	२	सौख्य	०	०	०
गुदामें	१	मृत्यु	गुदामें	२	कष्ट	०	०	०

जन्मनक्षत्र कहां पड़ा है उसका ज्ञान

शीर्षेत्रीणि मुखेत्रयं चरविभादेकैकभं स्कन्धयोरेकैकं भुजयोस्तथा करतले धिष्ण्यानि पञ्चोदरे ।। नाभौ गुह्यतलेच जानुयुगले चैकैकऋक्षं क्षिपेज्जन्तोः केचिदितिब्रुवन्तिगणकाः शेषाणिपादद्वये ।। अल्पायुश्चरणस्थितेचगमनं देशान्तरंजानुभे गुह्येस्यात्परदारलम्भनमथो नाभौच सौख्यप्रदम् ।। ऐश्वर्यंहृदि चौर्यमस्यकरयो र्बाह्वोर्बलं वैमुखे मिष्टान्नं चलभेच्च मानवगणो राज्यंस्थिरंमूर्द्धनि ।।

टीका—केवल मनुष्यचक्र सूर्यनक्षत्रसे जन्मनक्षत्रतक देखनेका क्रम प्रथम ३ नक्षत्र मस्तकपर फल राज्यप्राप्ति मुखपर, ३ नक्षत्रफल मिष्ठान्नभोजन, स्कंधपर २ नक्षत्र फल बलवान्, भुजापर २ नक्षत्र फल बल, हाथके तलुवेपर २ नक्षत्र फल चोर, हृदयपर ५ नक्षत्र फल ऐश्वर्य, नाभीपर १ नक्षत्र फल सुख गुह्यपर १ नक्षत्र फल स्त्रीसे लंपट, जानुपर २ नक्षत्र फल देशवास, पादपर ६ नक्षत्र फल थोड़ा आयुष्य, ऐसा जन्मनक्षत्रसे स्थान विचार करना ।

लग्नशुद्धिपंचक देखना

**गततिथियुतलग्नंनन्दहृच्छेषकंच वसुयमयुगषट्के क्षोणिसंख्याक्रमेण ।।
रुगनलनृपचौरं मृत्युदंपञ्चकंस्याद्व्रतगृहनृपमार्गोद्वाहके वर्जनीयम् ।।**

टीका—गत तिथिको लेकर उसमें लग्न मिलावे और नवका भाग दे शेष बचे उसका फल जानिये । ८ वचे तो रोगपंचक यह यज्ञोपवीतमें वर्जित २ वचें तो अग्निपंचक यह गृहारंभमें वर्जित, ४ बचें तो राजपंचक और ६ बचें तो चौरपंचक ये दोनों पंचक गमन लग्नमें वर्जित हैं; १ वचे तो मृत्यु पंचक यह विवाह में वर्जित है, इनसे अधिक जो शेषांक बचें तो निष्पंचक जाने वे सर्व कार्यमें उक्त हैं ।

वारोंमें पंचकवर्जित

**रवौरोगं कुजेवह्निः सोमेतुनृपपञ्चकम् ।।
बुधे चौरं शनौमृत्युः पञ्चकानि तु वर्जयेत् ।।**

टीका—रविवार में रोगपंचक, मंगलमें अग्निपंचक, सोमवारमें राजपंचक, बुधवारको चौरपंचक, शनिवारको मृत्युपंचक ऐसे ये पंचक इन वारोंमें वर्जित जानिये ।

दिनमान रात्रिमान

**अयनादिकवासररामहता गगनानलबाणशशांकयुताः ।।
परिभाजितशून्यरसैर्घटिका कर्कादिनिशामकरादि दिनम् ।।**

टीका—अयन अर्थात् कर्क संक्रांतिसे मकर संक्रांतितक ६ महीने वैसेही मकरसे कर्कतक ६ महीने जिस दिवसका दिनमान जानना हो उस पर्यन्त कर्कसंक्रांतिसे दिन गिनकर उसको ३ से गुणा करे जो अंक आवें उनमें १५३० मिलावे और ६० का भाग दे जो बचे वह रात्रिमान और जो मकर संक्रांतिसे गणना करे तो दिनमान आवे यह जानिये ।

दिन कितना चढ़ा है यह जाननेकी रीति

पादप्रभा नगयुता रहिताचमेषात् षट्स्विन्दुनात्रियुगबाणशराब्धिरामैः ।
स्याद्भाजको दिनदलस्य नगाहतस्य पूर्वं गताः स्युरपरे दिनशेषनाड्यः ।।

टीका--अपनी छाया को पाँवसे मापे जितने पाँव आवें उसमें ७ मिलाये और मेष संक्रांतिसे कन्यासंक्रांति पर्यन्त इन्दु अर्थात् एक इसमें घटावे उसके आगे तुलासे मीनपर्यंत जो संक्रांति हो उसका क्षेपक तो घटा देवे ऐसे तुला ३ वृश्चिक ४ धन ५ मकर ५ कुंभ ४ मीन ३ इस प्रमाणसे अंक घटावे पृथक् लिखे उसके बाद दिनदल अर्थात् १५ इसको ७ सेगुणा किया तो हुए १०५ इनमें पीछे लिखे हुए अंकको भाग दे जो भागांक आवे वे घटी जानिये परंतु दिनके पूर्वार्द्धमें दिवसकी घड़ी आवें और उत्तरार्द्धमें दिन शेष आवे यह जानिये ।

रात्रि कितनी गई यह जाननेकी रीति

सूर्यभान्मध्यनक्षत्रं सप्तसंख्याविशोधितम् ।।
विंशतिघ्नंनवहृतं गतारात्रिः स्फुटाभवेत् ।।

टीका--रात्रिमें जो नक्षत्र हों उस पर्यंत सूर्यनक्षत्रसे गिनके ७ घटा दे, शेष रहे उसको २० से गुणा करे और ८ का भाग दे जो अंक शेष रहें उतनीही गत रात्रि कहिये ।

अंतरंगबहिरंगनक्षत्र

सूर्यभादुडुगणं पुनर्गण्यतामितिचतुष्टयंत्रयम् ।।
अन्तरंगबहिरंगसंज्ञकं तत्रकर्मविदधीततादृशम् ।

टीका--सूर्यनक्षत्रसेचार नक्षत्र फिर तीन नक्षत्र इस प्रकार वर्त्तमान नक्षत्रतक वारंवार गिने तो वे क्रमसे अंतरंग बहिरंग संज्ञक होते हैं इनमें लाना और पठवाना आदि कर्म करे ।

सूतिकास्नान

करेन्द्रभाग्यानिलवासवान्त्ये मैत्रेन्दवाश्विध्रुवभेऽह्निपुंसाम् ।।
तिथावरिक्तेशुभमामनन्ति प्रसूतिकास्नानविधिमुनीन्द्राः ।।
इति श्रीशुकदेवविरचिते ज्योतिषसारे संवत्सरादि प्रकरणंसमाप्तम् ।।

टीका--हस्त ज्येष्ठा पूर्वाफाल्गुनी स्वाती धनिष्ठा रेवती अनुराधा मृग अश्विनी और ध्रुव नक्षत्र इनमेंसे कोई नक्षत्र जिस दिन हो उस दिन सूतिकास्नान शुभ कहा है, रिक्तातिथि वर्जित है, यह मुनीन्द्रोंने कहा है ।

इति पंडितकेशवप्रसादविरचितज्योतिषसार हिन्दी टीका समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका पता—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
'लक्ष्मीवेंकटेश्वर' स्टीम-प्रेस,
कल्याण—बम्बई.

खेमराज श्रीकृष्णदास
'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीमप्रेस,
खेतवाडी, बंबई ४.

मुद्रक व प्रकाशक : मेसर्स खेमराज श्रीकृष्णदास, अध्यक्ष श्रीवेंकटश्वर प्रेस, बम्बई–४ के लिए डी. एस. शर्मा मैनेजर द्वारा श्रीवेंकटेश्वर प्रेस, ७ वीं खेतवाड़ी, बम्बई ४ में मुद्रित.



1000-1-69